स्वतन्त्रता संग्राम और सिन्ध का योगदान

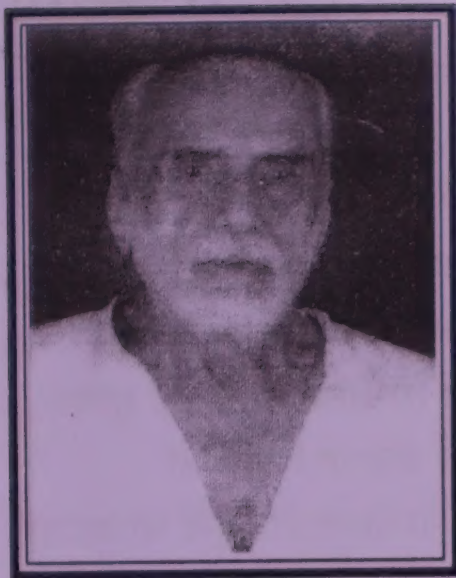
(2200 साल के इतिहास की सचित्र झलक)

प्रेम मोतीराम तनवाणी









महान
क्रान्तिदूत
श्री परचो विद्यार्थी
को समर्पित

प्रथम संस्करण - 15 जून, 2009

प्रतियाँ - 2000 सहयोग - 50 रुपए मात्र

प्रकाशक - प्रेम मोतीराम तनवाणी

बी-28, ग्लैक्सी रेसीडेन्सी, अमलीडीह, रायपुर (छ.ग.) मो. : 9301179876

अनुक्रमणिका

.... सुधिजनों के दो शब्द ....

शुभकामना

पत्रकार-लेखक श्री प्रेम मोतीराम तनवाणी की पांडुलिपि 'स्वतंत्रता-संग्राम और सिंध का योगदान' पढ़ते हुए मेरे सामने सिंधु महानद के तट पर बना हुआ वह सतियों का स्मारक घूम गया जहां प्रतापी राजा दाहिरसेन क्रूर आक्रांताओं की अमानुषता और अपने ही कुछ लोगों के विश्वासघात से हुई पराजय का मौन साक्षी बना हुआ है। उस स्मारक पर चढ़ कर हल्के बादामी रंग की विस्तृत सिंधु नदी को मैं देख रहा था तो अतीत अपना सीना खोल करके तमाम जख्म दिखाने लगा, जिनसे अभी तक रक्त की धार बहती है।

"सक्खर के निकट बने प्राचीन सतियों के स्मारक में ही सन् 712 ईस्वी में राजा दाहिरसेन की हत्या के पश्चात रानियों और अन्य महिलाओं ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए स्वयं मृत्यु का वरण कर लिया था। मुहम्मद बिन कासिम ने 20 जून को राजा दाहिर की नृशंस्तापूर्वक हत्या कर दी थी। प्रत्येक हिंदू को इस्लाम स्वीकार करने को बाध्य किया गया और जिसने धर्म बदलने से इंकार किया उसकी हत्या कर दी गई।" (इंस्क्लोपीडिया ऑफ इंडियन ईवेंट्स एंड डेट्स - एस. बी. भट्टाचार्य)

तब से सिंध अनेक बाहरी और भीतरी दासता के बंधनों में जकड़ता चला गया। सतियों के उस ऐतिहासिक स्थल से कुछ दूर सिंधु नदी के बीच छोटे से द्वीप पर वह साधुबेला आश्रम भी देखने का अवसर मिला जहां मन की दासता से मुक्ति का अनहद नाद सदियों से गूंजता रहा है। सिंध की एक बड़ी विशेषता यह है कि वहां आजादी की ज्वाला भी लगातार धधकती रही। कभी वह मंद भले ही पड़ गई, लेकिन बुझी कभी नहीं। स्वतंत्रता संघर्ष के लम्बे दौर में सिंध भी अपनी आहूतियां देता रहा है। स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में सिंध के कुछ ही शहीदों का उल्लेख इतिहासकार करते हैं। वास्तविकता यह है कि समाज सुधार, व्यक्ति एवं समाज के निर्माण, नैतिक जागरण और राजनीतिक आजादी के संग्राम में सिंध का महत्वपूर्ण योगदान है। उसका विस्तृत उल्लेख किया जाना अभी शेष है।

श्री तनवाणी ने अपनी इस पांडुलिपि के माध्यम से इस दिशा में एक ठोस कदम उठाया है। मैं आशा करता हूँ श्री तनवाणी की यह सार्थक पहल सिंध के स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान का विषद इतिहास लिखने में प्रेरक होगी।

रमेश नैयर (वरिष्ठ पत्रकार)
152-ए, समता कालोनी,
रायपुर(छत्तीसगढ़)

.... सुधिजनों के दो शब्द ....

इतिहास को समझाने की सकारात्मक कोशिश

संस्कृति एक पावन नदी है, जो निरंतर प्रवाहमान रहती है। लेकिन इस नदी को लोग प्रदूषित करने से भी बाज नहीं आते। तब नदी के शुद्धिकरण की कोशिशें शुरू होती हैं। सिंधी-संस्कृति भी ऐसी ही नदी है जो हमारी सभ्यता का प्रस्थान बिंदु है, आगाज है। यह सदानीरा रहने वाली संस्कृति है लेकिन इसे संरक्षित रखना सबका साझा दायित्व है। कोई समझे अथवा न समझे, संस्कृति के गहन अध्येता प्रेम तनवाणी इसे अपना पावन कर्तव्य समझते हैं। वे कलम के एक ऐसे योद्धा हैं, जो साधनों के अभावों के बीच भी सांस्कृतिक लड़ाई लड़ रहे हैं; वो भी अनथक। अनेक सिंधियों ने आज़ादी की लड़ाई में अपना बलिदान किया और फिर भारत के नवनिर्माण में भी अपनी भूमिका निभाई। लेकिन सिंधी समाज को जितनी प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए थी, नहीं मिल पाई। श्री तनवानी इसी पीड़ा से ग्रस्त होकर निरंतर कोशिश करते रहे हैं कि कैसे सिंधी अस्मिता और उसकी सांस्कृतिक छवि लोकव्यापी हो सके। निकृष्ट दुष्प्रचार टूटें। श्री तनवानी ने सिंधी समाचार पत्र भी प्रकाशित किया। इसी कड़ी में उनका नया उपक्रम है- **स्वतंत्रता संग्राम और सिंध का योगदान**। सिंधी समाज के भूले-बिसरे नायकों को एक बार फिर लोगों के सामने लाना ही तनवानी जी का उद्देश्य है। आम लोगों को तो केवल शहीद हेमू कालाणी के बारे में पता है, लेकिन बहुत-सी ऐसी विभूतियाँ भी हुई हैं, जिन्होंने आज़ादी की लड़ाई में अपना महती योगदान दिया। जैसे एक और सावरकर वीर परचो विद्यार्थी। प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सिंधू कन्याओं ने लड़ा था। स्वदेशी आंदोलन हो चाहे आज़ाद हिंद फौज, हर कहीं सिंधी उपस्थिति नज़र आती है। आज़ादी के बाद गोवा मुक्ति आंदोलन में भी सिंधी सेनानियों ने भाग लिया था। मतलब यह कि हर लड़ाई में सिंधी वीर सामने आए। पुस्तक में अनेक मार्मिक दृष्टांत संग्रहित हैं। बलिदान और समर्पण के प्रेरक प्रसंग भरे पड़े हैं।

प्रस्तुत पुस्तक शोधार्थियों के लिए फायदेमंद साबित होगी। यह पुस्तक एक जरूरी पाठ की तरह पढ़ी-पढ़ाई जानी चाहिए। साहित्य और इतिहास के एक विद्यार्थी के नाते मुझे इस शोध कार्य को देख कर प्रसन्नता हुई। मेरा अपना ज्ञान बढ़ा। अनेक नई जानकारियाँ मिलीं। श्री तनवानी ने काफी मेहनत के बाद बहुत से तथ्य एकत्र किए और उसे एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करने का बड़ा काम किया है। इन दिनों बहुत -से धन-पशु खा-पीकर अघाए हुए हैं। उन्हें धन कमाने से फुरसत नहीं। पैसा ही नई संस्कृति है। असली संस्कृति की फिक्र है किसे ? लेकिन एक व्यक्ति है जो इस बाजारवाद में भी अपनी परम्पराओं और संस्कृति की रक्षा के लिए समर्पित है। इसलिए तनवानी जी जैसे दुर्लभ लोगों का जितना अभिनंदन किया जाए कम है। स्वतंत्रता आंदोलन का जब नया इतिहास लिखा जाए, तो सिंध के बलिदान का अधिकाधिक जिक्र किया जाना चाहिए। कभी अँग्रेजों ने अपने हिसाब से इतिहास लिखा था। ऐसा न हो कि हम पर भी आरोप लगे कि हमने इतिहास लेखन में पक्षपात किया है इसलिए प्रेम तनवानी के शोध कार्य का समादर होना चाहिए और इस पुस्तक को एक गंभीर काम के रूप में लिया जाना चाहिए।

श्री तनवानी जी की पीड़ा बिल्कुल जायज है कि जिस सिंधी भाषा का एक-एक शब्द मंत्र बना, वही सिंधी भाषा अब उपेक्षित हो रही है। सिंधीयत हाशिये पर जा रही है। ऐसे संक्रमण काल में उन की यह पुस्तक आत्मस्वाभिमान जगाने में सहायक बनेगी, ऐसा विश्वास है। उनके उज्जवल और स्वस्थ जीवन की शुभकामना करता हूँ।

-- गिरीश पंकज, संपादक - सदभावना दर्पण, रायपुर।

.... सुधिजनों के दो शब्द ....

वैदिक युग से भारतीय स्वातन्त्रय संग्राम तक के सुदीर्घ काल में सिंध प्रदेश, हिन्दुस्थान की अस्मिता का ध्वज-वाहक ही नहीं, प्रत्युत भारत की महान संस्कृति का प्राण-केन्द्र भी रहा है। सनातन-धर्म, संस्कृति, सभ्यता और ज्ञान-विज्ञान के साथ ही अत्यंत गौरवपूर्ण भारतीय वाङमय के सृजन, संभार और विकास की महागाथा, सिन्ध में ही लिखी गई। महामनुष्यता की उद्‌गात्री सिंधु और सरस्वती के जल से पवित्र हुई सिंध की धरती को हे भारत-वासियों! भक्ति और श्रृद्धापूर्वक प्रणाम करो। एक अरब पच्चीस करोड़ पुत्र-पुत्रियों की जननी-भारत माता, अंग-भंग से शोक-मग्न है। हे स्वदेशानुरागी बंधुओं! अपनी माता के आंसुओं को पोंछने के लिए पुरुषार्थ करो। क्या तुम्हें जन्मभूमि सिंध की कातर-वाणी सुनाई नहीं देती ? हे अमृत-पुत्रों! सिंध के साथ शश्य-श्यामला बंगाल की धरती भी तुम्हें पुकार रही है। क्या बंगाल की पुकार भी तुम नहीं सुनते ? भगवान श्री रामकृष्ण देव, स्वामी विवेकानंद, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, शरत् बाबू, सुभाषचंद्र बोस आपको पुकार रहे हैं। अंग्रेजी साहित्य के शीर्ष-पुरुष विलियम शेक्सपीयर ने लिखा है,"कायर मृत्यु के पूर्व कई बार मरता है पर बहादुर-पराक्रमी तो बस एक बार ही मरता है।" मुहूर्त भर धधक-धधक कर जलना श्रेष्ठ है, धुंधवाते हुए चिरकाल तक जीना कथमपि श्लाघनीय नहीं है।

'स्वतंत्रता-संग्राम और सिंध का योगदान' पुस्तक के प्रणेता श्री प्रेम मोतीराम तनवाणी अभिनन्दन के पात्र हैं। इस विचारोत्तेजक राष्ट्र-भक्ति के उदग्र भावों से परिपूर्ण-ग्रंथ में उन्होंने न केवल स्वातन्त्र्य-संग्राम में सिंध के महान अवदान और उत्सर्ग का चित्रण किया है बल्कि सम्पूर्ण-भारत की आत्मा की जागृति का शंखनाद किया है। सिंध में बहने वाली लुप्त सरस्वती नदी के किनारे वेदव्यास ने तपस्या की थी। देवर्षि नारद की प्रेरणा से श्रीमद् भागवत-महापुराण की रचना व्यास जी ने सिंध में ही की थी। पांडवों ने वनवास के कई वर्ष, सिंध के द्वैतवन में बिताये थे। भारत की पश्चिमी सीमा का महान प्रहरी सिंध, विदेशी आक्रमण-कारियों के छक्के छुड़ाने वाला पुरुषार्थी तो है ही वह हिन्दू-धर्म और संस्कृति का उद्‌गम स्थल भी है। हजारों वर्षों के उसके गौरवपूर्ण सांस्कृतिक इतिहास में स्वातन्त्र्य संग्राम का इतिहास, एक महत्वपूर्ण शक्ति-धारा है। अगणित युवकों, युवतियों और अन्यान्य नागरिकों ने अपनी शौर्य-गाथाओं से भारत-जननी का श्रृंगार किया है। अमर शहीद भगतसिंह की ही भांति शहीद हेमू कालाणी की राष्ट्र-भक्ति और अमर शौर्य-गाथा तथा उस सिंह-शावक की निर्भयता सिंध के स्वाभिमान को जगाने वाला महा-मंत्र है।

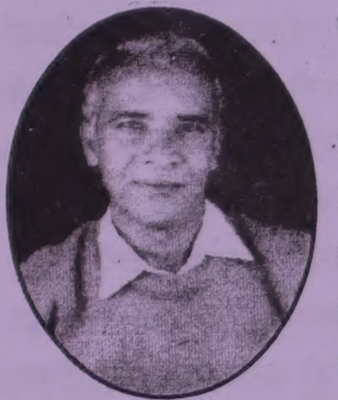
श्री तनवाणी ने सिंध की पवित्र-भूमि में जो राष्ट्र-यज्ञ हुआ, उस यज्ञ में आहुति देने वाले बलिपंथी महान आत्माओं से हमें परिचित कर एक महान कार्य किया है। यह पुस्तक, आगंतुक पीढ़ियों को देश-भक्ति के लिये सर्वस्व-समर्पण करने की प्रेरणा देगी ऐसा विश्वास है। खंडित-भारत के एकीकरण की दिशा में भी कार्य-योजना बनाने वाले भारतीयों के लिये यह पुस्तक मूल्यावान सिद्ध होगी। उन्होंने अपनी पुस्तक में संकेत किया है कि बापू की अहिंसा नीति सफल नहीं रही। परन्तु मेरे विचार में यदि महात्मा गाँधी की शिक्षाएँ और संस्कार हमारी जनता में नहीं होते तो विभाजन की त्रासदी और भी भयानक हो सकती थी। अतः जय सिंध, जय भारत। श्री तनवाणी इसी प्रकार हमारी गौरव-गाथा लिखते रहें और भारत-जननी की पूजा में फूल चढ़ाते रहें, इन्हीं कामनाओं के साथ --

प्रभु पदाश्रित - बालचंद्र कछवाहा

पूर्व अध्यक्ष पं. सुंदरलाल शर्मा शोध पीठ, रवि.वि.वि. रायपुर

लेखक की कलम से

भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास से एक प्रश्न उठता है कि भारत परतन्त्र क्यों हुआ ? इसका उत्तर इतिहास से ही मिल जाता है। सिन्ध, भारत का ऐसा सीमान्त प्रदेश था, जो विदेशी आक्रमणकारियों के लिए भारत का प्रवेश द्वार था, किन्तु सिन्ध के इतिहास की अनदेखी की गई, जिसके अभाव में भारत का इतिहास अधूरा और इसका चिन्तन दिशाहीन हुआ है। भारत की परतन्त्रता के मूल तीन कारण थे। एक तो



यह कि भारत धार्मिक और सांस्कृतिक रूप से एक होकर भी विभिन्न जातियों और समाजों में बँटा होने के कारण, अनेक छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। दूसरा घातक कारण था भारत में हिंसकों के विरुद्ध बौद्ध धर्म की "अहिंसा परमो धर्म" की कायरता मूलक नीति, जिसका लाभ विधर्मियों ने लिया। चीन, जापान, थाईलैन्ड आदि बौद्ध धर्म को मानने वाले देशों में आक्रमण-कारियों-क्रूर आतंकियों को इस अहिंसा परमो धर्म वाली नीति का लाभ लेने नहीं दिया गया। यूँ इतिहास साक्षी है कि स्वयं बौद्ध-मतेन राजाओं ने, हिंसा का सहारा लेकर राज्य स्थापित किए थे। अहिंसा और दया को धर्म का मूल मानना, अन्यायपूर्ण होने के कारण प्रकृति के विरुद्ध है। संसार-आधार पन्च-तत्वों की शुद्धि, सूर्य के द्वारा ही सम्भव है। परन्तु अहिंसा मूलक चिन्तन यह है कि सूर्य, तपना ही छोड़ दे। क्योंकि इससे विषैले-कीटाणु नष्ट होने से हिंसा होती है। संसार की रचना, पूर्ण रूप से न्याय पर आधारित "कर्म प्रधान विश्व रचि राखा, जो जस करहि सो तस फल चाखा" के विधि-विधान के अनुसार रची गई है। कोई भी धर्म या ईश्वर, कामचोरों-हिंसकों के प्रति कृपालू-दयालू या अहिंसक नहीं हो सकता, अन्यथा वह सबके साथ समान न्याय करने वाला नहीं होगा।

हमारा एक युगोपयोगी महामन्त्र था-"अग्रतस् चतुरो वेदाः पृष्ठतस् धनुः, इदम् क्षात्रम् इदम् बह्म शापादपि शरादपि।" अर्थात् हमारे आगे चारों वेद हैं और उनके पीछे सिद्ध धनुष-बाण है। हम विश्व को धर्म सम्मत बात बतलाने के लिए और यदि आवश्यक हो तो उस पर आचरण करने के लिए ब्रह्मतेज और क्षत्रियतेज दोनों का उपयोग करते हैं। हमारे इष्ट देवी-देवताओं का एक हाथ सज्जन-सरल लोगों को अभय-आशीस देने और दूसरे हाथ में शस्त्र, दुष्टों-बैरियों के प्रति भय का भाव दर्शाते हैं। "परित्राणाय साधुनां, विनाषायच दुष्कृतां, धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे।" योगेश्वर श्रीकृष्ण का यह उद्घोष, धर्म संस्थापन की नीति को स्पष्ट करता है। इस्लाम के पैगम्बर मोहम्मद साहब की धर्मनीति भी यही थी।

जहाँ तक सिन्ध की बात है, सिन्ध के अधिकांश धर्माचार्य राष्ट्र-रक्षा के प्रति चिन्तित नहीं थे, न ही आज हैं। इसलिए सिन्ध में सिन्धी-हिन्दुओं को रहने का अधिकार न था न है। यदि शहीद मदनलाल ढींगरा के "राष्ट्र-पूजा ही राम-पूजा" जैसा चिन्तन होता तो सिन्ध कभी परतन्त्र न होता। इसके विपरीत सिन्ध में अनेक व्यक्ति-पूजक छोटे-छोटे पन्थ खड़े हो गए, जिनकेधर्म-धुरन्धरों को भी भारत-विभाजन के समय सिन्ध से पलायन करना पड़ा। दाहरसेन के बाद विभाजन के समय तक सिन्धी-हिन्दुओं का आतंक पर आधारित धर्मान्तरण हुआ। जिसकी चिन्ता इन तथाकथित धर्माचार्यों ने कभी भी नहीं की। जिसके परिणाम स्वरूप राष्ट्रान्तरण हुआ। आज तो बहुत ही अधार्मिक स्थिति है, एक ही परिवार में चार-चार पन्थों ने घुसपैठ कर ली है। जिसके फल-स्वरूप समाज ही नहीं परिवार तक बँट चुके हैं।

गाँधीजी की अहिंसक नीति की असफलता के कई प्रमाण दिए जा सकते हैं। इनमें सबसे दुर्भाग्यपूर्ण प्रमाण देश की हत्या स्वरूप टुकड़े होना है और वह भी क्रूरतम हिंसा और अपमान सह कर।

15 अगस्त, 47 के जिस दिन दिल्ली में आजादी का शाही जश्न मनाया जा रहा था, और पाकिस्तान में भारतीय हिन्दूओं को लूटकर क्रूर हत्याएँ की जा रही थीं। उस दिन गाँधीजी कलकत्ते में नितान्त एकान्त में बैठे थे। पत्रकारों के पूछने पर उनकी मुखर वाणी एकदम शान्त थी, उनके पास इस तथाकथित आजादी के लिए कोई शब्द नहीं थे। तथाकथित आजादी के नाम पर देश की हत्या करके दो तुकड़ों में बाँट कर एक तुकड़ा धर्मान्ध नेताओं और दूसरा धर्महीन नेताओं ने लपक लिया। यह आजादी वास्तव में नई गुलामी थी, इसलिए तुकड़ा-तुकड़ा देश की बागडोर, गोरे अँग्रेजों ने काले अँग्रेजों को हाथों-हाथ थमा दी। तभी तो सत्ता रूपी तुकड़ों के लिए तड़फते काले अँग्रेजों ने, स्वतन्त्र भारत में 1935 में लागू किया गया **फेडरल लॉ** स्वीकार किया। काला कानून घोषित हो चुके जिस कानून के विरुद्ध "टोडी बच्चा हाय-हाय" के नारे लगाए जाते थे, वह आज भी कायम है। नेताजी सुभाष तथा अन्य कई वीर देश-भक्तों को अपराधी के रूप में ब्रिटिश सरकार के सौंपा जाएगा। पाकिस्तान पर किसी भी हालत में हमला नहीं किया जायेगा और यदि लड़ाई हुई तो भारत द्वारा जीता हुआ क्षेत्र वापस किया जायेगा। इससे साफ जाहिर है कि आजादी ऐसे कई गुप्त समझौतों पर मिली, जिनका हमें आज 61 सालों के बाद भी पता नहीं।

इस आजादी नामक नई गुलामी के ऐसे कई उदाहरण हैं। पूरे एक प्रान्त सिन्ध के स्वतन्त्रता-संग्राम की भूमिका को अन्धे-बहरों की तरह अनदेखा-अनसुना कर दिया गया। उसके स्वतन्त्रता-संग्राम का कहीं कोई उल्लेख तक इतिहास में नहीं किया गया। इस तुकड़े-तुकड़े आजादी की पोल खोलने वाला एक प्रमाण और है कि भारत के ही अंग रूप गोवा की मुक्ति के लिए भारत के मालिक बन बैठे काले अँग्रेजों ने आठ सालों में कोई भी प्रयास तक नहीं किया। जिसकी मुक्ति के लिए भी निर्वासित और रोजी-रोटी के लिए सघर्षरत सिन्धीयों ने गोलियों की बौछार झेली। तथाकथित आजादी के नाम पर हमने उस पवित्र वेद-भूमि सिन्ध को खो दिया, जो आधुनिक भारत की आदि-सनातन भूमि थी। न केवल वह वेद-भूमि खोई अपितु उसके हजारों वासियों का निर्मम नरसंहार करने दिया और लाखों को उनकी जन्मभूमि से निर्वासित होने दिया। सिन्ध के बिना कोई भी भारतीय सम्मान से सर उठाकर जीने योग्य नहीं है। कुछ तो कर्ज-फर्ज है हम पर, हमारी उस वेद-ज्ञान की भूमि का। जिसको विश्व की पहिली और श्रेष्ठतम सभ्यता की भूमि कहकर, हम शान से सर उठाकर इतराते फिरते हैं। कुछ तो कर्ज-फर्ज बनता है हम पर, अपने उन देश-भाईयों के प्रति, जिन्होंने इस देश के लिए सातवीं सदी से गोवा की मुक्ति के बीसवीं सदी तक तेरह सौ सालों तक रक्षा करने में हजारों-लाखों बलिदान दिए। हमारी पाठ्य-पुस्तकों के इतिहास में दक्षिण भारत के स्वतन्त्रता संग्राम को नकारा जाना भी बैर-भाव और अपमान जनक होने के कारण दुर्भाग्य-पूर्ण है।

यह देश का दुर्भाग्य ही था कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए लड़ने वाले लोकमान्य तिलक के बाद लाला लाजपतराय जैसे नेता स्वतन्त्रता के पहिले स्वर्ग सिधार गए और देश की अगवानी समझौता वादी और दीर्घ-सूत्री नेताओं ने हथिया ली। स्वयं काँग्रेस ने लखनऊ अधिवेशन में हुए पार्टी-चुनावों में गाँधीजी की नीतियों को नकारते हुए उनका नेतृत्व अस्वीकार कर दिया था।

देश आजाद हुआ तो सैकड़ों तुकड़ों के रूप में तुकडे-तुकडे होकर। यह तो भारत का सौभाग्य है कि सरदार वल्लभ भाई पटेल जैसे 'लौह-पुरुष' देश में तब जीवित थे। जिन्होंने हैदराबाद के निजाम से हैदराबाद और झूनागढ रियासत सहित सैकड़ों छोटे-बड़े राजाओं-नवाबों के कब्जे से रजवाडे-रियासतें छीनकर, भारत में मिला दिए, जो अंग्रेजों की जी-हुजूरी में ही लगे रहते थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती, मंगल पांडे, लक्ष्मी बाई, महर्षि अरविन्दु घोष, श्यामजी कृष्ण वर्मा, दादा भाई नौरोजी, वीर सावरकर, सरदार अजीतसिंह, लाला हरदयाल, भाई परमानन्द, बाबा गुरुदत्तसिंह,

विपिनचन्द्र पाल,लाला लजपतराय, लोकमान्य तिलक, सरदार उधमसिंह, मदनलाल ढींगरा, चन्द्रशेखर आजाद, नेताजी सुभाष, चाफेकर बन्धु, बलवन्त फड़के, भगतसिंह, राजगुरू, सुखदेव, रामप्रसाद 'बिस्मिल', खुदीराम बोस, दुर्गा भाभी, यतीन्द्रनाथ, कन्हाईलाल दत्त, अशफाकउल्ला खाँ, प्रीति लता, बटुकेश्वर दत्त,हेमूँ कालाणी, डीयो कृपलाणी(शेख अब्दुल रहीम), स्वामी गोविन्दानन्द, हंसराज 'वायरलेस', नेणूराम शर्मा, नत्थूराम शर्मा व परचो विद्यार्थी जैसे क्रान्ति-दूतों का ही संग्राम था कि अँग्रेजों को 47 में ही "भारत छोड़ना" पड़ा। यहाँ यह भी ध्यान में रखने वाली बात है कि 1942 में ही ब्रिटिश प्रधानमन्त्री विंस्टन चर्चिल ने कह दिया था कि हम भारत को और अधिक गुलाम बनाए नहीं रख सकते।

जब भी देश के विभाजन की बात उठती है तो कई लोग अपने को बुद्धिमान और ज्ञानी समझते हुए एक ही रटा-रटाया राग अलापते हैं - अँग्रेजों ने हमें और हमारे देश को बाँटकर तुकड़े-तुकड़े कर दिया। अँग्रेजों पर ये दोषारोपण सही नहीं है। यह मान लेने पर प्रश्न उठता है कि क्या हम इतना अन्याय-अत्याचार सहकर और इतनी कुर्बानियों के बाद भी अँग्रेजों के आज्ञाकारी गुलाम थे कि उन्होंने कहा तुकड़े-तुकड़े कर दो अपने देश-भाईयों और अपनी जन्मभूमि को, और हमने लाखों देश भाईयों का अन्धाधुंध कत्ल किया, करोड़ों को घर से बेघर कर अपने देश से ही निकाल दिया। सही ये है कि हममें से कुछ सत्ता-लोभी लोग, आजादी के नाम पर तुकड़े लपक लेने को आतुर थे, जिन्होंने धर्म के नामपर हमें बलि का बकरा बनाकर, अपने धर्म पर कालिख पोती। यदि ये सही नहीं है और हम वास्तव में आजाद हुए थे, तो आजादी के बाद हमें किसने रोका था तुकड़े-तुकड़े भाई-चारे और तुकड़े-तुकड़े देश को एक करने से। यह प्रश्न आज भी यक्ष-प्रश्न बनकर हमारे सामने खड़ा है। आज भी हम एकता और भाई-चारे के झूठे नारे गुंजाने वाले गुलाम हैं। इस झूठी गुलामी से आजाद होने के लिए आवश्यक्त है कि हम, धर्म और जाति के नाम पर हुए छल-बल को तोड़ दें और जोड़ दें तुकड़े-तुकड़े भाई-चारे और तुकड़े-तुकड़े अपनी मातृभूमि को।

अन्त में भारत के सभी ज्ञात-अज्ञात शहीदों और वीर क्रान्ति-दूतों के साथ उन धनपतियों, जिनके धन-बल से हमें यह अधूरी आजादी मिली। उन सभी को प्रणाम करते हुए, विनम्र निवेदन करता हूँ कि मेरी इस पुस्तक का उद्देश्य मात्र इतना है कि हमारी नई पीढ़ी और सभी भारतीय बन्धुओं को सिन्ध और सिन्धीजनों के स्वतन्त्रता संग्राम की भूमिका का ज्ञान हो सके। ताकि उनकी "पाकिस्तान से भागकर आए व्यापारी" वाली अज्ञान-आधारित छबि मिट सके और उनके प्रति भेद, बैर और अपमान का भाव मिट सके। और फिर से वेद-भूमि सिन्ध सहित ऐसे अखन्ड भारत का निर्माण हो सके, जिसमें राष्ट्रीयता को सर्वोपरि स्थान देते हुए, प्रत्येक जाति व धर्म के लोग सुरक्षित रूप से फलें-फूलें। "कृण्वन्तो विश्वमार्यम" के लक्ष को प्राप्त कर, विश्व के सम्पूर्ण मानवों को श्रेष्ठ बनाने का सपना साकार कर सकें।

इस पुस्तक में ईसा पूर्व 327 के इतिहास सहित ईसवी सन् 1955 तक के संग्राम-स्वतन्त्रता के नाम पर निर्वासित सिन्धी-जनों द्वारा भारत में पुर्नस्थापन के लिए किए गए संघर्ष का इतिहास भी दिया गया है। इसकी सामग्री 'गौरवमयी संपदा के धनी सिन्धी' लेखक : कीमतराय हरीसिंघाणी, 'सिन्धी शूरवीर और शहीद' लेखक : नवलराय बच्चाणी, 'आजादीअ जी युद्ध में सिन्धु जो भागु' लेखक : बल्देव गाजरा, 'अब्बो' लेखक : हरी मोटवाणी, 'तारीख मोकल ते' (इतिहास छुट्टी पर) लेखक : मोहन कल्पना, 'यादगिरियूँ' लेखक : सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी, 'अलेकजेन्डर्स वाटरलू इन सिन्ध' लेखक : के. आर. मल्काणी, 'सिन्धू जोति' प्रकाशक : दिल्ली सिन्धी अकादमी, 'पान्चजन्य' : 16 अगस्त,1998 और 'राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ - सिन्ध का प्रवास', 'दबायल आवाज' लेखक : हीरो ठकुर, 'आजादीअ लाइ आंदोलन' लेखक : मेठाराम हरूमल खिलनाणी आदि पुस्तकों के आधार पर सम्पादित है।

सिकन्दर को मिली थी शर्मनाक पराजय सिन्ध में

हमारी पाठ्य-पुस्तकों का इतिहास, भारत की प्राचीनता और महानता से द्वेष रखने वाले हमलावर और लुटेरे अँग्रेजों से प्रेरित था, जो यह सिद्ध करना चाहते थे कि भारत पर हमेशा से हमलावरों का राज रहा है। बाद में जिसे अँग्रेजों के चाटुकार इतिहासकारों ने बहुत अधिक प्रचारित किया। सिकंदर को महान विश्व -विजेता प्रचारित करने वाली पाठ्य-पुस्तकों में पढ़ाया जाने वाला इतिहास झूठ का पुलिन्दा मात्र है।

सिकन्दर(मैसीडोनिया-ग्रीस का अलेक्जेंडर) न तो विश्व-विजयी था और न ही उसने भारत में पोरस को हराया था। ईरान और अफगानिस्तान के रास्ते भारत आते समय उसने छोटे-मोटे राजाओं और कबीलों को ही हराया था। भारत में पन्जाब की झेलम नदी क्षेत्र के राजा पोरस और उसकी सेना ने ही उसे नाकों-चने चबवाए थे। इसलिए वह भारत के शक्तिशाली राज्य मगध की विशाल सेना का सामना करने की हिम्मत न जुटा सका। अफगानिस्तान में भी उसे कई कष्टों और विरोधों का सामना करना पड़ा था। इसलिए वह सिन्ध के रास्ते से, ग्रीस लौटना चाहता था। उस समय सिन्ध में **श्रीकृष्ण** और **जाम्बवन्ती** के वंशज **राजा साम्बस** का राज्य था, जब सिकंदर ने ईसा पूर्व 324 में ग्रीक लौटते समय सिन्ध पर आक्रमण किया था।

सिन्ध में अँग्रेजी राज के कमिश्नर **एच.टी.लैम्बर्क** की पुस्तक **सिन्ध बिफोर मुस्लिम कंक्यु -एस्ट** के अनुसार : जब सिकन्दर के उपद्रवी-आक्रमणकारी युद्ध का नारा **अलालालालई** गुंजाते हुए सिन्ध की सीमा में घुसे, तब पहिले तो सिन्धी अचरज से चौंके और फिर भाग गए, उनका राजा भी भाग गया। बाद में सिन्धीयों ने हिम्मत बटोरी और सिकन्दर को अपने जीवन का बहुत ही बुरा समय भोगना पड़ा। क्योंकि उस समय सिन्ध में ब्राह्मणों के रूप में एक बहुत ही बुद्धिमान और गणमान्य शक्ति थी, जिसने लोगों में सामना करने का साहस उत्पन्न किया। उन ज्ञानी ब्राह्मणों ने राजा साम्बस को भी राजी किया कि वह, प्रजा की रक्षा करने के लिए आक्रमणकारियों से युद्ध करके अपना राज-धर्म निभाए। उस समय सिन्ध की सीमाएँ पश्चिमी पन्जाब के मुल्तान और उससे भी आगे तक फैली हुई थीं।

एक अन्य इतिहासकार **प्लूटार्च** इस सम्बन्ध में लिखते हैं - **मुल्तान के एक गाँव में मल्लों** (बहादुर-पहलवानों)**की एक सैनिक-छावनी थी। ये मल्ल भारत भर में, श्रेष्ठ वीरों के रूप में प्रसिद्ध थे। वहाँ पहुँचकर सिकंदर ने अपना जीवन बहुत बड़े खतरे में डाल लिया। कुछ मल्लों ने तलवार और बरछों से उसके बाजुओं के कवच को चीरकर, उसे घायल किया। एक तीर उसके सीने के कवच को छेदते हुए, उसकी छाती के अन्दर जाकर पसलियों में गड़ गया। यह वार इतना कष्टदायक था कि वह एक घुटने के सहारे बैठ गया। एक मल्ल तलवार लेकर, सिकन्दर के पास दौड़ता हुआ पहुँचा किन्तु एक मेसीडोनियन सैनिक, मल्ल और सिकंदर के बीच में आ गया। अन्यथा सिकंदर उसी समय काल के गाल में समा गया होता। किन्तु इतना होने पर भी सिकंदर के कष्टों का अन्त नहीं हुआ था, उसकी गद्देदार गर्दन पर हुए एक भारी वार के कारण, वह एक दीवार का सहारा लेने को बाध्य हुआ। वह इतना कमजोर हो गया था कि अपना आत्म-बल भी खो चुका था। उसके सैनिक दल में उसकी मृत्यु की खबर फैल गई।** इसलिए मेसीडोनियन सैनिक उसे उठाकर, अपनी सैनिक छावनी में ले गए। जहाँ शल्य-चिकित्सा के द्वारा उसके शरीर में चुभे तीरों को निकाल लिया गया, परन्तु इस बीच वह मरणासन्न होकर मूर्छित हो गया।

सिकन्दर ने अपनी छावनी में पहुँचाए जाने के बाद कहा ... **शेष अगले पृष्ठ पर** ...

उन्होंने मुझ पर हर जगह हमला किया। उन्होंने मेरे कन्धों और पैरों को घायल किया। उन्होंने एक तीर मेरी छाती में ठोका, और तेज धमाके के साथ मेरी गर्दन पर वार किया।

स्वस्थ होने के बाद सिकन्दर ने अपनी क्रूरता का परिचय देते हुए उन सैकड़ों ब्राह्मणों की निर्मम हत्या करवाई, जिनकी चतुराई और बुद्धिमानी के कारण राजा साम्बस और सिन्धी वीरों ने संगठित होकर, उसके विरुद्ध युद्ध करने को तैयार हुए। किन्तु अन्त में थक-हार कर वह वापस ग्रीस लौटने को बाध्य हुआ। एक भाग सिकंदर की अगवानी में बलूचिस्तान के मार्ग से और दूसरा भाग एडमिरल नर्चस् की अगवानी में समुद्री मार्ग से अपने देश लौटा। किन्तु 40000 ग्रीक सैनिकों में से केवल 15000 सैनिक ही वापस अपने देश पहुँच सके, शेष सभी भारत में युद्ध करते हुए या घायल अवस्था के कारण मार्ग में ही मर गए।

सिकंदर का जीवन-चरित्र लिखने वाले लेखक **रॉबिन लेन पॉल** के अनुसार - **वापस लौटे हुए अधिकाँश सैनिकों की राय थी कि सारे एशिया में ऐसी कठिनाईयाँ कहीं भी नहीं भोगीं, जितनी कठिनाईयाँ सिन्ध-मकरान में भोगनी पड़ीं। वापस लौटे वरिष्ठ अधिकारियों में सिकंदर भी था, किन्तु उसने असहनीय, अपमानजनक और कलंकित पराजय प्राप्त की।**

सिन्धीयों और ग्रीक लोगों के बीच एक भाव-भंगिमा प्रचलित है - **बुजा या भूंडा** दिखाना। अन्यों की समझ में न आने वाली और धिक्कारने या लानत भेजने के अर्थ वाली यह भाव-भंगिमा, **फैली उंगलियों वाले** पन्जे के रूप में प्रदर्शित की जाती है।

ग्रीक-सायप्रस की जनता ने ब्रिटिश लोगों को निकाल बाहर करने के लिए यूनियन-जैक(झन्डे) को जलाते समय फैली उंगलियों वाले पन्जे (बुजे)का प्रदर्शन किया था। जब सितम्बर 1983 में पाकिस्तानी तानाशाह जियाउल हक सिन्ध-यात्रा पर आया था तब सिन्धी लोगों ने सैनिक-तानाशाही लागू करने के कारण, जियाउल हक को यह बुजा-भूंडा दिखाया था। ग्रीस के **प्रो. डेमिटोरियस लॉकेटस्** के अनुसार - **ग्रीस में यह बुजा, प्राचीन समय से रोमन, बाल्केनियन और विशेषकर अलबानियन लोगों को दिखाया जाता है।** ग्रीक लोग **ब** के स्थान पर **म** का प्रयोग कर, **बुजा** या **भूंडा** को **मौद्जा** उच्चारित करते हैं।

बुजा-मौद्जा सिकंदर के लिए सिन्ध से मिली एक शिक्षाप्रद भेंट थी, जो उससे हजारों वर्ष पूर्व सिन्धी वाणियों-व्यापारियों द्वारा ग्रीस में पहुँचाई गई होगी।

(हिन्दी अनुवाद साभार - अलेक्जेंडर्स वाटरलू इन सिन्ध - लेखक - के. आर. मल्काणी)

• •

"भारत स्वतन्त्र तो हुआ परन्तु जिसके तटों पर वेदसूत्रों की रचना हुई, यज्ञ कुन्ड धधकते रहे और वेदमन्त्रों का उद्घोष हुआ; वह पावन सिंधू-सरिता आज भी अपवित्र डाकुओं के हाथ में है। यदि सिंधू न होती तो हम हिंदू ही न होते, बिना सिंधू के हिंदू कहलाना व्यर्थ है; निरर्थक है। हे तेजस्विनी सिंधू ! तुम देव सरिता हो। जब फिर कभी इस राष्ट्र के पुत्र प्रबल उत्साह से परिपूर्ण होंगे, तब तुम्हें मुक्त करा लेंगे।" **10 मई, 1957 - वीर सावरकर**

भारतीय सीमाओं का रखवाला -- बलिदानी सम्राट दाहरसेन



अजमेर-राजस्थान में 1 मई, 1997 के दिन 30 हजार वर्गमीटर में बना महाराजा दाहरसेन स्मारक

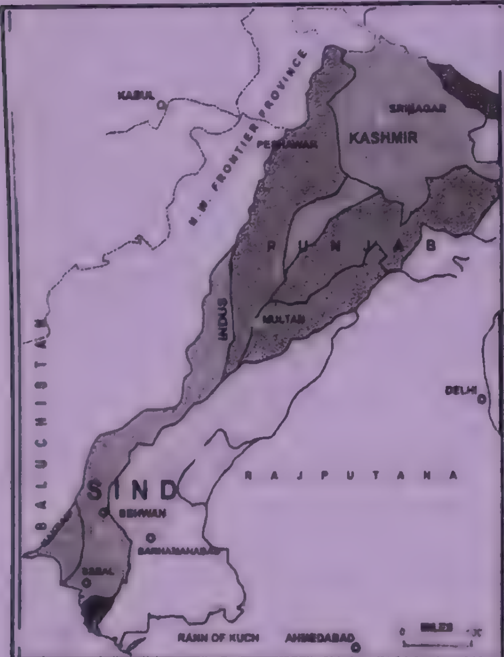
इतिहास-ग्रन्थों के अनुसार संसार भर की प्रथम और पवित्र भूमी सिन्ध ! ईसा पूर्व 5 वीं-6 वीं सदी से, भारत का प्रवेश द्वार रही है। सिन्धी वीरों ने राय राजवंश से लेकर दाहरसेन के काल तक चौथी से सातवीं ईसवी सदी के आरम्भ तक लगभग 400 सालों तक कई मुस्लिम हमलों का मुंहं-तोड़ उत्तर दिया था।

पारसी इतिहास ग्रन्थ बालादरी में लिखा है कि जब सिन्ध पर महाराजा चच के वीर पुत्र दाहरसेन का राज था, तब ईराक-बगदाद के मुस्लिम धर्मगुरू-खलीफा हज्जाज ने अपने भतीजे और दामाद मोहम्मद बिन कासिम को एक बहुत बड़ी फौज के साथ सिन्ध पर हमला करने के लिए भेजा। यह भारी फौज ईसवी सन् 711 में मौहर्रम माह की 10 तारीख को देवल बन्दर(कराची) पर पहुँची। दुर्भाग्य से तब वहाँ दाहरसेन का प्रतिनिधि ज्ञानबुद्ध था, जो बौद्धमत का अनुयाई था। जिसकी सोच कायरतापूर्ण अहिंसा परमों धर्म वाली थी। भारी फौज देखकर वह डर गया, जिस कारण बड़ी आसानी से मुस्लिम फौज का कब्जा हो गया। इसके बाद मोहम्मद कासिम के हुक्म पर नगर के मासूम बच्चों, अबला नारियों और बड़े-बूढ़ों को कत्ले-आम किया गया। जिन जवानों ने विरोध किया, उनका भी बडी बेरहमी से कत्ल किया गया। मुस्लिम-फौज ने बौद्धादि मन्दिरों को तोडकर, मस्जिदों में बदला और जबरन धर्म-परिवर्तन कर कई हिन्दुओं को मुसलमान बनाना शुरू कर दिया। देवल बन्दर पर मुस्लिम फौज के कब्जे की खबर, दाहरसेन को मिली तो उसने ब्राह्मणों-साधुओं को सिन्ध के नगरों और गावों की जनता में देश-प्रेम और बलिदानी भावनाओं का संचार करने हेतु आदेश दिया ! जिससे युवाओं की बहुत बडी सेना तैयार हो गई। खबर पाकर मोहम्मद कासिम की फौज, आगे बढ़ने की हिम्मत ही न कर सकी। उसकी रसद और धन भी धीरे-धीरे खत्म होने लगा था। इसकी सूचना मिलने के बाद खलीफे ने रसद और ढेर सारा धन भिजवाने से साथ कहवाया कि झूठ, छल-कपट, लोभ-लालच व धार्मिक फूट के साथ आतन्क फैलाओ।

मोहम्मद कासिम ने खलीफे के आदेशानुसार ईराक से भागकर महाराजा दाहर की शरण में रह रहे मोहम्मद अलाफी को धनादि देकर वापस अपने साथ मिला लिया। नीरन-कोट(हैद्राबाद) में दाहरसेन के मुख्यमन्त्री मोक्षवास, उसके भाई रसल और सेनापती शमनी को भी मृत्यु का भय और धन के साथ पद की लालच देकर मिला लिया। बौद्धमत को मानने वाले इन तीनों ने देश-द्रोह करके मुस्लिमों को हर तरह की सहायता दी। मोहम्मद कासिम को महाराजा दाहरसेन के साथ अन्तिम लड़ाई .. **शेष अगले पृष्ठ पर ..**

अरोड़(रोहिड़ी-सक्खर) में हुई। इस लड़ाई में उसे इतनी भयंकर स्थिती भोगनी पड़ी कि वह इस्लाम और अल्लाह का नाम ले-लेकर अपनी फौज को युद्ध समाप्त करने की विनती करने लगा।

यह देखकर भारतीय गौरवपुरुष महाराजा दाहर ने सिन्ध की परम्परा के अनुसार भूख से मरती मोहम्मद कासिम की फौज को अन्न के साथ संदेश भिजवाया, **"आप लोग हमलावर शत्रु हो किन्तु सिन्ध की धरती पर आज तक कोई भी भूख से नहीं मरा। निरपराध लोगों का रक्त बहाने से अच्छा होगा, अपने देश लौट जाएँ। युद्ध में खर्च हुआ धन भी हम देने को तैयार हैं।"**



सातवीं सदी में महाराजा चच के समय सिन्ध-साम्राज्य का मानचित्र

किन्तु देशद्रोही मोक्षवास की सलाह से एक छड्यन्त्र रचकर मुस्लिम सैनिक, औरतों के भेस में चिल्ला पड़े," बचाओ-बचाओ हमें मुस्लिम सैनिक उठाकर ले जा रहे हैं।" जिसे सुनकर महाराजा दाहरसेन, अपनी सेना के बीच से निकलकर चिल्ला रही नकली औरतों को बचाने पहुँच गए। जहाँ पहुँचने के बाद उनके हाथी पर जलते हुए तीर छोड़े गए, जिससे हाथी डरकर भागने लगा। इस कारण महाराजा ठीक से शत्रु का सामना न कर सके और कई तीरों के लगने से गम्भीर रूप से घायल हो गए। महावत किसी तरह उनको मुस्लिम घेरे से निकालकर, सुरक्षित स्थान पर ले गया। किन्तु घाव इतने गहिरे थे कि अन्त में उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। हजारों वीर नर-नारियों सहित सारा राजपरिवार भी बलिदान हो गया। और भारतीय सीमाओं के रखवाले राज्य सिन्ध के बाद धीरे-धीरे सारा भारत, मुस्लिम-अधिकार में आता गया।

और 16 जून ईसवी सन् 712 के दिन, हिन्दू कुल-गौरव का वह प्रतापी-सूर्य! अपना तेजस्वी प्रकाश फैलाकर, सदा-सदा के लिए अस्त हो गया। परन्तु उस महाप्रतापी और स्वर्णिम-सूर्य का प्रकाश, भारतीय इतिहास के स्वर्णाक्षरों के रूप में विद्यमान है, जो हम भारत-वन्शियों का मार्ग आज भी प्रकाशित कर रहा है और सदा करता रहेगा।

खूब लड़ी मर्दानी वह जो सिन्ध की महारानी लाडी थी
अपनी लाज की खातिर जो अपनी चिता सजाने वाली थी

भारतीय नारी के आदर्श जीवन-मूल्यों वाले संस्कारों में पली-बढ़ी महारानी लाडी ने जैसे ही सुना कि उसके पती महाराजा दाहरसेन, नारी जाति के सतित्व की रक्षा के नाम पर छले जाने से स्वर्ग-सिधार गए हैं तो **छाती-पीटकर रोने-बिसूरने की अपेक्षा उस वीर नारी ने वीरगति प्राप्त अपने पती को मन ही मन प्रणाम किया। उसकी आँखों से मोतियों से चमकते दो आसूँ छलककर गिर पड़े। भला ऐसे बलिदानी वीर के सम्मान में इससे बढ़कर श्रृद्धांजलि और हो भी क्या सकती थी!**

इसके बाद लाडी ने केसरिया-बाना धारण करते हुए अपनी सखी-सहचरियों सहित नारी-सेना की छोटी सी टुकड़ी को ललकार कर, तुरन्त केसरिया-बाना धारण करने का आदेश दिया और सेविकाओं को जौहर की चिता सजाने का आदेश देकर, नारी-सेना की टुकड़ी तथा सखी-सहेलियों के साथ किले की छत पर बनी मुन्डेर की ओर दौड़ गईं। लाडी की अगवानी में उसकी नारी-वाहिनी, किले में घुसने को प्रयासरत मुस्लिम-सेना पर तीरों-बरछियों की बौछार के साथ तपते हुए गरम तेल तथा .. **शेष अगले पृष्ठ पर ..**

तपाई हुई लाल-लाल लोहे की छड़ों आदि की बौछार करने लगी। परन्तु यह बौछार अधिक समय तक बरस न सकी क्योंकि थोड़ी ही देर में द्वार तोड़कर मुस्लिम-सेना किले की छत पर आ पहुँची और आमने-सामने का युद्ध होने लगा।किन्तु यह युद्ध भी अधिक समय तक न चल सका। सैकड़ों नराधम शत्रुओं को मौत के घाट उतारने में कई वीरांगनाओं को अपना बलिदान देना पड़ा। लड़ते-लड़ते अन्त में यह नारी सेना, विधर्मी-दरिन्दों के घेरे में घिरने लगी। इस स्थिती को भाँपकर, नारी-वाहिनी की बची-खुची छोटी सी टुकड़ी के साथ किले में सैकड़ों की संख्या में रहने वाली सभी नारियाँ, महारानी लाड़ी का अगवानी में जौहर की जलती चिता की ओर दौड़ गईं और हंसते हुए थू-थूकर धधकती हुई अग्नि-ज्वालाओं में कूद पड़ीं। पवित्र नारी-जीवन की लाज रखने के लिए भारत भर में प्रथम यह जौहर-प्रथा,विधर्मी-मुस्लिम राज तक जारी रही। सिन्ध के रोहिड़ी जिला सक्खर में **सतियों का स्थान** के नाम से उनकी समाधियाँ आज भी सुरक्षित हैं जो उन वीर-बलिदानी और सतवन्ती नारियों की अमर-गाथा सुना रही हैं।

सिन्धू-कन्याँओं ने लड़ा था प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम



यह दृश्य आज से लगभग 13 सौ साल पहिले अर्थात् 712 का है। ईराक के बगदाद में मुस्लिम धर्मगुरू-खलीफा हज्जाज का शाही दरबार सजा है। सिन्ध से लूटकर लाए माल की खुशी में जश्न के रूप में नाच-गाना चल रहा है। जश्न के चलते चार सिपाहियों के बीच धोखे से बन्दी बनाकर लाई गईं सिन्ध के महाराजा दाहर की मात्र 15 और 13 बरस की कन्याँओं **सूरज** और **परिमल** को दरबार में लाकर एलान किया जाता है,“ ऐ सिन्ध की राजकुमारियों! तुम्हारे लिए ये बड़ी खुशनसीबी की बात है कि हमारे रहमदिल और नेक-खयाल खलीफा हुजूर, तुम दोनों पर बड़े ही महिरबान हुए हैं। इसलिए वे, तुम दोनों को अपनी खासम-खास बेगम बनाना चाहते हैं। हमें उम्मीद है कि तुम दोनों इस महिरबानी को तहे-दिल से कबूल कर, खलीफे हुजूर की शान में बशुक्रिया सलाम पेश करोगी।”

ये सुनते ही सूरज और परिमल जोरों से खिलखिलाकर हंस पड़ीं। जिसे सुनकर दरबार में कुछ पल के लिए चुप्पी सी छा गई। फिर एलान करने वाले कर्मचारी ने गरजकर कहा,“ ऐ बदतमीज लड़कियों! तुम दोनों का दिमाग खराब हो गया है या तुम्हें मौत ने पुकारा है, इस तरह क्यों हंस रही हो ? ”

छोटी राजकुमारी परिमल ने अद्भुत साहस का परिचय देते हुए धीर-गम्भीर आवाज में कहा, “तुम लोगों की ये शाही शान-बान और ठाट-बाट सब झूठे हैं, क्योंकि ये सब लूट का माल है। किन्तु लगता है तुम्हें ही नहीं, तुम्हारे खलीफा को भी झूठन खाने की आदत पड़ गई है। इसलिए तुम लोग शान से इतरा रहे हो और सोचते हो कि हर कोई तुम्हारी शान में सलाम पेश करेगा। यही देख-सोचकर हमें हंसी आ गई।”

.. **शेष अगले पृष्ठ पर** ..

यह सुनकर सारी दरबार में ऐसा सन्नाटा छा गया, जैसे सबको साँप सा सूँघ गया हो। कुछ पल बाद मुस्लिम धर्मगुरू-खलीफा खड़े होकर गुस्से में फट पड़ा, " क्या बकती हो ! तुम दोनों पागल हो गई हो या सचमुच तुम्हें मौत ने पुकारा है ?"इस बार बड़ी राजकुमारी परिमल ने आँखें झुकाते हुए कहा, "तुम्हारे चहेते दामाद मोहम्मद कासिम ने हमें रास्ते में ही झूठा कर लिया है।"

जिसे सुनते ही खलीफे की पहिले तो अचरज से आँखें फट पड़ीं और फिर उसने चीखते हुए कहा, "क्या ! क्या कहा ? मोहम्मद कासिम ने तुम्हें झूठा कर लिया है। उस कमीने की ये हिम्मत कि अपनी झूठन को नायाब सौगात कहकर हमारे पास भिजवाए ? हमारा हुक्म है कि अभी और इसी वक्त एक फौजी टुकड़ी सिन्ध जाए और उस कमीने को कैदकर, एक गधे की खाल में जिन्दा सिलवाकर मार दिया जाए।"

ये सुनकर सूरज ने एक लम्बी साँस खींचते हुए परिमल की तरफ देखा। उनकी योजना के मुख्य और पहिले चरण की सफलता से दोनों की आँखों में एक गहिरी सी चमक तैर गई और होठों पर दबी-छिपी सी हंसी खेल गई। इस तरह अदम्य साहस और अनोखी चतुराई की उन पुतलियों ने, अपने परिवार सहित सिन्ध के हजारों नर-नारियों की निर्मम हत्या का बदला, मोहम्मद बिन कासिम से चुका लिया था।

खलीफे के आदेश का पालन करने के लिए एक फौजी टुकड़ी तैयार होकर सिन्ध के लिए रवाना हो गई। इस बीच अपनी ही दरबार में हुए अपने अपमान के कारण, खलीफा अपनी शाही कुर्सी पर सर झुकाए निढाल सा पड़ा था। दरबार में कोई भी ऐसा नहीं था, जो सिन्धू-शेरनियों की आँख से आँख मिला पाता। अवसर देखते ही उन शेरनियों ने एक ही पल में अपने आस-पास घेरा बनाए खड़े सिपाहियों की कमर से बंधी कटारें खींच लीं और दूसरे ही पल चारों सिपाहियों की गरदनों पर घातक वार करने के बाद, एक-दूसरे की छातियों में गहिरे तक कटारें घोंप लीं। एक तरफ चारों सिपाहियों और बीच में सिन्धू-बालाओं के धड़ाम से गिरने की आवाज से सारी दरबार में अफरा-तफरी सी मच गई। जिसे देखकर खलीफे की सूरत ऐसी हो गई जैसे उसके सिर पर ताज रखने की जगह, किसी ने जूता सा जड़ दिया हो। नायाब तोहफा पाने की खुशी में नाच-गाने रूपी जश्न का परिणाम ये निकला कि लानत पर लानत की बरसात हो रही थी। अपनी ही दरबार में अपने शर्मनाक अपमान का बदला लेने के लिए खलीफेने क्रूरतम और सर्वाधिक निन्दनीय हुकुम के अनुसार अधमरी सी सिन्धू-बालाओं को, दो घोड़ों की पूँछ के साथ उनके बालों को बाँधा गया और सारे बगदाद की गलियों में घसीट-घसीटकर बलिदान कर दिया गया।

धन्य-धन्य हैं सूरज और परिमल ! जिन्होंने नारी-जीवन की पवित्रता के लिए अपने प्राण तक बलिदान कर दिए। धन्य उनका छल-बल जिसके कारण उन्होंने शत्रु-देश में बन्दी रहते हुए भी अपने शत्रु को अपमान-जनक ढँग से मरवाया। **धन्य उनका साहस !** जिसने **अबला** कही जाने वाली नारी को संदेश दिया कि उसकी इच्छा के बिना, बड़ी से बड़ी ताकत वाला व्यक्ति भी उसका हाथ तो क्या उसकी हवा भी छू नहीं सकता। **महान और युगोपयोगी है उनका वह बलिदान !** जिसने आज के उस युग में नारी को इज्जत से जीने-मरने का ढँग दिया, जिस युग में परदेश तो क्या अपने ही देश की गली-गली में नारी की इज्जत लूटने वाले दरिन्दे भरे पड़े हैं।

सूरज और परिमल जैसी पवित्र-सतियों के कारण ही हमारा भारत महान बन सका। ऐसे ही पवित्र जीवन चरित्रों की स्मृति मात्र से, भारत-वन्शियों का सर गर्व से ऊँचा उठ जाता है। अन्त में न केवल सिन्धू कन्याँओं अपितु उन जैसी हजारों सतियों के चरणों में बारम्बार प्रणाम ! जिनके सत्-चरित्र के बलिदानी गीतों की धुन पर, भारत की धर्म-ध्वजा झूम-झूम कर लहरा रही है।

नादिरशाह द्वारा बन्दी ब्राम्हणों और स्त्रियों को सिन्धीयों ने दिलाई थी मुक्ती -- 1723

ईरानी लुटेरा नादिरशाह और कलात-अफगानिस्तान के नसीरखान ने मिलकर, भारत में हत्या और लूटपाट करने के साथ ब्रज और मथुरा के ब्राह्मणों और स्त्रियों को बन्दी-गुलाम बना लिया था। ईसवी सन् 1723 में नादिरशाह लाहौर से काबुल के रास्ते अपने देश ईरान लौटा।

नसीरखान उन हिन्दू बन्दियों को साथ लेकर, मुल्तान से शिकारपुर-सिन्ध के रास्ते अपने देश ले जाने के लिए शिकारपुर पहुँचा। इसकी सूचना पाकर सिन्ध के प्रसिद्ध **नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी** परिवार के **सेठ केवलराम** (नाऊँमल के तड़दादा) और उनकी धर्मपत्नि **श्रीमती तखत बाई** ने, प्रति व्यक्ति 100 से 250 रुपए तथा लुटरों की फौज को रास्ते के लिए अन्न आदि देकर उन ब्राह्मणों और स्त्रियों को छुड़ाया था। इसमें शिकारपुर सिन्धी-हिन्दू पन्चायत ने भी सहयोग किया था। सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी परिवार की हिन्दुस्तान के लगभग सभी मुख्य शहरों में व्यापारिक कोठियाँ(शाखाएँ) थीं। इन कोठियों के मुन्शियों के माध्यम से उन ब्राह्मणों और स्त्रियों को रास्ते के लिए आवश्यक धन और अन्न आदि भी देकर वापस ब्रज और मथुरा पहुँचाया गया।

•••••••••••••••••••••••••••••••

1750 -- दीवान गिदूमल ने अनोखी अकल से अहमदशाह अब्दाली के हमले से बचाया था सिन्ध को

ईसवी सन् 1700 से 1783 तक सिन्ध में कल्होड़ा वंश के मुस्लिमों का राज था। इस वंश के मियाँ नूर मोहम्मद खान के समय, 1740 में ईरान के नादिरशाह ने सिन्ध पर हम्ला किया। हमले से पहिले खबर मिलते ही नूर मोहम्मद जान बचाकर अमरकोट भाग गया। एक करोड़ रुपए नगद और 20 लाख रुपए वार्षिक कर देने की शर्त पर नूर मोहम्मद को वापस सिन्ध की सत्ता मिली। लगभग 1750 में ईरान में अहमदशाह अब्दाली ने सत्ता में आने के बाद, कर न मिलने के बदले सिन्ध पर हमला करने की सूचना भेजी। हमले की सूचना मिलने पर नूर मोहम्मद ने अपने बुद्धिमान दीवान गिदूमल (मन्त्री) के साथ विचार-विमर्श करने के बाद एक योजना बनाई और उन्हें, सुन्दर शिल्पकारी से सजी बड़ी-बड़ी तीन पेटियों के साथ ईरान भेजा।

दीवान गिदूमल ने अब्दाली की दरबार में सुन्दर पेटियाँ भेंट देते हुए कहा, "अब्दाली साहब ! मैं आपके लिए सिन्ध की नायाब सौगात लेकर आया हूँ। महिरबानी करके इस भेंट को स्वीकार करें।" किन्तु पेटियाँ खुलवाने पर उनमें से हीरे-जवाहरात के बदले केवल मिट्टी ही मिट्टी निकली, जिसको देखकर अब्दाली गुस्से से आग-बबूला हो गया। जिसपर दीवान गिदूमल ने कहा, "सिन्ध की इस मिट्टी में कई हिन्दू और मुस्लिम सन्तों की खाक मिली हुई है, हमारे लिए इस पवित्र-पाक सौगात से बढ़कर कीमती कोई और चीज नहीं है।" यह सुनकर अहमदशाह अब्दाली खुशी से गद्‌गद् हो गया और उसने झुककर, अपने माथे पर सिन्ध की उस पवित्र मिट्टी का तिलक लगाया।

इस तरह दीवान गिदूमल ने अपनी अनोखी अकल से, अहमदशाह अब्दाली के हमले से सिन्ध को बचाया। कल्होड़ा वंश के समय में ही "नीरन कोट" का नाम बदलकर हैद्राबाद रखा गया और दीवान गिदूमल की देख-रेख में पुराने किले के स्थान पर नया किला बनवाया गया। **शेष अगले पृष्ठ पर ...**

सिन्ध का मुक्तिदाता सेठ नाऊँमल होतचन्द भोज़वाणी

सबकी सुन्नत हो गई होती, अगर नाऊँमल सी हस्ती न होती



सेठ नाऊँमल भोज़वाणी

सिन्ध में मुस्लिम कल्होड़ा शासन के बाद 1783 से 1843 तक टालपुर के मुस्लिम शासक मीरों ने शासन किया। वे कुल चार भाई थे और सिन्ध को चार भागों में बाँटने के बाद भी एक-दूसरे के विरुद्ध हत्या आदि करने की सीमा तक लड़ते रहते थे। उनका शासन इतना कमजोर था कि वे, अफगा-निस्तान से निष्काशित होकर शिकारपुर में रह रहे **शाह शुजा**, पन्जाब के **राजा रंजीतसिंह** और अँग्रेजों को प्रति वर्ष लाखों रुपए कर चुकाते थे।

टालपुर के मीरों के समय सिन्ध की आर्थिक स्थिती बहुत ही खराब थी। अधिकाँश स्कूल-कॉलेज, हस्पताल और धर्मशालाएँ आदि सार्वजनिक लोक-कल्याण के सभी भवन सिन्धी-हिन्दू व्यापारियों के द्वारा ही बनवाए गए थे। अँग्रेजों के शासनकाल में भी लोकहित के कार्यों में 98% धन, सिन्धी-हिन्दुओं का ही लगा हुआ था, जबकि उनकी जनसंख्या केवल 27% थी। इसके बाद भी सिन्धी-हिन्दुओं को आए दिन मुस्लिमों की लूट-पाट और अपहरण का शिकार बनाने के साथ जबरदस्ती मुसलमान बना दिया जाता था।

मोहम्मद इब्राहिम जोयो की पुस्तक **शाह सचल सामी** में लिखा है, "धार्मिक हालत यह थी कि कोई भी यह शिकायत करे कि किसी सिन्धी-हिन्दू ने रस्सा शब्द कहा हो या कोई कहे कि मैं वाणियां(व्यापारी) नहीं हूँ तो इसका अर्थ मैं हिन्दू नहीं हूँ मानकर दो मुसलमानों की गवाही पर जबरदस्ती सुन्नतकर उसे मुसलमान बना दिया जाता था। एक हिन्दू महिला ने एक मुसलमान को बेईमान कहा, उससे पूछा गया क्या तुम ईमान रखती हो, उसके हाँ कहने पर उसे मुसलमान बना दिया गया। ऐसे कई उदाहरण हैं।" नागरिक अधिकारों की स्थिती के बारे में बड़े-बूढ़े बताते हैं, "गणमान्य हो या धनवान, किसी भी सिन्धी-हिन्दू को घोड़े पर सवारी करने का अधिकार नहीं था। गधे या खच्चर पर भी सवारी करने वाले सिन्धी-हिन्दू को, मीर परिवार के रिश्तेदारों या सरकारी अधिकारी के सामने आ जाने पर गधे या खच्चर से उतरकर, सड़क के किनारे एक तरफ खड़े होकर सलाम करना पड़ता था। ऐसा न करने पर उसे अपराधी माना जाता था। हिन्दुओं के गणमान्य और धनवान व्यक्तियों को आए-दिन अकारण अपमानित किया जाता था।"

मीरों की अय्याशी का नीचतम प्रमाण यह था कि मीर गुलाम अली ने अपने उस बूढ़े **दीवान सेठ गिदूमल** की कन्या **सदोरी** के साथ जबरन विवाह करना चाहा था। जिसने अपनी अनोखी अकल से कल्होड़ों के समय ईरान के अहमदशाह अब्दाली के हमले से सिन्ध को बचाया था। ऐसे देश-भक्त की कन्या को अपना हिन्दू धर्म बचाने के लिए जहर का प्याला पीना पड़ा था। मीर गुलाम अली ने इसे अपना अपमान मानकर, दीवान गिदूमल की हत्या करवा दी। कल्होड़ा-राज में भी प्रसिद्ध **सूफी सन्त शाह इनायत** को शहीद किया गया। मीरों की शह पर कट्टर-पंथियों ने सेठ नाऊँमल होतचन्द भोज़वाणी के पिता होतचन्द का अपहरण कर तरह-तरह की क्रूर यातनाएँ देने के साथ सुन्नत कर, उसे जबरदस्ती मुसलमान बनाना चाहा था। किसी तरह सेठ होतचन्द भागकर लखपत-गुजरात में जाकर अपने गुमाश्तों-मुन्शियों से मिले और सिन्ध की मुक्ति के बाद ही अपने घर वापस लौटे। ... **शेष अगले पृष्ठ पर** ...

मीरों के समय सिन्ध की आर्थिक स्थिती इतनी अधिक कमजोर थी कि अँग्रेज, सिन्ध को दुर्भाग्यजनक घाटी मानते थे। वे 1803 से 1842 तक चार सन्धियों के द्वारा लाखों रुपए कर के रूप में पाकर सन्तुष्ट थे। चारों मीर भाईयों के बीच खुद को अँग्रेजों का हितैषी सिद्ध करने की होड़ लगी रहती थी। इसलिए अँग्रेज, सिन्ध को अपने अधिकार में करने के लिए जरा भी उत्सुक नहीं थे। जब 1939 में अफगानिस्तान पर अधिकार करने के लिए अँग्रेजों की फौज सिन्ध में पहुँची थी तब मीरपुर खास के मीर शेर मोहम्मद ने अपनी और हैद्राबाद के मीर की फौज को साथ लेकर, हैद्राबाद के गिदू बन्दरगाह के पास अँग्रेजों के गोदाम पर हमला करके लूटपाट करने के बाद आग लगा दी। कर्नल पाटिंजर के सहयोगी लेफ्टीनेन्ट लेकी, जो उस समय इस गोदाम के पास ही रहता था, वह जान बचाकर भाग निकला और बाद में ठट्टे में मौजूद अपनी फौज को लेकर सिन्धू नदी के दाहिने किनारे पर पहाड़ी टेकरी पर बसे **झिरक नगर** में जाकर फौजी छावनी में मोर्चा बाँधा। इस मोर्चे की सूचना पाकर हैद्राबाद के मीर नूर मोहम्मद ने माफीनामा लिखने के साथ 27 लाख रुपए हर्जाना भी देना मन्जूर किया।

सिन्ध में पिछली चार-पाँच पीढ़ियों से देश-विदेश में प्रसिद्ध व्यापारी भोजवाणी परिवार के **सेठ नाऊँमल** के अँग्रेज-अफसरों के साथ पहिले से ही गहिरे सम्बन्ध थे। अँग्रेजों को सिन्ध के रास्ते, अफगा-निस्तान जाने के लिए उनको हर प्रकार की सहायता दी थी। सेठ ने अँग्रेजों को अनाज, घोड़े, ऊँट और खच्चर आदि सवारियों के साथ मजदूरों की व्यवस्था करने के साथ समय-समय पर धन भी उधार दिया।

सिन्धू (अरब) सागर में अँग्रेजी फौज के रेअर एडमिरल **सर फ्रेडरिक मिटलैन्ड** ने कराची पर हमला करने के पहिले सेठ नाऊँमल के परीवार की सुरक्षा करने का आदेश भिजवाया। आदेशानुसार **कर्नल पाटिंजर** ने अँग्रेजी फौज के सिपाहियों को उनकी सुरक्षा के लिए नियुक्त किया। इसके बाद अँग्रेजों ने कराची में **मन्होड़े के किले** पर भारी गोला-बारी की और तीन घन्टों में ही किले की पश्चिमी दीवार ढहाकर, कराची पर कब्जा कर लिया। इसके बाद अँग्रेजी फौज ने **कर्नल आऊटराम** के नेतृत्व में शिकारपुर के रास्ते जाकर, **शाह शुजा** की सहायता से अफगानिस्तान पर हमला किया। **गजनी, काबुल** और **जलालाबाद** पर कब्जा करने के बाद, काबुल की गद्दी पर फिर से शाह शुजा को बिठाया। किन्तु **कलात** के मंगोल सरदार के सामना न कर पाने के कारण उसे वापस शिकारपुर भागना पड़ा।

फरवरी 1843 में खैरपुर के मीर रुस्तम और मीर मुराद अली के बीच झगड़ा हुआ और दोनों लड़ने के लिए फौज जमा करने लगे। मीर मुराद अली ने सर चार्ल्स नेपीयर से मदद माँगी। जिसकी खबर लगते ही मीर रुस्तम भागकर हैद्राबाद पहुँच गया। **सर नेपीयर** की फौज जब पीछा करते हुए हैद्राबाद पहुँची तो मियाणी और दुबेजी-हैद्राबाद में मीरों की ओर से केवल बलोची-लोगों ने फौज का सामना किया। किन्तु अनुभवहीनता के कारण बलोची लोग हारकर भाग खड़े हुए। चारों मीर भी भागकर अपने किले में आकर छिप गए। चारों भाईयों में से किसी ने भी सीधे-सीधे सामना किए बिना, अँग्रेजों की शरण स्वीकार की। जिसके बाद उनकी सारी सम्पत्ति जब्त की गई। बम्बई और कलकत्ते में मुकदमा चलाकर, उन्हें दस-दस साल के लिए देश-निष्काशन की सजा दी गई।

सेठ नाऊँमल ने अपने पिता होतचन्द के साथ हुए निर्मम-अत्याचारों का बदला चुकाने के साथ धर्मान्ध आतन्की मुस्लिम राज से सिन्ध को मुक्ती दिलाने के लिए अपना जीवन खतरे में डालकर, अँग्रेजों को मनचाहे धनादि की सहायता दी। औ र इस तरह 21 फरवरी 1843 के दिन मीरों के आतन्की मुस्लिम राज से सिन्ध को मुक्ती दिलाई। ... **अगले पृष्ठ पर** - सेठ नाऊँमल होतचन्द भोजवाणी परिवार ...

सेठ नाऊँमल होतचन्द भोज़वाणी परिवार

सेठ नाऊँमल के परदादा **सेठ भोजूमल** सराफा और अन्य वाणिज्य-वस्तुओं का व्यापार, सिन्ध-हिन्द के प्रसिद्ध **शाह बन्दर, लाहरी** और **खड़क** बन्दर से करते थे। हिन्दुस्तान में **बम्बई** की कोठी से **बंगाल** और वहाँ से **चीन** तथा **सूरत, पोरबन्दर, कश्मीर** और **मलाबार** में भी उनकी शाखाएँ थी। **ओमान में मस्कत** के गुमाश्ते के माध्यम से **ईराक के बसरा, ईरान** के प्रसिद्ध नगर **बुशहर, शीराज** और **विश्व भर में मोतियों के लिए प्रसिद्ध बहरीन** और **अफगानिस्तान** के **काबुल, कन्धार, हरात, कलात** के सिवा **बलोचिस्तान** और **ईरान** के सीमाई नगर **ग्वादर** और **लस-बेलो**, में उनकी व्यापारी कोठियां थीं। यूरोप के देशों में भी उनका व्यापार फैला था। कुछ सालों के बाद खड़क बन्दर का मुंह समुद्री रेत से ढक गया, जिससे जहाजों का आना-जाना बन्द हो गया। इसलिए सेठ भोजूमल ने सेठ आसूदोमल और अन्य छोटे-बड़े व्यापारियों के साथ मिलकर, **कलाची** नामक छोटे से गाँव के पास **कराची** के नाम से एक नया नगर बसाने के साथ,एक किला भी बनवाया। सभी व्यापारी और अन्य छोटे-बड़े कर्मचारी अपने माल-गोदामों के साथ इस किले में ही रहते थे। सुरक्षा के लिए मस्तक से तोपें मंगवाकर, किले की मुन्डेर पर जमाई गईं। कराची नगर और किला ईसवी सन् 1729 में बसाया गया। सेठ नाऊँमल के पूर्वज **सेठ भोजूमल** के बाद उनके छोटे भाई **केवलराम** ने अपने व्यापार को और अधिक फैलाया। विभिन्न देशों के 500 शहरों में उनके व्यापार की देख-रेख के लिए कुल 400 गुमाश्ते-प्रमुख कर्मचारी थे।

16 वीं सदी से यह प्रसिद्ध धनी परीवार अपनी दानशीलता के लिए भी देश भर में प्रसिद्ध था। 1723 में इसी परीवार के **केवलराम** और उसकी पत्नी **तखत बाई** ने ईरान और अफगानिस्तान से आए लुटेरों नादिरशाह और नसीरखान द्वारा बन्दी बनाए गए मथुरा-ब्रज के ब्राह्मणों और स्त्रियों को धन देकर शिकारपुर में छुड़ाया था। 1811-12 में सिन्ध, कच्छ और मारवाड़ में पड़े भयंकर अकाल के समय, जब रोज कमाने-खाने वाले मजदूरों से लेकर धनवानों तक के पास भी खाने को अन्न नहीं था, तब जाति-धर्म का भेद किए बिना, उन्होंने लगातार 7-8 महीने तक अपने भन्डारों से अन्न का अनोखा दान किया था।

सिन्ध की पद्मिनी - सदोरी ने पिया जहर का प्याला

'**सदोरी**' दीवान गिदूमल की पुत्री थी, जिन्होंने कल्होड़ा वन्श के नूर मोहम्मद के राज के समय, अपनी अनोखी अकल से सिन्ध को ईरान के अहमदशाह अब्दाली के हमले से बचाया था। इसके बाद गुलाम शाह कल्होड़ा ने शासन किया, जिस अय्याश ने देशभक्त दीवान गिदूमल की कन्या-सदोरी के साथ जबरन विवाह करना चाहा था। सदोरी के भाई ने परिवार की सुरक्षा के लिए विवाह करने की सलाह दी। इसपर सदोरी ने कहा, "भैया ! ये सही है कि गुलाम शाह से विवाह करके मैं बेगम बनूँगी, पर मैं यह भी जानती हूँ कि इस मुसलमान से विवाह करने का मतलब जीते-जी नर्क भोगना है। वहाँ स्त्री विलास की वस्तु है-भोग्या है। जबकि हमारी सिन्धू-संस्कृति में स्त्री पूज्या है। यहाँ घर की बहू को लक्ष्मी समझकर, स्वागत-सत्कार किया जाता है। बेगम बनने की अन्धी लालच में पड़कर नर्क भोगने से अच्छा होगा, स्त्री की पवित्रता और अपने घर-परिवार की सुरक्षा के लिए हँसते-हँसते जहर का प्याला पी लूँ।" दीवान गिदूमल के परिवार में इस आतंक पर हुई चर्चा के बाद, सदोरी ने जहर का प्याला पीकर अपना नारी-धर्म निभाने के साथ हिन्दू नारी जाति की लाज रखी।

1857 का स्वतन्त्रता-संग्राम और सिन्ध

1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम के नेताओं में से नाना साहब और तात्या टोपे की सिन्ध-यात्रा के बाद हैद्राबाद और सक्खर में स्वतन्त्रता-संग्राम में तेजी आई। शिकारपुर में इस क्रान्ति के प्रमुख नेता के सरदार अलिफ खान, जेकबाबाद के सरदार बहादुर खान खोसो, दरिया खान जखराणी और सय्यद इनायत शाह। ये चारों नेता गिरफ्तार कर लिए गए। इस दुर्भाग्य के कारण यह संग्राम असफल हुआ। अलिफ खान को तोप से उड़ाया गया। सय्यद शाह, शेष दो साथियों की सहायता से जेल की दीवार फाँदकर भाग निकले। सरदार खोसो और जखराणी के भी भाग निकलने के भय से अँग्रेजों ने दोनों को काले पानी की सजा देकर, अन्डमान-जेल भेज दिया। जब अँग्रेज सरकार ने शिवाजी महाराज के पोते चिन्ना साहब को कराची की सैनिक छावनी में लाकर कैद किया था तब अँग्रेजों की हिन्दू-सेना की दो टुकड़ियों ने हैद्राबाद और सक्खर की छावनियों में विद्रोह किया था।

1859 में नगरपारकर(थरपारकर) में विद्रोह हुआ। राणो(राजा) और मन्त्री कैद किए गए। दो साल मुकदमा चलाने के बाद राणो को 14 और मन्त्री को 10 साल की काले पानी की सजा देकर, अन्डमान-जेल भेज दिया गया।

1876 में उपलब्ध सरकारी रिकार्ड के अनुसार 14 सितम्बर, 1876 के दिन कराची में उपस्थित बम्बई की नेटिव अल्फेन्ट्री की 21 वीं रेजीमेन्ट ने विद्रोह किया था। विद्रोह करने वाले प्रमुख विद्रोहियों को पकड़ा गया और उनमें से 5 को तोप से उड़ाया गया, 12 को फाँसी पर लटकाया गया तथा शेष को काले पानी की सजा देकर अन्डमान जेल भेज दिया गया।

उपरोक्त सभी विद्रोहों में शिकारपुर और सक्खर आदि के सिन्धी व्यापारियों ने विद्रोहियों को भामाशाह की तरह अन्न और धन की सहायता दी थी।

अँग्रेजों के रिकार्ड में इन संग्रामों का उल्लेख किया गया था। किन्तु तथाकथित स्वतन्त्रता की बलिहारी कि स्वतन्त्रता के नाम पर सारा सिन्ध-प्रदेश तो परदेश बन गया, हमारे सरकारी नेताओं ने उसके बलिदानों को भी जान-बूझकर अनदेखा किया। 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम की स्मृति में भारत सरकार द्वारा 10 मई, 1957 के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में प्रकाशित पुस्तक में, सिन्ध की भूमिका का उल्लेख तक नहीं किया गया। यह अन्धी व दोगली नीति, 1947 में तथाकथित स्वतन्त्रता प्राप्त करने के बाद भी जारी रही।

दीवान गिदूमल ने अनोखी अकल से .....

सिन्धू नदी के पास बने इस किले के बाहर एक नया गाँव भी बसाया गया, जिसे "गिदूमल का टन्डा" नाम दिया गया। यहाँ के बन्दरगाह का नाम भी दीवान गिदूमल के सम्मान में "गिदू बन्दर" रखा गया।

सिन्ध सभा द्वारा नव-जागरण : 1882

1857 के स्वतन्त्रता-संग्राम के बाद हिन्दुस्तान में राजा राम मोहनराय के 'ब्रह्म समाज', केशवचन्द्र सेन के 'नवविधान ब्रह्म समाज', श्री दयानन्द सरस्वती के 'आर्य-समाज' और 'प्रार्थना समाज' तथा जस्टिस रानाडे की 'सार्वजनिक सभा' जैसे संगठनों द्वारा नव-जागरण की लहर सिन्ध में भी आई। अँग्रेज सरकार द्वारा घोषित इंडियन वर्नाकुलर प्रेस एक्ट के विरुद्ध जन-चेतना के लिए, सर सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी के द्वारा हिन्दुस्तान के प्रमुख शहरों के साथ कराची की यात्रा से भी सिन्ध की राष्ट्रीय चेतना में वृद्धि हुई।

सिन्ध में नव-जागरण की इस लहर का प्रभाव, 1882 में स्थापित 'सिन्ध सभा' के रूप में हुआ। इस सभा के माध्यम से सिन्धी, मुस्लिम, पारसी, गुजराती, मराठी और बंगाली एक मन्च पर एकत्रित हुए। सिन्ध-सभा के पहिले अध्यक्ष थे सिन्ध के मुक्तिदाता के रूप में प्रसिद्ध सेठ नाऊँमल होतचन्द भोॼवाणी परिवार के सेठ आत्माराम भोॼवाणी। उनके भाई आलूमल टीकमदास भोॼवाणी के साथ अन्य प्रमुख सदस्य थे - राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल, साधू हीरानन्द शौंकीराम आॾवाणी, उनके भाई साधू नवलराय, दीवान दयाराम ॼेठमल (जयरामदास दौलतराम के चाचा), महाराज नैनाराम, दीवान टहलराम खेमचन्द वजीराणी, दीवान कौड़ोमल चन्दनमल खिलनाणी, सेठ हरचन्दराय विशनदास, दीवान उधाराम मूलचन्द, जमशेदजी नादिर, फतेहचन्द आत्माराम, शरीफ सालेह मोहम्मद, ए. कोक, एडुलजी दिनशा, एम.एम. मर्जबान, नागेन्द्रनाथ गुप्त, सहजराम गंगाधर, हसन अली, हीरानन्द मसंद, फतह अली खान, और सभा के सचिव थे दौलतराम ॼेठमल (जयरामदास दौलतराम के पिता)।

राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल, दीवान टहलराम खेमचन्द वजीराणी और सेठ हरचन्दराय विशनदास, पहिले सिन्धी थे जिन्होंने सबसे पहिले बी. ए. एल.एल. बी. (वकालत) की परीक्षा पास की।

सिन्ध सभा के द्वारा 'सिन्ध टाईम्स' (अँगेजी) और 'सिन्ध सुधार' (सिन्धी) नामक दो अखबारें भी प्रकाशित की गईं। इन दोनों अखबारों में सिन्ध के शहरों और दूर-दूर के छोटे-छोटे गाँवों में जन-समस्याओं के साथ अंग्रेज सरकार के द्वारा किए जा रहे अत्याचारों के समाचार और उनके निदान आदि से सम्बन्धित लेख दिए जाते थे। इन लेखों आदि को तैयार करने में राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल की प्रमुख भूमिका थीं, जबकि वे सरकारी कर्मचारी थे। उन्होंने बम्बई के एलफेंस्टन कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी। बम्बई में वे जस्टिस रानाडे, बहरामजी मलबारी, पन्डिता रामा बाई जैसी महान आत्माओं के सम्पर्क में आए। लोकसेवा उनका मूलमन्त्र था, वे सिन्ध में जस्टिस रानाडे की प्रतिमूर्ति थे।

उन्होंने सिन्ध टाईम्स और सिन्ध सुधार के सम्पादन के लिए साधू हीरानन्द जैसे एक अमूल्य हीरे को पत्र लिखकर सिन्ध लौट आने और अखबारों का सम्पादक बनने का आव्हान किया। साधू हीरानन्द ने अखबार के सम्पादक के रूप में देश-सेवा के कार्य को स्वीकार करके, डिप्टी कलेक्टर या सब जज के बाद आगे पदोन्नत्ती पाने के अवसर ठुकरा कर सिन्ध लौटना स्वीकार किया। साधू हीरानन्द ने कलकत्ता यूनिवर्सिटी से बी.ए. की परीक्षा पास की थी। साधू हीरानन्द ने, स्वामी रामकृष्ण परमहंस के निकट सम्पर्क में रहते हुए उनकी सेवा का अवसर प्राप्त किया था। वे, कलकत्ता में केशवचन्द्र सेन के घर में रहने के साथ कभी-कभी 'भारत आश्रम' में भी जाकर रहते थे। वे, श्री सेन की **बैंड ऑफ होप** (आशावादी टोली) के सक्रिय सदस्य भी थे। सिन्ध में आने के बाद भी केशवचन्द्र सेन के साथ उनका सम्बन्ध, पत्र-व्यवहार के माध्यम से बना रहा। साधू हीरानन्द के भाई साधू नवलराय, सरकारी कर्मचारी होने के बाद भी सिन्ध सभा के प्रमुखों में से एक थे।

'सिन्ध टाईम्स' और 'सिन्ध सुधार' के विद्रोही स्वर

सिन्ध सभा की अखबारों सिन्ध टाईम्स और सिन्ध सुधार का सम्पादन कार्य, साधू हीरानन्द को सौंपे जाने के बाद इन अखबारों की लेखनी की धार और अधिक नुकीली व तीखी हो गई थी। 1884 में सिन्ध टाईम्स के मई अंक के सम्पादकीय की शब्दावली इस प्रकार थी," हिन्दुस्तान ने 1882-83 में इंग्लैंड को 4.5 **करोड़ पाऊंड** भेंट स्वरूप दिए और 1883-1884 में अधिक नहीं तो इतने की ही लूट मचेगी। तुलनात्मक रूप से हिन्दुस्तान में नादिरशाह की लूट **3 करोड़ 20 लाख पाऊंड** से अधिक नहीं थी और ये लूट हर साल नहीं होती थी, किन्तु अब हिन्दुस्तान को हर साल लगभग **4.5 करोड़ पाऊंड** देने पड़ेंगे। **डॉ. हन्टर** के शब्दों में जब, "हिन्दुस्तान की पाँच प्रतिशत जनता आधे पेट-भोजन पर पलती है।" तब यह लूट कितने आश्चर्य की बात है। हिन्दुस्तान एक गरीब देश है, इससे कोई असहमत न होगा, परन्तु हिन्दुस्तान में यह गरीबी तो इसलिए आई है कि उसके धन-भन्डार को हर साल लूटा जा रहा है। ये लूट ही हिन्दुस्तान के कष्टों का कारण है। इसके पक्ष में अजीब तर्क दिए जा रहे हैं।

यदि अँग्रेजों का उद्देश्य हिन्दुस्तान में सुख-शान्ति और आनन्द का वातावरण लाना है तो उन्हें चाहिए कि इस देश की बढ़ती गरीबी और विवशता पर ध्यान दें। अपनी आवश्यकताओं में कटौती कर खर्च घटाएँ। देश का रक्त चूसकर इसे मौत की सेज पर लेटाने वाले घावों पर मरहम लगाएँ।"

सिन्ध में इंडियन नेशनल काँग्रेस की हलचल - 1885

1883 में हैद्राबाद-सिन्ध में **सिन्ध सभा** के सदस्यों द्वारा 'ब्रह्म समाज' की स्थापना के साथ इसका एक विशाल भवन भी खड़ा किया गया। 1885 में राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के बाद सिन्ध सभा के सदस्यों ने सदस्यता इसकी ली। बम्बई में काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन में दीवान दयाराम ज़ेठमल, विशनदास पारवाणी और दीवान उधाराम मूलचन्द ने सिन्ध के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया था। इस अधिवेशन में सारे देश से कुल 72 प्रतिनिधी शामिल हुए थे। 1886 के कलकत्ता में हुए काँग्रेस के दूसरे अधिवेशन में साधू हीरानन्द और दीवान गोबिन्दबख्श ने, सिन्ध के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

सभा द्वारा जनवरी, 1887 में शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ राष्ट्रीय चेतना के लिए कराची में दीवान दयाराम ज़ेठमल के नेतृत्व में **डी. जे. सिन्ध आर्टस् कॉलेज** नामक पहिले स्वदेशी शिक्षा केन्द्र की स्थापना की गई। इस महत्वपूर्ण कार्य में राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल, दीवान मेठाराम शाहाणी और दीवान साधू नवलराय का विशेष सहयोग था। दीवान दयाराम ज़ेठमल, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान करने वालों में अग्रणी नेता थे, इसलिए वे कराची के सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति थे, उन्हें **समाज के पिता** के रूप में देखा जाता था। उन्होंने राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के बाद कराची में काँग्रेस स्टैंडिंग कमेटी स्थापित की, जिसके सेक्रेटरी श्री नागेन्द्रनाथ गुप्त बनाए गए। दीवान दयाराम ज़ेठमल, बम्बई लेजिसलेटिव काउन्सिल के सदस्य मनोनीत किए गए। 16 अगस्त, 1887 के दिन उनके स्वर्गवास के बाद इस पद पर दीवान उधाराम मूलचन्द को मनोनीत किया गया। उन्होंने काँग्रेस का कार्य भार भी सम्भाला, वे कराची म्युंसिपल के अध्यक्ष भी चुने गए। 1887 में कराची म्युंसिपल-नेताओं की त्रिमूर्ति के रूप में दीवान टहलराम खेमचन्द, सेठ हरचन्दराय विशनदास और नागेन्द्रनाथ गुप्त चुने गए।

काँग्रेस के प्रत्येक अधिवेशन में सिन्ध के प्रतिनिधि अवश्य भाग लेते थे। 1888 के इलाहाबाद में हुए अधिवेशन में दीवान टहलराम खेमचन्द और हरचन्दराय विशनदास और 1889 में बम्बई अधिवेशन में साधू हीरानन्द ने, सिन्ध के प्रतिनिधि के रूप में भाग लिया।

सिन्ध में काँग्रेस का पहिला प्रान्तीय सम्मेलन - 1895

दीवान टहलराम खेमचन्द के अथक प्रयासों के फलस्वरूप 1895 में, अन्य प्रान्तीय सम्मेलनों की तरह सिन्ध में काँग्रेस का पहिला प्रान्तीय सम्मेलन कराची में हुआ। इस सम्मेलन में सिन्ध के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसकी स्वागत समिति के चेयरमेन थे जनाब अलह बख्श सूमरो और सम्मेलन के अध्यक्ष थे श्री नारायण जी. चन्दावरकर। इस सम्मेलन को सफलता प्रदान करने वालों में प्रमुख थे - दीवान टहलराम खेमचन्द, दीवान दौलतराम ज़ेठमल, सेठ हरचन्दराय विशनदास, दीवान हीरानन्द खेमसिंघ, दीवान लालचन्द नवलराय, जनाब मजालुदीन अब्दुल्ला, ठाकुरदास खेमचन्द, हिमथसिंघ गजसिंघ, लेखराज तिलोकचन्द, प्रो. बी. जी. बादशाह, दीवान ठाकुरदास और जनाब गुलाम हुसैन छागला। इस सम्मेलन में चार प्रस्ताव पास किए गए। (1) कार्यकर्ताओं और गैर कार्यकर्ताओं की एक बैठक बुलाकर समस्याओं का निदान किया जाए। (2) बम्बई काउंसिल में जागीरदारों और जमींदारों के रूप में केवल एक सदस्य की अपेक्षा अधिक सदस्य लिए जाएँ। (3) सिन्ध प्रोवेन्शियल सोर्स में न्याय विभाग में अधिकतम पघार चार सौ और कर-राजस्व विभाग में सात सौ से बढ़ाकर गुजरात, महाराष्ट्र और कर्नाटक की तरह एक हजार की जाए।(4) कराची में सदर कोर्ट के स्थान पर हाईकोर्ट स्थापित की जाए।

पूना में प्लेग - कौड़ोमल चन्दनमल की अगवानी में सहायता

1897 में पूना में फैले प्लेग की भयंकर विपदा के समय, सिन्ध से प्रसिद्ध समाजसेवी दीवान कौड़ोमल चन्दनमल खिलनाणी की अगवानी में सिन्ध के अनेक कार्यकर्ता पूना गए थे। दीवान कौड़ोमल की सेवाओं के सम्मान स्वरूप अँग्रेज सरकार ने उन्हें 'राय साहब' की मानद उपाधि से सम्मानित किया था।

एशियाई देशों में नई लहर - बंगाल विभाजन : 1905

1885 से 1905 तक दुनियाँ के साथ हिन्दुस्तान में भी कुछ महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। इन घटनाओं में विशेष घटना थी - छोटे से देश जापान द्वारा रूसी जारशाही को परास्त करना। यूरोप की औद्योगिक तकनीक और आधुनिक हथियारों के निर्माण के साथ आधुनिक युद्ध-कला की नकलकर, जापान ने स्वदेशी सामान के साथ हर क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की। जो विकास प्राप्त करने में यूरोपीय देशों को दो सौ साल लगे, जापान ने वह केवल तीस साल में ही प्राप्त कर, सारी दुनियाँ को आश्चर्य-चकित कर दिया। इससे पहिले यूरोप की अँग्रेज, फ्रेन्च, रूसी, डच और पोर्चगीज जातियाँ ऐसे समझती थीं जैसे ईश्वर ने उन्हें एशियाई देशों पर हमेशा राज करने का वरदान और आदेश दिया हो। परन्तु 1905 में उनका यह घमन्ड, छोटे से देश जापान ने तोड़ दिया। 1893 में एक और घटना हुई - अमरीका के शिकागो में हुए विश्व धर्म सम्मेलन में युवा स्वामी विवेकानन्द के द्वारा, भारतीय वैदिक ज्ञान की श्रेष्ठता सिद्ध करना। स्वामी विवेकानन्द की भूमिका इतनी अधिक प्रभावशाली थी कि वे लगातार तीन साल तक सारे यूरोप को वैदिक ज्ञान से धन्य करते रहे। इन घटनाओं से सारे एशियाई देशों की जनता में स्वाभिमान और आत्मविश्वास जाग उठा।

ऐसे समय में काँग्रेस की अब तक की नीतियों से, काँग्रेस के कई कार्यकर्ता सोचने को बाध्य हुए कि हर साल सम्मेलन के बाद सरकार को अर्जी देने का काम, हमारे ही लूटे हुए धन में से कुछ बचे-खुचे टुकड़ों की भीख माँगने जैसा अपमान जनक काम है। उनके मन में क्रान्तिकारी विचार पनपने लगे। जन-समुदाय में भी अँग्रेज सरकार के प्रति आग सी भड़कने लगी। 1905 में हुए बंगाल-विभाजन ने घी डालकर इस आग को और भी अधिक भड़का दिया।

विद्रोही कवि -- तोलाराम मेंघराज बालाणी 'आजिज'

सिन्ध-साहिती(नवाबशाह) जिले के नौंशहरो के श्री तोलाराम मेंघराज बालाणी, थे तो नवयुवक किन्तु वे जैसे एक आग का शोला थे। क्रान्तिकारी कवि और नाटककार होने के साथ वे विद्रोही पत्रकार भी थे।

वे सिन्ध के ऐसे पहिले नवयुवक थे, जिन्होंने स्वराज और स्वदेशी का संदेश, छोटे-छोटे गाँवों तक पहुँचाया। वे, 1905 में जब नव विद्यालय के छात्र थे, तब श्री लालचन्द अमरडिनोमल जगत्याणी शिक्षक के रूप में छठवीं कक्षा में पारसी पढ़ाते थे। उनके अनुसार तोलाराम न केवल सिन्धी अपितु अँग्रेजी और पारसी में भी शायरी लिखते थे। वे, डॉ. चोइथराम गिदवाणी और लालचन्द अमरडिनोमल के साथ मिलकर, देश-भक्ति का घर-घर अलख जगाने के लिए नाटक मंचित करते थे। उन्होंने 'माता', 'सदाईं सिन्ध' और अँग्रेजी में 'वाईस ऑफ इंडिया' नामक तीन अखबारें निकालीं, जिनके सम्पादक वे खुद थे। उस समय सरकार ने नौंशहरो में एक हाई स्कूल खोला जिसका नाम **मदरसा** रखा। इस साम्प्रदायिक नामकरण पर उन्होंने सरकार के विरुद्ध जनसभाओं में भाषण देने के साथ-साथ एक बहुत ही भड़काऊ लेख अपनी अखबार में लिखा। जिस पर हैदराबाद के कलेक्टर ने उनके विरुद्ध 124 की धारा के तहत केस चलाने का विचार किया किन्तु उप-कलेक्टर दीवान कौड़ोमल खिलनाणी के समझाने पर कलेक्टर ने तोलाराम की प्रसिद्धि और जनता में विद्रोह-भड़कने के भय से, उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री बालाणी ऐसे विद्रोही कवि थे जिनकी लिखी 'मुल्क मदाह' नामक देशभक्ति गीतों की एक पुस्तक, अँग्रेज सरकार ने 1907 में प्रतिबन्धित कर जब्त की थी। इस कारण प्रकाशक डर गए और उनकी किसी भी सामग्री को प्रकाशित करने से इन्कार कर दिया, किन्तु उन्होंने हार नहीं मानी और अपने हाथ से लिखकर, दोनों अखबार लिथो-प्रेस पर छापने शुरू किए।

रोलट-एक्ट के विरुद्ध लेख छापने के कारण श्री तोलाराम बालाणी के साथ उनके सहयोगी श्री जेठमल परसराम, श्री हरीराम माड़ीवाला और श्री दुर्गादास आडवाणी को जेल की सजा दी गई।

उन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता, विदेशी शराब, कपड़े और स्वदेशी वस्तुओं के विषय में बहुत ही प्रभावकारी रचनाएँ लिखीं। उन्होंने छोटी-छोटी पुस्तकें भी लिखीं जिनमें प्रमुख थीं-दादा भाई नौरोजी, तालीम जो तारो, कौम खे केरु था बणाइनि, नींहं जे रंग सां मींहं जी जंगि, मधुर मदाह, मुल्क मदाह और ज्ञान गुलजारी आदि। उनके शिक्षक रहे लालचन्द अमरडिनोमल, दीवान कर्मचन्द हिङोराणी और डॉ. चोइथराम गिदवाणी के अनुसार,"तोलाराम को गद्य सहित पद्य में ईश्वरीय वरदान प्राप्त था।" क्रान्तिवीर शहीद खुदीराम बोस को फाँसी दिए जाने के बाद, हैदराबाद की गिदूमल पाठशाला में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में डॉ. गिदवाणी ने सम्बोधित करते हुए श्री बालाणी की लिखी एक कविता के बोल गाकर सुनाए -

आ मिलो मैदान में जौहर दिखाने के लिए, जौहर दिखाने के लिए और वीर बनने के लिए।
मत हटो, अय्यार के जुल्मों-सितम से भाईयों! हम फकत पैदा हुए हैं आजमाने के लिए।।

वे, अँग्रेजी शासन काल में सारे सिन्ध के जन-जन में अपनी ओजस्वी वाणी से देश-भक्ति और आत्म-बलिदान का मन्त्र फूँकने वाले सिन्ध के पहिले विद्रोही कवि थे। उनका जन्म 1884 में दीवाली के दिन हुआ था। मात्र 28 वर्ष की युवावस्था में 13 जुलाई,1913 के दिन, वे स्वर्ग सिधार गए और इस प्रकार सिन्ध ने स्वदेशी आधारित आत्मनिर्भरता का संदेश देने वाला एक अनोखा देशभक्त खो दिया। उनके बाद बालाणी परिवार के सेठ तेजूमल, पारूमल, चेतनदास और नारायणदास ने यथाशक्ति देश-हितैषी कार्यों को जारी रखा।

स्वदेशी आंदोलन और जेल-यात्राएँ : 1910

गांधीजी से बहुत पहिले ही सिन्ध में वीर सावरकर की प्रेरणा से स्वदेशी आँदोलन शुरू हो चुका था। विदेशी माल की होली जलाना और उसके स्थान पर स्वदेशी सामान के निर्माण और प्रचार के साथ स्वदेशी शिक्षा पद्धति के शिक्षा-केन्द्र स्थापित करने का दौर भी शुरू हो चुका था। 1905 से शुरू हुई आत्मनिर्भरता की इस लहर के सूत्रधार थे-आचार्य जे. बी. कृपलाणी, प्रोफेसर जंव्हरमल मनसुखाणी जो कामागाटामारू जहाज केस में सजा काटने के बाद, स्वामी गोविन्दानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए और प्रसिद्ध साहित्यकार लालचन्द अमरडिनोमल। ये लालचन्द अमरडिनोमल वही थे जिन्होंने वीर नाथूराम गोड़से की तरह **अपनी अस्थियाँ अखन्ड भारत की सिन्धू नदी में विसर्जित करने की वसीयत की थी।** इस प्रसिद्ध त्रिमूर्ति के सिवा स्वदेशी के प्रचारक नेताओं में प्रमुख थे महाराज विष्णू शर्मा, जिन्होंने पढ़ाई बीच में ही छोड़कर, सिन्ध के हैदराबाद में स्वदेशी वस्तुओं की दुकान खोली। इससे पहिले वे, बनारस में पढ़ते थे, जहाँ कई देश-भक्त बंगाली बन्धुओं के साथ उनके सम्बन्ध बने। सक्खर में वीरूमल बेगराज के प्रयासों से स्वदेशी वस्तुओं की सहकारी दुकान खोली गई। सेठ चेटूमल हरीराम ने शिकारपुर और सक्खर में स्वदेशी कपड़ा उद्योग स्थापित किया। आचार्य कृपलाणी के भाई वरूमल ने हैदराबाद में स्वदेशी स्टोर खोला। यह स्वदेशी स्टोर, युवा क्रान्तिकारियों का गुप्त आश्रय और बैठकों का केन्द्र था।

खादी वस्त्र पहिनना, स्वदेशी व्यक्ति की पहिचान सा बन गया। विशेष कर शिक्षण-संस्थाओं के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं और शिक्षकों तथा विद्यार्थियों केशरीर पर खादी ही खादी दिखाई पड़ती थी। दीवान दयाराम गिदूमल, दीवान प्रभदास, दीवान कौड़ोमल चंदनमल खिलनाणी आदि जैसे वयोवृद्ध नेताओं का खादी एक प्रमुख पहिनावा था। **ब्रह्म समाज, आर्य समाज, देव समाज, थियासाफिकल सोसायटी** जैसी प्रमुख संस्थाओं के साथ अन्य छोटी-बड़ी संस्थाओं के सभी छोटे-बड़े कार्यकर्ता खादी ही पहिनने लगे थे। इनके साथ जन-साधारण भी खादी-वस्त्र पहिनकर स्वाभिमान और गौरव का अनुभव करने लगा। स्वदेशी वस्त्र-निर्माण एक उद्योग के रूप में स्थापित हो गया। सभी वर्ग के लोगों के लिए यह उद्योग, धन कमाने का एक साधन बन गया। इससे सिन्ध की प्राचीन वस्त्र-निर्माण कला जो मुस्लिम और फिर अँग्रेजों के समय मृत सी हो गई थी, वह फिर से जी उठी।

खादी वस्त्रों के साथ लोगों ने विदेशी खान्ड का बहिष्कार करते हुए, स्वदेशी खान्ड न मिलने पर बिना खान्ड के दूध पीना शुरू किया। शीघ्र ही स्वदेशी खान्ड(शक्कर) का निर्माण भी एक उद्योग की तरह पनपने लगा। साथ ही गुड़ बनाने के काम में भी तेजी आने लगी। खान्डसारी का उपयोग भी होने लगा। गुड़ का उपयोग इतना बढ़ गया कि सक्खर और कराची में गुड़ की मंडियाँ तक लगने लगीं। इससे अँग्रेज सरकार को बहुत अधिक आर्थिक हानि होने लगी, जिसका बदला चुकाने के लिए उसने स्वदेशी प्रचारकों को एन-केन प्रकारेण सजा देने की शुरूवात की। सिन्ध में स्वदेशी आंदोलन के चलते सबसे पहिले 12 जनवरी, 1910 में धारा 124 के तहत गोवर्धन शर्मा को 5 साल, वीरूमल बेगराज और शिकारपुर के सेठ चेटूमल हरीराम को 3-3 साल जेल की सजा दी गई। इस धारा में सरकार के विरुद्ध विद्रोह भड़काने के अपराध में फाँसी की सजा तक दी जा सकती थी। उस समय गोवर्धन शर्मा की आयु मात्र 20 साल, वीरुमल बेगराज और सेठ चेटूमल हरीराम की आयु 35 साल थी। स्वदेशी आन्दोलन के तहत हिन्दुस्तान भर में सर्वप्रथम स्वदेशी बिस्केट का कारखाना प्रसिद्ध जे.बी. मंघाराम के नाम से शुरू हुआ। लक्की फाईव के नाम से स्वदेशी सिगरेट, सर्वप्रथम सक्खर में ही बनने लगी थी।

स्वदेशी शिक्षा केन्द्र - क्रान्तिकारियों के आश्रय स्थान

सिन्ध में स्वदेशी शिक्षा पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए कराची में **गुरूकुल** और 1910 में हैदराबाद में **ब्रह्मचर्य आश्रम**, सक्खर में **आचार्य कुल** और शिकारपुर में **ब्रह्मचर्य आश्रम** स्थापित किया गया। हैदराबाद के ब्रह्मचर्य आश्रम में गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार की पद्धति के अनुसार शिक्षा दी जाती थी। इस आश्रम की समिति के दो सचिव थे, एक महाराज कालीदास और दूसरे डॉ. चोइथराम गिदवाणी। उस समय डॉ. गिदवाणी हैदराबाद के मेडीकल स्कूल में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। यह आश्रम सही अर्थों में देश-भक्ति के प्रचार-प्रसार का प्रमुख केन्द्र बन गया था। यह आश्रम, देश पर बलिदान होने वाले क्रान्तिकारी युवाओं का आश्रय स्थान भी था। आचार्य जे. बी. कृपलाणी और जंव्हरमल मनसुखाणी अर्थात स्वामी गोविंदानन्द छुट्टियों के समय इस आश्रम में आते-रहते थे। जब श्री काका कालेलकर, क्रान्तिकारियों के साथ सम्बन्ध होने के कारण बड़ोदा से भूमिगत हो गए थे, तब आचार्य कृपलाणी ने उन्हें इस ब्रह्मचर्य आश्रम में आकर रहने का निमन्त्रण दिया था। काका कालेलकर और आचार्य कृपलाणी के बीच, फर्गुसन कॉलेज में पढ़ते समय मित्रता हुई थी। काकाजी, यहाँ स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए, जहाँ उनका परिचय संस्कृताचार्य के रूप में कराया गया।

ब्रह्मचर्य आश्रम में बंगाल से स्वामी अरविन्द घोष द्वारा प्रकाशित 'वन्दे मातरम' व 'कर्मयोगी' जैसे प्रसिद्ध समाचार पत्र, पढ़कर सुनाए जाते थे। ब्रह्मचर्य आश्रम में लगभग 40-50 लोगों के रहने की स्थाई व्यवस्था थी। जिसमें रहने वाले क्रान्तिकारियों के लिए बिस्तर, पलंग आदि फर्नीचर के साथ पहिनने के कपड़े और भोजन की व्यवस्था, शहर के पूंजीपतियों के सहयोग से की जाती थी। हर महीने सहयोग राशि देने वाले कई धनवान थे, जिसको जमा करने का कार्य डॉ. गिदवाणी करते थे। कई धनवान खुद, जरूरत का अनाज और कपड़े आदि पहुँचाया करते थे।

कराची में अखिल भारतीय काँग्रेस सम्मेलन - 1913

कराची में काँग्रेस के 28 वें अखिल भारतीय सम्मेलन में गरम दल के लाला लजपतराय, पंडित मदन मोहन मालवीय, एडुलजी दिनशा, मोहम्मद अली जिन्ना, सर आगा खान, लालू भाई सामलदास सहित देश भर से 125 प्रतिनिधि पधारे थे। मैसूर के नवाब सय्यद मोहम्मद की अध्यक्षता में हुए इस सम्मेलन में पधारे काँग्रेसियों के आदर-सत्कार के लिए पूरे सिन्ध से मुस्लिम प्रतिनिधियों सहित लगभग 500 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। स्वागत समिति के चेयरमेन थे श्री हरचन्दराय विशनदास और जनरल सेक्रेटरी थे रईस गुलाम मोहम्मद भिरगुड़ी तथा हीरानन्द खेमसिंघ। सम्मेलन की सफलता को सराहते हुए काँग्रेस के तत्कालीन जनरल सेक्रेटरीएडुलजी दिनशा ने कहा था, "ऐसा कहने से रह नहीं सकता कि जिस लगन और जोश के साथ कराची काँग्रेस इजलास का बन्दोबस्त किया गया है, वो निहायत ही सराहनीय है।"

इस सम्मेलन में लाला लजपतराय की निडरता के दर्शन उनके इन शब्दों से हुए, "ब्रिटिश कुत्ते उन्हें ठोकर मारते हैं जो इनको पुचकारते हैं और जो इनको पुचकारते हैं ये उनको ठोकर मारते हैं।" पंजाब केसरी लाला लजपतराय ने इस समय सिन्ध के विभिन्न शहरों की यात्रा भी की थी। भव्य स्वागत करते हुए उन्हें दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों की सहायता के लिए कराची में 20 हजार रुपए तथा शिकारपुर में सिन्धी धनवानों की तरफ से 10 हजार रुपए की थैली भेंट की गई। कराची सम्मेलन के बाद हैदराबाद के रानी बाग में पंडित मदन मोहन मालवीयजी का भाषण सुनने हजारों लोग उपस्थित थे। उन्हें नगरवासियों की तरफ से महाराज नैनाराम शर्मा के द्वारा संस्कृत में लिखा 'मानपत्र' भेंट किया गया।

कामागाटामारू जहाज केस-1913

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर गोरी (अँग्रेज) सरकार के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए, बाबा गुरूदत्त सिंह की अगवानी में कलकत्ता से कामागाटा मारू नामक एक जापानी जहाज भाड़े पर लिया गया, जिसमें गोला-बारूद भरा गया था। अफ्रीका की गोरी सरकार ने इस जहाज को वेनकुअर के बंदरगाह में घुसने से मना कर दिया। इसलिए जहाज वापस कलकत्ता लाना पड़ा। जहाज के क्रान्तिकारियों के साथ प्रो.जंव्हरमल मनसुखाणी(स्वामी गोविंदानन्द) और उनके छोटे भाई नारायणदास बन्दी बना लिए गए। उनपर कामागाटा मारू जहाज केस चलाकर, 5-5 साल का कारावास दिया गया। बाबा गुरूदत्त सिंह किसी तरह भाग निकले और वेश बदलकर हैद्राबाद-सिन्ध में पं. लोकराम शर्मा और पं. विष्णू शर्मा के घर में भूमीगत होकर रहे। अँग्रेज सरकार द्वारा बाबा गुरूदत्त सिंह का पता देने वाले को 40 हजार रुपए देने का पुरस्कार घोषित किया गया था। जंव्हरमल मनसुखाणी ने जेल की सजा काटने के बाद सिन्ध-हैदराबाद में आकर **रामकृष्ण आश्रम** और **ब्रह्मचर्य आश्रम** की स्थापना की और स्वामी गोविंदानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे आचार्य कृपलाणी और प्रसिद्ध जमींदार खेमचन्द बालाणी के साथी थे। बालाणी के साथ मिलकर, उन्होंने 'आनन्द' और 'शक्ति' नामक दो पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया।

आजाद हिन्द सरकार-1915

देश-धर्म पर स्वधर्म त्याग कर आदर्श उदाहरण दिया डीयो कृपलाणी ने

अँग्रेजों से हिन्दुस्तान को आजाद कराने के लिए प्रसिद्ध क्रान्तिकारी ओबेदुल्ला सिन्धी ने 1915 में काबुल जाकर, आजाद हिंद सरकार का गठन किया था। इसके अध्यक्ष अलीगढ़ के राजा महेन्द्र प्रताप सिंह और प्रधानमन्त्री थे भोपाल के बरकतउल्ला भोपाली और गृहमन्त्री खुद ओबेदुल्ला सिन्धी थे। इस सरकार ने 12 हजार कबाइली सेना तैयार कर ली थी। आजाद हिंद सरकार को जर्मनी, तुर्की और अफगानिस्तान से विशेष सहयोग मिला। इसके नेता कामरेड लेनिन से भी मिल चुके थे। यह संस्था गुप्त संदेश भेजने के लिए 'रेशमी रुमालों' का प्रयोग करती थी। इन रेशमी रुमालों के प्रयोग में डीयो कृपलाणी की प्रमुख भूमिका थी। इस सिलसिले में पुलिस ने हैदराबाद के मुखी जेठानन्द के घर की तलाशी ली थी। ये क्रान्तिकारियों को गुप्त सहायक थे। **रेशमी रुमाल** नामक फिल्म, इसी आझाद हिन्द सरकार की कहानी पर बनी थी।

हिन्दू-मुस्लिम धर्म का भेद आजादी के लिए रुकावट न बने इसलिए डीयो कृपलाणी(आचार्य कृपलाणी के बड़े भाई)अथवा शेख अब्दुल रहीम और पन्जाबी सिक्ख-ओबेदुल्ला सिन्धी, हिन्दू धर्म छोड़कर मुसलमान बन गए थे। ओबेदुल्ला सिन्धी, पंजाब के सियालकोट में जन्में थे, सिन्ध की भूमि से विशेष प्रेम था, इसलिए सिन्ध को अपनी कर्मभूमि बनाकर, इन्होंने अपना नाम ओबेदुल्ला सिन्धी रख लिया था। डीयो (दिया) कृपलाणी ने इस सरकार के गठन हेतु धन जुटाने के लिए अपनी पुत्री के विवाह हेतु रखे गहनों के साथ अपनी पत्नी के गहने और घर का कीमती साज-सामान बेच दिया था।

राष्ट्रीय चेतना बम्बई से अधिक सिन्ध में -- महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी ने सिन्ध की चार बार यात्रा की थी। 1916 में पहिली सिन्ध-यात्रा के बाद उन्होने बम्बई पहुँचकर पत्रकारों से कहा था, "राष्ट्रीय चेतना बम्बई से अधिक सिन्ध में दिखलाई दी।"

गाँधी से पहिले हरकिशनदास पारदासाणी ने किया था खादी-प्रचार

गांधीजी से बहुत पहिले ही 1917 में नवाबशाह-साहिती जिले के भिरियन गाँव में खादी-प्रेमी श्री हरकिशनदास पारदासाणी ने सिन्ध में खादी-प्रचार का श्रीगणेश कर दिया था। सिन्ध के व्यक्तिगत पाठशालाओं में चर्खे पर सूत कातने का नियम था। कई पाठशालाओं में खादी-उद्योग भी लगाए गए थे। छात्र, अपने हाथ से खादी के वस्त्र बुनते थे। सिन्ध के कई शहरों व गावों में खादी-केन्द्र स्थापित किए गए थे। इस सम्बन्ध में श्री मेठाराम हरूमल खिलनाणी अपनी पुस्तक, आजादीअ लाइ आंदोलन में लिखते हैं, "हरकिशनदास, भिरियन गाँव में निवासरत थे और वे टन्डो आदम गाँव में अँग्रेजी स्कूल के प्रधानाचार्य थे। उन्होंने इस सरकारी नौकरी का त्याग करने के बाद खादी के प्रचार को अपना धर्म समझ लिया था। उन्होंने इस विषय पर एक छोटी सी पुस्तक छपवाई थी। जिसमें बताया गया था," खादी के पहिनने से गृह-उद्योग पनप सकेंगे एवं गरीबों को रोजगार मिलेगा। देश का जो धन विदेशी कपड़ों की खरीदी के कारण बाहर जा रहा है, वह देश में ही रहेगा और बड़ी बात यह कि इससे स्वास्थ्य पर भी अच्छा प्रभाव पड़ेगा।"

वे खुद खादी के वस्त्र पहिनकर, सारे सिन्ध में प्रचार करते थे। उन्होंने 1920 में भिरियन गाँव में खादी-उद्योग भी स्थापित किए थे, जहाँ पर छात्र खादी बुनने का काम सीखते थे। साहिती और थरपारकर जिले, खादी-उद्योग के प्रमुख केन्द्र थे। साहिती जिले के बेराणी, शहदादपुर, टन्डो आदम, नौंशहरो, दौलतपुर, हालाणी और मियाणी में खादी के उद्योग थे। इसके सिवा हर गाँव में सूत कातने के केन्द्र थे।

विदेशी वस्त्रों को घरों से जमाकर, होली जलाने के सिवा कार्यकर्ता खादी की बिक्री के लिए कन्धों पर खादी के थान लेकर घर-घर बेचने निकलते थे। यह कार्य प्रान्तीय सरकारों के गठन के बाद तक जारी था। सिन्ध के मुख्यमन्त्री **श्री अलहबख्श सूमरो** भी खादी बेचने वाली टोलियों में शामिल थे।

एक और स्वदेशी-प्रचारक परसराम बालाणी

1921 में नवाबशाह के नौंशहरो के जमींदार परिवार के परसराम नारायणदास बालाणी ने जमींदार परिवार के सदस्य होने के बाद भी संकल्प कर रखा था कि जब तक देश में स्वराज नहीं आता तब तक वे नंगे-पाँव चलते रहेंगे। तेज गर्मी के मौसम में भी वे नंगे-पाँव तिलक स्वराज-फँड के लिए धन जमा करते फिरते थे। ऐसे तपस्वी कर्म के कारण वे बीमार हुए और 1924 में स्वर्ग-सिधार गए। वे, नवाबशाह जिला काँग्रेस कमेटी के ज्वाइंट सेक्रेटरी थे। वे, नवाबशाह के प्रसिद्ध बालाणी परिवार के सदस्य थे।

होम रूल के बदले रोलट एक्ट और जलियाँवाला नरसंहार

1914 में अँग्रेजों और जर्मनी के बीच यूरोप में पहिला विश्व-युद्ध शुरू हुआ। बम्बई में बम्बई के गर्वनर ने एक कान्फ्रेंस बुलवाई, जिसमें हिन्दुस्तानी सेना से सहायता लेने के लिए एक प्रस्ताव लाया गया। लोकमान्य तिलक ने इस प्रस्ताव में अँग्रेज सरकार से, विश्व-युद्ध की समाप्ति के बाद हिन्दुस्तान में होम रूल लागू करने का वचन देने की शर्त रखी। किन्तु गर्वनर ने यह वचन दिए बिना प्रस्ताव पास करवा लिया। इस कारण लोकमान्य तिलक और उनके कई समर्थकों ने काँग्रेस छोड़ दी। महाराज लोकराम शर्मा ने हिन्दू अखबार में लिखा, "जब तक हिन्दुस्तान को स्वतन्त्रता नहीं मिलती, तब तक हिन्दुस्तान भी विश्व-युद्ध में सहायता नहीं देगा।" इस पर हैदराबाद के कलेक्टर ने उन्हें बुलाकर, सेना के भरती-कार्य में बाधा उत्पन्न करने वाले ऐसे विचार भविष्य में न लिखने की चेतावनी दी।

... शेष अगले पृष्ठ पर ...

काँग्रेस में इस विषय पर फूट पड़ने के बाद भी अहिंसा के पुजारी महात्मां गाँधी ने अँग्रेजों का साथ दिया और कहा, "विश्व-युद्ध के कारण जब अंग्रेज मुसीबत में हैं, तब हमें उनके लिए समस्याएँ पैदा नहीं करनीं चाहिए।" गाँधीजी अँग्रेजों के लिए सेना में हिन्दुस्तानियों को भरती भी करने लगे। जबकि लोकमान्य तिलक के सिवा कई अन्य नेता, अँग्रेजों की नीयत का विश्वास नहीं करते थे।

1918 में विश्व-युद्ध समाप्त हुआ। इस युद्ध में 10 लाख हिन्दुस्तानी सैनिकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे अँग्रेजों की जीत सम्भव हो सकी। अंग्रेजों ने सैनिक भरती करते समय घोषणा की थी कि वे यह युद्ध हिन्दुस्तान की सुरक्षा और स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे हैं। किन्तु जैसी कि लोकमान्य तिलक और अन्य नेताओं की शंका थी, अँग्रेजों ने होम रूल लागू करने की अपेक्षा, रोलट-एक्ट लागू कर दिया। इस कानून के अर्न्तगत किसी भी व्यक्ति को बिना वारन्ट के गिरफ्तार किया जा सकता था। इसके विरुद्ध न तो कोई वकील किया जा सकता था और न ही कोई अपील की जा सकती थी। इस कारण सारे देश की जनता में अंग्रेजों के विरुद्ध क्रोध भड़क उठा। जबकि जन-साधारण को गाँधीजी के कहे अनुसार विश्वास था कि होम रूल लागू किया जाएगा।

लोकमान्य तिलक ने **इंडियन होम रूल लीग** और श्रीमती एनी बेसेन्ट ने **होम रूल लीग ऑफ इंडिया** नामक संगठन का गठन किया। सिन्ध में लोकमान्य तिलक की लीग में डॉ. चोइथराम गिदवाणी, महाराज विष्णू शर्मा, सच्चानन्द फेरूमल, वीरूमल बेगराज, चोइथराम वलेचा और महाराज लुणीदाराम बूलकाणी आदि थे। एनी बेसेन्ट की लीग में शामिल हुए जयरामदास दौलतराम, जेठमल परसराम, सन्तदास मंघाराम, दुर्गादास आडवाणी, और डॉ. मोहनलाल सोन्पार।

रोलट एक्ट के विरुद्ध गाँधी ने सत्याग्रह शुरू किया और सारे देश में 30 मार्च 1919 के दिन हड़ताल करने का आव्हान किया। सिन्ध में अभूतपूर्व हड़ताल की गई। दिल्ली में हड़ताल के दिन हिन्दू और मुसलमानों ने मिलकर अभूतपूर्व एकता का प्रदर्शन किया। स्वामी श्रद्धानन्द ने पुलिस को ललकारते हुए कहा, "हम सीना खोल खड़े हैं, अब गोलियाँ चलाओ।" पंजाब में विरोध को दबाने के लिए सत्याग्रहियों के नेता डॉ. सत्यपाल और डॉ. कचलू को गिरफ्तार किया गया। इसके विरुद्ध 13 अप्रेल, 1919 वैसाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में लगभग 20हजार आंदोलनकारी जमा हुए। सभा शुरू होने के पहिले ही जनरल डायर ने चेतावनी दिए बिना सेना को अंधाधुंध गोलियाँ चलाने का आदेश दिया। जिससे लगभग एक हजार आंदोलनकारियों का जघन्य नरसंहार हुआ और दो हजार घायल हुए।

इस जलियाँवाला नरसंहार का बदला, वीर शहीद सरदार उधमसिंह ने लन्दन में जाकर लिया।

अमृतसर काँग्रेस सम्मेलन के लिए सिन्ध से स्पेशल ट्रेन

19 दिसम्बर, 1919 में जलियाँवाला नर-संहार के शहीदों को श्रद्धांजलि देने और अँग्रेज सरकार के सामने निडरता का प्रदर्शन करने के लिए काँग्रेस का 34 वां अखिल भारतीय सम्मेलन अमृतसर में हुआ। इसमें शामिल होने के लिए सिन्ध में इतना अधिक उत्साह था कि एक पूरी विशेष ट्रेन की व्यवस्था की गई। डॉ. चोइथराम गिदवाणी ने इसके लिए पूरे सिन्ध के काँग्रेस-जनों का आव्हान किया था। राष्ट्रीय-झन्डों से सजी-धजी इस ट्रेन से झांझ-मंजीरे की झन्कार के साथ देश-भक्ति गीतों और नारों की गूँज हर स्टेशन पर सुनाई पड़ती थी। हर स्टेशन पर इस सिन्धी जत्थे का भाव-भीना स्वागत किया गया।

अमृतसर पहुँचकर सिन्धी कार्यकर्ताओं ने शहीदों की उस पवित्र धरती को चूमकर प्रणाम किया। डॉ. चोइथराम गिदवाणी की अगवानी में आए सिन्धीजनों ने अपने खाने-पीने की व्यवस्था खुद की।

... शेष अगले पृष्ठ पर ...

स्वागत समिति पर अतिथि के रूप में बोझ बनने की अपेक्षा सम्मेलन के हर काम में हाथ बंटाने के लिए सिन्धी कार्यकर्ताओं ने साथ दिया। डॉ.गिदवाणी की अगवानी में प्रभात फेरी निकाल कर सारे अमृतसर में झुमिरि-छेज (सिन्धी लोक नाच और डांडिया) के साथ देश-भक्ति गीत, भजन और नारे गुँजाए गए। शाम को शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए शहीदों की जय-जयकार के साथ, सिन्धी-जत्थे ने जलियाँवाला बाग में प्रवेश किया। सिन्धी-जनों का उत्साह और उमंग देखकर, अन्य प्रदेशों के काँग्रेसियों में भी उत्साह की एक लहर सी दौड़ गई।

सिन्धी-जनों के उत्साह को देखकर पंजाब की स्वागत समिति के अध्यक्ष डॉ. कचलू और सम्मेलन के अध्यक्ष पं. मोतीलाल नेहरू ने डॉ.गिदवाणी के बहुत मना करने के बाद भी अपने विचार रखने के लिए मन्च पर आमंत्रित किया। डॉ. साहब ने थोड़े ही शब्दों में अपने विचार रखे, और अन्त में अपने साथी तोलाराम बालाणी की कविता की ये पंक्तियाँ कहीं -

आ मिलो मैदान में जौहर दिखाने के लिए, जौहर दिखाने के लिए और वीर बनने के लिए।
मत हटो, अय्यार के जुल्मों-सितम से भाईयों ! हम फकत पैदा हुए हैं आजमाने के लिए॥

इन पंक्तियों को सुनकर लोग खड़े होकर तालियाँ बजाने लगे और झूमने-नाचने लगे,यहाँ तक कि मन्च पर बैठे नेता भी 'वन्दे मातरम' और 'भारत माता की जय' के नारे लगाने लगे। कुछ लोगों ने डॉ. साहब को बाहों में उठाकर, मंचासीन लोकमान्य तिलक और गाँधी के बीच में बिठा दिया।

डॉ. गिदवाणी के आव्हान पर सभी प्रान्तों के जत्थों ने अपनी भाषा में गीत व भजन गाने के साथ अपने प्रान्तीय लोकनृत्य भी प्रस्तुत किए।

जब पंजाबी जत्थे ने झूमर के साथ झूमते हुए -"तोप-तलवार कोलूं, खन्डे दे धार कोलूं, असां नईं हारना।" वाला गीत गुंजाया तो डॉ. चोइथराम ने मन्च से उठकर नाचते हुए नई तुक जोड़ी --

"कदे नईं हारना, भावें साडी जान जावे, असां नई हारना।"

इस सम्मेलन में महात्मां गाँधी और लोकमान्य तिलक के बीच मान्टीगो चेम्स फोर्ड सुधारों के विषय में गहिरे मतभेद उत्पन्न हुए, काँग्रेस इनके नेतृत्व में दो दलों में बंट गई थी। ऐसी स्थिति में जयराम-दास दौलतराम ने इन सुधारों का एक ऐसा रूप तैयार किया जिस पर दोनों दल सहमत हुए। इस तरह एक सिन्धी की बुद्धिमानी का लोहा सभी को मानना पड़ा और काँग्रेस में एकता स्थापित हो सकी। इसीलिए गाँधीजी ने जयरामदास दौलतराम को 'सच्चा सोना' कहकर सम्बोधित किया था। ये वही जयरामदास दौलतराम थे, जिन्होंने आजादी के बाद पं. नेहरू के प्रधानमन्त्री रहते हुए, आसाम के राज्यपाल के रूप में अपनी सूझ-बूझ से आसाम की हजारों एकड़ भूमि, चीन के कब्जे में जाने से बचाई थी।

सम्मेलन में डॉ. गिदवाणी ने बम्बई प्रान्त में शामिल सिन्ध की अलग प्रान्तीय काँग्रेस समिति के गठन का प्रस्ताव रखा, जो एकमतेन स्वीकार किया गया। जिसके बाद सिन्ध में प्रान्तीय काँग्रेस का गठन किया गया। जिसके पहिले अध्यक्ष पद पर डॉ.गिदवाणी आसीन हुए, और अन्त तक प्रान्तीय काँग्रेस अध्यक्ष के रूप में कार्य करते रहे। वे सिन्ध में शेर-ए-सिन्ध के उपनाम से प्रसिद्ध थे।

स्वतन्त्रता के नाम पर विभाजन के बाद काँग्रेस द्वारा सिन्धी-जनों के विरुद्ध अन्याय-पूर्ण षड्यन्त्र किए जाने के कारण, उन्हें अपनी जन्म-भूमि से निर्वासित होना पड़ा। स्वतन्त्र भारत में भी सिन्धी-जनों की उपेक्षा और निर्मम व्यवहार किए जाने के कारण, डॉ. गिदवाणी ने काँग्रेस छोड़ दी। सिन्धी-जनों के पुनर्वास हेतु अथक सेवाएँ प्रदान कीं। 1952 के प्रथम लोकसभा चुनावों में डॉ. साहब, सोशलिस्ट पार्टी की टिकट पर महाराष्ट्र के थाणे से लोकसभा सदस्य चुने गए और आजीवन देश व समाज हितैषी कार्यों में लगे रहे।

सिन्ध का प्रतिबन्धित और जब्त-साहित्य
2200 पृष्ठ --हिन्दू अखबार का एक अन्क और 22 पुस्तकें

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता-संग्राम के समय देश भर में अँग्रेज सरकार ने नरसंहार किया था। नरसंहार की इन खबरों को प्रकाशित करने पर अँग्रेज सरकार द्वारा प्रतिबन्ध लगाया गया था। इसका तुरन्त कड़ा विरोध करते हुए सिन्ध से प्रकाशित एक अखबार 'सिन्ध कासिद' ने 1857 के जुलाई अन्क में सरकार को चेतावनी देते हुए लिखा था कि इन नादिरशाही फरमानों से जो परिणाम निकलेंगे वे स्वयं अँग्रेज सरकार के लिए हानिकारक सिद्ध होंगे। किन्तु अँग्रेज सरकार की यह दमनकारी नीति स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय तक सतत् चलती रही। जिसके चलते भारत की विभिन्न भाषाओं के साथ सिन्ध से सिन्धी और गुरमुखी लिपी में लिखा गया साहित्य भी प्रतिबन्धित कर जब्त किया गया था। इसके पहिले 1907 में सिन्ध के विद्रोही कवि तोलाराम मेंघराज बालाणी 'आजिज' की 'मुल्क मदाह' नामक पुस्तक जब्त की गई थी।

स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु रचे गए साहित्य में कुल 2200 पृष्ठों वाली 22 पुस्तकें और टेबलाईज साईज की 40 पृष्ठों वाली 'हिन्दू' अखबार का अगस्त,1931 में प्रकाशित 'लोकमान्य तिलक पर्चो' नामक अन्क भी जब्त किया गया था। इस साहित्य में प्रमुख रूप से देश-भक्ति गीतों के साथ कहानियाँ, लेख और बलिदानी जीवन-चरित्रों सहित सिन्धी में अनुवादित उपन्यास भी थे। इनमें राष्ट्र कवि हूँदराज 'दुखायल' द्वारा रचित 'फासी-गीत माला' और 'आलापे-आजादी' नामक दो पुस्तकों के सिवा द्वारकाप्रसाद रोचीराम शर्मा लिखित 'इंकलाब जिंदाबाद' नामक रोमांचक कहानी प्रमुख रूप से उल्लेखनीय है।

आलापे-आजादी के एक गीत की हिन्दी में अनुवादित दो पंक्तियाँ इस प्रकार थीं --

अब भी आने से अगर, करोगी इन्कार आजादी !
तो देखोगी नवजवानों के शीश, धड़ से अलग आजादी !!

'इंकलाब जिंदाबाद' कलकत्ता निवासी एक दस वर्ष की बिन मां की बच्ची गंगा और पाले हुए तोते की कहानी है। गंगा ने तोते को 'इंकलाब जिंदाबाद' और 'हिन्दुस्तान आजाद' के नारे रटवा दिए थे। गंगा के पिता अँग्रेज सरकार के पुलिस विभाग में सब इंस्पेक्टर थे। शहर में नमक बनाने वाले हजारों सत्याग्रहियों पर पुलिस द्वारा निर्ममता से लाठियाँ बरसाईं जाती हैं जिससे कई सत्याग्रही घायल हो जाते हैं और कई शहीद हो जाते हैं। गंगा भी बन्दर-सेना के साथ इस सत्याग्रह में भाग लेते हुए शहीद हो जाती है। सब इंस्पेक्टर पिता, अपनी बच्ची को शहीद होते हुए देखता है। इस हत्याकाँड के बाद सब इंस्पेक्टर घर पहुँचकर तोते के सामने आता है। तोते को दूर से ही देखकर 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा उसके मुंह से फूट पड़ता है, किन्तु गंगा के विछोह के कारण तोते के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे।

1. फासी -गीत माला -- रचयिता - हूँदराज 'दुखायल'
2. आलापे-आजादी(गीत) -- रचयिता - हूँदराज 'दुखायल'
3. गांधी माला(कविताएँ) -- रचयिता - महाराज कालीदास
4. मनमोहन भजनावली(देश-भक्ति गीत) -- रचयिता - नथुरमल शर्मा
5. गांधी गुलशन -- रचयिता - मोहनदास उधाराम
6. गांधी गीत -- रचयिता - चर्तुभुज लछीराम
7. आजाद भजनावली -- रचयिता - नारायणदास 'आजाद'
8. स्वराज जो सनीहो -- रचयिता - जयरामदास मूलचन्दाणी

9. देशमाला(गुरमुखी लिपी में)
10. देशमाला(गुरमुखी लिपी में) भाग दो
11. तिलक जी याद -- रचयिता - महाराज कृपालदास
12. स्वराज महातम -- रचयिता - मोटणदास सोभराज
13. हिन्दू(अखबार) तिलक पर विशेषांक
14. बन्दी-जीवन (दो भाग) शचीन्द्रनाथ सान्याल के क्रान्तिकारी जीवन पर आधारित बंगला उपन्यास का सिन्धी अनुवाद
15. अजु-कल्ह जो सुधारो (नारायणदास किशन चतुर्वेदी के गुजराती उपन्यास का सिन्धी अनुवाद)
16. इंकलाब जिंदाबाद(द्वारकाप्रसाद रोचीराम शर्मा की लिखी एक रोमांचक कहानी)
17. धारासना कहाणी(तीरथदास लेखराज की धारासना नमक डिपो सत्याग्रह पर लिखी रिपोर्ट)
18. धारासना ते काह(धारासना नमक सत्याग्रह पर लिखी पुस्तक)
19. कम्युनिस्ट पधरनामो(भाग एक)
20. कम्युनिस्ट पधरनामो(भाग दो)
21. जिन्ना खे जवाब(चन्द्रगुप्त विद्यालंकार द्वारा लिखित और लालचन्द आर्य द्वारा सिन्धी अनुवाद)
22. अँग्रेजी शासन के विरुद्ध एक छोटा पोस्टर
23. लड़ाईअ जो लर्डाट ऐं कांयरनि जो कूकाट -- रचयिता - शाहनवाज पीरजादा

अँग्रेज सरकार द्वारा प्रतिबन्धित सिन्ध का यह साहित्य ब्रिटिश लायब्रेरी और इंडियन ऑफिस लायब्रेरी, लंदन में रखा गया है। इसकी खोज श्री हीरो ठकुर ने की और दबायल आवाज(दबाई हुई आवाजें)नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित की, जिसे सिन्धी अकादमी दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

सिन्ध में असहयोग आंदोलन - 1920-21

सिन्ध की अखबारों से थर्राई हुई थी अँग्रेज सरकार

हिन्दू के आठ सम्पादक गिरफ्तार

1920-21 में असहयोग आंदोलन के समय सिंध की एक अखबार 'हिन्दू' के लेखों के कारण अँग्रेज सरकार थर्राई हुई सी रहती थी। इसकी स्थापना 1916 में शर्मा भाईयों में से महाराज विष्णू शर्मा और महाराज लोकराम शर्मा ने की थी। इसके क्रांन्तिकारी लेख जनता को बहुत ही आन्दोलित कर देते थे। इस अखबार के सम्पादकीय लेख में जलियाँवाला नरसंहार के विरुद्ध लिखा गया था," भारत के खून पर पर्दा डालकर, इसको छिपाया गया है। इस खून की हर एक बूँद से देश में ऐसी शक्ति पैदा होगी, जिससे यह पर्दा तार-तार हो जाएगा। अँग्रेजों को खुद स्वीकार करना पड़ेगा कि उन्होंने इस खून पर पर्दा डालकर बहुत बड़ी गल्ती की है और उन्हें इसके लिए पश्चाताप करना पड़ेगा।" दन्ड संहिता की धारा 124 के अर्न्तगत आपत्तिजनक लेखों के कारण इसके लगातार 8 सम्पादकों को जेल की सजा दी गई। विष्णू शर्मा को 3 साल, जयरामदास दौलतराम और प्रो. घनशाम शिवदासाणी को 2 साल, डॉ. चोइथराम गिदवाणी और लोकराम शर्मा को 1 साल, झमटमल लखनसिंह को 1.5 साल, चोइथराम वलेचा और हीरानन्द करमचन्द को 1 साल की सजा दी गई थी। यह अखबार गाँधीजी की सलाह पर 1946 में हिन्दू से हिन्दुस्तान के नाम से विभाजित भारत में भी छपती रही। .. **शेष अगले पृष्ठ पर** ..

वतन के चार सम्पादक गिरफ्तार

असहयोग आंदोलन के चलते शिकारपुर में डॉ. लीलाराम फेरवाणी की साप्ताहिक अखबार, 'वतन' के भी चार सम्पादक, दन्ड संहिता की धारा 124 के अन्तर्गत गिरफ्तार किए गए। ये सम्पादक थे - डॉ. लीलाराम फेरवाणी, बिलन्दराम वसन्दमल, टीकमदास दामोदरदास और कनयालाल ठाकुरदास।

'वतन' के सम्पादकीय लेख की हेडलाईन थी, "यथा राजा तथा प्रजा"। इस लेख में एक बहुत ही मनोरंजक कहानी इस प्रकार थी - एक बार अकबर बादशाह, एक नाव में बैठकर कहीं जा रहे थे। उन्होंने नाव के नाविक से पूछा, "जरा बतलाओ तो किसका राज अच्छा है, मेरे दादा बाबर का या मेरे पिता हुमायूँ का या मेरा ?" नाविक ने हाथ जोड़कर उत्तर दिया, "राजा साहब जब आपके दादा बाबर राज करते थे तब मेरे दादा, मेरी तरह ही नाव खेते थे। एक बार एक यात्री भूल से अपनी बहुमूल्य थैली उनकी नाव में छोड़ गया। मेरे दादा ने उसका पता लगाकर, थैली उसके घर पहुँचाई। आपके पिता के समय मेरे पिता भी नाव खेते थे। एक यात्री उनकी नाव में एक माल की एक थैली भूल से छोड़कर चला गया, मेरे पिता ने वह थैली अपने घर में लाकर रख ली। यात्री हमारे घर आया, तब मेरे पिता ने वह थैली वापस दे दी। आपके राज में मैं भी नाविक बना हूँ। मेरी नाव में एक यात्री थैली रखकर चला गया, मैंने वह थैली अपने घर लाकर रखी। जब वह यात्री मेरे आया तो मैंने उससे कहा, "मुझे कोई भी थैली नहीं मिली है।" अब आप खुद ही फैसला करें कि किसका राज अच्छा था। इस सम्बन्ध में एक कहावत प्रसिद्ध है, "यथा राजा तथा प्रजा।"

शक्ति के चार सम्पादक गिरफ्तार

नवाबशाह-साहिती जिले के नौंशहरो फेरोज से जमींदार खेमचन्द चेतनदास बालाणी, प्रसिद्ध साप्ताहिक अखबार'शक्ति' निकालते थे। मार्च, 1922 में इसके चार सम्पादकों खेमचन्द बालाणी को 12 महीने, उनके भाई गुरमुखदास बालाणी को 3 महीने और मानसिंह चूहड़मल को 1 महीने और स्वामी शिवानन्द को 3 और फिर 12 महीने जेल की सजा दी गई। इससे पहिले 'शक्ति' को स्वामी गोविन्दानन्द(जंव्हरमल मनसुखाणी) हैद्राबाद से मासिक रूप में निकालते थे, उन्हें भी इस कारण जेल की सजी दी गई थी।

हिन्दवासी के सम्पादक जेठमल परसराम गिरफ्तार

सरकार के विरुद्ध विद्रोह भड़काने वाला लेख लिखने के कारण, दन्ड संहिता की धारा 124 के अन्तर्गत, 'हिन्दवासी' के प्रसिद्ध सम्पादक जेठमल परसराम को सिन्ध के दूसरे राजनीतिक कस में गिरफ्तार किया गया। अँग्रेज सरकार ज़न-जागरण के लिए लिखे लेखों को सरकार के विरुद्ध विद्रोह भड़काने वाला मानकर, इसके लेखकों को अमानवीय सजाएँ देती थी। धारा 124 के अन्तर्गत जेल की सजा और आर्थिक दन्ड या फाँसी की सजा तक दी जा सकती थी।

30 मार्च 1919 के दिन दिल्ली में **रोलट एक्ट** के विरोध में प्रदर्शन के समय पुलिस के गोली-चालन से कुछ आंदोलनकारियों को शहीद कर दि या गया था। स्वामी श्रद्धानन्द ने इस प्रदर्शन में छाती खोलकर, पुलिस को गोली चलाने के लिए ललकारा था। श्री जेठमल परसराम ने अपने लेख में सरकार के इस कार्य की निन्दा करते हुए सिन्ध के महान सूफी शायर अब्दुल लतीफ का बैत(दोहा)भी दिया था - अगियाँ वटिनि वटि, पोयंनि सिर सम्बाहिया। कलाल जे हट, कुसणं जो कोपु वहे। अर्थात् - अगले बनाएँ बाती, पिछले सामने करें सिर। कसाई के हाट, कटने का भय बहे। केस पर सरकारी वकील ने कहा, "क्योंकि सिन्धी में **स** अक्षर अधिकाँश **ह** में परिवर्तित होता है। ... **शेष अगले पृष्ठ पर** ...

इस आधार पर दोहे में **कुसण** शब्द के अर्थ में काटने-मारने का आव्हान किया गया है। जबकि बचाव पक्ष के वकील ने कहा कि इसका अर्थ कटना अर्थात् आत्म बलिदान करना है। परन्तु जज ने बचाव पक्ष के सही अर्थ को अमान्य करते हुए, श्री जेठमल परसराम 18 महीने की जेल की सजा सुनाई।

यहाँ भाषा विज्ञान में प्रचलित **स** और **ह** के परिवर्तन के कारण सिन्ध का हिन्द, सप्ताह का हफ्ता होने सम्बन्धी भ्रम के विषय में यह जान लेना उपयोगी होगा कि सिन्धी भाषा के क्रिया रूपों में **ह** के स्थान पर **स** का प्रयोग नियमानुसार और अर्थभेदक भी है। उपरोक्त दोहे में प्रयुक्त क्रिया **कुसणु** का अर्थ कटना और **कुहणु** का अर्थ काटना है। यदि बचाव पक्ष के वकील ने सिन्धी भाषा के इस नियम के अनुसार यह अर्थ दिया होता तो शायद श्री जेठमल परसराम को निरपराध मानकर छोड़ दिया जाता।

क्विट इंडिया डेली बुलेटिन पर दस हजार का इनाम

कराची से निकलने वाली 'क्विट इंडिया' नामक एक डेली बुलेटिन के स्वामी या प्रकाशक आदि के विरुद्ध सरकार ने दस हजार का इनाम घोषित किया था। यह बुलेटिन अलग-अलग स्थानों से प्रकाशित और वितरित की जाती थी। श्री प्रभदास ब्रह्मचारी और दीपचन्द तिलोकचन्द बेलाणी इसका प्रकाशन और वितरण गुप्त रूप से सारे सिन्ध में करते थे। श्री बेलाणी की पत्नी श्रीमती मोहिनी देवी अखबार बाँटने के कारण ग्यारह बार बन्दी बनाई गई। बारहवीं बार गर्भावस्था में उन्हें बन्दी बनाकर, दो महीने जेल की सजा दी गई। श्री पीताम्बर, मेल्हाराम वासवाणी, श्रीमती गंगा मेठाराम खिलनाणी और श्रीमती शान्ति शाहाणी प्रकाशन आदि कार्यों में मुख्य सहायक थे। 'पिंजरापोल बम केस' में बन्दी बनाए गए एक युवक ने पुलिस को खबर दी कि इसका सम्पादन दीपचन्द बेलाणी करते हैं इसलिए उनके विरुद्ध वारन्ट जारी किया गया किन्तु वे कराची में खुलकर काम नहीं करते थे, इसलिए पुलिस उन्हें पहिचान नहीं पाई।

नवाबशाह जिले में इस बुलेटिन का काम-काज प्रभदास ब्रह्मचारी के मार्गदर्शन में तिलोक तुल्सियाणी और दूलहनोमल करते थे। कई बार यह खेमचन्द बालाणी की प्रेस से प्रकाशित की गई। पुलिस ने इस प्रेस पर कई बार छापे मारे किन्तु उसे किसी भी प्रकार की सामग्री नहीं मिल सकी। तिलोक तुल्सियाणी को नवाबशाह जिले की सीमा में रहने का आदेश तोड़ने के कारण बन्दी बनाकर छह महीने जेल की सजा दी गई। नारी गुरसहाणी और अन्य बीस युवकों को भी बन्दी बनाकर जेल भेजा गया।

नवभारत के सम्पादक मोटूमल थावाणी को जेल

1937 में नवाबशाह से 'नवभारत' नामक एक अखबार का प्रकाशन श्री दीपचन्द तिलोकचन्द बेलाणी करते थे, जिसके सम्पादक श्री मोटूमल सच्चानन्द थावाणी थे। इस अखबार ने स्वतन्त्रता-संग्राम के प्रचार-प्रसार में बड़ी भूमिका निभाई। जन-समस्याओं को भी इसमें प्रमुख स्थान दिया जाता था।

सम्पादक मोटूमल थावाणी के सरकार विरोधी एक लेख लिखने के कारण धारा 120 के तहत चार महीने की सजा के रूप में जेल जाना पड़ा।

माता-साप्ताहिक -- सम्पादिका दादी कृष्णा देवी

नौशहरो से गुरमुखी लिपी के पाठकों, विशेषकर महिलाओं के लिए एक साप्ताहिक अखबार 'माता' छपने लगी, इसकी सम्पादिका दादी कृष्णा देवी हिङोराणी व सहसम्पादक श्री गुलाबराय शिवनदास सावनाणी थे। 'माता' अखबार में स्वराज-जागरण और सामाजिक कुरीतियों पर लेख प्रकाशित होते थे। कुछ वर्ष बाद यह मासिक की गई।

खेमचन्द बालाणी परीवार के 40 सदस्यों को जेल

मातृ-भूमि की सेवा के बदले पेंशन लेना देश-भक्ति नहीं - बालाणी

नवाबशाह जिले के नौंशहरो फेरोज के खेमचँद चेतनदास बालाणी परिवार के 40 सदस्य आजादी आंदोलन में जेल गए थे। इनके भाई थे - गुरमुखदास, परसराम, कोटूमल और केसूमल बालाणी। जमींदार खेमचँद बालाणी के छह बड़े-बड़े मकान आजादी की हलचल के केन्द्र थे। इनमें से किसी में कन्या पाठशाला, किसी में साहित्य-भन्डार रूपी लायब्रेरी, काँग्रेसी कार्यालय, क्रान्तिकारी साहित्य के प्रकाशन हेतु प्रिन्टिंग प्रेस, अनाज का भन्डार, क्रान्तिकारियों की गुप्त बैठकें तो किसी में भूमीगत होकर रह रहे क्रान्तिकारी निवास करते थे। जहाँ देश के कई भूमिगत क्रांतिकारियों ने आकर शरण ली थी। श्री बालाणी ने 'आनन्द' पत्रिका के प्रकाशन के साथ 'शक्ति' का सम्पादन भी किया। 7 मार्च,1922 के दिन उनको विद्रोही लेख लिखने के कारण जेल की सजा दी गई, साथ ही उनके पिता श्री चेतनदास के नाम की जमीन भी जब्त कर ली गई। अँग्रेज सरकार ने कई बार इनके घर और कार्यालय पर छापे मारकर, सरकार विरोधी साहित्य आदि जब्त किया था। 1917-18 में सिन्ध में एन्फ्लूएनजा बीमारी फैलने पर, जंव्हरमल मनसुखाणी (स्वामी गोविंदानन्द) के साथ मिलकर श्री बालाणी ने गाँव-गाँव जाकर बीमारों की सेवा-सहायता की।

विभाजन बनाम स्वतन्त्र भारत में आने के बाद श्री खेमचन्द बालाणी ने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के नाम पर मिलने वाली पेंशन आदि सुविधाओं को यह कह कर ठुकरा हिया, "मातृभूमि की सेवा करना, पुत्र का परम कर्तव्य है। माँ की सेवा को उपकार मानकर बदले में आर्थिक लाभ लेना, देश-भक्ति नहीं।"

खेमचँद बालाणी परिवार के श्री जयकिशन बालाणी, राजस्थान पुलिस विभाग में कर्मठ और इमानदार पुलिस महानिरीक्षक के रूप में प्रसिद्ध थे। ऐसे उच्च पद पर सेवाएँ देने के बाद पद-मुक्त हुए।

सच्चानन्द फेरूमल थावाणी परिवार -11 सदस्यों को जेल

नवाबशाह जिले के नौंशहरो फेरोज के सच्चानन्द फेरूमल थावाणी विद्यार्थी जीवन से ही स्वराज-आंदोलन से जुड़े हुए थे। उनके परिवार के कुल 11 सदस्यों को जेल की सजा दी गई थी। उनमें स्वयं सच्चानन्द, पुत्र रोचीराम, मोटूमल, गोविंदराम, पुत्रवधू कमला, जानकी, तुलसी के साथ दो बालक तथा विवाहित पुत्री केसी और दामाद निहालाणी शामिल थे। इस परिवार के दादा रोचीराम थावाणी भी आंदोलनों में भाग लेते रहते थे। आजकल वे, नागपुर-महाराष्ट्र में आकर समाज-सेवा कर रहे हैं। इसके साथ-साथ वे, सेना के जवानों को हर साल रक्षा-बन्धन और दीवाली आदि पर्वों पर, समाज की महिलाओं के हाथ से बनी राखियाँ और सूखे-मेवे आदि की भेंट के साथ बधाई-पत्र भी भेजते रहते हैं।

अनोखे इंकलाबी हंसराज 'वायरलेस'

हंसराज 'वायरलेस' ने एक इंकलाबी पार्टी का गठन किया था। अज्ञातवास में रहकर क्रान्तिकारी हलचल मचाने के कारण सभी सिन्धी-हिन्दी अखबारों के 'न्यूज-मेकर' थे। थरपारकर के आर्य-समाजी स्वामी कृष्णानन्द उन्हें इन कार्यों में सहायता प्रदान करते थे। 1929 में वाईसराय की गाड़ी पर बम फेंकने के साथ पन्जाब में एक ही दिन कई स्थानों पर किए गए बम विस्फोटों में उनका हाथ था। सक्खर के साध-बेले में साधू भेस में रहते हुए, कामरेड मल्काणी के साथ मिलकर क्रान्किारी कार्य करते थे। 2 जून,1932 की रात को सोते हुए पुलिस द्वारा पकड़े जाने के बाद जेल में डाल दिए गए।

सपरिवार देश-सेवा और जेल-यात्राएँ

सिन्ध में ऐसे कई परिवार थे जो सपरिवार स्वतन्त्रता की हलचल में न केवल भाग लेते थे अपितु जेल भी गए। कुछ प्रसिद्ध बड़े परिवारों के नाम इस प्रकार हैं - (1) नवाबशाह-साहिती के प्रसिद्ध जमींदार तेजूमल बालाणी ने आनरेरी मैजिस्ट्रेट का पद और अपनी बंदूक का लायसेंस लौटा दिया था। उनके सुपुत्र हूँदराज, केसूमल, गुरमुखदास और लहरूमल, उनके भाई सेठ चेतनदास के पुत्र खेमचन्द,सेठ नारायणदास के पुत्र परसराम, सेठ पारूमल के पुत्र कोटूमल आदि भी आजादी हलचल में भाग लेते थे। केसूमल, गुरमुखदास, खेमचन्दऔर कोडूमल जेल गए थे।(2) जमींदार काका नेभनदास फतनाणी का सारा परिवार भी 1921 के आंदोलन में शामिल था। उनका दादू में अँग्रेजी मिडिल स्कूल था, जिसके वे हेडमास्टर थे। ये परिवार महिलाओं सहित खादी पहिनता था। उनके बड़े पुत्र हरीराम ने पढ़ाई छोड़ी, भाई दामोमल, भतीजे आत्माराम व रेलूमल और रूपचन्द ने सरकारी नौकरी का त्याग किया। (3)प्रोफेसर हासानन्द जादूगर और उनके समधी काका नेभनदास फतनाणी व दामाद श्याम फतनाणी। (4) हालाणी के जमींदार विशनदास गुरबाणी उनके सुपुत्र नेवंदराम, नेकूमल, लालचन्द, प्रभो, मनू और बहू दादनबाई जेल गए। (5) दीवान कौड़ोमल खिलनाणी, उनके सुपुत्र श्री मनोहरदास और पुत्रवधू अमृतादेवी।(6) महाराज नैनाराम शर्मा, उनके सुपुत्र लोकूराम शर्मा, विष्णू शर्मा व भतीजे द्वारकाप्रसाद शर्मा। (7) आचार्य आसूदोमल गिदवाणी, उनकी पत्नि गंगा, भाई आलमचन्द व बहिन पार्पती। (8) आचार्य कृपलाणी, उनके प्रसिद्ध बड़े भाई डीयो कृपलाणी (शेख अब्दुल रहीम), छोटे भाई वरूमल और गोपी कृपलाणी, बहिन किकी लालवाणी।

कच्छ-गुजरात से आए श्री टोपण मुखी,पत्नी कमला टोपण मुखी व पुत्री शान्ता टोपण मुखी। श्रीमती शामी देवी, श्री खीयलदास व पुत्री कौशल्या बाई। श्री एवं श्रीमती भगवानदास नन्दूसिंह, और भाई दयाराम नन्दूसिंह। नवाबशाह के पडईदन निवासी श्रीचन्द मेवाराम और उनकी पत्नि जेल गईं, दोनों ने 1924 में कन्या पाठशाला खोली। वीरूमल बेगराज व पुत्र रामचन्द बेगराज। श्रीमती सुशीला व जेठानन्द भावनदास लालवाणी, श्रीमती लीलां व मोहनदास रामचन्दाणी, मोहिनी लालचन्द व श्री लालचन्द, डॉ. ईसरदास जगत्याणी, भाई भेरूमल ईसरदास जगत्याणी, कमला देवी व गोविन्दराय भाटिया, गोपीबाई व श्री रूपचंद फतनाणी। कम्युनिस्ट नेता वकील बनाराम, उनकी सुपुत्री पुष्पा लछमण बनवाणी। सीतादेवी और डॉ. दयाराम, श्रीमती व सेठ श्री परसराम, लछमी देवी व ईसरदास कोटाई, कमलादेवी व श्री किशिन चावला, पद्मादेवी व श्री धर्मदास जीअन्दाणी आदि।

गाँधी, सुभाष व नेहरू की मूर्तियां और सोने का हार भेंट

हिन्दुस्तान की आजादी के लिए हैदराबाद सिंध के **खुदाबादी सोनारा नौजवान मंडल** ने,1936 में **पं.नेहरू** को सिन्ध यात्रा के समय उनकी अपनी मूर्ति के साथ **गाँधी** व **सुभाष** की मोतियों जड़ी बहुमूल्य मूर्तियों सहित एक सौ एक ग्राम सोने का हार भी भेंट किया था।

----- महर्षि अरविन्दु घोष ने कहा था -----

"भारत का विभाजन अस्थाई है। मैं अपनी आँखों के सामने भारत-माता की अखन्ड-मूर्ति देख रहा हूँ।"

असहयोग आंदोलन में जेल और नौकरियों का त्याग

असहयोग आंदोलन में सिन्ध से कम से कम 200 लोगों को जेल की सजा हुई थी। जबकि सरकार द्वारा छपवाई गई पुस्तक "नान कोआपरेशन मूवमेन्ट इन सिन्ध" के अनुसार इस आंदोलन में 130 काँग्रेसी कार्यकर्ता जेल भेजे गए। इस आंदोलन में 72 मुस्लिम बन्धु भी थे, क्योंकि गाँधीजी ने मुस्लिमों के खिलाफत आंदोलन में हिन्दुओं को सहयोग देने का आन्हान किया था। मुस्लिम बन्धुओं ने अन्य किसी भी आंदोलन में इतनी बड़ी संख्या में भाग नहीं लिया था। इस पुस्तक के अन्त में जेल जाने वालों की जिलावार सूची इस प्रकार है - कराची जिला - 29, हैदराबाद जिला - 20, सक्खर जिला - 20, लाड़काणो जिला - 20, थरपारकर जिला - 28, जेकबाबाद जिला (अपर सिन्ध फ्रन्टीयर) - 20।

सूची के कुछ प्रमुख नाम थे - लालचन्द अमरडि॒नोमल, नत्थूमल दामोदर, मणीलाल व्यास, नरसिंगलाल नानूमल, स्वामी कृष्णानन्द, गागूमल ताराचन्द, केसूमल झांग्याणी, पमनदास सुग॒नोमल, वीरूमल बेगराज, भोज॒राज मोटूमल, सुग॒नोमल खीयलदास, भग॒वानदास हजारी, परसराम टहलरामाणी, अमुलसिंघ नेंवंदराम, महाराज द्वारकाप्रसाद, पन्डित उदयभान, गंगाशंकर प्रभुशंकर, ढालूमल किशिनचन्द, भागूमल, सच्चानन्द फेरूमल, केसूमल तेजूमल, धर्मूमल खीयोमल, हासोमल चांडू॒मल, गोबिन्दराम नाराइणदास, खेमचन्द चेतनदास, छाञोमल सन्तदास, हेमनदास शेवकराम, नेंवन्दराम तीरथदास, डॉ. मेंघराज चैनराइ, फेरूमल टेकचन्द, कोडू॒मल हीरानन्द और ठाकुरदास मोटणदास। इसके सिवा उन अखबारों के सम्पादक जिनके नाम अखबारों वाले लेख में दिए गए हैं। सिन्ध के कम से कम 157 लोगों के नाम भी इस सूची में दिए गए हैं, जिन्होंने सरकारी नौकरियाँ और सम्मानित पदों का त्याग किया। उनमें से पदों सहित कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं - हासोमल बहरूमल शिवदासाणी - असिसटेन्ट कलेक्टर, ताराचन्द डे॒ऊमल गाजरा, सुखरामदाम तुलसीदास, मेठाराम ईसरदास, और नानिकराम जीवतराम - प्राचार्य, पहिलाजराइ सखावतराइ गिदवाणी, रतनसिंघ गिदूमल मल्काणी, मूलचन्द फेरूमल, लखासिंघ कर्मचन्द और अर्जनदास रूपचन्द - वकालत।

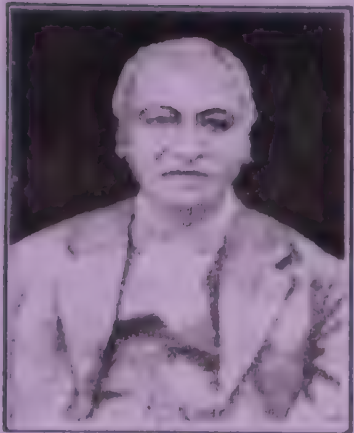
असहयोग आंदोलन के चलते हैदराबाद के निकट मटियारी में पुलिस ने गोलियाँ चलाईं जिससे एक मुस्लिम युवक शहीद हुआ। इससे मटियारी में बहुत ही तनाव फैल गया। इस कारण जेल में बन्द पीर मोहब्बत अली शाह ने 11 दिनों तक भूख हड़ताल की। मटियारी में फैले तनाव को समाप्त करने में डॉ. चोइथराम गिदवाणी और शेख अब्दुल मजीद के अथक प्रयासों के का रण पुलिस गोली-चालन की जाँच हुई, जिसमें पहिली बार पुलिस दोषी सिद्ध हुई। जिसके बाद वहाँ शान्ति स्थापित हो सकी।

असहयोग आंदोलन में शामिल होने के कारण सक्खर के आंदोलनकारी भोज॒राज मोटवाणी, वेढ़ोमल वापारीमल और पमनदास सुग॒नोमल को, 'नर्क' के उपनाम से प्रसिद्ध वीसापुर की जेल में भेजा गया था। सिन्ध में असहयोग आंदोलन दूसरे साल 1921 में भी बुलंदी पर था। यह साल जनसभाओं, हड़तालों और विद्रोहियों को जेल की सजाओं का साल था।

नागपुर में स्थानीय प्रशासन ने राष्ट्रीय झन्डा फहराने पर प्रतिबन्ध लगाया था। इस कारण जमनालाल बजाज की अगवानी में झन्डा-सत्याग्रह आयोजित किया गया, इसमें भाग लेने के लिए सारे देश से आंदोलनकारियों के जत्थे नागपुर पहुँचे। इनमें सिन्ध से कौड़ोमल अबिचन्दाणी, नरसिंहलाल और नामोमल 7 सत्याग्रहियों का जत्था 1 जुलाई,1923 के दिन कराची से रवाना हुआ। नागपुर में जमा सभी सत्याग्रहियों को बन्दी बनाकर 1-1 साल के लिए जेल भेजा गया। बाद में हार मानकर सरकार ने झन्डा फहराने पर रोक हटाई और उन्हें छोड़ दिया।

साईमन कमीशन - 1928

लाला लाजपतराय और हरचन्दराय विशनदास शहीद



1928 में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने भारत में प्रान्तीय काऊंसिल और केन्द्रीय असेम्बली के माध्यम से किए गए सुधारों की जाँच-पड़ताल करने के लिए मिस्टर जॉन साईमन के नेतृत्व में साईमन कमीशन भेजी थी। जिसमें एक भी भारतीय मेम्बर न लिए जाने के कारण काँग्रेस ने इस कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय किया। लाहौर में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की अगवानी में इस कमीशन का विरोध करने के लिए एक जुलूस निकला गया। "साईमन कमीशन गो बैक" के नारे गुंजाते जुलूस पर पुलिस ने लठबाजी की। लालाजी पर भी लाठियाँ बरसाई गईं, जिससे वे घायल होने के बाद 17 नवम्बर, 1929 के दिन शहीद हो गए। यह देश का दुर्भाग्य था कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए लड़ने वाले लोकमान्य तिलक के बाद लाला लाजपतराय जैसे नेता स्वतन्त्रता के पहिले स्वर्ग सिधार गए और देश की अगवानी समझौता वादी नेताओं ने हथियाई। लालाजी की हत्या के विरोध में सारे देश में उग्र प्रदर्शन हुए। डॉ. चोइथराम गिदवाणी, उन्हें श्रद्धांजलि देने लाहौर गए थे। कमीशन का सिन्ध में भी बहिष्कार किया गया।

स्वराज पार्टी की तरफ से केन्द्रीय असेम्बली में इस कमीशन के विरुद्ध एक प्रस्ताव लाया गया। सारे देश के असेम्बली मेम्बर वोट डालने के लिए दिल्ली पहुँचे। उस समय सिन्ध के असेम्बली मेम्बर सेठ हरचन्दराय विशनदास सखत बीमार थे। खबर पाकर भारत से श्रीमती सरोजनी नायडू ने कराची आकर, सेठ हरचन्दराय को वोट डालने की सलाह दी। डॉक्टरों के मना करने के बाद भी सेठ हरचन्दराय, वोट देने दिल्ली गए। व्हील चेयर पर बैठकर वे किसी तरह असेम्बली पहुँचे और विरोध में वोट डालने के बाद, सिन्ध लौटते समय 16 फरवरी 1928 के दिनकाल के गाल में समा गए। 1931 में कराची में काँग्रेस का राष्ट्रीय सम्मेलन जिस स्थान पर हुआ, उसे 'शहीद हरचन्दराय विशनदास नगर' का उपनाम दिया गया।

पूर्ण स्वराज की माँग - 1929

दिसम्बर, 1929 में लाहौर काँग्रेस सम्मेलन में पं. नेहरू की अध्यक्षता में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पास किया गया। इससे एक साल पूर्व 1928 वाले सम्मेलन में तय किया गया था कि यदि अँग्रेज सरकार ने एक साल के अन्दर **वैंक-राज्य** (डोमिनियन स्टेट) स्थापित नहीं किया तो इसके दूसरे साल काँग्रेस पूर्ण स्वराज की माँग करेगी। वैंक राज्य बनने की स्थिति में हिन्दुस्तान, अन्य देशों की तरह ब्रिटिश कामनवेल्थ का सदस्य बन जाता। जिस तरह कैनाडा, आस्ट्रेलिया आदि कामनवेल्थ के सदस्य थे। परन्तु अंग्रेज सरकार ने इस माँग को अमान्य कर दिया। इसलिए लाहौर सम्मेलन में रावी नदी के किनारे पहुँचकर काँग्रेस-जनों ने तिरंगा फहराकर प्रतिज्ञा की कि पूर्ण स्वराज लेके रहेंगे। सम्मेलन में यह भी तय किया गया कि हर साल 26 जनवरी का दिन, स्वतन्त्रता-दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पास करने के बाद महात्मा गाँधी ने अंग्रेज सरकार के कानूनों को अमान्य करने के लिए नमक-सत्याग्रह करने की घोषणा की। उनका मत था कि नमक पर कर लगाकर सरकार ने गरीब से गरीब व्यक्ति के साथ अन्याय किया है। इससे पहिले गरीब लोग समुद्र के पानी से नमक बनाते थे, जिस पर उन्हें कोई भी कर नहीं देना पड़ता था।

नमक सत्याग्रह - आत्म-बल का अनोखा अनुभव -1930

पूर्ण स्वराज की प्राप्ति के लिए किए गए सभी आंदोलनों के सम्बन्ध में प्रचारित किया जाता है कि देश में अवज्ञा, असहयोग, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार या नमक आदि पर करों का भुगतान न करने जैसे आंदोलन गाँधीजी द्वारा आरम्भ किए गए। यह ध्यान रखना होगा कि गाँधीजी के ये सभी आंदोलन बहुत देर से उठाए गए कदम मात्र थे। उनसे 15-20 साल पहिले ही स्वदेशी वस्तुओं के व्यवहार या सरकार से अस-हयोग करने का महामन्त्र **श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा** ने दे दिया था। जिन्होंने खुद को सभ्य समझने वाले अँग्रेजों का असभ्य चेहरा, सारे यूरोप को दिखाने के साथ उनकी छाती पर बैठकर वार करने के लिए विदेशों में संग्राम शुरू किया। बंगाल विभाजन के बाद 1906 में कलकत्ता के काँग्रेस सम्मेलन में **दादा भाई नौरोजी** ने काँग्रेसी मन्च पर सबसे प्हले 'स्वराज' शब्द का उपयोग करते हुए आव्हान किया था - "इंडियन नेशनल काँग्रेस का उद्‌देश्य है, भारत देश के लिए 'स्वराज' प्राप्त करना।" ध्यान रहे कि गाँधीजी को 'राष्ट्रपिता' का उपनाम दिया गया था, तो नौरोजी को 'दादा' के रूप में सम्मान दिया गया था ! इस सम्मेलन में ही देश के लोगों को आव्हान किया गया था, "विदेशी सामान का उपयोग न करते हुए इनका बहिष्कार करें और स्वदेशी शिक्षा नीति अपनाएँ।"

15-20 साल पहिले ही नमक आदि पर कर न देने का आव्हान बाल गंगाधर तिलक कर चुके थे। यहाँ संदर्भ-वश इस विषय में उनके आव्हान को जानना आवश्यक होगा - "हम अँग्रेज सरकार को कर जमा करने में साथ नहीं देंगे, न ही हम शान्ति और कानूनी व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करेंगे। हम न्यायालय चलाने में भी सहयोग नहीं करेंगे, बल्कि अपने न्यायालय स्थापित करेंगे। समय आने पर हम कर देना भी नकार देंगे। आप लोग संगठित होकर ऐसा कर दिखाएँ। यदि आपने ऐसा किया तो कल से ही आप स्वतन्त्र हो जाएँगे।" पुस्तक का विषय, "स्वतन्त्रता संग्राम और सिन्ध का योगदान" तक सीमित होने के कारण चाहकर भी उनकी संग्राम-नीति का पूर्ण उल्लेख, इस पुस्तक में नहीं किया जा सकता।

महात्मा गाँधीजी की अगवानी में सरकारी कानून तोड़ने के लिए 1930 में नमक सत्याग्रह आरम्भ किया गया। उनकी अगवानी में 16 अप्रेल,1930 के दिन 78 सत्याग्रहियों का दल गुजरात के समुद्र किनारे बसे गाँव दान्डी में पहुँचा और सत्याग्रहियों ने समुद्र से लाए पानी को सुखाकर, नमक बनाया। इस दल में साबरमती आश्रम में रहने वाले सिन्ध के युवक आनन्द हिंगोराणी भी थे। दान्डी मार्च में शामिल होने के लिए सिन्ध से चोइथराम वलेचा, सीतलदास कश्यप, मास्तर गोबिन्दराम, बहरूमल ककवाणी और जेसा-राम इन 5 सत्याग्रहियों का एक जत्था गाँधीजी से मिला। किन्तु गाँधीजी ने इस जत्थे को, सिन्ध में नमक सत्याग्रह को सफल बनाने के लिए वापस लौटा दिया।

धारासना नमक डिपो पर चढ़ाई

दान्डी के बाद गुजरात के धारासना नमक डिपो पर सत्याग्रह करने के पूर्व गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और श्रीमती सरोजनी नायडू की अगवानी में एक दल धारासना डिपो पर सत्याग्रह करने पहुँचा। इस दल में सिन्ध से हरीराम माड़ीवाला और शेवक भोजराज की अगवानी में 21सत्याग्रहियों का जत्था शामिल हुआ। इस सम्बन्ध में श्री माड़ीवाल अपनी पुस्तक में लिखते हैं - "प्रभात के समय सत्याग्रहियों के दल ने लड़ाई के मैदान में उतरकर हाथ जोड़कर प्रभु से आराधाना करते हुए कहा "हे प्रभू ! हमारी डोर आपके हाथ है। चाहे मारो या जिलाओ, हम निरभिमानियों का मान तुम्हारे बस में है।" ... **शेष अगले पृष्ठ पर ...**

''आराधना पूरी करने के बाद जैसे ही सत्याग्रहियों का दल डिपो के सामने खुद को गिरफ्तार करवाने पहुँचा, तभी ''मारो-मारो'' की आवाज सुनाई पड़ी। पल भर बाद ही निहत्थे और निर्दोष सत्याग्रहियों को गिरफ्तार करने की अपेक्षा इनके साथ घातक मार-काट चालू हो गई। पता नहीं प्रजा के रक्षकों ने किस कानून के तहत कसाइयों की तरह निर्मम व्यवहार किया। सत्याग्रहियों का कोई भी अंग सुरक्षित नहीं बचा। गंदी-गंदी गालियाँ देते हुए उनको नंगा कर उनकी गुदाओं में लाठियाँ घुसेड़ी, गुप्तागों को जूतों से कुचला। उनकी छातियों पर चढ़कर अमानवीय नाच किया। घायलों को बेहोशी की हालत में सुईयाँ और काँटे चुभाए। उनके शरीर पर घोड़े दौड़ाए गए और उठाकर गड्ढों, खंदकों तथा कंटीली झाड़ियों में फेंका।
धारासना की लड़ाई अहिंसा और हिंसा, आत्म-बल और पशु-बल की लड़ाई थी। यह दुनियाँ के इतिहास में अनोखा व अजरज भरा अनुभव था। शान्ति के साथ, बिना तड़फे-चीखे खुद को मरवाने-कटवाने और मारने वाले को माफ करने की लड़ाई थी। ऐसी वीरता, दुनियाँ के इतिहास में ढूंढने पर भी नहीं मिलेगी।''
संगीताचार्य श्री तुससीदास भाटिया और पमनदास गम्भीर रूप से घायल होने के बाद शहीद हो गए।

सिन्ध में नमक सत्याग्रह

सिन्ध में नमक सत्याग्रह आरम्भ होने के पूर्व असहयोग आंदोलन और मुस्लिम लीग के कारण कई मुसलमान काँग्रेस से अलग हो गए थे। गाँधीजी के द्वारा खिलाफत आंदोलन अथवा असहयोग आंदोलन में मुस्लिमों का सहयोग करने की घोषणा का मोहम्मद अली जिन्ना ने विरोध किया था, जिसके कारण उन्हें काँग्रेस छोड़नी पड़ी। बाद में उन्हें, मुस्लिम-लीगी नेताओं ने मुस्लिम लीग में शामिल होने के लिए मना लिया। गाँधीजी की इस घोषणा के कारण कई प्रसिद्ध नेताओं के साथ अनेक हिन्दुओं ने भी काँग्रेस छोड़ कर, हिन्दू सभा में प्रवेश किया। हिन्दू सभा ने 1937 के असेम्बली चुनावों में काँग्रेस की बराबरी करके 10 सीटें जीत ली थीं। इसलिए गाँधी सहित सभी काँग्रेसी नेताओं को सिन्ध में नमक सत्याग्रह की सफलता के प्रति शंका थी किन्तु सिन्ध की जनता ने उनकी शंका को र्निमूल सिद्ध कर दिया।

6 से 13 अप्रेल, 1930 तक नमक सत्याग्रह के लिए कौमी सप्ताह मनाया गया। इसके साथ ही सारे सिन्ध में नमक कानून तोड़ने के लिए सत्याग्रहियों की टोलियाँ बनाई गईं। कराची की पहिली टोली जो 13 अप्रेल, 1930 के दिन नमक कानून तोड़ने वाली थी, उसमें शामिल थे - नारायणदास बेचर, स्वामी कृष्णानन्द, मणीलाल व्यास, डॉ. ताराचन्द लालवाणी, महाराज विष्णू शर्मा और डॉ.चोइथराम गिदवाणी। इन नेताओं की अगवानी में कराची में हजारों की संख्या में एक विशाल जुलूस निकाला गया, जिसमें पुरुष और महिलाओं सहित बच्चे भी शामिल हुए। हजारों लोगों ने नेती-जेती से समुद्र का पानी लाकर सुखाया और नमक बनाया। सारे शहर के साथ पूरे सिन्ध में इस नमक कानून के तोड़ने की खबर, बिजली की चमक की तरह फैल गई।

16 अप्रेल के दिन पुलिस ने जुलूस के सभी 6 नेताओं को गिरफ्तार कर लिया और मैजिस्ट्रेट मि. रिचर्डसन की कोर्ट में पेश किया। कोर्ट के बाहर हजारों लोगों की भीड़ जमा हो गई। भीड़ को जमा होने से रोकने के लिए पुलिस ने लाठियाँ लहरानी शुरू कीं। जिससे भीड़ ने गुस्से में आकर, पुलिस पर पत्थर बरसाए। जयरामदास दौलतराम के साथ अन्य नेता हाथ जोड़कर भीड़ को शान्त करने में लगे थे, कि अचानक कोई चेतावनी दिए बिना पुलिस ने गोलियाँ बरसाईं। इससे दो नवयुवक शिकारपुर का मेंघराज लुल्ला और महाराष्ट्र का दत्तात्रेय माने शहीद हो गए। एक गोली, जयरामदास दौलतराम के घुटने को छेदकर निकल गई। दूसरे दिन शहीद नवयुवकों की शव-यात्रा निकाली गई। .. शेष अगले पृष्ठ पर ..

नमक कानून तोड़ा और कोर्ट में दहाड़ पड़े सिन्धी-शेर

16 अप्रेल, 1930 के बाद भी सिन्ध में नमक कानून तोड़ने का काम बेधड़क और सतत चलता रहा। नवाबशाह डिवीजन में भगवानदास की अगवानी में शहदादपुर नौजवान मन्डली ने नवाज और सरहारी गाँव की पंचायत के प्रस्ताव द्वारा बारह महीने के लिए विदेशी कपड़े, शराब और सिगरेट आदि के प्रयोग पर रोक लगवाई। भगवानदास ने 2 जून के दिन कुंभ लींमन में भी प्रचार किया, जहाँ महाशय फोनेमल ने नमक बनाया। यहाँ पंचायत ने छह महीने के लिए विदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर रोक लगाई। इसी टोली ने 3 जून सरकंड में आकर प्रचार किया जहाँ महाशय फोनेमल ने नमक बनाकर कानून तोड़ा।

19 जून को नवाबशाह में शाम की सभा में हैदराबाद से महाशय खिलूमल, मौलवी मुहमद मुआज, मौलवी मुहमद कासिम, महाशय किशिनचन्द आदि की एक टोली डॉ. चिमनदास की अगवानी में पहुँची। जिन्होंने सभा को सम्बोधित किया। महाशय लोकूमल ने खुले रूप में मन्च पर नमक बनाकर कानून तोड़ा। विदेशी कपड़े का राक्षस बनाकर, यहाँ भी होली जलाई गई और पुड़िया बनाकर नमक बेचा।

नमक-सत्याग्रह को सफल बनाने के लिए बनी योजना के अनुसार प्रोफेसर हासानन्द जादूगर ने सिन्ध में प्रचार कार्य को चालू रखते हुए नवाबशाह के साहिती क्षेत्र की यात्रा शुरू की। प्रचारकों की पहिली टोली में सर्वश्री प्रभदास ब्रह्मचारी, जयचन्दराय नानकराम नाथाणी, केवलराम थावाणी और मोटूमल थावाणी ने कंडियारो तालुका के महराबपुर से हालाणी,बहिलाणी, खान वाहण, कमाल देरो, मुहबत देरो, जतोई, काणिया-कल्होड़ा और कंडियारे में नमक बनाया। विदेशी कपड़ों का राक्षस बनाकर, होली जलाई गई। जनता से विदेशी कपड़े और शराब आदि का बहिष्कार करने का आव्हान किया। खादी पहिनने हेतु प्रतिज्ञा-पत्र भी भरवाए। इसी तरह यह टोली नवाबशाह के नौंशहरो तालुके के गाँवों से होते हुए भिरिया रोड, चाहीं आदि गाँवों से होते हुए 7 मई को भिरियन गाँव में पहुँची जहाँ सुबह कीर्तन करने के बाद, शाम 7 बजे एक जनसभा का आयोजन किया गया। जनसभा में बड़ी संख्या हिन्दू-मुसलमान, विद्यार्थी और छोटे-छोटे बच्चों सहित महिलाओं की बहुत बड़ी भीड़ जमा हुई। सभा के मन्च पर प्रभदास ब्रह्मचारी, जयचन्दराय, और थावाणी भाईयों सहित हासानन्द जादूगर विराजमान हुए। सभा का श्रीगणेश हासानन्द जादूगर के राग से हुआ जिसमें लोगों ने सुर मिलाकर गाया -"कान खपे-कान खपे, सरकार धारी कान खपे(नहीं चाहिए-नहीं चाहिए, पराई सरकार नहीं चाहिए)।" और अन्य नेताओं के सम्बोधन के बाद नमक बनाया गया, जिसकी पुड़ियाँ बनाकर दस-दस रुपए में बेची गईं। और उसके बाद यह टोली नूनारियन गाँव में पहुँची, जहाँ पहिले से ही नमक बनाया जाता था। 9 मई को नौंशहरे के स्वराज आश्रम के सामने खुले मैदान में आमसभा में प्रभदास ब्रह्मचारी, जयचन्दराय, मोटूमल, खेमचन्द बालाणी और केवलराम ने नमक बनाया। अन्त में राष्ट्रीय कन्या पाठशाला की कन्याओं ने, "असांजो गाँधी चढ़ियो जंगि ते, होजमालो।" गीत आम जनता से गवाया। 17 मई को मोल्हण, ठारूशाह, दलीपोटा, टिन्ही, ठटियुन् और नौंशहरे तालुके के अन्य गाँवों के केवलराम हीरानन्द(हालाणी), साधूराम लखूमल(मिठियाणी), ब्रह्मानन्द और महारा त शेवाराम (डेपारजा) आदि ने मिलकर मिठियाणी में नमक बनाया। टोली नवाबशाह व साहिती के सभी तालुकों, गावों से होते हुए दो महीने का सघन प्रचार करते हुए 15 जून को कंडियारे वापस पहुँची। जहाँ साहिती के कार्यकर्ताओं की बैठक में प्रचार-कार्य पर चर्चा के बाद भविष्य की योजना तय की गई। शाम को जनसभा में काका सच्चानन्द ने जोरदार भाषण दिया। इन टोलियों के पीछे सी. आई. डी. पुलिस लगी रहती थी।

16 जून की सुबह पुलिस ने टोली के चारों नेताओं को गिरफ्तार करके 17 जून को नवाबशाह सब डिवीजनल जज की कोर्ट में पेश किया।

"हर सजा, मेरी प्रिय-पवित्र भूमि से मिले प्रसाद की तरह होगी"

कोर्ट में चारों नेताओं-काका सच्चानन्द थावाणी, प्रभदास ब्रह्मचारी, हासानन्द ज़ादूगर और हरचन्दराय नाथाणी में से किसी ने भी अपना बचाव नहीं किया। इसके विपरीत चारों ने जज के सामने शेरों की तरह दहाड़ते हुए अपना अपराध स्वीकार किया। कोर्ट में उनके बयान निम्न प्रकार से थे --



"मैं यह स्वीकार करता हूँ कि जो सरकार हिन्दुस्तान पर किसी भी अधिकार के नं रहते हुए भी सत्ता हथियाकर बैठी है और उसे चूस व पीस रही है, उसके विरुद्ध मैंने विद्रोह फैलाया है। मैंने जान-बूझकर सरकारी कानून तोड़ने के काम किए हैं, विशेषकर नमक-कानून तोड़ा है। उसका परिणाम भोगने को सदा तैयार रहूँगा। इसके बदले में मुझे मिली हर सजा मेरे लिए, मेरी प्रिय और पवित्र भूमि से मिले प्रसाद की तरह होगी।"

आर्य समाजी प्रभदास ने श्री गुलाबराय शिवनदास सावनाणी और दादी कृष्णा हिङोराणी के साथ मिलकर नौंशहरे में राष्ट्रीय कन्या पाठशाला और शेवा आश्रम का काम भी सम्भालते थे। उन्होंने 1925 में नवाबशाह में 'नवाबशाह गजट' नामक साप्ताहिक का सम्पादन किया और दादा शेवक भोजराज के साथ मिलकर 1925 में नवाबशाह में 'बालकों की बाड़ी' स्थापित की।

विभाजन के बाद अजमेर-राजस्थान में आकर भाऊ प्रभदास ब्रह्मचारी ने आर्य समाजी श्री दीपचन्द तिलोकचन्द के साथ मिलकर, सिन्धीयत की सुरक्षा करते हुए समाज की नारियों और बच्चों को सिन्धी भाषा और संस्कृति से जोड़ने के लिए आजीवन सेवाएँ प्रदान कीं। समाज के गरीब वर्ग को स्वरोजगार सुलभकर आत्मनिर्भर बनाया। 'फुलवाड़ी' नामक प्रसिद्ध बाल-पत्रिका का सम्पादन किया।

सारे हिन्दुस्तान के राजाओं-महाराजाओं में सरकार के विरुद्ध विद्रोह फैलाता रहा हूँ

प्रोफेसर हासानन्द जादूगर का बयान बहुत ही विद्रोही और रोचक था -"आज ये कहावतें सही सिद्ध हो रही है कि डिठा पीर, पुनी मुराद। मुल्लां चोरु बांगा शाहिद। मानीअं जा मुहताज, शर्मिजी ड़िनाऊँ शाहिदी। मुंहिंजो गुरू-मन्त्र आहे-बेकाइदे जी बीमारी वधी शल वधी वणु थिए, नं त काइदनि जे कड़ में था कूंधर



कुसिजनि केतिरा। हकु करे सो हाकिमु, हीसाए सो हुरु। चेल्हि भज़ी भली चटु थिए ; पर चऊँ चुपि करि, नं चुरु। मां जादूअं जो उस्ताद आहियाँ। मुंहिंजो कमु आहे अहिड़ो; चालू काइदनि जे बर्खिलाफ प्रचार करिणु, मुहिंजो धन्धो आहे अहिड़ो - चालू काइदनि जो कन्धु भञणु घुर्जे, जिनि काइदनि कहरु कयो आहे कौम ते। मूं खां पंहिंजीअ हयातीअ में जेको थी सघियो आहे, उनं लाइ वसऊं कोनं घटायो अथमि। नं रुगो सिन्धु जे कुन्ड-कुड़छ में पर हिन्दुस्तानं जे राजाउनि-महाराजाउनि में बगावत फहिलाईंदो रहियो आहियाँ। ऐं इनं करे धन्धो ई अहिड़ो इख्त्यारु कयो अथमि। हीअ खूनी सरकार बेकाइदे रिथि -यल आहे ऐं रैयत जे मर्जीअ खां सिवाइ बेकाइदे राजु करे थी। जिस राजा की प्रजा दुखियारी, वह राजा है नरक का अधिकारी। इनं करे मुंहिंजो कोर्ट खे चवणु आहे त पेट जे वास्ते इहो फारसु छड़े, विवेक खां वरंदी वठी, धर्म जे युद्ध में ट्रपी पओ ऐं असांजी जाहि भरियो त असीं वञी कुझु आरामु कयूँ।"

इसका हिन्दी अनुवाद है-" वे पीर देख लिए जिनको देखने की पैत्रक-कामना थी। मुल्ला चोर और बांग देने वाले गवाह बने हैं। रोटी के मोहताज शर्मा कर गवाही दे रहे हैं। ... शेष अगले पृष्ठ पर ...

मेरा गुरू-मन्त्र है--बेकाइदे की बीमारी काश बढ़कर पेड़ बने, नहीं तो काइदों के यज्ञ-कुन्ड में कई निर्दोषों की हत्या हो रही है। न्याय करे वो न्यायाधीश, डराए वह शैतान। कमर टूटकर भले चूर-चूर हो जाए ; पर कहते हैं चुप कर बैठ, न हिल। मैं जादू का गुरू हूँ, मेरा काम ही है अवैध कानूनों के विरुद्ध प्रचार करना। मेरा धन्धा है ही ऐसा। चालू कानूनों की गर्दन तोड़नी चाहिए, जिन कानूनों ने प्रलय मचाई है प्रजा पर। मुझसे मेरे जीवन में जो हो सका है, उसके लिए अपने बस से कम नहीं किया है।

मैं नं केवल सिन्ध के कोने-कोने में, परन्तु सारे हिन्दुस्तान के राजाओं-महाराजाओं में विद्रोह फैलाता रहा हूँ। इसलिए धन्धा ही ऐसा अपनाया है। यह हत्यारी सरकार अवैध रूप से गठित है और प्रजा की इच्छा के बिना अवैध रूप से राज कर रही है। जिस राजा की प्रजा दुखियारी, वह राजा है नर्क का अधिकारी। इसलिए मेरा कोर्ट से कहना है-कि पेट के लिए वह, फारस (अपना देश) छोड़कर विवेक से उत्तर लेकर; धर्म-युद्ध में कूद पड़े और हमारा स्थान ले ले, ताकि हम जाकर कुछ आराम करें।"

नवाबशाह जिला काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष काका सच्चानन्द थावाणी का बयान था -"अपनी राष्ट्रीय सरकार के द्वारा चालू किए गए सत्याग्रह-संग्राम का मैं एक सैनिक हूँ। इस नाते मेरा कर्तव्य है कि इस विदेशी सरकार के विरुद्ध कार्य करके, अपनी राष्ट्रीय सरकार को विजयी बनाकर देश को स्वतन्त्र कराऊँ। इसलिए मैं अपने लिए किसी बचाव की जरूरत नहीं समझता।"

हरचन्दराय नाथाणी ने निडरता पूर्वक कहा -"मैंने बराबर नमक-कानून तोड़ा है और लोगों को ये कानून तोड़ने के लिए उत्साहित किया है। यदि स्वतन्त्र हुआ जो यही काम करता रहूँगा, क्योंकि ये कानून मैं ईश्वरीय कानून के विरुद्ध समझता हूँ।"

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी प्रोफेसर हासानन्द 'जादूगर'

आर्य समाजी प्रोफेसर हासानन्द 'जादूगर' एक कवि होने के साथ-साथ सुरीली आवाज के धनी थे। बचपन में ही चूल्हे पर रखी देगची में हाथ डाल लेने के कारण उनके सीधे हाथ की दो उंगलियाँ आपस में जुड़ गई थीं जो उनकी जादू-कला के लिए वरदान सिद्ध हुईं। वे गूंगे, बहरे और तोतले लोगों की बोलियों के साथ विभिन्न जानवरों जैसी बोलियाँ भी बोलते थे। अपनी जादूगरी के साथ काव्य-कला और मधुर कन्ठ से लोगों को मन्त्र-मुग्ध कर देते थे। जन-सभाओं में उनका नाम मात्र सुनकर हजारों लोग जमा हो जाते थे। आपने जेल कई बार यात्राएँ भी की, जहाँ अपनी कलाओं से कैदियों को हंसाते रहते थे।

आपने, बंगाल से अपने मित्र-**घोघा पाशा** और **के.लाल** से जादू-कला सीखी। जादूगरों के बीच वे, 'सिक्कों के बादशाह' के नाम से प्रसिद्ध थे। जादू-कला के माध्यम से वे, हिन्दी भाषा का भारत भर में प्रचार करते थे। उन्होंने जीवन भर दहेज-प्रथा के विरुद्ध भी प्रचार किया। यहाँ तक कि अपनी दोनों पुत्रियों का विवाह उस परिवार में करने की घोषणा की जो दहेज का लेन-देन न करता हो। उनकी तरह दहेज विरोधी काका नेभनदास फतनाणी ने उनकी पुत्रियों के साथ अपने दो पुत्रों का विवाह करना स्वीकार किया। उन्होंने इस विवाह में चर्खा, चक्की, चूल्हा और सूत कातने का सामान ही दहेज के रूप में दिया। उनका एक दामाद श्री श्याम फतनाणी, 1942 भारत छोड़ो आंदोलन में जेल गया था।

विभाजन के बाद दिल्ली में आकर, आजीवन समाज-सेवा करते रहे। सिन्धी भाषा को भारतीय संविधान में मान्यता दिलवाने में आपने अग्रणी भूमिका निभाई थी। 28 सितम्बर, 1966 के दिन स्वर्ग सिधार गए। उनके विद्राही गीतों की कुछ पक्तियाँ इस प्रकार थीं, "आ गया है कर्म-युग, कुछ काम करना सीख लो। देश और जाति पर, कट-कट कर मरना सीख लो ॥"

राष्ट्र-कवि हूँदराज 'दुखायल'

आओ नौजवानों ! हुनर आजमाएँ, छूटीं गर्म गोलियाँ, जिगर आजमाएँ

राष्ट्रकवि हूँदाराज 'दुखायल', सिन्ध की जंगे-आजादी के ऐसे योद्धा थे जो अपने लिखे गीतों को ढपली पर गाकर आजादी का अलख जगाते थे। वे ऐसे लोक-कवि थे, जिनके गीत आजादी आंदोलन में जन-जन के होठों पर गूँजते थे। 1930-31 में उनकी लिखी दो पुस्तकें 'फासी-गीत' और 'आलापे-आजादी' अँग्रेज सरकार ने प्रतिबन्धित कर जब्त की थीं, जो उनके अन्याय के विरुद्ध विद्रोह करने का परिचय देती हैं।



उनके लिखे 'वणु ऐं कुहाड़ो' (पेड़ और कुल्हाड़ी) और 'ऐट्र जो आवाजु' (चर्खे की आवाज) विभाजन के बाद भी सिन्धीयों के घर-घर में गाए जाते थे। उनकी रचनाओं में शान्ति और भाई-चारे सहित राष्ट्र-प्रेम और विश्व-प्रेम का संदेश मिलता है। उनके गीत वणु ऐं कुहाड़ो में भी उन्होंने अपरोक्ष रूप से अँग्रेजों की अपेक्षा उनकी सेना और पुलिस में नौकरी कर रहे भारतीयों को ही गुलामी का बड़ा कारण सिद्ध किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं और नाटकों के माध्यम से गरीब मजदूरों-किसानों और हरिजन-वर्ग के सुधार और उद्धार के कार्य को ईश-सेवा निरूपित किया है। ईश्वर को भी उन्होंने 'अन्दर गोल्हि-अन्दर गोल्हि' (अन्दर खोज-अन्दर खोज) कहकर, मनुष्य का अभिन्न रूप माना है। इसलिए नर-पूजा ही नारायण-पूजा, उनका मूल-मन्त्र था। राष्ट्र-भाषा हिन्दी में भी उन्होंने कई रचनाएँ लिखी हैं, जिनमें 'जय जगत' नामक गीत, वसुधैव कुटुम्बकम् का सनातन भारतीय संदेश देने वाला गीत लोकप्रिय हुआ। वह गीत इस प्रकार है --

जय जगत पुकारे जा, सिर अमन पे वारे जा।
सबके हित के वास्ते, अपना सुख बिसारे जा॥ जय जगत पुकारे जा...
प्रेम की पुकार हो, सब का सब से प्यार हो।
जीत हो जहान की, फिर क्यों किसी की हार हो॥ जय जगत पुकारे जा...
न्याय का विधान हो, सब का हक समान हो।
सबकी अपनी हो जमीन, सबका आसमान हो॥ जय जगत पुकारे जा...
रंग-भेद छोड़ दो, जात-पांत तोड़ दो।
मानवों की आपसी, अखन्ड प्रीत जोड़ दो॥ जय जगत पुकारे जा...
शान्ति की हवा चले, जग कहे बले-बले।
दिन उगे स्नेह का, रात रंज की ढले॥ जय जगत पुकारे जा...

साहित्य-शिक्षा केन्द्र
कृष्ण भजनावली -1924
आर्य भजनावली -1928
एक हजार से अधिक पृष्ठ-सात पुस्तकों का संग्रह
संगीत अंजली-1963
नाटक - हरिजन अबला -1934 सहित कुल पाँच
कच्छ-गाँधीधाम में
स्कूल, कॉलेज - 16

संक्षिप्त जीवन-परिचय -- जन्म -16 जनवरी 1910, स्थान-लाड़काणा सिन्ध, माता-टिकुलबाई, पिता-लीलाराम। गुरू-महाकवि किशिनचन्द 'बेवस'। असहयोग आंदोलन 1921 में स्कूल त्याग। 1925 में सर्राफ का धन्धा शुरू। 1928 में पिता व 1930 में माता का देहान्त। 1934 से हरिजन हलचल शुरू। **आजादी आंदोलन में जेल** -पहिली बार 1930, दूसरी और तुरंत तीसरी बार 1931, 1942, 1945। पाकिस्तान को तोड़ने में सहयोगी होने के झूठे केस में छठवीं बार 1948। 1951 में भूदान-यज्ञ और सर्वोदय आंदोलन में सन्त विनोबा और जयप्रकाश नारायण के साथ 50 हजार किलोमीटर पदयात्रा। **विभाजन बाद विस्थापित समाज की सेवाएँ**-भाई प्रताप के साथ मिलकर कच्छ में गाँधीधाम बसाना। गाँधीधाम मैत्री मन्डल की स्थापना और कई स्कूल-हाईस्कूल स्थापित - 1949। स्वर्गवास - 2003।

अँग्रेज गवर्नर को उल्टे-पैर वापस जाना पड़ा

नमक सत्याग्रह को सफल बनाने के लिए एक योजना बनाई गई। जिसके निर्देशक थे - जयरामदास दौलतराम और सदस्य थे चोइथराम वलेचा और डॉ.वतणमल गिदवाणी। जयरामदास दौलतराम के घायल होने के बाद चोइथराम वलेचा को निर्देशक नियुक्त किया गया। उन्होंने सारे सिन्ध का रटन (यात्रा) किया और हर शहर में अगवानों की टोलियाँ बनाईं। किन्तु वे भी गिरफ्तार कर लिए गए और उन्होंने लाड़काणे के श्री निहचलदास हिमथसिंघाणी को निर्देशक नियुक्त किया। शहर प्रमुखों की टोलियाँ इस प्रकार थीं- हैदराबाद - डॉ. चिमनदास, प्रो. घनशाम तथा अन्य। नवाबशाह-साहिती - सच्चानन्द फेरूमल, नेंवन्दराम विशनदास, प्रभदास ब्रह्मचारी, जादूगर हासानन्द, मेठाराम हरूमल, जयचन्दराय नाथाणी, केवलराम थावाणी आदि। लाड़काणो - काको मोरूमल, हूँदराज दुखायल, वाधू केसवाणी। सक्खर - सीतलदास कश्यप, ठाकुरदास गुलूमल, गोपालदास आदि। शिकारपुर - काको सोभराज वलेचा, स्वामी प्रयाग भारती, महाराज मथुरादास आदि। जेकबाबाद - स्वामी अंगदेव, चोइथराम डेम्बला आदि।

श्री मोतीराम रामवाणी की पुस्तक, 'रतन जोत' में इस नमक कानून को तोड़ने के मामले में पूरे सिन्ध से गिरफ्तार सत्याग्रहियों की जिलावार संख्या 724 है। कराची : 254, शिकारपुर : 100, हैदराबाद : 90, सक्खर : 70, मीरपुर खास : 60, लाड़काणो : 40, जेकबाबादः 40, नवाबशाह-साहिती : 60।

सिन्ध में इस आंदोलन के समय कुछ प्रमुख घटनाएँ हुईं। उनमें जेकबाबाद के स्थानीय प्रशासन ने राष्ट्रीय झन्डा फहराने पर प्रतिबन्ध लगाया। इस प्रतिबन्ध को तोड़ने के लिए सिन्ध काँग्रेस के आव्हान पर प्रदेश भर से, नागपुर की तरह झन्डा-सत्याग्रह मनाने के लिए विभिन्न शहरों के कार्यकर्ता जेकबाबाद में जमा होने लगे। तीसरे निर्देशक निहचलदास सहित कई प्रमुखों को गिरफ्तार कर लिया गया। इसी बीच गाँधी-इर्विन समझौता हुआ। इस कारण सभी सत्याग्रहियों को आजाद कर दिया गया।

दूसरी घटना नवाबशाह-साहिती जिले में हुई। जिले में बम्बई से गर्वनर का दौरा होने वाला था। नमक-कानून तोड़ने वालों के विरुद्ध कड़ा दबाव बनाने के लिए प्रशासन के आदेश पर पुलिस ने लगभग 50 विद्यार्थियों को बेंत मार कर घायल कर दिया। प्रत्येक विद्यार्थी को जेल के एक क्रूर कैदी के द्वारा 6 से 10 बेंत मारी गईं। विद्यार्थियों के सिवा लगभग 200 सत्याग्रही गिरफ्तार कर लिए गए।

इस दबाव से प्रशासन ने समझा कि सत्याग्रही भयग्रस्त होकर घरों में चुपचाप दुबककर बैठ जाएँगे और लोग गवर्नर का स्वागत करेंगे। किन्तु गवर्नर की सवारी, नओं शहरो और नवाबशाह में पहुँची तो शहरवासियों ने पूर्ण हड़ताल रखकर सभी दुकान आदि बन्द कर दिए। लोगों ने जहाँ-तहाँ जुलूस निकालकर, 'गवर्नर गो बैक' के नारों से उनका बहिष्कार कर काले झन्डे दिखाए। गवर्नर के अमले के एक अँग्रेज अफसर ने नारे लगाते जुलूस के नेताओं के बीच आकर कहा, "जल्दी मत करिए, गवर्नर कुछ ही सेकन्डों में वापस लौटकर जा रहे हैं।" और सचमुच गवर्नर को वापस जाना पड़ा। ठारूशाह के स्कूल में घोषित सरकारी कार्यक्रम भी रद्द कर दिया गया। इस जुलूस के प्रमुख प्रबन्धक था नवयुवक हरिश्चन्द्र थावाणी।

जुलूस में एक नवयुवक, हासानन्ज जादूगर के गीत और नारे गुँजा रहा था और भीड़ के लोग उसके सुर में मिला रहे थे। गीत के बोल इस प्रकार थे -- गूँजा जंग का गान, उठो-उठो शेर जवान।

कौमी झन्डा फड़के ... फड़-फड़। दुश्मन की छाती धड़के ... धड़-धड़॥
अप-अप द नेशनल फ्लैग। डाऊन-डाऊन द यूनियन जैक॥
चलो जवानों जेल पर, बोलो धावा जेल पर। गाँधी हमारे साथ है, चलो जवानों जेल पर॥

शराब और विदेशी कपड़ों का बहिष्कार

1930 में नमक सत्याग्रह के साथ शराब और विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के लिए भी सिन्ध में आंदोलन छेड़ा गया। इसमें पुरुषों के साथ महिलाओं सहित स्कूली बच्चों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। विदेशी कपड़े की दुकानों के सामने प्रदर्शन करने वालों में पढ़े-लिखे सरकारी कर्मचारियों के परिवारों सहित थोक कपड़ा-व्यापारियों के परिवारों की महिलाओं ने भी भाग लिया। आंदोलन के प्रमुख केन्द्र कराची में इस प्रदर्शन के दृश्य विशेष लुभावने थे। सैकड़ों महिलाएँ हाथों में सूत कातने वाली तकलियाँ चलाती हुईं, विदेशी कपड़ा-दुकानों के सामने पहुँचकर ग्राहकों को हाथ जोड़कर, विदेशी कपड़ों के प्रयोग से होने वाले नुकसान आदि के विषय में समझाकर, बहिष्कार करने की प्रार्थना कर रही थीं। बहिन ज़ेठी सिपहमलाणी, किकी लालवाणी, कस्तूर बेन(गुजराती)और पार्वती गिदवाणी इन महिलाओं की प्रमुख नेत्रियों में से थीं।

हैदराबाद में महिलाओं की अगवानी करने वाली प्रमुख महिलाएँ थीं - कमला हीरानन्द, देवी हासोमल और मोहिनी लालचन्द आदि। सिन्ध के हर शहर में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर इस आंदोलन में भाग लिया। शिकारपुर की बहिन गंगा देवी, पहिली महिला थी जिसे लखी-दर(गेट) के पास विदेशी शराब की दुकान के सामने प्रदर्शन करते हुए गिरफ्तार किया गया।

विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के लिए कराची में, 'फॉरेन क्लाथ बायकाट कमेटी' गठित की गई। जिसके पहिले सेक्रेटरी श्री मूलजी विश्राम नरसी, दूसरे श्री भगवानदास रणछोड़दास, तीसरे सेक्रेटरी थे सेठ सुखदेव उधवदास भारवाणी। ये वही सेठ सुखदेव थे, जो 1945 के चुनावों में संसद सदस्य बने। सिन्ध विधानसभा के सदस्य शहीद सेठ हरचन्दराय विशनदास इसी भारवाणी परिवार के सदस्य थे। सेठ सुखदेव का क्लाथ मार्केट में ऐसा दबदबा था कि कोई भी कपड़ा-व्यापारी, उनके आदेश को टाल नहीं सकता था। पूर्व चेतावनी के बाद, विदेशी कपड़ा बेचने वालों को आर्थिक दन्ड भी दिया जाता था। सेठ सुखदेव के डर से वे तुरन्त दन्ड जमा कर देते थे। इस सम्बन्ध में अँग्रेजी अखबार, 'डेली गजट' ने लिखा था, "कराची में सेठ सुखदेव अँग्रेज सरकार की तरह एक समानान्तर सरकार चला रहा है।" इस कारण पुलिस ने उनके खिलाफ गम्भीर अपराधों की धाराएँ लगाकर गिरफ्तार भी किया था। जिनके आधार पर उन्हें 75 साल की जेल हो सकती थी, किन्तु कोई गवाह न मिलने के कारण पुलिस को केस वापस लेना पड़ा।

फॉरेन क्लाथ बायकाट कमेटी ने व्यापारियों को बेठक में बुलाकर चेतावनी दी कि हफते भर के बीच विदेशी कपड़े की बिकवाली बन्द कर दें और पूरा माल विदेशी एजेंटो को वापस लौटा दिया जाए। विदेशी एजेंटों ने इस माल को जब देश के अन्य शहरों के लिए लारियों में भरकर रेल्वे गोदाम की तरफ रवाना करना चाहा तो सत्याग्रही इन लारियों के सामने आकर लेट गए। बाध्य होकर लारी चालकों ने लारियाँ आगे बढ़ाने से मना कर दिया। इस तरह एजेंटों ने को इस माल को जहाजों के रास्ते वापस ब्रिटेन भेजना पड़ा। विदेशी कपड़े और शराब के बहिष्कार आंदोलन में बच्चों की, 'वानर-सेना' भी विशेष सहयोग करती थी। यदि कोई व्यापारी विरोध करता था तो यह 'वानर-सेना' उसके घर या दुकान के सामने जमा होकर, नगाड़े बजाती हुई 'हाय-हाय' का छोर मचाती थी। हारकर उस व्यापारी को 'वानर-सेना' की बात मानकर विदेशी माल बेचना बन्द करना पड़ता था।

देश भर में ऐसे आंदोलनों के परिणाम स्वरूप 'गाँधी-इर्विन' समझौता तय होने के बाद आंदोलन समाप्त हुआ और क्रान्तिकारियों के सिवा सभी कांग्रेसी कार्यकर्ताओं को जेल से छोड़ दिया गया।

कराची सम्मेलन और अवज्ञा आंदोलन - 1932

1931 में कराची में काँग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन हुआ। इसके चेयरमेन डॉ. चोइथराम गिदवाणी थे, सचिव डॉ. ताराचन्द लालवाणी, आर.के. सिधवा, ईसरदास वरन्दमल और खजान्ची लालचन्द भानामल तथा ईदनमल लालवाणी जी.ओ.सी. जनरल कमांडिंग आफिसर नियुक्त किए गए। यह सम्मेलन जिस स्थान पर हुआ, उसको शहीद हरचन्दराय विशनदास के सम्मान स्वरूप, 'हरचन्दराय नगर' नाम दिया गया। सम्मेलन में पहिली बार 'सीमान्त गाँधी' के नाम से प्रसिद्ध खान अब्दुल गफ्फार खान के साथ उनकी 'लाल-सेना' ने भी भाग लिया। पठानों की इस सेना के लोग लाल रंग का चोला पहिने हुए थे।

अधिवेशन में 'गाँधी-इर्विन' समझौते के अनुसार लन्दन में होने वाली गोल-मेज कांफ्रेन्स के लिए प्रतिनिधि के रूप में गाँधीजी का नाम तय किया गया। साथ ही इस कांफ्रेन्स में भारत के लिए मूल-भूत अधिकारों की रूपरेखा भी तय की गई। निर्णय के अनुसार गाँधीजी, गोल-मेज कांफ्रेन्स में भाग लेने के लिए लन्दन गए। किन्तु यह कांफ्रेन्स बिना किसी चर्चा के असफल हुई और गाँधीजी को खाली हाथ वापस लौटना पड़ा। इस तरह जिस 'गाँधी-इर्विन' समझौते पर काँग्रेस खुशियाँ मना रही थी, उसको कचरे की टोकरी में डाल दिया गया। इससे उत्पन्न होने वाले असंतोष को दबाने के लिए अँग्रेज सरकार ने लार्ड इर्विन को वापस लन्दन बुलाकर, उनके स्थान पर लार्ड विलिंगडन को वाईसराय नियुक्त किया।

गाँधीजी के लन्दन से वापस भारत में पैर रखने के पहिले ही मुख्य काँग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। इस कारण 2 जनवरी, 1932 के दिन गाँधीजी ने काँग्रेस वर्किंग कमेटी के बीच में फिर से अवज्ञा आंदोलन शुरू करने की घोषणा की। दूसरे ही दिन वर्किंग कमेटी मेम्बर्स को भी गिरफ्तार किया गया। साथ ही काँग्रेस सहित देश भर के सभी छोटे-बड़े संगठनों को अवैध घोषित कर, उन पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इनमें वे संगठन भी थे, जो केवल समाज-सेवा तक सीमित थे। बिना किसी प्रकार का मुकदमा चलाए, गिरफ्तार काँग्रेसियों को एक महीने तक जेल में बन्द करने के बाद लिखित शर्तों पर छोड़ा गया। इन शर्तों में किसी भी आंदोलन में भाग न लेने, किसी भी दूसरे शहर में न जाने के साथ एक अपमानित करने वाली शर्त भी थी, जिसके अनुसार छूटे व्यक्ति को रोज थाने में जाकर हाजिरी देनी पड़ती थी। अपराधियों की तरह रोज थाने में हाजिरी देने की शर्त को कई स्वाभिमानी कार्यकर्ताओं ने अपमान-जनक लगने के कारण तोड़ा था। इस कारण शिकारपुर में चोइथराम वलेचा की अगवानी में छात्रों सहित जो पहिली टोली गिरफ्तार की गई, उसके प्रत्येक व्यक्ति को दो साल जेल के साथ 500 रुपए आर्थिक दन्ड दिया गया। दन्ड न भरने पर 6 महीने अधिक जेल की सजा भोगनी तय थी। इस आंदोलन में सिन्ध से कुल 1200 लोग जेल गए। इन जुल्मी कानूनों के विरुद्ध राष्ट्र-कवि दादा हूँदराज दुखायल ने गाया था -

आ रहा है शिमला से गढ़कर रोज जुल्मी कानून, आह ! यकसाँ दाद और बेदाद हिन्दुस्तान में।
लाश मेरी काश ! उठे आजाद हिन्दुस्तान में, हो न मरना मेरा काश ! नाशाद हिन्दुस्तान में ।।

अवज्ञा आंदोलन में अखबारों ने भी अपना योगदान दिया। सिन्ध की प्रसिद्ध अखबार 'हिन्दू' के एक के बाद एक, कुल चार सम्पादक श्री हीरानन्द करमचन्द, विशनदास शिवदासाणी, हासोमल ईसरदास और मानसिंह चूहड़मल इस आंदोलन में भी गिरफ्तार किए गए। साथ ही इसके प्रकाशक मन्डल 'देश सेवा मन्डल' को अवैध घोषित कर प्रतिबन्धित किया गया। किन्तु प्रकाशकों ने इस अखबार को 'सिन्धू' नाम से पुनः प्रकाशित करना आरम्भ किया। जिसके सम्पादक थे - श्री आनन्द हिंगोराणी और प्रकाशक - श्री सूरत उत्तमसिंघ थे। सरकार ने इसे भी प्रतिबन्धित किया।

भारत छोड़ो आन्दोलन - 1942

अँग्रेज सरकार और काँग्रेस की नीतियों को देखकर एक बात साफ जाहिर होती है कि जैसे अँग्रेज सरकार 'मदारी' हो और काँग्रेस उसके इशारों पर नाचने वाला 'बन्दर'। एक ऐसा बन्दर जो नाच-नाचकर लोगों का मनोरंजन कर पैसे कमाता है, जिससे मदारी और उसके परिवार का पेट भरता है। मदारी, बन्दर को केवल इसलिए तुकड़े-दो तुकड़े डालता है कि वह हमेशा नाच-नाचकर उसका पेट भरता रहे। बन्दर की बुद्धि की बलिहारी यह कि अपने खून-पसीने से की गई ढेर सारी कमाई के बदले में मिले कुछ तुकड़ों को पाकर ही खुश रहता है। इसलिए यह बन्दर, उसके कई जात-भाईयों के उकसाते रहने के बाद भी, मदारी द्वारा उसके गले में बाँधी गई रस्सी को छोड़ने को तैयार ही नहीं होता। यह देखकर मदारी समय-समय पर उसके तुकड़ों को कुछ और बढ़ाता रहता है।

गाँधी-नेहरू की अगवानी में 1929 में पूर्ण स्वराज का प्रस्ताव पास करने के बाद भी अलग-अलग वस्तुओं पर कर न देने के लिए अलग-अलग नाम से आंदोलन छेड़े गए। जैसे दादा भाई नौरोजी और लोकमान्य तिलक काँग्रेस के नेता न थे, जिन्होंने 1906 में ही एक सूत्री आंदोलन द्वारा पूर्ण स्वराज पाने के लिए विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के साथ, कर न चुकाने का आव्हान किया था। प्रथम विश्व-युद्ध के समय अँग्रेजों का साथ देने के लिए 'अहिसा के पुजारी' द्वारा भारतीय सेना में सैनिक भरती करवाना। एक करोड़ रुपए जमाकर, एक करोड़ काँग्रेसी सदस्य बनाकर केवल एक साल में आजादी दिलाने का दावा। भारत के तुकड़े होने की स्थिति में "मेरे शरीर के तुकड़े-तुकड़े हो जाएंगे" का वचन देना और इस वचन के आधार पर 1945 के चुनाव लड़कर, ऐसी अस्थाई-कामचलाऊ सरकारों का गठन करना जो विदेशी अँग्रेजों के आदेशानुसार काम करती हो। समझौतावादी और अनावश्यक दीर्घ-सूत्री नीति अपनाने के बाद भी निश्चित असफलता देने वाले आंदोलन थे। साथ ही उनका मार्गदर्शन, न केवल अँग्रेजों बल्कि मुस्लिम-आतंकवादी हिंसा के विरुद्ध विवेकहीन अहिंसक नीति अपनाए जाने के कारण आत्मघाती सिद्ध हुए, जिसके परिणाम स्वरूप भारत के तुकड़े हुए। जो देश के लिए आज तक नासूर का फोड़ा बने हुए हैं।

वास्तव में अँग्रेज सरकार से माँग पर माँग करने की अपेक्षा पूर्ण असहयोग के रूप में किसी भी प्रकार का कर न चुकाना ही पूर्ण स्वराज पाने का एक मात्र पहिला और अन्तिम हथियार था। इसके लिए निश्चित समय सीमा की चेतावनी के बाद सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा पूर्ण स्वराज पाना चाहिए था। **श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा, दादा भाई नौरोजी** और **लोकमान्य तिलक** जैसे नेताओं की ऐसी एक सूत्री नीति से अलगाव-वादी मुस्लिम लीग जैसे देश-द्रोही संगठनों को पनपने का अवसर ही नहीं मिलता। राष्ट्रभक्त मुस्लिमों को साथ लेने के बाद भारत को तुकड़े होने से बचाया जा सकता था। पूर्ण स्वराज के लिए प्रथम विश्व-युद्ध एक स्वर्णिम अवसर था, जिसे तुकड़े-तुकड़े आजादी माँगने वालों के कारण खो दिया गया।

1942 में हुए विश्व-युद्ध में एक तरफ भारतीय सेना की बहादुरी और दूसरी तरफ आजाद हिन्द फौज की हलचल से आई जनक्रान्ति को देखकर, वाईसराय लिनलिथगो ने ब्रिटिश प्रधानमन्त्री चर्चिल को 31 अगस्त, 1942 के दिन लिखे पत्र में कहा था, "इस समय मुझे सन् 1857 के विद्रोह के बाद, सबसे प्रखर और उग्र विद्रोह का सामना करना पड रहा है। इस विद्रोह की गम्भीरता और फैलाव की जानकारी, हमने केवल सैनिक सुरक्षा के हित में दुनियाँ से छिपा रखी है।" सिन्ध में भारत छोड़ो आन्दोलन में केवल काँग्रेस के ही कुल 2600 लोग बन्दी बनाए गए। इस आंदोलन की हलचलों का उल्लेख, इस पुस्तक के सिन्ध के क्रान्ति-दूत और सिन्ध की छात्र-शक्ति वाले भाग में किया गया है।

सिन्धी नारियों की वीरता का सबूत है ये तस्वीर



गोवर्धन क्लाथ मार्केट-कराची में नमक सत्याग्रह और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आदि आंदोलनों के पूर्व झन्डा-वन्दन करती हुई महिलाएँ - 1942



ब्रह्मचारिणी जेठी सिपहमलाणी

ये तस्वीर सबूत है ! उन हजारों गुमनाम नारियों की कुर्बानियों का। जिनका नाम आज भी हमें मालूम नहीं, जिनके कारण हम आजाद हुए और दुनियाँ भर में गर्व से सर उठाने के योग्य बन सके। जिन वीर नारियों की देश-भक्ति समुद्र की लहरों की तरह उमड़-घुमड़ पड़ती थी। जब नमक सत्याग्रह की सफलता के लिए कराची की 5000 नारियाँ, समुद्री पानी की घाघर भर-भरकर हर मोहल्ले की हर गली में नमक बनाकर, एक ऐसा अनोखा नजारा पेश कर गईं, जो भारत भर में कहीं भी नजर नहीं आया।

ये तस्वीर सबूत है ! रोशनियों के शहर और सिन्ध की रानी के उपनाम वाले कराची के उस काल का। जब विदेशी शराब और कपड़े आदि के बहिष्कार के लिए कराची के होलसेल कपड़ा मार्केट के व्यापारियों के घर की महिलाओं सहित 300-400 महिलाएँ, पुलिस का आमना-सामना करने लगीं तो हालात बिगड़ने की शंका से, मेयर जगदीश मेहता ने पुलिस को किसी भी तरह की कार्यवाही करने से रोक दिया। क्योंकि इससे पहिले भी इन्हीं महिलाओं की अगवानी में लगभग 5000 की भीड़ के सैलाब ने तूफान सा खड़ा कर दिया था। व्यापारियों ने अँग्रेजी कपड़ा-मिलों के आर्डर रद्द कर दिए और उस दिन कराची शहर में भगवा-झन्डा शान से लहराने लगा। हालत ऐसी बन गई जैसे कराची में अँग्रेजी-राज ही बाकी न रहा। दूसरे दिन अंग्रेज-सरकार की अपनी अखबार **डेली गजट** ने पहिले समाचार की बड़ी-बड़ी हेडलाईन देकर लिखा, "कराची में अँग्रेजी सरकार का काम-काज ठप्प।"

ये तस्वीर सबूत है ! उस सिन्धी शिक्षिका श्रीमती गंगा देवी का। जिस निडर नारी को 1930 में शिकारपुर -सिन्ध में विदेशी शराब की दुकान के समाने तीव्र विरोध करने के कारण गिरफ्तार कर जेल की सजा दी गई। गंगादेवी भारत की एक मात्र ऐसी नारी थी, जिसने जेल की सजा पाकर भारत की पहिली नारी होने का कीर्तिमान स्थापित किया।

श्रीमती मोहिनी दीपचन्द बेलाणी 12 बार जेल गई

ये तस्वीर सबूत है ! भारतीय नारियों की शान स्वरूप उस महान नारी श्रीमती मोहिनी दीपचन्द बेलाणी की वीरता का। जो दुनियाँ भर में अकेली नारी थी, जिसने स्वतन्त्रता संग्राम में एक बार गर्भवती अवस्था के साथ कुल 12 बार जेल जाकर अनोखे देश-प्रेम का इतिहास रचा।.. **शेष अगले पृष्ठ पर ..**

अढ़ाई साल की सजा अढ़ाई मिनट की लगी

ये तस्वीर सबूत है ! 1932 में आजादी के लिए अवज्ञा-आंदोलन में बढ़-चढ़ कर भाग लेने वाली शिकारपुर की बहादुर नारी लछमी देवी का। लगभग अनपढ़ और मध्यम वर्ग की यह नारी जब अढ़ाई साल की सजा काटकर जेल से बाहर निकली तब पत्रकारों ने पूछा कि यह अढ़ाई साल की सजा आपको कैसी लगी ? तो उसने उत्तर में कहा, "यह सजा मुझे मात्र अढ़ाई मिनट की लगी।"

ये तस्वीर सबूत है ! एक और वीरांगना नारी हर्षा हीरानन्दाणी का। जो आजादी का अलख जगाने के लिए सायकल पर अखबार बेचती फिरती थी। उस समय अखबार निकालना या बेचना, अँग्रेज सरकार के विरुद्ध बहुत ही विस्फोटक काम था।

ये तस्वीर सबूत है ! सिन्ध और अन्य प्रदेशों की उन हजारों नारियों की वीरता का। जिनमें से प्रमुख थीं - सर्वश्री कुमारी जेठी सिपहमलाणी, कृष्णा देवी, गंगा गिदवाणी, पारपती गिदवाणी, किकी लालवाणी, गोपी कृपलाणी, गंगा शिकारपुरी, सदोरी अगनाणी, श्रीमती लछमी सिधवा, कमला थावाणी, जानकी थावाणी, केसी निहालाणी, सती जगत्याणी, कमला हीरानन्द, श्रीमती हर देवी, सावित्री, ईश्वरी, नानकी, गुलजार बेगम, मिहिर बानो, किशिनी देवी, गुली सदारंगाणी, गोमी बाई, सती मेलवाणी, सती वासवाणी और देवी हासोमल, भगवन्ती चंचलाणी, देवकी ढालवाणी। कच्छ की कमला टोपण मुखी, उनकी पुत्री शान्ता टोपण मुखी व कस्तूर बेन। बंगाल की कुमारी सिन्हा और उनकी बहिन शिशिर घोष।

बँटवारा अधिक समय के लिए नहीं है।

ये बँटवारा एक सजग और संघर्षशील जाति को बाँटने का छड्यन्त्र है

ऐसी ही तस्वीरों की कहानियों को घटते देख और सुनकर ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री विंस्टन चर्चिल ने अपनी संसद में हिन्दुस्तान के बँटवारे के बाद कहा था, "हिन्दुस्तान के बँटे हुए दोनों देश, आजाद होकर भी हमारे मोहताज रहेंगे। पर ये बँटवारा अधिक समय के लिए नहीं है, क्योंकि ये बँटवारा एक सजग और संघर्षशील जाति को बाँटने का छड्यन्त्र है।"

आतंकवादी मुख्यमन्त्री पर दहाड़ने वाली सिन्ध की शेरनी - कुमारी जेठी सिपहमलाणी

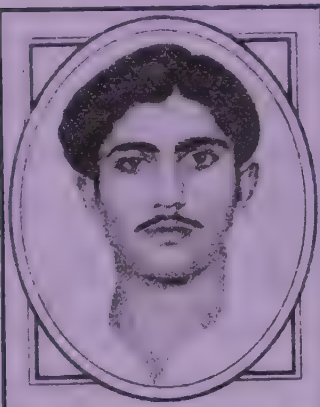
हिन्दू-मुस्लिम एकता के तरफदार सिन्ध के मुख्यमन्त्री अलहबख्श सूमरो को 14 मई, 1943 के दिन आतंकवादी खुहड़ो के गुन्डों ने शिकारपुर में गोली मारकर शहीद किया था। बाद में सिंध के मुख्यमन्त्री खुहड़ो और विधानसभा की उपाध्यक्ष कु. जेठी सिपहमलाणी चुनी गईं। मन्त्रीमण्डल की एक बैठक के बाद चाय-पानी के समय सिन्ध की यह शेरनी, खुहड़ो पर दहाड़ पड़ी थी, "भले ही तुम्हें अँग्रेज सरकार ने छोड़ दिया है, किन्तु तुम खूनी हो-हत्यारे हो ! इसलिए मैं तुम्हारे घर का पानी भी नहीं पी सकती।"

विभाजन के बाद बम्बई में आकर रहने के बाद, कुमारी जेठी को महाराष्ट्र विधान परिषद के उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करने वाली जेठी सिपहमलाणी और उनके भाई मंघाराम सिपहमलाणी ने सिन्धी बन्धुओं को देश-विभाजन के बाद खन्डित भारत में बसाने के साथ हर सम्भव सेवा प्रदान की। उन्होंने बम्बई के माहिम में नवजीवन सोसायटी के नाम से, सहकारिता के आधार पर अपार्टमेन्ट सिस्टम के 7000 सुविधा युक्त सस्ते और सुन्दर मकानों का निर्माण कराया। भारत के इस पहिले बहुमंजिला भवन के बाद चेम्बूर, बाम्बे सेन्ट्रल और विले-पार्ले में भी ऐसे बहु-मंजिला भवनों का निर्माण करवाया।

सिन्ध के क्रान्ति-दूत

अन्तिम इच्छा में वन्दे मातरम का नारा बुलंद करवाया अँग्रेजों से

क्रान्ति, सृजन अथवा जीवन का आधार है जिसके प्रतीक होते हैं युवक। और शान्ति रूपी विसर्जन के प्रतीक होते हैं बड़े-बूढ़े। क्रान्ति ही जीवन है, इसके बिना शान्ति-अशान्ति अथवा मरण का अस्तित्व ही नहीं होता। युवक ही जीवन को गति अथवा दिशा देते हैं और बड़े-बूढ़े, अपने अनुभव और मार्गदर्शन से जीवन की दशा सुनिश्चित करते हैं। सिन्ध में इस क्रान्ति के प्रतीक कई युवक थे, जिनमें एक था 19-20 वर्ष का नवयुवक हेमूँ कालाणी। हेमूँ, बचपन में ही अपने चाचा डॉ. मंघाराम कालाणी की स्वराज-सेना में रहकर देश की मुक्ति के लिए क्रान्ति का पाठ पढ़ चुका था। हेमूँ, सिन्ध के महान क्रान्तिदूत परचो विद्यार्थी के मार्गदर्शन में सिन्ध को अलग देश के रूप में आजाद करवाने वाले 'यूथ सर्कल' का सदस्य था।



सिन्धी युवाओं का प्रतीक
शहीद हेमूँ कालाणी

सक्खर-सिन्ध के रास्ते फौजी गोला-बारूद ले जा रही रेलगाड़ी को गिराने के लिए रेल-पटरियाँ उखाड़ते समय आई पुलिस को देखकर, तीन साथियों को भाग जाने की सलाह देने के बाद, हेमूँ कालाणी ने खुद को गिरफ्तार करवाया था। वीर हेमूँ कालाणी को इस अपराध के बदले 21 जनवरी, 1943 के दिन फाँसी दिए जाने के विरोध-स्वरूप, जेल में बन्द सभी कैदियों ने दिन भर का उपवास रखा था। अद्भुत साहस के धनी हेमूँ कालाणी को जब फाँसी पर चढ़ाने का समय आया तब न केवल इस नवयुवक का वजन बढ़ा हुआ था बल्कि हौसला भी बढ़ा हुआ था। उसने वहाँ उपस्थित सभी व्यक्तियों को वन्दे-मातरम का नारा बुलन्द करने की अन्तिम इच्छा प्रकट की। इस तरह इस वीर हेमूँ की इच्छा-पूर्ति के लिए अँग्रेजों को भी वन्दे-मातरम का नारा बुलंद करना पड़ा था।

ये 5 साल की सजा, 5 घन्टों की तरह गुजर जाएगी

सिन्ध में स्वदेशी आंदोलन के चलते सबसे पहिले 12 जनवरी, 1910 में धारा 124 के तहत गोवर्धन शर्मा को 5 साल जेल के साथ 500 रुपए दन्ड, वीरूमल बेगराज और शिकारपुर के सेठ चेट्रूमल हरीराम को 3-3 साल जेल की सजा और 1000 रुपए दन्ड दिया गया। इस धारा में सरकार के विरुद्ध विद्रोह भड़काने के अपराध में फाँसी की सजा तक दी जा सकती थी। उस समय गोवर्धन शर्मा की आयु मात्र 20 साल, वीरुमल बेगराज और सेठ चेट्रूमल हरीराम की आयु 35 साल थी। इन युवाओं का अपराध केवल इतना था कि महाराज गोवर्धन शर्मा ने "विदेशी खान्ड की अपवित्रता" और "स्वदेशी हलचल में देश-भक्त तिलक के विचार" नामक दो चोपड़ियाँ(छोटी पुस्तकें) सम्पादित की थीं। दूसरी चोपड़ी लोकमान्य तिलक के लेख का अनुवाद मात्र था, जो कि इससे पहिले हिन्दी और गुजराती भाषाओं में भी छप चुका था। वीरुमल बेगराज और सेठ चेट्रूमल हरीराम इन चोपड़ियों के प्रकाशक थे।

जब इन वीरों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा रहा था तब इनके मुख पर हँसी खेल रही थी। गोवर्धन शर्मा के पिता महाराज वल्लभ शर्मा ने आर्शीवाद देते हुए कहा, " आपको 3 साल और 5 साल की सजा मिली है तो कोई गाज नहीं गिरी है। लोकमान्य तिलक को 6 साल और श्रीराम को 14 साल वनवास मिला था।" इसपर वीरूमल बेगराज ने हँसते हुए कहा, " ये 5 साल की सजा, 5 घन्टों की तरह गुजर जाएगी।" जेल के दरवाजे तक उनके पीछे हजारों जनता की भीड़ वन्दे मातरम और वीरूमल, चेट्रूमल,

.... शेष अगले पृष्ठ पर ....

गोवर्धन शर्मा की जय-जयकार के नारे लगाते हुए चल रहे थे। शिकारपुर में इस दिन हड़ताल की गई।

इन चोपड़ियों के कारण सिन्ध में विदेशी खान्ड और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार होने के साथ-साथ स्वदेशी वस्तुओं का निर्माण और उपयोग शुरू हुआ।

जहाँ प्रताप, शिवाजी, गुरू गोविन्द पैदा हुए, वहाँ तुम कैसे रहोगे परतन्त्र होकर ?

स्वतन्त्रता-संग्राम लड़ने वाले नौजवानों में से निर्मल जीवताणी और लछमण जैसे देश-भक्तों को अवश्य याद रखना चाहिए, जो एक प्रकार से आजादी की जंग लड़ते-लड़ते शहीद हो गए। इनमें हैद्राबाद का नौजवान शायर निर्मल जीवताणी, सिन्ध के कवियों किशिनचन्द बेवस, दादा हूँदराज दुखायल और तोलाराम बालाणी के लिखे गीतों के साथ स्वरचित गीतों को गली-गली गाता फिरता था। कई बार जेल की रूखी-सूखी रोटियाँ खाने और यातनाएँ सहते हुए सख्त बीमार हुआ और बीमारी के चलते ही शहीद हो गया। ऐसा ही एक और नौजवान था हैद्राबाद काँग्रेस का जनरल सेक्रेट्री और नौजवानों का नेता लछमण। यह जोशीला जवान, जनजागरण के लिए प्रभात-फेरियों और प्रदर्शन आदि के लिए दिन-रात एक कर देता था। इसने कई बार जेल-यात्राएँ कीं। इन हलचलों के कारण इसके पैरों में छाले पड़ गए और सरदर्द भी होने लगा, जिससे इसे मस्तिष्क-ज्वर हुआ। इलाज के चलते यह कई दिनों तक नीम बेहोशी में, "हिन्दुस्तान आजाद हो", "इंकलाब जिंदाबाद", "भारत माता की जय" के नारे लगा उठता था। जब भी होश में आता तो बिस्तर पर पड़े-पड़े दादा हूँदराज दुखायल के लिखे गीत गुनगुनाने लगता था -

"लाश मेरा उठे काश, आजाद हिन्दुस्तान में। हो मरना न मेरा काश, नाशाद हिन्दुस्तान में॥"

"जहाँ प्रताप, शिवाजी, गुरू गोविन्द पैदा हुए, वहाँ तुम कैसे रहोगे परतन्त्र होकर ?
जन्में हो, अवश्य मरोगे ! मगर मर शेर नर बनकर। सुपात्र-सूरमा बनकर, आ-आकर मर, देश के ऊपर।"

गीत गुनगुनाते हुए अचानक उसके शरीर से बहुत सारा पसीना निकला, जिसके बाद हिलना-डुलना बन्द हो गया और इस तरह आजाद भारत में मरने की आस मन में लेकर यह नौजवान भी मौत की नींद सो गया।

सिन्ध की छात्र-शक्ति - विद्यालयों का त्याग

असहयोग आंदोलन के चलते शिकारपुर में स्वामी प्रयाग भारती, प्रभात फेरी लगाकर, यकतारे पर असहयोग के प्रचार के साथ देश-भक्ति के गीत गाते फिरते थे। आंदोलन के चलते हजारों छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने स्कूल-कॉलेज व नौकरियों का त्याग किया। कराची के न्यू हाई स्कूल के आसानन्द मामतोरा, पहिले सिन्धी छात्र थे, जिन्होंने स्कूल छोड़ा। इसी स्कूल के स्वामी और प्राचार्य श्री ताराचन्द के. शहाणी ने अपने स्कूल से शासकीय सम्बन्ध समाप्त कर दिए और स्कूल का नाम बदलकर स्वराज महाविद्यालय रखा। जिस शिक्षक ने सबसे पहिले सरकारी नौकरी छोड़ी, वे थे श्री लालचन्द अमरडिनोमल जगत्याणी। असहयोग का एक दृश्य देखने योग्य था। 10 फरवरी,1921 सरकार ने प्रथम विश्व युद्ध जीतने पर उत्सव-रूप में मनाने के लिए शिक्षा केन्द्रों में प्रचार हेतु बिल्ले बाँटने का काम सारे देश में शुरू किया। इन बिल्लों पर ऑनर एन्ड लिबर्टी लिखा हुआ था। शिकारपुर के सरकारी हाई स्कूल में ये बिल्ले छात्रों में बाँटने के लिए स्कूल के फर्स्ट असिस्टेंट प्रोफेसर ताराचन्द गाजरा को बुलाया गया। श्री गाजरा ने छात्रों की भीड़ को सम्बोधित करते हुए कहा, "ये बिल्ले जो मुझे बाँटने के लिए दिए गए हैं, उन पर सम्मान और स्वतन्त्रता लिखा है। किन्तु अँग्रेजों के राज में हमारा न तो कोई सम्मान है और न ही स्वतन्त्रता। इसलिए मैं ये बिल्ले बाँटना नहीं चाहता। मैं इस सरकार की नौकरी करने को अपराध मानता हूँ। इसलिए मैं आज ही इसका त्याग करता हूँ।" जिसके बाद उनके साथ सैकडों छात्रों ने स्कूल-त्याग दिया।

.... शेष अगले पृष्ठ पर ....

सिन्ध की छात्र-शक्ति

1920-21 में असहयोग आंदोलन के चलते हजारों विद्यार्थियों और सैकड़ों शिक्षकों ने सरकारी विद्यालयों का त्याग किया। जिसके बाद सिन्ध में जगह-जगह पर स्वदेशी शिक्षा केन्द्रों की स्थापना की गई। कराची के प्रसिद्ध डी. जे. सिन्ध कॉलेज के विद्यार्थियों ने भी शिक्षा का त्याग किया। उनमें कई ऐसे विद्यार्थी थे जिन्होंने जीवन में फिर कभी शिक्षा के लिए विद्यालयों का मुंहं नहीं देखा और वे जीवन भर देश-सेवा के लिए समर्पित हो गए। उनमें कुछ प्रमुख नाम थे - श्री हीरानन्द करमचन्द, उनके भाई श्री शेवकराम, श्री केसूमल झांग्याणी, श्री नेंवन्दराम विशनदास, श्री चोइथराम वलेचा, श्री आलम गिदवाणी, श्री राम बी. मोटवाणी और श्री निहचलदास हिमथसिंघाणी आदि।

शिकारपुर के एक युवक लीलाराम फेरवाणी, बम्बई की ग्रान्ट मेडीकल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर, अपने जन्म स्थान शिकारपुर लौटकर असहयोग आंदोलन को गति प्रदान करने लगे। इनके जोशीले भाषणों से प्रभावित होकर कई विद्यार्थियों ने सरकारी विद्यालयों का त्याग कर, स्वदेशी विद्यालयों में पढ़ने लगे। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ जाने के कारण शिकारपुर में ही दो-दो स्वदेशी विद्यालय खुल गए। एक के प्रधानाचार्य श्री ताराचंन्द गाजरा और दूसरे के प्रधानाचार्य श्री लीलाराम फेरवाणी बने। श्री लीलाराम फेरवाणी, एक अच्छे कवि भी थे, जिनकी कविताओं और गीतों की गूँज आज भी गूँज रही है -

सब हक, बेशुमार दौलत और दुनियाँ मिली तो क्या हुआ।
अगर न मिला स्वराज, और सब कुछ मिला तो क्या हुआ॥

सरकारी नौकरियाँ छोड़कर, स्वदेशी शिक्षा के क्षेत्र में आने वाले कुछ प्रमुख देश-भक्तों में थे - सर्वश्री सुखरामदास टंवरमलाणी, श्री परसराम विशनसिंघ टहलरामाणी, श्री हासाराम पमनाणी, आचार्य आसूदोमल गिदवाणी, श्री नेवंदराम विशनदास और श्री रेवाचन्द नाथाणी आदि।

असहयोग आंदोलन में कुछ वकीलों ने सरकारी न्यायालयों का त्याग किया और स्वदेशी न्यायालय स्थापित किए। जिनके माध्यम से लोगों के विवाद निपटाए जाने लगे। इन स्वदेशी न्यायालयों में सक्खर न्यायालय ने उल्लेखनीय प्रसिद्धि प्राप्त की।

असहयोग आंदोलन के चलते सिन्ध में लगभग 200 लोगों को जेल हुई। जिनमें तुर्की के मुस्लिम धर्मगुरू वाले मामले के कारण खिलाफत आंदोलन के चलते कई मुस्लिम बन्धू भी शामिल थे।

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के चलते सारे देश के साथ सिन्ध में भी काँग्रेसी सत्याग्रही नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। उनके स्थान पर विद्यार्थियों ने मोर्चा सम्भाला। इन विद्यार्थियों को कुछ ऐसे बुजुर्ग नेता आंदोलन को जारी रखने की प्रेरणा देने लगे जो अज्ञातवास में रह रहे थे, इनमें प्रमुख थे श्री चोइथराम वलेचा। विद्यार्थियों के प्रमुख नेता थे सर्वश्री परचो विद्यार्थी, हशू केवलरामाणी व सोभो ज्ञानचन्दाणी और ऐंशी विद्यार्थी, नारायण वाधवाणी, तुलसी टहिल्याणी, आनन्द अम्बवाणी, उधो रायसिंघाणी, कीरत बाबाणी, गोबिंद माल्ही तथा आसन उत्तमचन्दाणी। इनमें से कुछ कम्युनिस्ट विचार -धारा के युवकों ने रूसी आंदोलन से प्रेरित होकर एक नया नारा दिया - 'जनता की जंग'।

सिन्ध में देश की तरह भारत छोड़ो आंदोलन के तीन रूप थे -हर शहर में हर साल 9 अगस्त के दिन जुलूस निकालकर सभाएँ करके विरोध प्रदर्शित करना और गिरफ्तारियाँ देना। दूसरा संचार माध्यमों को ठप्प करने के लिए तारें काटना, डाक के डब्बे जलाना, रेल की पटरियाँ उखाड़ना और झूठे सरकारी आदेश जारी कर क्रान्तिकारियों को छुड़ाने और अफसरों की बदली करवाना। ... **शेष अगले पृष्ठ पर ...**

तीसरा रूप था सरकारी खजाने को लूटना। ऐसी गतिविधियों में लिप्त दो युवकों नारायण वाधवाणी और ऐंशी विद्यार्थी को कराची में टेलीफोन-तारें काटते हुए गिरफ्तार किया गया और 3 -3 साल की जेल की सजा दी गई। डाक के डब्बे जलाना तो हर शहर में आए दिन की घटना बन गई थी।

झूठे सरकारी आदेश जारी करने के सिलसिले में एक रोचक आदेश के आधार पर युवक आलम गिदवाणी को जेल से छुड़वाया गया। इस मामले में सरकारी छुटभैये जासूस मोती मीरचन्दाणी और गवाह जेठे मीरचन्दाणी की गवाही के आधार पर चार विद्यार्थियों हरी होतचन्दाणी, हरगोबिन्द रामचन्दाणी, हरजस और उत्तम को गिरफ्तार कर, केस चलाया गया। दस महीने तक चले इस केस में सबूत न मिलने के कारण इन चारों विद्यार्थियों को छोड़ देना पड़ा।

बुर्जुग नेताओं की गिरफ्तारियों का विरोध प्रगट करने के लिए विद्यार्थियों के उग्र होते एक जुलूस को शान्त करने का प्रयास कर रहे तीरथ सभाणी को गिरफ्तार कर लिया गया। जुलूस निकालकर सभाएँ करके विरोध प्रदर्शित करने के सिलसिले में एक विशाल जुलूस पर पुलिस ने लाठीचार्ज किया, जिसमें कई युवाओं के साथ तुलसी टहिल्याणी भी घायल हुए। विद्यार्थियों के प्रमुख नेताओं को डिफेंस ऑफ इंडिया रूल्स के तहत गिरफ्तार कर अनिश्चित काल के लिए जेल में डाल दिया गया। सिटी मैजिस्ट्रेट रूपचन्द सिन्धी-हिन्दू थे। वे इन विद्यार्थियों को छोटी-मोटी सजा देते थे। इन विद्यार्थियों में दो नाम विशेष उल्लेखनीय थे - एक उधो रायसिंघाणी, जो सम्भवतः ऐसे अकेले विद्यार्थी थे, जिन्हें अधिक से अधिक समय तक जेल में बन्द रखा गया और अंतिम टोली के साथ छोड़े गए। दूसरे थे - मिठू शहाणी, इनका साहस सराहनीय था।इनके बड़े भाई जेलर थे और कुछ निकट सम्बन्धी भी जेल विभाग के अधिकारी थे। इसलिए वे जेल अधिकारियों के बंगले में रहते थे, किन्तु क्रान्तिकारी गतिविधियों के कारण जेल गए। जेल में 'बी' क्लास मिलने पर उन्होने, 'सी' क्लास में बन्द रखने की माँग की। इन्होने खुद को तीन बार गिरफ्तार करवाया, एक दिन किसी केस में छूटे और दूसरे दिन दूसरे केस में फिर कैद कर लिए गए। इस तरह उन्होने सिन्ध के लगभग सभी जेलों की यात्रा की।

विद्यार्थियों और युवकों का दल श्री पहिलाजराय राजपाल के मार्गदर्शन में कार्य करता था। श्री राजपाल अज्ञातवास में रहकर, युवाओं के लिए अनेक योजनाएँ बनाते थे। इनको प्रेरणा देने वाले थे श्री चोइथराम वलेचा, जो खुद भी अज्ञातवास में रहते हुए कार्य करते थे। कराची के सिवा अन्य शहरों के युवा नेता थे - हैदराबाद के जेठानन्द लालवाणी, नन्द गिदवाणी, निर्मल जीवताणी व हीरो जगत्याणी आदि। साहिती-नवाबशाह के आनन्द अम्बवाणी और मूलो मोत्याणी। सक्खर में श्री गोपालदास जम्यतराय के मार्गदर्शन में कार्य करने वाले परचो विद्यार्थी, ऐंशी विद्यार्थी और नारायण वाधवाणी। शिकारपुर में कक्कू आसराणी, बखत तलरेजा और झामनदास तलरेजा तथा दादू में उधो रेलवाणी आदि।

लाठी-गोली का जवाब बम-बारूद के गोलों से

सिन्ध में अँग्रजों की लाठी-गोली का जवाब बम-बारूद के गोलों से देने वाले छोटे-छोटे युवा दलों में से तीन ऐसे दल भी थे - जिनके नाम तीन प्रसिद्ध केसों से जुड़े। इनमें से एक दल था हैदराबाद केमोती, शिवो और चन्दू का। ये तीनों गुलराजाणी बन्धु, श्री जव्हरमल के सुपुत्र थे, जो महात्मा गाँधी के वर्धा आश्रम में रहकर कार्य करते थे। गुलराजाणी बन्धुओं का कराची में स्याही बनाने का कारखाना था। इनकी स्याही का ट्रेड मार्क था - मार्क इंक्स। गुलराजाणी बन्धु, किरशिन तुल्ला नामक एक युवक के द्वारा एक शिक्षक मास्तर जेठानन्द गेहाणी के सम्पर्क में आए। ... शेष अगले पृष्ठ पर ...

मास्तर गेहाणी ने इनको बम बनाने की विधि बतलाई। जिसे सीखकर उन्होंने आक्टोबर, 1942 में कुछ बम बनाए। उनके कुछ साथियों ने तीन बमों में से एक बम, ज्यूडिशियल मैजिस्ट्रेट की कोर्ट में और दो बम आने-जाने वाली दोनों क्वेटा मेल ट्रेन में रखे। किन्तु इन बमों के विस्फोट होने के पहिले ही किसी तरह पुलिस को इसकी खबर लग गई। बमों की जाँच में पाया गया कि इनमें काँच की जिन शीशियों का उपयोग किया गया था, उनपर गुलराजाणी बन्धुओं की मार्क इंक्स का नाम खुदा हुआ था। जिसके बाद पुलिस ने उनके कारखाने पर छापा मारा और वहाँ से काँच की शीशियां और कुछ अवैध पत्रिकाएँ जब्त करने के साथ तीनों भाईयों को भी गिरफ्तार किया। इन पर अलग-अलग धाराएँ लगाकर केस चलाया गया। सही सबूतों के अभाव में शिवो और चन्द्रू को तो छोड़ दिया गया किन्तु मोती पर विभिन्न दोष मढ़कर 3 साल केलिए जेल भेज दिया गया।

किरशिन लुल्ला, जिसने गुलराजाणी भाईयों को मास्तर गेहाणी से मिलवाया था, वो स्वयं भी कई युवकों के साथ मिलकर क्रान्तिकारी गतिविधियों की योजनाएँ बनाने के साथ उनको सफल बानने में लिप्त था। शिकारपुर का एक युवक तोतासिंघ, लुल्ला का प्रमुख साथी था, जो अफगानी पठानों के पास से बारूद और बंदूक आदि हथियार खरीद कर विभिन्न दलों तक पहुँचाता था।

सिन्ध में बम विस्फोट की कई कार्यवाहियाँ हुईं। सक्खर में एक सैनिक छावनी को आग लगाने के काम में किरशिन लुल्ला और तोतासिंघ का हाथ था। दूसरे एक दल के फेरू संगताणी, विश्नू छाबरिया और अमर गोलाणी, बम बनाते समय विस्फोट हो जाने के कारण खुद ही घायल हो गए। फेरू संगताणी कुछ दिन बाद शहीद हो गया। कराची में राम बाग की पिंजरापोल बिल्डिंग में हुआ यह केस **पिंजरापोल बम केस** के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जिसमें कुल 10 लोग गिरफतार किए गए. इनमें दल के मार्गदर्शक मास्तर गेहाणी, गोबिंद थावाणी और देवकृष्ण लख्याणी भी शामिल थे। इस दल के मोती और जमनो, सरकारी गवाह बने। मास्तर गेहाणी के विरुद्ध सबूत न मिलने के कारण उनके सिवा शेष सभी को 5-5 साल की सजा दी गई। किन्तु बाद में मास्तर गेहाणी को सुरक्षात्मक आधार पर जेल में डाल दिया गया।

अँग्रेजी ऊँट की कमर तोड़ने वाला जल-सैनिक विद्रोह

अँग्रेजों द्वारा अँग्रेज सैनिकों और हिन्दुस्तानी सैनिकों के बीच पगार और अन्य सहूलियतों के सम्बन्ध में भेद-भाव किए जाने के कारण 17 फरवरी, 1946 के दिन **रॉयल इंडियन नेवी** द्वारा किया गया। इस जल-सेना के 74 जहाज, 40 आगबोट, 200 तटवर्ती बेड़ों के अमले सहित 4 मुख्य अड्डों के सैनिक शामिल थे। विद्रोह में हर हिन्दुस्तानी सैनिक ने भाग लिया था।

कराची की जल-सेना भी इस विद्रोह में शामिल थी, जिसमें कुछ सिन्धी सैनिक भी थे। विद्रोह के समय 9 खलासी, 1 अधिकारी शहीद हुआ और 1 अधिकारी सहित 29 बहरी सैनिक घायल हुए। किन्तु विद्रोह के कारण **रॉयल इंडियन नेवी** पर अंग्रेज सरकार अपना अधिकार खो चुकी थी। विद्रोह का अन्त सरदार वल्लभ भाई पटेल के सहयोग से किया जा सका। जिसके बाद सरकार और **रॉयल इंडियन नेवी** के बीच समझौता हुआ।

1942 में विश्व युद्ध के कारण अँग्रेज बहुत ही कमजोर अवस्था में पहुँच गए थे। साथ ही वे दुनियाँ भर में आजादी के लुटेरे के नाम से बदनाम हो गए थे। इधर हिन्दुस्तान की समुद्री सेना ने विद्रोह करके जैसे अँग्रेजी-ऊँट की कमर ही तोड़ दी, ऐसे कई कारणों से उन्होंने हिन्दुस्तान को आजादी देने का फैसला किया। इस विद्रोह के कारणों और 1857 के सैनिक विद्रोह के कारणों में लगभग समानता थी।

... शेष अगले पृष्ठ पर ...

थरपारकर जिला काँग्रेस कमेटी केस

1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के चलते सत्याग्रह करने के कारण एक केस सुरक्षात्मक कानून की धारा 120 के तहत थरपारकर जिला काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री आसनदास खुशालदास, देवजी लालजी, करसन भाई मेल्हूराम, मूलचन्द मंघाराम, दौलतराम जगतराम, नित्यानन्द जगतराम और ढालूमल किशिनचन्द के विरुद्ध चलाया गया। इस केस में निचली अदालत ने कड़ी सजाएँ दी थीं किन्तु ऊपरी अदालत द्वारा कमेटी अध्यक्ष आसनदास के सिवा शेष छहों आरोपियों को छोड़ दिया गया। आसनदास को भी 9 माह की सजा सुनाकर छोड़ दिया गया, क्योंकि केस चलते तक वे लम्बी सजा भोग चुके थे।

सभ्य अँग्रेजों की असभ्यता का मिसाल
उम्र बारह और सजा पाँच साल

1920-21 में असहयोग आंदोलन के समय, खुद को सभ्य समझने वाले अँग्रेजों की क्रूर-असभ्यता और हिन्दुओं की आदर्श वीरता का एक अनोखा उदाहरण मिलता है। शिकारपुर के दस-बारह साल के एक बच्चे **नारायण लालचन्द माखीजा** ने एक भाषण में एक सूचना देते हुए कहा था, "अंग्रेज सरकार ने ढाका की विश्व-प्रसिद्ध मलमल तैयार करने वाले बुनकरों केहाथ काटकर, भारत की बुनाई कला को समाप्त कर दिया है।" इसे अपराध मानकर, इस बच्चे को पाँच साल की सजा देकर बम्बई के बालकों की जेल में भेज दिया। 1930 के नमक-आंदोलन में लाड़काणा जिले के **धरमदास लखाणी** और **परसराम मूलचन्द** नामक दो बच्चों को नमक सत्याग्रह में भाग लेने के कारण, वर्धा के बालकों की जेल में भेज दिया गया।

राजऋषि दयाराम गिदूमल और दयाराम जेठमल

सिन्ध में आजादी के लिए नवजागरण लाने हेतु 1882 में **सिन्ध सभा** की स्थापना करने वालेप्रमुख नेताओं में राजऋषि दीवान दयाराम गिदूमल भी थे। आप, सबसे पहिले बी.ए.एल.एल.बी.परीक्षा पास करने वाले तीन सिन्धीयों में से एक थे। आपने बम्बई के एलफेंस्टन कॉलेज से शिक्षा प्राप्त की थी। आप बम्बई में जस्टिस रानाडे, बहरामजी मलबारी, पन्डिता रामा बाई जैसी महान आत्माओं के सम्पर्क में आए। लोकसेवा आपका मूलमन्त्र था, सिन्ध में जस्टिस रानाडे की प्रतिमूर्ति थे। सिन्ध सभा केद्वारा 'सिन्ध टाईम्स' (अँगेजी) और 'सिन्ध सुधार' (सिन्धी) नामक दो अखबारें प्रकाशित की गई। अखबारों में जन-समस्याओं के साथ अंग्रेज सरकार के अत्याचारों के समाचार और लेख दिए जाते थे। इन लेखों को तैयार करने में दीवान दयाराम गिदूमल की प्रमुख भूमिका थी।

सिन्ध सभा द्वारा जनवरी, 1887 में राष्ट्रीय चेतना जगाने हेतु कराची में दीवान दयाराम जेठमल के नेतृत्व में दीवान दयाराम गिदूमल, दीवान मेठाराम शाहाणी और दीवान साधू नवलराय के सहयोग से **डी. जे. सिन्ध आर्टस् कॉलेज** नामक पहिले स्वदेशी शिक्षा केन्द्र की स्थापना की गई। दीवान दयाराम जेठमल, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान करने वालों में अग्रणी नेता थे, इस-लिए वे कराची के सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति थे, उन्हें **समाज के पिता** के रूप में देखा जाता था। आपने राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना के बाद कराची में काँग्रेस स्टैंडिंग कमेटी स्थापित की। दीवान दयाराम जेठमल, बम्बई लेजिस्लेटिव काउन्सिल के सदस्य मनोनीत किए गए।

नवाबशाह के विद्रोही-क्रान्तिकारी नवयुवक

सिन्ध को स्वतन्त्र देश के रूप में स्वतन्त्र कराने के लिए सिन्ध के महान क्रान्तिकारी परचो विद्यार्थी के मार्गदर्शन में नवाबशाह-साहिती के नवयुवक विद्यार्थी बढ़-चढ़कर विद्रोही कार्य करते रहते थे। इन कार्यों में प्रमुख कार्य थे-सरकारी कार्यालयों को आग लगाना, रेल-पटरियाँ उखाड़ना तथा झूठे सरकारी आदेश निकालना। डाकखानों आदिसंचार-माध्यमों सहित सरकारी कार्यालयों को आग लगाने के लिए ये विद्यार्थी, हाईस्कूलों की लेबोरेट्री से फास्फोरस चुराते थे। नौंशहरो में दादी कृष्णा हिंडोराणी के घर में महिमान बनकर कई युवक रहते थे और वहीं रहकर सरकार विरोधी विद्रोही योजनाएँ बनाते थे। प्रभदास ब्रह्मचारी उनके इन कार्यों में भरपूर सहयोग प्रदान करते थे। कई सरकारी कार्यालय जला दिए गए, कई जगहों पर रेल-पटरियाँ उखाड़ी गईं। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के चलते इन कार्यों से सरकार का बहुत अधिक नुकसान हुआ।

नवाबशाह में इन क्रान्तिकारी नवयुवकों में प्रमुख थे सोभराज मोटवाणी और काका सच्चानन्द थावाणी परिवार के रोचीराम थावाणी। सोभराज मोटवाणी, एक तेज दिमाग और निडर युवा थे, वे तुरन्त फैसला करके कार्यवाही करते थे। विभाजन के बाद 22 अगस्त,1972 को अजमेर में स्वर्गवासी हुए। रोचीराम थावाणी ने कई बार पुलिस की मार खाई और जेल गए, छोटी आयु के होने के बाद भी उन्होंने कई युवकों को काँग्रेस सेवा दल का सदस्य बनाया। काँग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेट्री सुजान रावताणी, स्कूल या आफिस से टाईपराईटर चुराकर लाते और बुलेटिन तैयार करते थे, उन्होंने भी कई बार पुलिस की मार खाई और नौ महीने जेल की सजा भोगी। उनके छोटे भाई सच्चानन्द ने पुलिस के दस डन्डों की मार खाई।

मिठियाणी में जमींदार परिवार के नानकराम टेकचन्दाणी ने एक बम बनाकर पुलिस थाने की पिछली दीवार को उड़ा दिया। इसी तरह के विद्रोही कार्य मोरो तहसील में दूलहनोमल, मेलाराम रामरख्याणी और काँग्रेस कमेटी के सेक्रेट्री आइलदास रूपचन्द करते थे। आइलदास के पास से युवक, फास्फोरस और नट-पाने आदि लेकर किसी सरकारी कार्यालय में आग लगाने या रेल की पटरियाँ उखाड़ने का काम करते थे। नौंशहरो में यह काम प्रसिद्ध खेमचन्द बालाणी परिवार के जयकिशन बालाणी, मोटूमल बालाणी, आसन बालाणी, राम गुनोमल जैसे कई युवक करते थे। जयकिशन बालाणी, मुख्तियारकार के आफिस, पोष्ट आफिस या किसी सरकारी कार्यालय में आग लगा आते थे। इस कारण उनके साथ कई युवकों को बन्दी बनाया गया, किन्तु प्रमाणों के अभाव में पुलिस को उन्हें छोड़ना पड़ा। श्री जयकिशन बालाणी विभाजन के बाद जोधपुर आए और पुलिस के बड़े इमानदार अफसर के रूप में प्रसिद्ध हुए।

नौंशहरो की बालाणी गली में सरकार द्वारा जब्त काँग्रेस कार्यालय को कुछ नवयुवकों ने आग लगा दी। इस मामले में खेमचन्द बालाणी पर चलाया गया केस, सबूतों के अभाव में वापस लेना पड़ा।

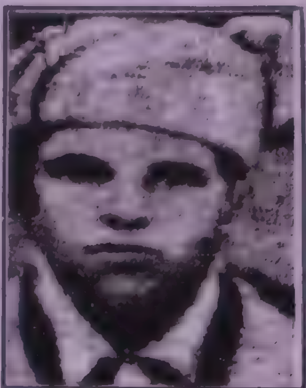
पंजाब केसरी लाला लजपतराय ने कहा था

पंजाब केसरी लाला लजपतराय ने अमृतसर काँग्रेस अधिवेशन के बाद अपने कार्यकर्ताओं से कहा था, "सिन्ध के लोगों के उत्साह और देश-प्रेम से हमें प्रेरणा लेनी चाहिए।"

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने कहा था

लोकमान्य तिलक ने सिन्ध-यात्रा के बाद कहा था, "सिन्ध के लोगों की देश-भक्ति देख कर मुझे विश्वास हुआ है कि अब भारत-माता अधिक दिनों तक बेड़ियों में जकड़ी नहीं रह सकती।"

फिक्र मत करो दादी !
शेरनी का पोता, मौत को शर्मिन्दा करके ही रहेगा !!



एक वीर क्रान्तिकारी हरकिशन भी देश के कई शहीदों की तरह गुमनाम देश भक्त परिवार का लाड़ला था। उसके हौसले भी शहीद भगतसिंह से कम न थे। हरकिशन को फाँसी की सजा होने वाली थी। जेल में मिलने आए पिता गुरदासमल ने बेटे की तबियत का हाल पूछने की बजाय आते ही पूछा, "बेटे! तू अच्छा निशानेबाज है, फिर वो लाल मुंह वाला बन्दर, बच कैसे गया ?"

हरकिशन बोला, "पिताजी ! मैंने कुर्सी पर खड़े होकर गोलियाँ दागी थीं, परन्तु वह कुर्सी हिल रही थी, इसलिए मेरी गोलियों से अँग्रेज गवर्नर घायल तो हुआ, किन्तु परलोक नहीं पहुँच सका। लेकिन उसके बाद मैंने जो गोली चलाई उससे वह थानेदार मर गया, जो गवर्नर की रक्षा करने उसके पास खड़ा था।"

पिता -"तुमने गोली जमीन पर खड़े होकर क्यों नहीं चलाई ?"

हरकिशन ने जवाब दिया -"पिताजी ! यदि मैं जमीन पर खड़े होकर गोली चलाता, तो वह किसी और को भी लग सकती थी। क्यों कि कई लोग गवर्नर के आसपास थे। मैंने उस पर दो गोलियाँ चलाईं, तीसरी गोली जैसे ही चलाने लगा, डॉ. राधाकृष्णन उसे बचाने के लिए बीच में आ गए।"

पिता ने कहा -"यदि गोली ठीक निशाने पर लगती और उस लाल मुंह के बन्दर की मौत हो जाती, तो मुझे अपने बेटे पर और भी अधिक गर्व होता।"

26 जनवरी, 1931 के दिन लाहौर सेशन कोर्ट ने हरकिशन को फाँसी की सजा सुनाई। जेल में मिलने आई दादी ने पोते से कहा, "हरी बेटे ! बहुत हौसले के साथ फाँसी पर चढ़ना।"

जोशीली आवाज में सर उठाकर हरकिशन बोला, "फिक्र मत करो दादी ! शेरनी का पोता, मौत को शर्मिन्दा करके ही रहेगा !!"

जिस जेल में हरकिशन को फाँसी दी जाने वाली थी, उसमें भगतसिंह भी कैद थे। ये जानकर हरकिशन ने भगतसिंह के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की, न मानने पर उसने अनशन आरम्भ कर दिया। नौ दिन बाद भगतसिंह को उसकी कोठरी में लाया गया और इस तरह दर्शन करने के बाद, उनके हाथों दूध पीकर अनशन समाप्त किया। भगतसिंह को फाँसी दिए जाने के कुछ दिन बाद, हरकिशन को भी फाँसी दे दी गई।

गुरदासमल को गिरफ्तार करके अनेक यातनाएँ दी गई, जिस कारण वह वीर पिता भी बलिदान हो गया। परिवार का छोटा बेटा भगतराम भी परिवार की तरह पक्का क्रान्तिकारी निकला। भगतराम ने अँग्रेज सरकार द्वारा घर में नजरबन्द नेताजी सुभाष को कलकत्ता से निकालकर, काबुल होते हुए जर्मनी पहुँचने में प्रमुख भूमिका निभाई थी।

शहीद संत कंवरराम और शहीद वीर हासाराम पमनाणी



भरचुंडी का मुस्लिम पीर, सक्खर में सिंधी-हिन्दू कन्याओं व युवकों का अपहरण और जबरन धर्म परिवर्तन करने वालों का नेता था। इन आतंकी गतिविधियों में लगे भरचुंडी के मुस्लिम पीर के पुत्र एवं गुन्डों की, रोहिड़ी जिला सक्खर के युवकों ने खूब पिटाई की थी। जिसका बदला लेने के लिए पीर ने संत कँवरराम की हत्या कराने का एलान किया। क्योंकि कँवरराम ऐसे सन्त थे जो हिन्दू-मुस्लिम का भेद किए बिना, सबकी हर सम्भव सहायता किया करते थे, इसलिए वे सबके पूजनीय सन्त थे। उनकी भगत (नाच के द्वारा धार्मिक कीर्तन) को सुनने, हिन्दूओं के साथ मुस्लिम लोग भी बड़ी संख्या में आते थे। इसलिए पीर ने अपने पुत्र और उसके साथी गुन्डों की पिटाई का बहाना बनाकर, सन्त कँवरराम की हत्या करवाई थी।

रोहिड़ी जिला सक्खर के हासाराम पमनाणी का जन्म 10 अप्रेल, 1889 के दिन हुआ था। असहयोग आंदोलन के समय शिक्षक की सरकारी नौकरी त्यागकर, वे स्वतन्त्रता-संग्राम में कूद पड़े थे। उन्होंने आध्यात्मिक ज्ञान और स्वराज का संदेश दूर-दूर तक पहुँचाने के लिए 'सत्संग' और 'धर्मदर्शन' समाचार पत्र निकाले। एक वकील होने के साथ-साथ वे, सिन्ध असेम्बली के सदस्य भी थे। उन्होंने सन्त कँवराराम की हत्या के सम्बन्ध में विधानसभा में अविश्वास प्रस्ताव लाया, जिससे मन्त्री-मन्डल भंग हो गया और सरकार गिर गई।

हासाराम पमनाणी ने कोर्ट में अँग्रेजों पर भरचुंडी के पीर के बेटे और उसके साथी गुन्डों को आतंक फैलाने और हिन्दुओं के अपहरण की खुली छूट देने का आरोप लगाने के साथ, सन्त कँवरराम के हत्यारों का अपराध सिद्ध कर दिया था। मामले का निर्णय आने से पहिले, मुस्लिम पीर के आतंकवादी गुन्डों ने रोहिड़ी रेल्वे स्टेशन के बाहर 17 जुलाई, 1940 के दिन इस वीर को गोली मारकर शहीद कर दिया था।

आदर्श सन्त स्वामी लीलाशाह

स्वामी लीलाशाह, सन्तों में एक आदर्श सन्त थे। कथनी और करनी की समानता उनके आचरण से सदा सिद्ध होती थी। देश भर में रटन कर, हरिजन-बस्तियों में जाकर उन्हें साफ-सुथरा रहने की सलाह के साथ हर सम्भव सहायता करते थे। वैदिक-संस्कृति के प्रखर विद्वान थे। पूजा-पाखन्ड, व्यक्ति-पूजा के विरोध में उच्च कोटि का आध्यात्मिक साहित्य रचा। भारत विभाजन के पश्चात नारी-शिक्षा एवं सुधार के साथ दहेज-विरोध हेतु सामूहिक विवाह को आंदोलन का रूप दिया। सिन्धी भाषा-संस्कृति के प्रचार हेतु कन्धे पर पुस्तकों की गठरी लादकर, चलता-फिरता ग्रन्थालय चलाते थे।

देश-विभाजन के बाद महात्मा गाँधी ने कहा था

देश-विभाजन के बाद भी हिंसक गतिविधियाँ देखते हुए महात्मा गाँधी ने कहा था, "भारत विभाजन से भविष्य में देश की क्षति होगी। मैंने निर्बल लोगों की अहिंसा को सच्ची अहिंसा समझा था। उस समय मुझे ईश्वर ने अन्धा कर दिया था, उसी तरह शायद ईश्वर ने मुझे फिर अन्धा कर दिया है।"

कुछ दिनों के बाद एक प्रार्थना सभा में उन्होने कहा था, "लगता है मेरे जीवन का कार्य पूरा हो गया है। मैं आशा करता हूँ परमात्मा मुझे और अपमान सहने के लिए जीवित नहीं रखेगा।"

एक और सावरकर वीर परचो विद्यार्थी

सिन्ध में कुछ ऐसे भी क्रान्तिवीर थे जो सिन्ध को आजाद सिन्ध के रूप में आजाद कराने में लगे हुए थे। उनके नेता का नाम था श्री परचो विद्यार्थी। अपने दो साथियों फेरू और विश्नूं की सहायता से जेल की दीवारें कूद कर भागते समय पुलिस ने उनपर गोलियाँ चलाई थीं परन्तु उन्हें एक भी गोली नहीं लग सकी। परचो विद्यार्थी अपने साथियों से कहा करते थे, "अँग्रेज सरकार ने अब तक ऐसी गोली नहीं बनाई है जो परचे को लग सके।" यह बात उनके जेल से भागते समय सच प्रमाणित हुई। उनके बारे में कहा जाता था कि, "सिन्ध में यदि अँग्रेज सरकार किसी से डरती थी तो वो था परचो विद्यार्थी।" सरकारी खजाना लूटने वाले 'लाँडी शूटिंग केस', कराची के 'मेरिएट रोड डकैती केस' में एक सेठ को लूटने और 'पिंजरापोल बम केस' आदि अपराधों के कारण 63 साल जेल और फाँसी की सजा रद्द कर 20 साल की जेल के साथ, उन्हें कुल 83 साल की सजा सुनाई गई थी। वीर सावरकर को 65 साल काले पानी की सजा मिली थी।

सिन्ध के जिले लाड़काणा के खरो ड़ेरो गाँव में, 15 जून, 1919 के दिन जन्में, परचो विद्यार्थी ने बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की थी। वे सिन्ध को **एशिया का स्विट्‌जरलैन्ड** बनाना चाहते थे। श्री मोहन कल्पना ने वीर परचो विद्यार्थी के जीवन-चरित्र पर आफताब-इंकलाब नामक पस्तक लिखी है। हरी मोटवाणी ने भी 'अबो' नामक एतिहासिक-उपन्यास में उनके क्रान्तिकारी जीवन का उल्लेख किया है। आजकल वे, उल्हासनगर-महाराष्ट्र में अपने परिवार के साथ रहते हैं। दिसम्बर, 2006 में उनके निवास पर हुई मुलाकात में उन्होंने अपने अनोखे क्रान्तिकारी जीवन के सम्बन्ध में छोटा सा परिचय दिया था।

श्री विद्यार्थी के पिता श्री केवलराम आइलाणी, कट्टर कांग्रेसी थे। उन्होंने दो बार जेल की सजा भोगने के साथ, दान्डी-मार्च में भी भाग लिया था। परन्तु परचो विद्यार्थी, लुटेरे-हत्यारे अँग्रेजों के सामने गिड़गिड़ाकर, आजादी को भीख के रूप में मांगने जैसी पलायन-वादी विचारधारा से अलग सशस्त्र-क्रान्ति के द्वारा सिन्ध को स्वतन्त्र देश बनाना चाहते थे। क्योंकि वे जान गए थे कि काँग्रेस, मुस्लिम लीग और अँग्रेज सरकार मिल-जुल कर आजादी के नाम पर, नई गुलामी का छड्यन्त्र रच रहे हैं। इसलिए श्री विद्यार्थी ने दो हजार लड़कों और लड़कियों को संगठित कर, **भारत सेवा समाज** नामक संगठन बनाया था, जिनमें अधिकांश युवा विद्यार्थी ही थे। उनके प्रमुख साथी थे-सोभो ज्ञानचन्दाणी, हशू केवलरामाणी, कामरेड जमालुद्दीन बुखारी, अमीन खोसो, ऐंशी विद्यार्थी। अन्य साथी थे झामन कालाणी, दयाल कालाणी, नारायण वाधवाणी, सखावत चोटवाणी, फेरू, विष्नों, अमीरखाँ रन्द बलोच, मुरली रायसिंघाणी, नन्द जेठरा, आतू मोटवाणी, संतोषकुमार, प्रीतम टहलरामाणी और बम विशेषज्ञ-खेमो। नारी रत्नों में थीं - सर्व श्री कु.हरदेवी, कु.सावित्री, कु.ईश्वरी, कु.सरला आहूजा, कु.रामकुमारी व कु.नानकी आदि।

भारत सेवा समाज की सिन्ध में कई शाखाएँ थी। जिनके प्रमुख कार्य थे (1) जहाँ-जहाँ भी पुलिस चौकीदारी कर रही हो वहाँ बम फेंकना। (2) डाक के डब्बों में तेजाब आदि डालकर डाक को जला देना। (3) समाचार-पत्र छापना और बांटना। (4) झूठे सरकारी आदेश निकाल कर अपने साथियों को छुड़ाना और सरकारी कर्मचारियों की बदली के द्वारा, सरकारी कामों में रुकावट डालकर उन्हें उलझाए रखना। (5) संचार माध्यमों को भंग करने के लिए टेलीफोन की तारें काटना आदि।

लाँडी शूटिंग केस में गिरफ्तारी के बाद जेल से भाग निकलने के बाद जब परचो विद्यार्थी बाहर आए, तो उन्हें पता चला कि आजादी के नाम पर देश के नेताओं ने अपने ही देश के तुकड़े करना स्वीकार कर लिया है। विभाजन के सम्बन्ध में दिया गया महात्मा गाँधी का वचन झूठा सिद्ध हुआ है।

... शेष अगले पृष्ठ पर ...

काँग्रेसी नेताओं के आश्वासन केवल कोरी भाषणबाजी सिद्ध हुए हैं और उनका पूर्ण स्वराज का नारा खयाली पुलाव की तरह छल-कपट सिद्ध हुआ है। इसलिए उनका आजाद सिन्ध का सपना चकनाचूर हो गया है। उनके जिन 2 हजार क्रान्तिवीरों ने जिस आजाद सिन्ध देश के लिए, अपनी जवान-उमंगों का गला घोटकर, जान पर खेल जाने वाले जो प्रयास किए थे, वे सब बेकार हो गए हैं। यहाँ तक कि सिन्ध के मूल निवासियों को हिन्दू बहुल एक जिला थरपारकर भी नहीं दिया गया, तो उनका हृदय टूट सा गया और वे फूट-फूटकर रोने लगे। किन्तु फिर भी हिम्मत न हारते हुए वे, महात्मा गाँधी आदि नेताओं से मिलने गए।

वे, कलकत्ता में रह रहे महात्मा गाँधी से मिलने पहुँचे। गाँधीजी ने कहा कि, "तुम एक भगोड़े कैदी हो। कहीं मेरा नाम भी तुम्हारे साथ न जोड़ा जाए, इसलिए मुझसे मत मिला करो। वैसे तो मैं तुम्हें गिरफ्तार होने की राय देता किन्तु पाकिस्तान में मुस्लिम लीग की सरकार होने के कारण तुम्हें आसानी से छोड़ा नहीं जाएगा और बहुत अधिक सताया भी जाएगा, इसलिए मैं ऐसी राय नहीं दूँगा। तुम्हारे लिए उचित होगा कि तुम जिब्राल्टर में शरण लेकर रहो।" गाँधीजी के साथ उन्होंने लगातार तीन दिन मिलकर सिन्ध के हालात पर चर्चाएँ कीं, किन्तु कोई भी हल न निकलने के कारण उन्हें निराश वापस सिन्ध लौटना पड़ा।

परचो विद्यार्थी, पाकिस्तान बनने के बाद भी, अपनी योजना को सफल बनाने में लगे रहे। वेश बदलने में वे माहिर थे। कभी अँग्रेज अफसर तो कभी मुस्लिम मौलाना और कभी बुर्का पहिनकर मुस्लिम औरत बनकर वे क्रान्तिकारी गतिविधियों में लगे रहते थे। कराची में उन्होंने साथियों के साथ मिलकर, बैंक आफ इंडिया शाखा पर डाका डालकर सात लाख रुपए हथिया लिए। ढेर सारा धन हाथ आने के बाद जरूरत के हथियार खरीदे। इसके बाद उन्होंने अपने साथियों के साथ मिलकर, सिन्ध के सरकारी हथियार-खानों, हवाई-अड्डों, रेडियो स्टेशन आदि पर हमला कर उन पर कब्जा करने की एक योजना बनाई। इस योजना का समर्थन प्राप्त करने के लिए परचो विद्यार्थी ने भाई प्रताप डीयलदास की सहायता से सिन्ध के काँग्रेसी नेताओं जयरामदास दौलतराम, डॉ. चोइथराम गिदवाणी के साथ विचार-विमर्श किया। हिन्दुस्तान में राजकुमारी अमृतकौर से भी मुलाकात की, किन्तु कोई भी उनकी योजना से सहमत नहीं हुआ। वे एक बार फिर सिन्ध के सबसे लोकप्रिय नेता डॉ. चोइथराम गिदवाणी से मिले और अपनी सशस्त्र-क्रान्ति की योजना बतलाते हुए कहा, "हमारी योजना में पीर पगारो अपनी लाल सेना के साथ शामिल हैं अगर आप, हमारा साथ दें तो हम आपको सिन्ध का नेता स्वीकार करने को तैयार हैं। अन्यथा सारी की सारी सिन्ध सिन्धीयों के हाथ से निकल जाएगी। इसके बाद पता नहीं कि पाकिस्तान में हिन्दुओं के साथ कैसा अन्याय और अत्याचार किया जाएगा। सिन्ध की गौरवशाली संस्कृति और इतिहास पर साम्प्रदायिक कट्टरता का कलंक लग जाएगा।" डॉ. गिदवाणी ने उनकी योजना को सुना और चौबीस घन्टे का समय माँगा, किन्तु इन चौबीस घन्टों में, वे भी अन्य काँग्रेसी नेताओं की तरह हवाई जहाज से हिन्दुस्तान पहुँच गए।

जब पाकिस्तानी खुफिया-पुलिस को पता चला कि हिन्दू क्रान्तिकारी कुछ गड़बड़ शुरू करने वाले हैं तो उसने कईयों को पकड़कर जेल में डाल दिया। उनमें कामरेड सोभो ज्ञानचन्दाणी, हशू केवलरामाणी और कीरत बाबाणी भी थे। ढूँढने पर भी पुलिस को परचो विद्यार्थी हाथ नहीं लगा तो उनकी पत्नी की तलाश में लग गई किन्तु वे अपने पाँच साल के पुत्र के साथ कहीं भूमीगत हो गईं। मार्शल ला के समय अँग्रेज और सिन्ध प्रदेश सरकार द्वारा परचो विद्यार्थी की जिन्दा या मुर्दा गिरफ्तारी पर 15 हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया था। तथाकथित आजादी के नाम पर हुए विभाजन के बाद, 13 आक्टोबर, 1948 के दिन हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की हत्या, लूटपाट और आतन्क फैलाने वाले कैदी गुन्डों की अदला-बदली वाले एक समझौते के अनुसार, परचो और उनके साथियों को हिन्दुस्तान भेज दिया गया।

मेरिएटरोड डकैती केस

अँग्रजों की लाठी-गोली का जवाब बम-बारूद के गोलों के देने वाले छोटे-छोटे युवा दलों में सबसे बड़ा और आदर्श दल था - प्रसिद्ध कान्तिवीर श्री परचो विद्यार्थी का। इस दल के सिन्ध के सभी शहरों में अड्डे थे। दल और क्रान्तिकारी कार्यवाहियों को पूरा करने के लिए जरूरी धन की व्यवस्था के लिए यह दल धन्ना-सेठों और सरकारी खजाने को लूटने का कार्य करता था। कराची के मेरिएट रोड में एक व्यापारी की कोठी पर डकैती डालते समय, दल के गद्दार गंगू छापरू के कारण परचो विद्यार्थी और उनके सहयोगी नानक और विश्नो पकड़ लिए गए। दल के प्रमुख परचो विद्यार्थी को फाँसी का सजा के साथ विभिन्न केसों में 83 साल की सख्त सजा सुनाकर जेल भेज दिया गया। किन्तु परचो विद्यार्थी और विश्नो, अपने साथियों की सहायता से जेल की दीवार फाँदकर भाग निकले। इसके बाद परचो विद्यार्थी की अगवानी में 10 मई, 1946 के दिन कराची पोष्ट ऑफिस में डाका डालकर 80 हजार रुपए लूट लिए गए।

अँग्रेजी लूट का जवाब - लाँडी शूटिंग केस

राज स्वदेशी हो या विदेशी, जनता को लूटने वाले राज का धन लूटना और वह भी देश की स्वतन्त्रता के लिए, एक आदर्श नीति ही कही जाएगी। और अँग्रेज तो इस देश में मानवता की हर प्रकार की सीमा को लाँघकर लूट मचाने में लगे थे। इसलिए उनकी लूट का जवाब लूट से देना, कोई अपराध या देश-द्रोह नहीं था। परचो विद्यार्थी ने ऐसी नीति अपनाकर रेल विभाग के कर्मचारियों को दी जाने वाली पगार रूपी 40 लाख रुपए लूटने की योजना बनाई। 23 मई, 1947 के दिन परचो विद्यार्थी और उनके दो साथियों ने कराची जाने के लिए एक टैक्सी किराए से ली। रास्ते में ड्राईवर ने शंका होने के कारण टेक्सी रोक दी और आगे जाने से इन्कार कर दिया। विद्यार्थी के साथी कोडू और माणिक ने उसे गोली मारकर, टैक्सी से बाहर धकेल दिया और तीनों टैक्सी लेकर लूट वाले स्थान पर पहुँचे। किन्तु देर हो जाने के कारण, ट्रेन वहाँ से निकल चुकी थी। घायल टैक्सी ड्राईवर से सूचना मिलने के बाद इस केस में परचो विद्यार्थी सहित कुल 22 युवक गिरफ्तार किए गए। केस की कार्यवाही पूरी न हो सकी, क्योंकि इसके तुरन्त बाद आजादी के नाम पर विभाजन के नाम पर देश का विभाजन हुआ। अन्यथा इनमें से कुछ युवकों को फाँसी की सजा दी जाती। इस रोमान्चकारी केस की खबर, सारे देश में फैल गई।

आजादी के नाम पर हुए देश-विभाजन के बाद, भारत और पाकिस्तान के कैदियों की अदला-बदली में इसके सभी आरोपियों को भारत सरकार को सौंपा गया। भारत आकर श्री परचो विद्यार्थी 1962 में फारवर्ड ब्लाक की टिकट पर, महाराष्ट्र में उल्हासनगर विधानसभा के सदस्य चुने गए।

विभाजन के बाद महान नेहरू ने कहा था

काँग्रेसी नेताओं गाँधी और पं. नेहरू आदि ने चुनावों के समय सारे देश को "भारत का विभाजन गाँधीजी की लाश उठने के बाद ही होगा।" का वचन दिया था। किन्तु 6-7 महीने ही बीते थे कि 3 जून 1946 के दिन विभाजन के छड्यन्त्र की पोल खुल गई। जिस दिन पं. नेहरू ने रेडियो से भारत का विभाजन स्वीकार किया। 21 जून के दिन पं. नेहरू ने पत्रकारों के पूछने पर कहा था, "हमने सर कटाकर सरदर्द की दवा की है।" एक अन्य बयान में उन्होने कहा था, "हमें निकट भविष्य में आजादी प्राप्त करने का अन्य कोई मार्ग दिखाई नहीं दिया।"

बहुरूपिया और बहादुर क्रान्तिकारी
अँग्रेज सरकार मुझे कभी पकड़ नहीं सकती



यह रोमांचक घटना 1946 की है। कराची जेल के फाटक के सामने एक कार से एक सुन्दर युवक निकला और गाना-गाने लगा। गाने को सुनने के लिए जेल-अधिकारी और सिपाही फाटक के पास आकर जमा हो गए। उधर जेल के अन्दर फेरू और विश्नू नामक दो कैदी जो सिन्ध के प्रसिद्ध क्रान्तिदूत परचो विद्यार्थी के साथी थे। वे, नकली चाबी से कोठरी का ताला खोलकर बाहर निकले और तेजी से चलते हुए परचो विद्यार्थी को भी बाहर निकाला। तीनों साथी दौड़कर जेल की चारदीवारी के पास पहुँचे। दीवार के सहारे फेरू की पीठ पर विश्नू चढ़कर झुक गया, और परचो उन पर चढ़कर दीवार की मुन्डेर पर पहुँच गए। दीवार के पीछे भी एक कार लिए उनके साथी मौजूद थे। परचो विद्यार्थी ने उनसे एक रस्सी लेकर फेरू और विश्नू को भी ऊपर चढ़ा लिया और दीवार कूदकर तीनों बाहर निकल आए। इतने में भनक लगने पर पुलिस ने उन पर गोलियाँ बरसाईं, किन्तु उनमें से एक भी गोली निशाने पर नहीं लगी। इस तरह परचो विद्यार्थी का विश्वास सही सिद्ध हुआ, जिसके अनुसार वे कहा करते थे, "अंग्रेज सरकार ने ऐसी गोली नहीं बनाई है जो परचो विद्यार्थी को लग सके।"

जेल से निकलकर वे और उनके दोनों साथी एक कार के बाद दूसरी कार में बैठकर अपने गुप्त अड्डे पर पहुँच गए। पुलिस ने उनके घर और दूसरे अड्डों पर बहुतेरा तलाश किया, किन्तु वे कहीं भी नहीं मिले। सिन्ध के इस महान क्रान्तिकारी परचो विद्यार्थी के बारे में कहा जाता था कि, "सिन्ध में यदि अँग्रेज सरकार किसी से डरती थी तो वो था परचो विद्यार्थी।"

वे भेस बदलने की कला में निपुण थे। वे अधिकाँश अपने साथी दयाल कालाणी को तुर्की टोपी और सलवार-कमीज पहिनाकर और खुद बुर्का पहिनकर उसकी मुस्लिम बीबी बनकर निकलते थे। वे, रंग में अंग्रेजों की तरह गोरे और ढंग में किसी अफसर जैसे लगते थे। गोल टोप पहिनने के बाद तो बिल्कुल अंग्रेज ही लगते थे।

एक नाव में चार लोग सवार थे, एक नाविक मीर बहर, दो पुलिस के सिपाही और चौथे परचो विद्यार्थी। वे अँग्रेजी भेस में थे और फर्राटेदार अंग्रेजी में बात करते थे। दोनों सिपाहियों ने समझा कि ये कोई अँग्रेज अफसर है, इसलिए उन्होंने तनकर, उन्हें फौजी-सलाम भी बजाया और बताया कि वे परचो विद्यार्थी को पकड़ने उनके गाँव खरो ड़ेरो जा रहे हैं। विद्यार्थी ने अंग्रेजी में कहा, "अँग्रेज सरकार परचो विद्यार्थी को कभी भी पकड़ नहीं सकती।"

किनारे पर उतरते ही परचो विद्यार्थी ने जेब से पिस्तौल निकालकर, सिपाहियों को हाथ ऊपर करने और अपनी-अपनी पिस्तौल उनके हवाले करने को कहा। दोनों ने पिस्तौल निकालकर उन्हें सौंप दीं। परचो ने पिस्तौल हथिया कर दूर जाते हुए कहा, "मैंने आपको पहिले ही कहा था, अँग्रेज सरकार परचो विद्यार्थी को कभी भी पकड़ नहीं सकती।"

आजाद सिन्ध देश के लिए संग्राम

सिन्ध के महान क्रान्तिदूत परचो विद्यार्थी, अमीन खोसो और झामन कालाणी के मार्गदर्शन में 2000युवक सिन्ध को अलग देश के रूप में आजाद करवाना चाहते थे। 23 मई, 1947 के दिन सरकारी खजाना लूटने के लिए प्रसिद्ध लांडी शूटिंग केस में जो युवक बन्दी बनाए गए उनके नाम थे-मांधवदास शर्मा, शखावत चोटवाणी, पहिलाज ग्वालाणी, बूलचन्द कृपलाणी, लछमण बनवारी, लखन मसन्द, किशिन डेम्बला, तीरथ, टोपण, भेरू अबीचन्दाणी, नेणू जेठरा, रतन राजपूत, आतू मोटवाणी, शेवाराम, आनन्द ताराचन्दाणी, प्रेम, टीकम, सिरीचन्द छुगाणी, पहिलाज छुगाणी, भोजराज राजपूत, मनूमल छाबड़िया और अमीर खां रन्द बलोच। इसी बीच भारत का विभाजन हुआ अन्यथा इस केस में कुछ को फाँसी पर चढ़ाया जाता।

शहीद हेमू कालाणी, ऐंशी विद्यार्थी, वीरू गोलाणी, नानक आहूजा, विष्णो छापरू, हीरो बागी, नबी बख्श खुहड़ो, नन्द जेठरा, माणिक, तीरथ खस्तूरिया, भगवान हजारी, जीवत, हूँदराज, शिवाजी सिंघ, सुन्दरदास, मुरली, कोडू, गोपालदास, तुलसी नावाणी, ईश्वर आहूजा, उधाराम रेलवाणी, राम, कालीदास, प्रोफेसर मिश्रा, भाई गंगादास, केशवलाल अटवाल, केशवलाल जोशी, शम्भूदास, मूलचन्द 'मायूस', हरी मसन्द, हशू केवलरामाणी, सोभो ज्ञानचन्दाणी और दयाल कालाणी। कुमारी हरदेवी परसराम, कु.सावित्री चन्दनाणी, कु.ईश्वरी खिलनाणी, कु.सरला आहूजा, कु.रामकुमारी व कु. नानकी के सिवा अन्य कई गुमनाम युवक भी इस संगठन के सदस्य थे, जो विभाजन के बाद भी पाकिस्तान में आजाद-सिन्ध के लिए संग्राम चालू रखने के लिए 'जीए-सिन्ध' नामक प्रसिद्ध संगठन में शामिल हुए।

कम्युनिस्ट आंदोलन के नेता अमीन खोसो और सक्खर-रोहिड़ी में 'यूथ सर्कल' के नेता झामन कालाणी भी इस संग्राम के प्रमुख नेता थे। वीर हेमूं कालाणी, इसी यूथ सर्कल का सदस्य था, जो हथियारों से भरी रेलगाड़ी गिराने के प्रयास में बन्दी बनाया गया और फाँसी पर चढ़कर शहीद हुआ। हेमूँ कालाणी को फाँसी दिए जाने के पहिले परचो विद्यार्थी और झामन कालाणी ने जेल की दीवार को बम से उड़ाकर आजाद करवाने की योजना बनाते समय सी.आई.डी. पुलिस ने घेरा डाला। आधे घन्टे की भागदौड़ के बाद परचो विद्यार्थी ने हवाई फायर किया और साथियों सहित भाग निकले। प्रदेश और अँग्रेज सरकार द्वारा परचो विद्यार्थी को जिन्दा या मुर्दा गिरफ्तार करवाने पर 15 हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया।

परचो विद्यार्थी की कार्य शैली बहुत ही सुरक्षित थी। चार-पाँच युवक एक छोटे से दल के रूप में अलग-अलग कार्य करते थे, ताकि पकड़े जाने पर दूसरे सदस्यों का पता न चल सके। सिन्ध प्रदेश को पाँच संभागों में बाँटा गया था। इन संभागों के नेता थे कराची में नन्द झूराणी, हैदराबाद में टोपणदास, लाड़काणा में अमीर खां रन्द बलोच, सखर में झामन कालाणी और करतार बख्श बिजलाणी। सभी दलों को धन सुलभ कराने का कार्य नन्द झूराणी के जिम्मे था।

दुस्साहसी क्रान्तिकारी - अँग्रेज पर बम फेंका और घटना-स्थल पर लौट आया

परचो विद्यार्थी के क्रान्तिकारी दल में दयाल कालाणी जैसा दुस्साहसी क्रान्तिकारी भी था, जिसने एक साथी के साथ, अँग्रेज सार्जेन्टऔर पुलिस की एक टोली पर बम फेंका और भाग निकला। दयाल कालाणी, पास के एक घर में घुस गया और कच्छे-गंजी में घटना स्थल पर वापस आकर तमाशा देखने लगा, जहाँ अँग्रेज सार्जेन्ट औंधे मुंह गिरा पड़ा था और शेष पुलिस वाले घायल पड़े थे।

शिकारपुर कालोनी बम-केस

स्वतन्त्रता के नाम पर 1947 में विभाजन से बने पाकिस्तान में हर जगह हिन्दुओं पर मुस्लिम-गुन्डों द्वारा हमले करके निर्मम हत्याएँ की जाने लगी थीं। इन गुन्डों को पाकिस्तानी सरकार की खुली छूट थी। हिन्दुओं की रक्षा के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के कुछ कार्यकर्ताओं ने बम-बन्दूक आदि हथियार जमा करने शुरू किए। कराची के बन्दर रोड एक्सटेंशन के पास शिकारपुर कालोनी में श्री तोताराम हिंगोराणी का एक दुमंजिला मकान था। यह मकान अपने नातेदार नन्द बदलाणी को सौंपकर, वे अपने परिवार के साथ उदयपुर चले गए थे। बदलाणी को एन.ई. डी. इंजिनियरिंग कॉलेज में ड्राइंग की परीक्षा देने के लिए अपने बड़े भाई के साथ कराची में ही रुकना पड़ा था। संघ कार्यकर्ता श्री किशन माटा के साथ पंजाब रिलीफ कमेटी के सदस्य भी इस मकान में रहते थे। 9 सितम्बर, 1948 के दिन बम बनाते समय एक बम फट गया। विस्फोट इतना शक्तिशाली था कि इससे सारा कराची शहर हिल सा गया। मकान की दीवारें ध्वस्त होकर डह गईं। एक युवक प्रभू बाबलाणी विस्फोट में तुरन्त मारा गया, दूसरा युवक वासदेव गाबा पूरी तरह जल जाने के कारण जोर-जोर से चीख-चिल्ला रहा था। चीख सुनकर नीचे के कमरे से किशन माटा और लोकनाथ जेटले ऊपर पहुँचे ही थे कि विस्फोट की आवाज सुनकर वहाँ पुलिस भी पहुँच गई। पुलिस-गाड़ी की आवाज सुनते ही वे दोनों भाग निकले। पुलिस को मकान से प्रभू बाबलाणी की लाश और मरणासन्न हालत में वासदेव गाबा मिला, किन्तु पूछताछ करने से पहिले ही वह भी मर गया। पुलिस ने वहाँ से बम बनाने के सामान के साथ पंजाब रिलीफ कमेटी की रसीद-बुक आदि सामान जब्त कर लिया।

जाँच के बाद कालोनी के कई घरों पर छापे मारकर कराची के संध-चालक प्रसिद्ध वकील खानचन्द गोपालदास, नन्द बदलाणी, गोबिन्द अजवाणी, दौलत साजनाणी, नारायण मीरचन्दाणी, टीकमदास वजीराणी, अर्जुन भोजवाणी, लेखराज वजीराणी, राम हिंगोराणी, मुरली छुगाणी, नारायण वाधवाणी, हरगोविन्द गिदवाणी, सन्तो गिदवाणी, विशनू जगेशिया, नानक रामरख्याणी, धनराज ओझा और मंघाराम झूराणी सहित कुल 17 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया।

इन सभी पर शिकारपुर कालोनी बम केस के नाम से कोर्ट में मुकदमा चलाया गया। मोहम्मद अली जिन्ना के कहने पर जज रहीम बख्श ने 13 सितम्बर, 1948 के दिन मौखिक फैसले में श्री खानचन्द को आजीवन कैद के साथ 50 हजार रुपए नगद जुर्माना और शेष सभी को दस-दस साल जेल की सजा के साथ बीस-बीस हजार रुपए जुर्माना भरने की सजा दी। जिसका लिखित फैसला बाद में दिया गया। इस बीच भारत और पाकिस्तान सरकार के बीच कैदियों की अदला-बदली का समझौता हुआ। इस समझौते के अनुसार दिल्ली में एक हत्या के अपराध में कैद जिन्ना के दोस्त डॉ. कुरैशी के बदले कई क्रान्तिकारियों के साथ इस केस के आरोपियों को भी 13 आक्टोबर, 1948 के दिन भारत भेज दिया गया।

गाँधी हत्याकान्ड में गोबिन्द हुक्माणी को जेल

30 जनवरी,1948 के दिन हुए गाँधी हत्याकान्ड की आड़ में नेहरू सरकार ने अपने विरोधी राजनीतिक दलों के साथ वीर सावरकर के अभिनव भारत और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ जैसे राष्ट्रीय विचारधारा वाले संगठनों के सदस्यों को सताने के लिए निरपराध जेल में बन्द कर दिया था। इनमें संघ के राजस्थान के प्रदेश संघ चालक श्री गोबिन्द हुक्माणी को 21 महीने की जेल की सजा दी गई। वे विभाजन पूर्व रोहिड़ी जिला सक्खर में रहते समय, संघ के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कार्य करते थे।

आजाद हिन्द फौज और सिन्धी - 1943

1938 में नेताजी सुभाष, काँग्रेस के अध्यक्ष चुने गए किन्तु गाँधीजी की शह पर काँग्रेस द्वारा असहयोग करने के कारण उन्होंने काँग्रेस छोड़ दी। 1940 में उन्हें अँग्रेज सरकार ने उनके कलकत्ते वाले घर में नजरबन्द कर दिया था। किन्तु नेताजी सुभाष, पिता गुरदासमल और पुत्र हरकिशन नामक एक शहीद परीवार के **भगतराम** की मदद से 26 जनवरी,1941 में काबुल होते हुए बर्लिन पहुंचे। यहाँ वे सरदार अजीतसिंह से मिले।

1942 में द्वितीय विश्व युद्ध में जापानी सेना ने, सिंगापुर, मलाया और रंगून पर अधिकार कर लिया था। अप्रेल महीने में भारत के विशाखापत्तनम और काकीनाड़ा पर उनके हवाई जहाजों ने बमबारी की। उनके जहाजी-बेड़े, बँगाल के उपसमुद्र में देखे गए। जापानी सेना ने मलाया में हिन्दुस्तानी सेना के 60 हजार सैनिकों को भी बन्दी बना लिया था। उस समय प्रसिद्ध कान्तिकारी रासबिहारी बोस, भारत से निर्वासित जापान में ही रह रहे थे। उन्होंने इन बन्दी सैनिकों में से 20 हजार सैनिकों की एक सेना तैयार कर ली और जर्मनी पहुँचे नेताजी को इस सेना की कमान सम्भालने के लिए संदेश भेजा। नेताजी ने इन सैनिकों को अपनी फौज में मिलाकर 21 आक्टोबर,1943 के दिन सिंगापुर में आजाद हिन्द फौज की स्थापना की। जिसके बाद उन्होंने भारत की अस्थाई सरकार का भी गठन कर लिया। नेताजी ने इस फौज के माध्यम से देश को, "तुम मुझे खून दो-मैं तुम्हें आजादी दूँगा", "दिल्ली चलो" और "जय हिन्द" नामक नारे दिए। फौज ने अपनी बहादुरी से, दक्षिण-पूर्व एशिया में बहुत नाम कमाया और जापानी सेनाओं की सहायता से भारत के सीमान्त श्रेत्रों में प्रवेश किया। नेताजी के नेतृत्व में आजाद हिन्द फौज, आसाम और मणीपुर के रास्ते भारत को आजाद करवाना चाहती थी किन्तु अँग्रेजों की गठबन्धन वाली सेनाओं ने बर्मा पर वापस कब्जा करने में सफलता प्राप्त कर ली। जिसके कारण आजाद हिन्द फौज को हथियार डालने पड़े।

बर्मा, हाँगकाँग, सिंगापुर, जापान, मनीला, इन्डोनेशिया आदि में निवासरत सिन्ध -वर्की व्यापारी बन्धू, हिन्दुस्तान की आजाद के लिए नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की आजाद हिन्द फौज को तन-मन और धन से सहायता प्रदान करते थे। नेताजी के साथ हमेशा रहने वाले दो विशेष सिन्धी साथी थे बम्बई के **होतचन्द** और **परसराम भागनाणी**। फौज में दो सिन्धी सैनिकों **हरचन्दराय पमनाणी** और साहिती के भिरियन गाँव के **बूलचन्द रामचन्द नारवाणी** ने प्रमुख भूमिका निभाई। श्री नारवाणी की भूमिका रोंगटे खड़े कर देने वाली थी। अँग्रेजों की फौज में रहते हुए उन्होंने अँग्रेजों के पेट्रोल डिपो को आग लगाकर लाखों रुपए का नुकसान पहुँचाया और भटककर चीन पहुँचने के बाद वे आजाद हिन्द फौज में भरती हुए थे।

1939 में सिन्ध में नेताजी की यात्रा के समय, सिन्धी महिलाओं ने उन्हें अपने बहुमूल्य गहने भेंट किए थे। फौज को सिंगापुर की **चोटरमल फर्म** ने विशेष सहयोग दिया था। इसी चोटरमल फर्म के मैनेजर **मंघनमल** के पिता **उधाराम बहराणी** को अँग्रेजों ने देशद्रोह के आरोप में 1910 में जेल भेज दिया था। हैदराबाद-सिन्ध निवासी **उधाराम बहराणी**, कलकत्ता में व्यापार करते थे, उनके कई बंगाली और पंजाबी क्रान्तिकारियों से गहिरे सम्बन्ध थे, वे उन्हें आर्थिक सहायता देते रहते थे। नेताजी सुभाष, जापान में रहते समय फौज के सहयोगी **सोनी मंघनमल लालचन्द होतवाणी** के घर में गुप्त बैठकें किया करते थे। मनीला निवासी **सोनी झमटमल सुखरामदास पुर्सवाणी** और उनके भतीजे **वसूमल पुर्सवाणी** आजाद हिंद फौज के सेनानी थे। इन्डोनेशिया में व्यापार करने वाले **सोनी लीलाराम लेखराज** और **सोनी पंजणदास** भी फौज के साथी थे। जो युद्ध से लौटने के बाद भारत में कई साल भूमिगत होकर रहे। इन्डोनेशिया में ही व्यापार करने वाले बुर्जुग **सेठ तेजूमल वाधूमल भोजवाणी** भी आजाद हिन्द फौज को बड़े दिल से धनादि की सहायता करते थे।

प्रान्तीय चुनाव - 1937, 1945
अँग्रेज, मुस्लिम लीग और काँग्रेस

ब्रिटिश सरकार ने 1935 में भारत के लिए फेडरल लॉ नामक कानून पास किया। जिसके अनुसार भारत में चुनाव केद्वारा वाईसराय के नीचे कामचलाऊ सरकारें बनाने की घोषणा की गई। देश में काँग्रेस सहित हिन्दू संगठनों ने इसे काला कानून घोषित कर, कड़ा विरोध किया। क्योंकि इस कानून के द्वारा हिन्दू और मुस्लिम वर्ग को अलग-अलग प्रतिनिधि चुनने का अधिकार दिया गया था। साथ ही और भातीय-ईसाई (धर्मान्तरित ईसाई) वर्ग को विशेषाधिकार दिया गया। इसके खिलाफ काँग्रेस ने सारे देश में "टोडी बच्चा हाय-हाय" के नारे लगाए थे। किन्तु इस विरोध की अनदेखी करते हुए अँग्रेजों ने 1937में चुनाव करवाने की घोषणा कर दी। काँग्रेस ने हारकर तय किया कि इन चुनावों में अपने प्रतिनिधि जितवाकर प्रान्तीय सरकार के काम-काज को ठप्प कर देंगे। किन्तु जब काँग्रेस को हिन्दू बहुल सात प्रान्तों में से छह प्रान्तों में भारी बहुमत प्राप्त हुआ तो उसने अपनी नीति बदल दी और काँग्रेस को लोकप्रिय बनाने तथा जन-सेवा की आड़ में सत्ता-सुख भोगने के लिए अपनी सरकारें गठित कीं। मुस्लिम बहुल प्रान्तों में से उत्तर पश्चिमी प्रान्त में काँग्रेस के सहयोगी खान अब्दुल गफ्फार खान की खुदाई खिदमतगार, पंजाब में सिकन्दर हयात की यूनियनिस्ट और बंगाल में फजलुल हक की कृषक प्रजा पार्टी की सरकार बनी। मुस्लिम लीग को सभी प्रान्तों में शर्मनाक हार मिली।

सिन्ध में 40 सीटों वाली विधानसभा में एक मुस्लिम पार्टी की सरकार बनी, जिसके मुख्यमन्त्री अलहबख्श सूमरो चुने गए। श्री सूमरो, हिन्दू-मुस्लिम एकता के सच्चे समर्थक थे। सिन्ध में हुए चुनावों में गैर मुस्लिम सभी सातों सीटों पर काँग्रेस के जो प्रतिनिधि जीते उनके नाम इस प्रकार थे - श्री पोपटलाल, श्री आर.के. सिधवा, श्री ईसरदास वरन्दमल, श्री नेंवन्दराम विशनदास, प्रो. घनशाम शिवदासाणी, प्रो.हासाराम पमनाणी और कु. जेठी सिपहमलाणी। काँग्रेसी टिकट पर एक मात्र प्रतिनिधि अमीन खोसो भी चुने गए। जिसने 1939 में हुए मंजिलगाह के कुख्यात दंगों के कारण काँग्रेस छोड़ दी थी।

भारत-विभाजन और पाकिस्तान निर्माण की योजना पर बहुत पहिले से ही काम करना शुरू कर दिया गया था। उसी योजना के अनुसार मुस्लिमों को बहुसंख्यक बनाने के लिए अँग्रेजों ने 1 अप्रेल, 1936 के दिन, सिन्ध को बम्बई प्रान्त से अलग कर दिया। 1937 में हुए चुनावों के बाद सिन्ध असेम्बली में जब मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान बनाने का प्रस्ताव लाया जाना था तब इस प्रस्ताव के विरुद्ध चेताने के लिए, श्री अब्दुल कलाम आजाद सिन्ध आए थे। सिन्धी नेताओं डॉ.चोइथराम गिदवाणी, जयरामदास दौलतराम, प्रो.घनशाम शिवदासाणी और जी.एम.सैय्यद से श्री आजाद ने कहा था कि, "वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के सच्चे-सिपाही और सिन्ध के मुख्यमन्त्री अलहबख्श सूमरो का साथ कदापि न छोड़ें।" किन्तु जी. एम. सैय्यद ने इसी समय मुस्लिम लीग से मिलकर गद्दारी की, साथ ही कुछ सिन्धी नेताओं ने भी प्रस्ताव को गिराने का प्रयास नहीं किया। इस तरह यह प्रस्ताव, भारत विभाजन और पाकिस्तान-निर्माण के लिए संवैधानिक आधार बना। मुख्यमन्त्री अलहबख्श सूमरो को 14 मई, 1943 के दिन आतंकवादी खान बहादुर खुहड़ो के गुन्डों ने शिकारपुर में गोली मारकर शहीद किया था। जिसके बाद में सिंध के मुख्यमन्त्री खुहड़ो बने और असेम्बली की उपाध्यक्ष बनी थीं कु. जेठी सिपहमलाणी।

दिसम्बर,1945 के राष्ट्रीय चुनावों में सिन्ध विधानसभा सीटों की संख्या बढ़ाकर 60 कर दी गई।

इन चुनावों के पूर्व महात्मा गाँधी ने वचन दिया था, "मैं वचन देता हूँ कि चाहे मेरे शरीर के तुकड़े हो जाएँ, किन्तु मैं पाकिस्तान का निर्माण अथवा भारत का विभाजन कदापि नहीं होने दूँगा।" महात्मा का ये वचन, उनकी अपनी अखबार हरिजन में 22 सितम्बर 1943 के दिन प्रकाशित हुआ था। । पं.नेहरू के नेतृत्व में काँग्रेस ने 'अखन्ड भारत' के संकल्प सहित घोषणा की कि, "देश का बंटवारा सिर्फ महात्मा गांधी की लाश उठने की हालत में ही हो सकता है।" नेहरू सहित बड़े-बड़े काँग्रेसी नेताओं ने यही वचन, सारे देश की जनता को दिया था। जिस पर पूर्ण विश्वास कर, सिंधी जनता ने सिंध की हिंदू बहुल 10 सीटों पर काँग्रेस को और 10 सीटों पर हिन्दू सभा के प्रतिनिधियों को विजय दिलवाई थी।

मुस्लिम लीग का जन्म मुसलमानों में अलगाववाद का विष फैलाने के लिए हुआ था। इन चुनावों में लीग का नारा था,"बंटवारा करके रहेंगे, पाकिस्तान बनाके रहेंगे।" इन चुनावों में उसको भारी बहुमत प्राप्त हुआ। स्पष्ट है कि देश भर के मुसलमानों ने देश के तुकड़े करने और पाकिस्तान बनाने का खुलकर समर्थन किया था। चुनाव प्रचार के समय जिन्ना ने कहा था," जब तक अलहबख्श सूमरो जैसा'काफिर' जिन्दा है, तब तक सिन्ध में मुसलमानों की खैर नहीं।" सिन्ध में 38 सदस्यों वाली लीग के मीर बन्दे अली खान मुख्यमन्त्री और काँग्रेस के श्री सीरूमल ईसराणी उपाध्यक्ष चुने गए।

सिन्ध की कुल 60 में से सभी 20 हिन्दू बहुल सीटों पर हिन्दू विधानसभा सदस्य चुने गए। जिनमें 10 काँग्रेस व 10हिन्दू महासभा के सदस्य थे। जिनके नाम इस प्रकार थे-माधवदास खुराना (जेकबाबाद), डॉ. गोबिन्दराम पंजाबी (शिकारपुर), चोइथराम वलेचा (सक्खर), लाला मेंघराज (रोहिड़ी), सीरूमल ईसराणी (लाड़काणा), परसराम टहलरामाणी (दादू), सीरूमल (नवाबशाह), नेंवन्दराम विशनदास एवं स्वामी कृष्णानन्द(थरपारकर)। महाराज विष्णू शर्मा, प्रो. नारायणदास मल्काणी एवं प्रो. घनशाम शिवदासाणी (हैदराबाद), डॉ. पोपटलाल (कराची), निहिचलदास वजीराणी (कराची), मुखी गोबिन्दराम प्रीतमदास (जमींदार वर्ग), परसराम टहलरामाणी (दादू), सीरूमल (नवाबशाह), भाई प्रतापराय डीयल-दास (मीरपुर खास), प्रो. नारायणदास मल्काणी (हैदराबाद), आर. के. सिधवा (कराची), कु. जेठी सिपहमलाणी (कराची), ईसरदास वरन्दमल (व्यापारी वर्ग), नारायणदास बेचर (मजदूर वर्ग)। लोकसभा में सेठ सुखदेव उधवदास भारवाणी व विधानसभा में नेंवन्दराम विशनदास निर्विरोध चुने गए।

चुनावों के बाद लीग ने मुसलमानों को 16 अगस्त, 1946 के दिन को सीधी कार्यवाही का दिन मनाने का मन्त्र दिया। जिसका अर्थ था पाकिस्तान बनाने के लिए भयानक दंगों के द्वारा मार-काट मचाकर मनपसन्द क्षेत्रों से हिंदुओं को भगाना। इस तरह योजना बद्ध रूप से कलकत्ते में बहुत ही भयंकर खूनी दंगे हुए, जो नुआंखोली (पूर्वी बंगाल), बिहार, दिल्ली, अमृतसर, लाहौर, रावलपिंडी और कराची सहित सारे देश में फैल गए। जिसके जवाब में बिहार और उत्तरप्रदेश के हिन्दुओं ने बदले की कार्यवाही की। जिसके बाद 12 अगस्त और उसके पूर्व तत्कालीन काँग्रेसाध्यक्ष और प्रधानमन्त्री पं. नेहरू और महात्मा गांधी द्वारा की गई प्रार्थनाओं पर, 25 अक्टोबर के दिन मुस्लिम लीग केन्द्रीय सरकार में शामिल हुई।

महात्मा गाँधी ने वचन दिया था

मैं वचन देता हूँ, "चाहे मेरे शरीर के तुकड़े हो जाएँ, किन्तु मैं पाकिस्तान का निर्माण अथवा भारत का विभाजन कदापि नहीं होने दूँगा।" महात्मा का ये वचन, उनकी अपनी अखबार हरिजन में 22 सितम्बर, 1943 के दिन प्रकाशित हुआ था।"

आर्य समाज का बलिदानी योगदान

1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के बाद एक तरफ हिन्दू जनता विभिन्न दलों की अगवानी में आजादी की लड़ाई लड़ रही थी तो दूसरी तरफ धर्मान्ध मुल्ला-मौलवियों और मुस्लिम लीग जैसे देश-द्रोही संगठन, हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन, स्त्रियों, कन्याओं और युवकों का अपहरण, आतंक, लूट और हत्या के कामों में लगे हुए थे। इस एतिहासिक मुस्लिम नीति की तरफ देश के सबसे बड़े संगठन काँग्रेस ने कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, उल्टे दो बिल्कुल विपरीत धर्म के लोगों को एकता का पाखन्डी पाठ पढ़ाती रही। काँग्रेस, अँग्रेजों की तरह मुस्लिम-हितों को महत्व देती रही, जिसके परिणाम स्वरूप भारत के तुकड़े हुए। इस देश-द्रोही हालत का सामना करने में आर्य समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

1892 -93 में हैदराबाद सिन्ध में मुस्लिमों द्वारा आतंक और लालच आदि के बल पर, सैकड़ों पढ़े-लिखे सिन्धी हिन्दू मुसलमान बनने लगे थे। यह देखकर राजऋषि दयाराम गिदूमल, दीवान नवलराय, दीवान गुलाबसिंघ और दीवान दयाराम जेठमल आदि ने पंजाब के आर्य समाजी शहीद स्वामी श्रद्धानन्द को सहायता हेतु चिट्ठियाँ-तार भेजीं। स्वामीजी ने पन्डित लेखराम आर्य और पन्डित पूर्णानन्द को सिन्ध भेजा। जिनके मार्गदर्शन में सिन्ध में आर्य समाज की स्थापना हुई। इसके पहिले प्रधान बने दीवान गुलाबसिंघ बीजासिंघ और मन्त्री बने दीवान चूहड़मल धर्मदास वासवाणी। जिसके बाद आर्य समाज की जगह-जगह शाखाएँ स्थापित हुईं, जिनकी देखभाल में पाठशालाएँ, पुस्तकालय, अखबार, व्यायाम-शालाएँ, धर्मशालाएँ आदि खोली गईं। कई मुस्लिमों का शुद्धिकरण कर वापस हिन्दू धर्म में लाया गया। कई अपहरण की गई हिन्दू स्त्रियों को उनके परिवारों में पहुँचाया गया। पूजा-पाखन्ड, कर्म-कान्ड, बाल-विवाह, विधवा-उत्पीड़न, अशिक्षा, छूआ-छूत, कायरता आदि कई कुरीतियों के साथ ईश्वर के नाम पर गुरू या व्यक्ति पूजा के विरुद्ध सत्य ज्ञान का प्रचार होने लगा। कई लोग यज्ञ-संस्कृति को अपनाने लगे।

शहीद लेखराम आर्य

पन्डित लेखराम आर्य का जन्म पंजाब में हुआ था। आपकी अगवानी में सिन्ध आर्य सामाज की स्थापना हुई। आपने सिन्ध में कई मुस्लिम बने हिन्दुओं की शुद्ध कर, हिन्दू धर्म में वापस लाया। इस कारण उन की हत्या के कई प्रयास किए गए, अन्त में एक मुस्लिम हत्यारे ने छुरा घोंपकर उनकी हत्या कर दी।

आर्य समाजी शहीद नत्थूराम शर्मा

मुस्लिम कट्टरपन्थियों द्वारा एक अखबार में हिन्दू देवी-देवताओं के विरुद्ध अपमान-जनक शब्दों का प्रयोग किया। इसके विरुद्ध हैदराबाद-सिन्ध में जन्में आर्य समाज के प्रचारक नत्थूराम शर्मा ने 'मुस्लिम इतिहास' नामक एक इश्तहार और पंजाब के प्रसिद्ध ईसाई पादरी मौलवी अमालुद्दीन की पुस्तक के आधार पर प्रश्नों वाली एक छोटी सी पुस्तक छपवाकर, मुस्लिम प्रचारकों से उत्तर मांगा था। इस पर उनके विरुद्ध हैदराबाद कोर्ट में केस चलाया गया, जिसमें उन्हें डेढ़ साल जेल और एक हजार रुपए जुर्माने की सजा सुनाई गई। इस पक्षपातपूर्ण फैसले के विरुद्ध कराची ज्युडिशनल कमिश्नर की कोर्ट में अपील की गई।

20 सितम्बर, 1934 के दिन सिन्ध के इस प्रसिद्ध केस की सुनवाई के समय प्रदेश भर के प्रसिद्ध जजों-वकीलों की उपस्थिति में एक मुस्लिम आतंकी द्वारा पेट में छुरा घोंपकर उनकी हत्या कर दी गई।

आर्य वीर - खेमचन्द शुद्धीवाला

आप सिन्ध में शुद्धिवाला के उपनाम से प्रसिद्ध थे। आपने अपनी जान पर खेलते हुए कई मुस्लिम बन चुके हिन्दुओं का शुद्धिकरण कर, हिन्दू बनाया।

आर्य समाजी श्री कृष्णानन्द

आप निष्ठावान आर्य समाजी प्रचारक थे। मुसलमान बनाए गए हिन्दुओं को वापस हिन्दू धर्म में लाते थे। स्वामी कृष्णानन्द का जन्म 6 मार्च, 1891 के दिन थरपारकर जिले में हुआ था। वे, सिन्ध में आर्य समाज के प्रसिद्ध प्रचारक थे। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था। 1945 के चुनावों में सिन्ध विधानसभा में हिन्दू महासभा के सदस्य चुने गए। विभाजन के बाद हिमाचल प्रदेश में आने के बाद 1952 और 1957 में लगातार दस साल निर्दलीय विधायक के रूप में देश सेवा करते रहे।

आर्य समाजी प्रो. ताराचन्द गाजरा

आप सिन्ध के महान देश-भक्त थे। बहुत बड़े शिक्षाविद् होने के बाद भी अधिक धन-सम्पत्ति जमा नहीं की। महर्षि दयानन्द के आर्य समाजी दर्शन के प्रचार हेतु सिन्ध का रटन (यात्रा) करते हुए, अपनी ओजस्वी वाणी के द्वारा युवाओं में देश-प्रेम व बलिदान के भाव फूँकते थे। कई बार जेल यात्राएँ कीं। सादा जीवन-उच्च विचार के धनी प्रो. गाजरा 19 फरवरी, 1968 के दिन, 82 वर्ष की आयु में स्वर्गवासी हुए।

आर्य समाजी स्वामी श्री अंगदेव शर्मा

आप अफगानिस्तान में रहने वाले लखपती सर्राफ की एक मात्र सन्तान थे। आपने धन-सम्पदा को त्यागकर सन्यासी जीवन अपनाया। आजादी के जन-जागरण हेतु आपने क्वेटा, बलोचिस्तान, सक्खर, शिकारपुर और जेकबाबाद की यात्राएँ कीं। आपने एक लाख दस हजार रुपए चन्दा जमाकर, 'सदालक' के साथ 'नई दुनियाँ' और गोबिन्द पन्जाबी की 'वतन' अखबार की भी नींव डाली। सिन्ध में आई बाढ़ के समय भी सेवाएँ प्रदान कीं। विभाजन बाद भारत में सिन्धी-एकता के लिए रटन (यात्रा) किया।

आर्य समाजी पं.उदयभानू

आप आर्य समाज के प्रचारक और आजीवन ब्रह्मचारी थे। आपने आजादी के लिए जन-जागरण के साथ सारे सिन्ध में रटन(यात्रा) करते हुए आर्य समाज का प्रचार किया।

महाराज तेजभान शर्मा

आपने,सिन्ध में नेताजी सुभाष के फारवर्ड ब्लाक की शाखा स्थापित की। ज्योतिष-विद्या के विद्वान के रूप में कई ज्योतिष-ग्रन्थ लिखे। विभाजन बाद अजमेर आकर, जन-सेवा प्रदान करते रहे।

आर्य समाजी अमरसिंह वर्मा

आप आर्य समाज के प्रचारक थे। जेल-यात्राएँ कीं। हैदराबाद-दक्खन में भी जाकर सत्याग्रह में भाग लिया। विभाजन के बाद भारत आकर, आर्य-समाज के प्रचार में आजीवन लगे रहे।

वीर रस के कवि चेतनदेव वर्मा 'यमराज'

आपने लगभग 1600 वीर रस की कविताएँ-गीत लिखने के साथ 73 पुस्तकें लिखीं। आप युवावस्था से ही ओजस्वी वक्ता थे। आपने कई बार हिन्दू-मुस्लिम शास्त्रार्थ में भाग लिया। 'राजपूत रतन', 'फतह' और हकीम वीरूमल आर्य के साथ 'आर्यप्रेमी' अखबारों के द्वारा हिन्दू धर्म का प्रचार किया।

आर्य समाजी रूपचन्द सिपहमलाणी

आपका जन्म 29 अप्रेल, 1915 के दिन कराची में हुआ। आप आर्य वीर दल के कमान्डर थे। कराची में आप सर्व सिन्ध हिन्दू पंचायत के सचिव चुने गए। 'प्रभात' अखबार के सम्पादन के साथ 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम पर पुस्तक भी लिखी।

वीर शहीद, क्रान्तिकारी और गाँधीवादी

वीर शहीद नेणूराम शर्मा

शहीद नेणूराम शर्मा का जन्म 2 आक्टोबर, 1920 के दिन हैदराबाद-सिन्ध में पं. पीताम्बरदास शर्मा के परिवार में हुआ था। वे अपने तीन भाईयों में सबसे बड़े थे। मुखी हूँदराज की कन्या लीलादेवी के साथ 1940 में उनका विवाह हुआ था। वे बालपन से राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की किशोर एवं बाल शाखा हैदराबाद से जुड़े, 25 वर्षीय युवा सदस्य थे। वे शाखा के नियमित भाग लेने वाले और अपनी धुन के पक्के थे। वे अक्सर अपनी पत्नि लीला देवी और घनिष्ट मित्रों से कहा करते थे, "मैं हेमूँ कालाणी की तरह देश हित में शहीद हो गया, तो यह मेरे लिए गर्व की बात होगी।"

देश में आजादी की लड़ाई जारी थी। उन दिनों मुस्लिम गुन्डों के द्वारा हिन्दुओं पर घातक हमले करने की नीति, पाकिस्तान निर्माण की पूर्व नियोजित योजना का एक अंग थी। इस योजना को सफल बनाने के लिए 24 मई, 1945 के दिन अचानक, हैदराबाद की शाखा पर छुरे और लाठियों से लैस मुस्लिम आतंकियों ने हमला किया। वीर नेणूराम शर्मा ने बाल स्वयं सेवकों की रक्षा के लिए सामना किया। सिर पर लाठी से वार करने के बाद पेट में छुरा घोंपकर उन्हें घायल किया गया। जिसके बाद हस्पताल में उपचार के समय 29 मई, 1945 के दिन शहीद हो गए। हमले में मास्तर भेरूदत्त, मोहनलाल शर्मा, ठाकुरदास टन्डन, गोबिन्द टी. छतलाणी गम्भीर रूप से घायल हुए। धारा 144 के लागू होने के बाद भी शहर में हिन्दुओं ने विशाल जुलूस निकालकर अपनी एकता का परिचय देकर, हमलावरों को सजा देने की माँग की। जिसके कारण मुस्लिम गुन्डों को गिरफ्तार करने के बाद आजीवन जेल की सजा मिली।

पद्मश्री दादा शेवक भोज़वाणी

प्रसिद्ध धारासना नमक डिपो पर चढ़ाई के लिए सिन्ध से दादा शेवक भोज़वाणी व हरीराम माड़ीवाला की अगवानी में 21सत्याग्रहियों का जत्था शामिल हुआ था। 1932-33 में असहयोग आंदोलन के चलते सरकारी नौकरी त्यागकर अंदोलन में कूद पड़े। सर्वेंट्स आफ पीपुल्स सोसायटी और हरिजन सेवक संघ का गठन किया। स्कूली बच्चों में देश-भक्ति और समाज-सेवा के संस्कार डालने का कार्य किया। विभाजन के बाद भारत आकर आजीवन देश-सेवा करने के कारण पद्मश्री सम्मान पाया।

विद्यार्थी-नेता कामरेड हशू केवलरामाणी

श्री हशू केवलरामाणी, सात समन्दर पार-लन्दन में श्री वी. के. कृष्ण मेनन की इंडियन लीग में रहकर भारत की आजादी के लिए कार्य करते थे। 1938 के आसपास सिन्ध वापस लौटे। महान क्रान्तिकारी परचो विद्यार्थी के साथी बनने के साथ और मजदूरों-किसानों के अधिकारों के लिए लड़ने के कारण कामरेड के उपनाम से प्रसिद्ध हुए। विद्यार्थी नेता के रूप में विद्यार्थी परिषद का गठन किया और संतोषकुमार, रूपो पारदासाणी, प्रीतो टहलरामाणी तथा मोती मोटवाणी जैसे विद्यार्थी नेता तैयार किए। उन्हें 1940 में गिरफ्तार कर 1.5 साल की सजा देकर, कराची से सक्खर जेल में लाया गया। उनकी गिरफ्तारी के विरोध में सक्खर के विद्यार्थियों ने सभी स्कूल-कॉलेजों में हड़ताल करवाकर एक एतिहासिक जुलूस निकाला। आपने विभाजन पश्चात दिल्ली में आकर सिन्धी भाषा को भारतीय संविधान में मान्यता दिलाने वाले आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई।

सन्त तुलसीदास

आप टन्डो मोहम्मदखान के सच्चे सन्त के रूप में प्रसिद्ध, खादी-वस्त्र धारण करने वाले, अपने शिष्यों को भी खादी के कपड़े पहिनने के लिए प्रेरित करते थे। स्वदेशी प्रचार, दहेज व विदेशी फैशन के विरोध के साथ समाज सुधार पर पुस्तकें लिखीं, कई बार जेल यात्राएँ कीं। उनके स्वर्ग-सिधारने के पश्चात उनकेजयन्ती पर्व पर, प्रो. हासानन्द 'जादूगर' व परसराम 'जिया' जैसे विद्वान शायर भी शामिल होते थे।

स्वर्गीय उत्तमसिंह जीवतराम

आपका जन्म 22 जून, 1908 के दिन हुआ। आप 'रोजानी' अखबार के सम्पादक थे। 1932 से 1942 तक काँग्रेसी कार्यकर्ता के रूप में हर आंदोलन में भाग लेने के कारण कई बार जेल गए। जेल की खबर सुनकर, उनके पिताश्री को असमय स्वर्ग पधारना पड़ा।

महाराज नैनाराम शर्मा

आपका जन्म 29 मई, 1890 के दिन हैदराबाद में तथा स्वर्गवास 21 सितम्बर, 1933 के दिन कराची में हुआ था। आपके परिवार के सभी सदस्य स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेते थे। आपने काशी में विद्या-अर्जन करते समय 1905 में हुए बंग-भंग आंदोलन में भाग लिया था। सिन्ध आकर 'हिन्दू' अखबार की नींव डाली। कामागाटामारू जहाज केस के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा गुरूदत्तसिंह तथा प्रसिद्ध क्रान्तिकारी हंसराज वायरलेस को अपने घर में छिपाकर रखा। महाराज लोकूराम और विष्णू शर्मा आपके सुपुत्र थे।

महाराज विष्णू शर्मा

आप महाराज नैनाराम के सुपुत्र और महाराज लोकूराम शर्मा के भाई थे। आपने हैदराबाद में स्वामी गोविन्दानन्द, आचार्य कृपलाणी की प्रेरणा से डा. चोइथराम गिदवाणी के साथ मिलकर प्रसिद्ध 'ब्रह्मचर्य आश्रम' की स्थापना की। यह आश्रम स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का आश्रय-स्थल था। आप हिन्दू महासभा की तरफ से सिन्ध असेम्बली के मेम्बर भी चुने गए थे।

भाई मूचन्द आजवारो

आप स्वतन्त्रता सेनानियों को गुप्त रूप से आर्थिक सहायता पहुँचाते थे। कहा जाता था कि दान करना तो कोई इनसे सीखे। कोई भी जरूरतमन्द इनके दरवाजे से खाली हाथ नहीं लौटता था।

युवा कवी निर्मल जीवताणी

निर्मल जीवताणी ने विद्यार्थी जीवन में कई आंदोलनों में प्रभात-फेरियों में भाग लेते हुए बीमार हुए। इस बीमारी के कारण देश-भक्ति गीत गाते हुए मातृ-वेदी पर बलिदान हो गए। खुद भी एक अच्छे कवी थे।

क्रान्तिकारी जगदीश गोप आडवाणी

आपने विभिन्न आंदोलनों में भाग लेकर, पुलिस को खूब छकाया। कई बार जेल यात्राएँ कीं।

बहुरूपिए क्रान्तिकारी प्रो. झमटमल लखसिंह

आपने 'हिन्दू' अखबार का सम्पादन किया। 'आजादी की शमां के परवाने' के रूप में प्रसिद्ध थे। हैदराबाद में अपने फुलेली स्थित फार्म हाऊस में क्रान्तिकारियों को छिपाकर रखते थे। धनवान परिवारों के युवाओं को देश-प्रेम के लिए प्रेरित किया। क्रान्तिकारियों को पेट्रोल-बारूद आदि पहुँचाते थे। बढ़ई, पेंटर, रंगरेज आदि का भेस बदलकर, मिलिट्री-कैम्पों को उड़ाने जैसे भयानक कार्य किए। भारत आकर 'हिन्दुस्तान' नामक अखबार प्रकाशित-सम्पादित की।

बापू किशिनचन्द मेलवाणी

आप जोशीले नेता थे। खादी प्रचार और हरिजन उद्धार के साथ कॉलेजी विद्यार्थियों में देश-भक्ति का भाव जगाते थे। क्रान्तिकारियों को अपने निवास पर शरण देते थे। विदेशी में सिन्ध-वर्की-व्यापार करने वालों के साथ गहिरे सम्पर्क होने के कारण उन्हें दानशीलता के लिए प्रेरित किया। विभाजन पश्चात यू.पी.-बिहारी मुस्लिमों ने सिन्ध आकर, उनके फार्म हाऊस और डेयरी पर जबरन कब्जा किया था।

श्री हरिसुंदर रूपचन्द

आप का जन्म भगत रूपचन्द के परिवार में हुआ। हैदराबाद म्युंसिपल के मेम्बर चुने गए। विभाजन के बाद कुछ समय सिन्ध में रहने के बाद अजमेर में आकर भाऊ प्रभदास ब्रह्मचारी और दादा दीपचन्द तिलोकचन्द जैसे प्रसिद्ध स्वतन्त्रता-सेनानी और समाज-सेवकों के साथी बने। उनके परिवार के द्वारा स्थापित हरिसुंदर बालिका विद्यालय में उनकी सुपुत्री डॉ. तारा और सुपुत्र श्री ईश्वर ठाराणी सेवा-कार्यो में रत्त हैं।

डॉ. चिमनदास ईसरदास जगत्याणी

सिन्ध में जगत्याणी परिवार रोशन मीनार के नाम से प्रसिद्ध था। उनके सभी भाई स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानी थे। आपने कई बार जेल यात्राएँ कीं। एक बहुत बड़ी टी.बी. हस्पताल का निर्माण करवाया। श्री भेरूमल जगत्याणी ने पूना में आकर, 'स्वतन्त्रता' नामक अखबार का सम्पादन किया।

श्री ईसरदास प्रेमचन्द कपूर

आप जेकबाबाद के निवासी थे। आपने कुल नौ बार जेल -यात्रा की। आप, खादी प्रचारक के साथ हरिजन-हितों के लिए लड़ने वाले नेता थे। बाढ़ और मलेरिया जैसी आपदाओं में सेवाएँ प्रदान कीं।

श्री दौलतराम एस. मंगताणी

आप, दादू जिले के निवासी थे, आप पर जिले से बाहर निकलने पर प्रतिबन्ध लगाया गया था, प्रतिबन्ध तोड़ने के कारण दो साल की जेल काटी। क्वेटा और बलोचिस्तान में खान अब्दुल समद के साथ मिलकर हर आंदोलन में भाग लिया। विभाजन बाद उल्हासनगर आकर, गृह उद्योग एशोसिएशन के अध्यक्ष बने। आप कोटिड़ी निवासी थे। हैदराबाद व सक्खर जेल -यात्रा की। आपने हाँगकाँग जाकर, सिन्ध-वर्कियों के बीच आजादी की लहर जगाई और अँग्रेज सरकार द्वारा वहीं गिरफ्तार किए गए। विभाजन बाद, पिम्परी-पूना आकर, समाज हित में आजीवन सेवाएँ प्रदान कीं।

गरीब-किसानों के विद्वान सेवक जे॒ठमल परसराम

प्रसिद्ध देश-भक्त और विद्वान पत्रकार जे॒ठमल परसराम गुलराजाणी का जन्म में हैदराबाद में हुआ था। सूरदास, गुरूनानक, शाह, सचल, सामी, दलपत, बेकस और शेक्सपीयर की वाणी मुखाग्र याद थी, इसलिए उनके भाषण बहुत ही प्रभावशाली होते थे। 1915 में हुए 'डारजाइनी' आंदोलन में भी सक्रिय रहे। वे हारी-गरीब किसानों के अधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले अगुवा थे। स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख सेनानियों में से एक होने के कारण नासिक जेल भेजे गए। सिंगापुर में आपका भव्य स्वागत किया गया था। साहित्यिक क्षेत्र में आपकी सेवाएँ सराहनीय थीं। विभाजन पश्चात सिन्ध में रहने के बाद बम्बई में 6 जुलाई,1948 के दिन स्वर्ग सिधार गए।

सिन्ध असेम्बली मेम्बर श्री सीरुमल विशनदास ईसराणी

श्री सीरुमल विशनदास ईसराणी, लाड़काणा सिन्ध के बहुत ही योग्य और प्रसिद्ध वकील थे। न्यायालय और सार्वजनिक जीवन के क्षेत्रों में उनका बहुत सम्मान था। उनकी बैठकें बड़े-बड़े सेठों और समाजसेवियों के साथ होती थी। उनके घर पर आने वाले असहाय और गरीब लोगों को वे यथा शक्ति सहायता प्रदान करते थे। 1946 में सिन्ध में काँग्रेस की तरफ से विधायक चुने गए, कानून के विद्वान जानकार होने के कारण विधानसभा के वे उपाध्यक्ष भी चुने गए थे। प्रत्येक आंदोलन में जेल यात्रा की। विभाजन बाद जयपुर आकर, निर्वासित सिन्धी बन्धुओं को बसाने में सहायता प्रदान की।

साधू रीझूमल लाहौरी

आप लाड़काणा म्युन्सिपल के प्रेसीडेन्ट चुने गए। वकालत पास करने के बाद आपने हरिजनों और गरीबों की सेवा की। 1929 में फैले कालरा के समय, सेवाएँ प्रदान करते हुए कालरा से पीड़ित होने के कारण स्वर्ग पधारे। आपकी सेवाओं का सम्मान करते हुए लाड़काणा स्टेशन चौक में आपकी मूर्ति स्थापित की गई।

युवाओं के मार्गदर्शक विधायक श्री चोइथराम वलेचा

विद्यार्थियों और युवकों का दल श्री पहिलाजराय राजपाल के मार्गदर्शन में कार्य करता था। श्री राजपाल अज्ञातवास में रहकर, युवाओं के लिए अनेक योजनाएँ बनाते थे। उनको प्रेरणा देने वाले थे श्री चोइथराम वलेचा, जो खुद भी अज्ञातवास में रहते हुए कार्य करते थे। 1938 में सिन्ध के सक्खर में हुए **मंजिल गाह मस्जिद** मामले में हुए भयंकर साम्प्रदायिक खूनी-दंगों को रोकने और हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए चोइथराम वलेचा के साथ मिलकर परचो विद्यार्थी और नारायण वाधवाणी ने कड़ी मेहनत की थी। इसके लिए विधायक श्री वलेचा की अध्यक्षता में दोनों समुदायों के प्रमुखों की बैठक करवाकर गले मिलवाया गया और शपथ दिलवाई कि वे भविष्य में ऐसे साम्प्रदायिक दंगे कभी नं होने देंगे।

महाराज कृपालदास पिरींराम शर्मा

आप कोटिड़ी निवासी थे। आपने पाँच बार जेल-यात्रा की। विभाजन बाद अजमेर में सेवा करते रहे।

पत्रकार श्री गोस्वामी शेवापुरी

आप आजादी आंदोलन में कई बार जेल गए। जयपुर आकर, 'होजमालो' अखबार निकाली। निर्वासित सिन्धी बन्धुओं को बसाने में सहायता प्रदान की।

प्रसिद्ध दानवीर नानक मोटवाणी - चिकागो रेडियो वाले

आप चिकागो रेडियो कम्पनी के मालिक थे। सिन्ध में हुए काँग्रेस के हर सम्मेलन में आप बहुत बड़ी आर्थिक सहायता देते थे। महात्मा गाँधी, पं. नेहरू, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद, सरदार वल्लभभाई पटेल सहित डॉ. राधाकृष्णन तथा मोरारजी देसाई के साथ आपके व्यक्तिगत सम्बन्ध थे। विभाजन के बाद निर्वासित बन्धुओं को भारत में बसाने में भी आपने भरपूर सहायता प्रदान की।

हिन्दू-मुस्लिम एकता की प्रतिमूर्ति शहीद अलहबख्श सूमरो

सिन्ध के मुख्यमन्त्री श्री अलहबख्श सूमरो कन्धे पर खादी के थान लेकर बेचने वाली टोलियों में शामिल होते थे। 1937 के चुनावों में वे सिन्ध के मुख्यमन्त्री बने। वे, हिन्दू-मुस्लिम एकता के सबसे बड़े समर्थक थे। इस कारण कट्टरपन्थी मुहम्मद अयूब खुहड़ो के आतंकवादी गुन्डों के द्वारा 14 मई,1943 के दिन उन्हें गोली मारकर शहीद किया गया।

प्रसिद्ध इतिहासकार श्री द्वारकाप्रसाद शर्मा

आजादी आंदोलन में भाग लेने के कारण आप को महाराष्ट्र के यरवदा जेल भेजा गया। जहाँ आपका सम्पर्क वीर सावरकर से हुआ। आपकी इंकलाब जिंदाबाद पुस्तक प्रतिबन्धित कर जब्त की गई। भगवद्-गीता सहित कई ग्रंथों का सिन्धी में अनुवाद किया। साहित्य एवं इतिहास से सिन्धी साहित्य को खूब मालामाल किया। आप हिन्दू महासभा के नेता थे।

क्रान्तिकारी लेखक जेठानन्द भावनदास लालवाणी

आपके द्वारा रचित क्रान्तिकारी साहित्य अँग्रेज सरकार द्वारा जब्त किया गया था। आपकी धर्मपत्नी सुशीला देवी भी आजादी आंदोलनों में भाग लेती थीं। भारत के बम्बई में आकर 'राज फिल्मस्तान' मासिक और 'भारत जीवन' साप्ताहिक समाचार पत्र आरम्भ किए।

अपनी मिट्टी के लिए गोली खाने को तैयार थे - सोभो ज्ञानचन्दाणी



सिन्ध में आज भी 'कामरेड' के उपनाम से प्रसिद्ध हैं मजदूरों और किसानों के नेता : सोभो ज्ञानचन्दाणी। विद्यार्थी जीवन से ही अँग्रेजी राज के विरुद्ध कई क्रान्ति कारी गतिविधियों में भाग लेने के कारण वे, पाकिस्तान-सिन्ध में कैद थे। विभाजन के बाद भारत और पाकिस्तान के बीच एक समझौते के अनुसार इस क्रान्तिवीर को भी जबरन हिंदुस्तान भेजा जा रहा था। तब वे बोल पडे थे -

"मैं इस धरती का पुत्र हूँ, निश्चत ही इस समय पाकिस्तानी हूँ, पर उससे पहिले मैं सिन्धी हूँ। इसलिए इस पर दूसरों से अधिक मेरा हक है। मैं दौड़कर जा रहा हूँ, अपनी मिट्टी की तरफ! भले मुझे गोली मार दो।" और सचमुच वे, दौड़ते हुए वापस सिंध की तरफ चले गए! हिन्दुस्तान के तुकड़े के रूप में विभाजित हुए पाकिस्तान के जिले लाड़काणा में आज ये अनोखे देश भक्त, जात-पांत एवं धर्म-भेद किए बिना छोटे किसानों, मजदूरों और गरीबों के हकों की लड़ाई को जारी रखे हुए हैं। इसलिए वे, सारे पाकिस्तान में 'कामरेड' व 'गरीबों के मसीहा' के उपनाम से प्रसिद्ध हैं।

मुअन जो दड़ो से भी अधिक महान हकीकत है सोभो ज्ञानचन्दाणी - शेख़ अयाज़

'जीए सिन्ध' आंदोलन के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी नेता और साहित्यकार शेख अयाज़ ने उनके बारे में अपनी एक पुस्तक में लिखा है, "सोभो ज्ञानचन्दाणी, जैसा स्वतन्त्र-स्वभाव और गहिरी सच्चाई मैंने किसी दूसरे माई के लाल में बिरले देखी है।

जैसे एक पहाड़ है, जो हर आँधी, हर तूफान के सामने अडोल खडा है। न जाने कितने ऐसे इन्सान हैं, जो अपनी छाती के घाव छिपाए सिर ऊँचा रखकर, जुल्म का मुकाबला करते हैं।

ब्रुट्रेन्ड रसेल और सारित्रे जैसी हस्तियों के साथ काम कर चुके पाकिस्तान के एक सियासतदान से लाड़काणा जाते समय एक व्यक्ति ने पूछा, "क्या आप **मुअन जो दड़ो** देखने जा रहे हैं ?"

उन्होंने जवाब दिया, "मैं मुअन जो दड़ो से भी अधिक महान सच्चाई - **सोभो ज्ञानचन्दाणी** को देखने जा रहा हूँ।"

सचमुच सोभो **मुअन जो दड़ो** है, चारों तरफ सीलन और नमकीन पर्त देखकर उदास है। सोभो हमारा **लाल कलन्दर** है, जिसकी जूती में अभी तक किसी ने पाँव नहीं डाला है।

वक्त पलटी खाएगा और इसकी याद में मेले लगेंगे, इसमें मुझे जरा भी शक नहीं है।"

पत्रकार दीवान टिल्लूमल अबीचन्दाणी

आपने टन्डे आदम में सीता प्रिंटिंग प्रेस स्थापित कर, 'फकड़फाड़' नामक अखबार निकाली।

पत्रकार श्री शेवानन्द शेवकराम

आपने मात्र 20 साल की उम्र में जेल-यात्रा की। 'शक्ति' नामक अखबार निकाली। अजमेर आकर 'हिन्दवासी' अखबार चलाने में सहयोग किया।

पत्रकार किशिन खानचन्द गुरनाणी

आपका जन्म 25 मार्च,1924 के दिन नवाबशाह में हुआ। युवावस्था से ही आजादी आंदोलन में कूद पड़े। 'आजादी' नामक अखबार के द्वारा जन-जागरण करते रहे। मात्र 23 साल की छोटी सी उम्र में म्युन्सिपल अध्यक्ष चुने गए। अजमेर आकर निर्विरोध म्युन्सिपल मेम्बर बनने के बाद उपाध्यक्ष और चेयरमेन पद पर भी रहकर समाज-सेवा प्रदान की। एक वार्ड को 'गुरनाणी वार्ड' नाम देकर उनका सम्मान किया गया।

क्रान्तिकारी साहित्यकार श्री दयो नाथाणी

आप विद्यार्थी जीवन से महान क्रान्तिदूत परचो विद्यार्थी के साथी थे। नागपुर-महाराष्ट्र में आकर, आपने सिन्धी साहित्य जगत में अच्छी ख्याति प्राप्त की।

क्रान्तिकारी साहित्यकार श्री कीरत बाबाणी

आप विद्यार्थी जीवन से महान क्रान्तिदूत परचो विद्यार्थी के साथी थे। महाराष्ट्र के बम्बई में आए। आप सिन्धी साहित्य जगत की प्रसिद्ध हस्ती हैं। 'सिन्धू धारा' और 'सुजाग सिन्धी' नामक पत्रिकाओं का सम्पादन-प्रकाशन किया। अखिल भारत सिन्धी बोली ऐं साहित्य सभा के आप अध्यक्ष बने।

विद्यार्थी नेता श्री ऐंशी विद्यार्थी

आप सक्खर में 'जोशीलो-ज्वान' के नाम से प्रसिद्ध थे। महान क्रान्तिदूत परचो विद्यार्थी के साथी थे। तीन साल की जेल काटी। विभाजन के बाद कासिम रिजवी की अदला-बदली में भारत भेजे गए।

श्री धर्मचन्द जीअन्दाणी

आप सक्खर सिन्ध में रहते हुए हर आंदोलन में जेल गए। आपने विभाजन के बाद डॉ. चोइथराम गिदवाणी के साथ रहकर, निर्वासित बन्धुओं के पुनर्वास हेतु अमूल्य सहयोग प्रदान किया।

महान देश-भक्त आर्यसमाजी दीपचन्द तिलोकचन्द बेलाणी

आपका जन्म नौंशहरो,जिला नवाबशाह में 17 अप्रेल, 1907 के दिन हुआ था। आप भाऊ प्रभदास ब्रह्मचारी के अभिन्न मित्र थे, जिनके साथ कन्या पाठशाला की स्थापना की। आजादी हलचल में गुप्त रूप से कार्य करते थे। आपकी धर्मपत्नी मोहिनी देवी ने आजादी के लिए बारह बार जेल जाकर अनोखा इतिहास रचा था। विभाजन के बाद अजमेर आकर नारी-शिक्षा, समाज-सुधार और जरूरतमन्द असहायों की तन-मन-धन से आजीवन सेवा करते रहे। आपने सिन्धी भाषा-साहित्य की पुस्तकें भी लिखीं। 'फुलवाड़ी' नामक बाल-पत्रिका का आजीवन प्रकाशन-सम्पादन किया। 56 वर्ष पुरानी इस प्रसिद्ध बाल-पत्रिका का प्रकाशन आज भी उनके सुपुत्र श्री रमेशचन्द्र बेलाणी कर रहे हैं। आपकी मृत्यु के अवसर पर राष्ट्रपती ज्ञानी जैलसिंह ने पधारकर श्रद्धांजलि अर्पित की थी।

महाराज गोवर्धन शर्मा

आपको 20 की आयु में वीरूमल बेगराज व सेठ चेट्रूमल के साथ सबसे पहिले स्वदेशी का प्रचार और विदेशी का बहिष्कार करने के कारण,1907 में तीन साल की जेल और आर्थिक दन्ड की सजा मिली।

राष्ट्र-सेवक -- डॉ. जेठानन्द राष्ट्रवादी

सिंधी समाज को राष्ट्रीय-धारा से जोड़ने वाली बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. जेठानन्द राष्ट्रवादी का जन्म हैदराबाद के प्रसिद्ध लौंग भगत वाली गली में 17 जुलाई, 1921 के दिन हुआ था। आपकी माता, सरकन्ड के जमीनदार सेठ उधवदास की सुपुत्री थी। आपने आयुर्वेद, यूनानी चिकित्सा, होमियोपैथी आदि की शिक्षा प्राप्त की थी। आप राष्ट्रभाषा हिन्दी, संस्कृत रात्रिशाला, संगीत सिखाने के साथ व्यायाम-शालाएँ भी चलाते थे।

'कौमी समाचार' व 'वैदिक तिब्बी' नामक पत्र निकालने के साथ आयुर्वेदिक व यूनानी फार्मेसी चलाकर, लोगों को चिकित्सा प्रदान करते थे। 'वैदिक तिब्बी' के माध्यम से देश-विदेश में प्रसिद्ध प्राप्त की। लाहौर, दिल्ली और कानपुर में सम्पन्न तिब्बी आयुर्वेदिक कान्फ्रेन्स में, आपने चिकित्सा पद्धति पर प्रभावशाली भाषण दिए। विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों पर आपके लेख छपते थे, इस विषय पर पुस्तकें भी लिखीं। आजादी आंदोलन के समय प्रभात फेरियों में प्रो. जेठमल परसराम, साईं किशिनचन्द बेवस, प्रो. हासानन्द जादूगर, दादा हूँदराज दुखायल आदि कवियों के देश-प्रेम जगाने वाले गीतों को सिंध की गलियों में गुँजाने वाले राष्ट्रवादी व्यक्तित्व के, आप धनी थे। आर्य समाजी चेतनदेव आर्य, मास्तर चंचलदास, महाशय वसूराम खत्री, पं. दौलतराम शर्मा, हकीम वीरूमल आर्य-प्रेमी, श्री हीरानन्द आनन्द, पं.उदय-भानू व पं. अंगदेव शर्मा जैसे विद्वानों की आपने मित्रता प्राप्त की। आपको थरपारकर के आर्य समाजी स्वामी कृष्णानन्द का विशेष आर्शीवाद प्राप्त था।

आपने देश-विभाजन के बाद 1953 में हैदराबाद आकर किसानों-मजदूरों सहित सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के लिए आजीवन सेवाएँ अर्पित कीं। सामाजिक एकता और पुनर्वास की समस्याओं को हल करने के लिए भारत भर का रटन किया। आंध्रप्रदेश सहित दक्षिण-भारत और शेष भारत में आए सिन्धी-जनों की एकता के लिए सिन्धी सम्मेलन आयोजित किए। कई सिन्धी कमेटियों का गठन किया। सिन्धी अखबारों-पुस्तकों की प्रदर्शनी के साथ धार्मिक सन्तों और शहीदों की याद में उत्सव आयोजित किए। आकाशवाणी हैदराबाद(रेडियो) से भी आपकी वार्ताएं प्रसारित होती थीं। सिकन्दराबाद के सिन्धी समाज की डायरेक्ट्री तैयार की, जिसके बाद अखिल भारतीय सिन्धी समाज की डायरेक्ट्री भी प्रकाशित की।

सिन्धी स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के जीवन-परिचय भेजकर, पुस्तकें प्रकाशित करने में भरपूर सहयोग प्रदान करते थे। सिन्धी पर्व चेट्रीचन्ड्र(चैत्र-चाँद) को देश भर में मनाने के लिए जन-जागरण करते थे। आपने सिन्धी भाषा को भारतीय संविधान में 10 अप्रेल, 1967 के दिन मिली मान्यता दिलाने के लिए अग्रणी भूमिका निभाई।

इंकलाबी तोतासिंघ भारती

इंकलाबी तोतासिंघ भारती एक इंकलाबी पार्टी से जुड़े हुए थे। कई छात्र युवक-युवतियों वाली इस पार्टी का सम्बन्ध वीर भगतसिंघ की इंकलाबी पार्टी के साथ-साथ श्री परचो विद्यार्थी के भारत सेवक समाज के साथ भी था। श्री तोतासिंघ भारती, सिन्ध में आने के पहिले उत्तरप्रदेश के सीतापुर में मजदूरों और किसानों के हितों की लड़ाई लड़ने के कारण कामरेड के रूप में नाम कमा चुके थे।

आर्य समाजी चंचलदास रामचन्दाणी

आपका जन्म 18 फरवरी, 1909 के दिन नवाबशाह जिले के नओंशहरो फेरोज में हुआ था। आर्य समाज के आजीवन प्रचारक थे। शिक्षक के रूप में शिक्षा प्रदान करते थे। वीर सावरकर के जीवन-चरित्र पर पुस्तक के साथ कई पुस्तकें लिखी। अजमेर आकर आर्य समाज से जुड़कर सेवाएँ प्रदान करते रहे।

आर्य समाजी श्री रामचन्द बच्चाणी

आपका जन्म टन्डो अहलयार में 26 मई, 1904 के दिन हुआ। पक्के आर्यसमाजी थे। म्युन्सिपल के प्रेसीडेंट चुने गए। साप्ताहिक 'सत्य समाचार' का सम्पादन किया। अजमेर आकर 'हिन्दू' के सम्पादक बने। 11 जनवरी, 1965 के दिन स्वर्ग सिधारे।

आर्य समाजी रोचीराम लधाराम

जन्म 26 जनवरी, 1908। आर्य समाज के मन्त्री थे, आप दक्खन-हैदराबाद आंदोलन में भी गए थे।

श्री परचाराम आर्य

आपने कई मुस्लिम बन चुके हिन्दू-सिन्धियों को वापस हिन्दू बनाया। इस कारण इन्हें जान से मारने की धमकी दी गई थी। आप पर कुरान शरीफ का अपमान करने का केस चलाया गया, जो झूठा सिद्ध हुआ।

श्री गोबिन्द पन्जाबी

'नई दुनियाँ' मासिक के सम्पादक श्री गोबिन्द पन्जाबी, सिन्धी साहित्य जगत के प्रसिद्ध साहित्याकार थे। वे 'रतन' एवं 'रोशनी' समाचार पत्र के प्रकाशक मन्डल के सदस्य भी थे।

मुखी जेठानन्द

आजाद हिन्द सरकार के रेशमी रुमाल प्रकरण में पुलिस ने आपके घर पर छापा डाला था। क्रान्तिकारियों को आर्थिक सहायता करते थे। क्रान्तिकारियों की प्रथम पंक्ति में गिने जाते थे।

पन्डित सीतलदास

आपका जन्म मेहड़, तहसील हाला में हुआ। खादी के वस्त्र पहिनने के साथ प्रचार करते थे। गीता के उपासक थे, अपने मन्दिर में देश-भक्तों के जन्म-दिन के साथ धार्मिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाते थे। अजमेर में उनके सुपुत्र भी गीता-जयन्ती के अवसर पर भव्य मेलों का आयोजन करते हैं।

क्रान्तिकारी साहित्यकार श्री क्रान्ति कृपालाणी

आपका जन्म हैदराबाद में हुआ था। आप युवावस्था से आर्य समाज और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सदस्य के रूप में कार्य करने लगे थे। आपने लगभग डेढ़ दर्जन पुस्तकें लिखीं, इनमें से कुछ अँग्रेज सरकार ने जब्त कर प्रतिबन्धित भी किए थे। पुस्तकों के नाम थे - अरब की खजूर, हिन्दू वीरन् डाहुं, इंकलाब जी आग, शहीद चरित्रावली, हिन्दू स्वतन्त्रता, राष्ट्रीय ज्वाला, क्रान्तिकारी, वीर गर्जना, सिन्धु संग्राम आदि।

करावी में सेठ सुखदेव अँग्रेज सरकार की तरह एक समानान्तर सरकार चलाते थे

आप 1945 के चुनावों में संसद सदस्य बने। सिन्ध विधानसभा-सदस्य शहीद सेठ हरचन्दराय विशनदास भी भारवाणी परिवार के ही सदस्य थे। कराची में 'फॉरेन क्लाथ बायकाट कमेटी' के सेक्रेटरी थे। आपका क्लाथ मार्केट में ऐसा दबदबा था कि कोई भी कपड़ा-व्यापारी, आपके आदेश को टाल नहीं सकता था। इस सम्बन्ध में अँग्रेजी अखबार, 'डेली गजट' ने लिखा था, "कराची में सेठ सुखदेव अँग्रेज सरकार की तरह एक समानान्तर सरकार चला रहा है।" पुलिस ने आपके खिलाफ गम्भीर अपराधों की धाराएँ लगाकर गिरफ्तार भी किया था। जिनके आधार पर आपको 75 साल की जेल हो सकती थी, किन्तु कोई गवाह न मिलने के कारण पुलिस को केस वापस लेना पड़ा।

महाकवी किशिनचन्द 'बेवस'

आप लाड़काणा म्युन्सिपल स्कूल के हेडमास्टर थे। देश-भक्ति और ईश-भक्ति के प्रसिद्ध कवी थे। आपकी कविताएँ पाठ्य-पुस्तकों में पढ़ाई जाती थीं। बच्चों में देश-भक्ति के संस्कार भरने के लिए आपकी एक बाल-कविता के बोल थे," देश की भक्ति, देश की सेवा, स्वर्ग-बाग का मीठा मेवा।"

श्री लालचन्द अमरडि़नोमल जगत्याणी

श्री लालचन्द जगत्याणी, आजादी के उपासकथे। इन्होंने असहयोग आंदोलन के चलते सिन्ध में सबसे पहिले सरकारी शिक्षक की नौकरी से त्यागपत्र दिया और हैदराबाद में 'वन्देमातरम मन्डली' बनाई। साहित्यकार के रूप में भी प्रसिद्ध हुए। ये लालचन्द अमरडि़नोमल वही थे जिन्होंने वीर नाथूराम गोड़से की तरह अपनी अस्थियाँ अखन्ड भारत की सिन्धू नदी में विसर्जित करने की वसीयत की थी।

विद्रोही डॉ. लीलाराम फेरवाणी

आप शिकारपुर निवासी थे। आपने केवल पाँच दिन पूर्व विवाहित पत्नी का मोह छोड़कर, आजादी के लिए विद्रोही भाषण दिया, इस अपराध के कारण आपको दो साल जेल की सजा दी गई।

धन्नाशाह सेठ मंघाराम पमनाणी

आप देश भर में प्रसिद्ध बिस्केट कम्पनी जे.बी.मंघारम के मालिक थे। अपने कारखाने कर्मचारियों को सत्याग्रह करने के लिए न केवल उत्साहित करते थे, बल्कि सत्याग्रह के दिनों में गैर हाजिर रहने पर उनकी पगार भी नहीं काटते थे। आप क्रान्तिकारियों को गुप्त रूप से आर्थिक सहायता प्रदान करते थे।

श्री जीवणलाल जयरामदास एवं माधवदास शिवालोमल खुराना

श्री जीवणलाल जयरामदास, जेकबाबाद गढ़ी खेड़े के निवासी थे। आप दादा दुखायल के साथी थे, अखिल भारतीय हरिजन सभा के जनरल सेक्रेट्री के रूप में रतोदेरो हरिजन आश्रम स्थापित कर, हरिजनों के उद्धार का कार्य करते थे। विभाजन बाद साबरमती आश्रम अहमदाबाद में आकर रहे। श्री माधवदास खुराना, एक बड़े जमीनदार के पुत्र थे,सिन्ध असेम्बली के सबसे कम उम्र के मेम्बर थे, आजादी आंदोलन में तीन साल जेल भोगी। विभाजन बाद अहमदाबाद में निर्वासित बन्धुओं को बसाने में सहायता की।

शहीद अब्दुल समदखान

आप बलोचिस्तान के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी थे। भारत के सीमान्त क्षेत्र बलोचिस्तान में जोशीला जन-जागरण कर आपने, अँग्रेज सरकार की नाक में दम ला दिया था। विभाजन पश्चात आपको दिसम्बर, 1973 में कट्टर-पन्थियों ने गोली मारकर शहीद किया गया।

सेठ श्री चेटूमल

आपको वीरूमल बेगराज व महाराज गोवर्धन शर्मा के साथ सबसे पहिले स्वदेशी का प्रचार और विदेशी का बहिष्कार करने के कारण, 1907 में तीन साल की जेल और आर्थिक दन्ड की सजा मिली।

श्री हीरो जगत्याणी

आप विद्यार्थी नेता थे। मार्शल ला लागू होने के बाद भी भारत छोड़ो आंदोलन में शामिल हुए। बम्बई आकर निर्वासित बंगाली बन्धुओं के पुनर्वास हेतु सेवाएँ प्रदान कीं।

डॉ. मंघाराम कालाणी

आपने सरकारी नौकरी त्यागकर, अपनी निजी हस्पताल के द्वारा चिकित्सा सेवाएँ देनी शुरू की। साथ ही आपने बचपन से ही देश-भक्ति के संस्कार डालने के लिए, 'स्वराज सेना मन्डल' की स्थापना की। इस हस्पताल में प्रति रविवार शाम को युवा क्रान्तिकारियों की बैठकें होती थी। जिसमें महान देश-भक्तों के जीवन-चरित्र के साथ देश की ताजा हलचलों पर चर्चाएँ होती थी। यहीं बैठकर अँग्रेज सरकार के खात्मे की गुप्त योजनाएँ बनती थीं। स्वराज सेना के सदस्य आए दिन प्रभात फेरियाँ निकालकर, वन्देमातरम और भारत माता की जय के नारे लगाने के साथ देश-भक्ति के गीत गुँजाकर जन-जागरण करते थे। डॉ. कालाणी के मार्गदर्शन में उनके भतीजे हेमूँ कालाणी जैसे वीर युवक, देश पर शहीद होने को तत्पर हुए।

महान सन्त स्वामी हरनामदास

सिन्ध के प्रसिद्ध तीर्थ स्थान साध-बेले के महान सन्त स्वामी हरनामदास, धर्म-कर्म के साथ देश-धर्म निभाने में भी सदा सक्रिय रहते थे। आप, कई अज्ञातवासी क्रान्तिकारियों को अपने आश्रम में शरण देने के साथ उनका सेवा-सत्कार भी करते थे।

ये पाँच साल की सजा पाँच घन्टों की तरह बीत जाएगी-वीरूमल बेगराज

आपका जन्म शिकारपुर-सिन्ध में 1874 में हुआ। आपने तुर्की के मामले में मुस्लिमों द्वारा किए गए खिलाफत आंदोलन का गाँधीजी के द्वारा समर्थन किए जाने को 'आफत' कहा था। सिन्ध यात्रा के समय गाँधीजी ने अपने बारे में वीरूमल बेगराज के विचार पूछने पर डॉ.चोइथराम गिदवाणी ने बताया था, "आप (गाँधीजी) पहिले सूत के गोलों से और अब नमक के ढेलों से अँग्रेजों को भगाना चाहते हैं।" वीरूमल के आदर्श नेता लोकमान्य तिलक थे। सिन्ध यात्रा के समय तिलकजी, आपके घर पधारे थे। आपकी अगवानी में लोकमान्य तिलक का शिकारपुर और सक्खर में भव्य स्वागत करने के साथ **एक लाख रुपए की थैली** भेंट की गई थी। 1907 में स्वदेशी खान्ड और तिलकजी के एक लेख की चौपड़ी छपवाने के कारण आपको पाँच साल जेल की सजा दी गई थी। जेल जाते समय आपने कहा था, "ये पाँच साल की सजा पाँच घन्टों की तरह बीत जाएगी।" आपने सिन्ध में 'होम लीग' की स्थापना के साथ सक्खर में 'तिलक हाल' का निर्माण करवाया था।

श्री वीरूमल को लोकमान्य तिलक ने 1919 के जलियाँवाला बाग के शहीदों की मिट्टी, प्रदान की थी। उन्होंने उस पवित्र मिट्टी को अपने माथे पर लगाते हुए, भारत माता को मुक्त कराने की कसम खाई थी। आपने सिन्ध में स्वदेशी वस्तुओं के कई कारखाने खुलवाए। कई आंदोलनों में जेल जाने वाले आजीवन देश-भक्त श्री वीरूमल, 1955 में स्वर्ग सिधार गए।

स्वामी गोविन्दानन्द (जंव्हरमल मनसुखाणी)

श्री जंव्हरमल मनसुखाणी, प्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा गुरूदत्तसिंह के साथी थे। कामागाटामारू जहाज केस में वे और उनके छोटे भाई नारायणदास, अन्य कान्तिकारियों के साथ कलकत्ता में बन्दी बना लिए गए थे। दोनों भाईयों को 5-5 साल का कारावास दिया गया। जंव्हरमल मनसुखाणी ने जेल की सजा काटने के बाद सिन्ध-हैदराबाद में आकर रामकृष्ण आश्रम और ब्रह्मचर्य आश्रम की स्थापना की और स्वामी गोविंदानन्द के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे आचार्य कृपलाणी और प्रसिद्ध जमींदार खेमचन्द बालाणी के पुराने साथी थे। बालाणी के साथ मिलकर, उन्होंने 'आनन्द' और 'शक्ति' नामक दो पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया।

आजाद हिन्द फौज के सेनानी मंघनमल उधाराम बहिराणी

श्री मंघनमल उधाराम बहिराणी, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के प्रमुख सहयोगियों में से एक थे। आजाद हिन्द फौज की वित्तीय समिति के कन्वेनर थे। उनके पिता श्री उधाराम पहिले सिन्धी थे, जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी के रूप में अपना बलिदान दिया।

अँग्रेजों की नींद हराम करने वाले शहीद पीर पगारो

सिन्ध में कहा जाता है कि यदि पीर पगारो को सही मार्गदर्शन मिलता तो उनके 9 लाख मुरीदों(शिष्यों) की फौज, अग्रेजों को भारत से भागने को मजबूर कर देती। इस फौज को सिन्धी-हिन्दू जमींदारों के द्वारा भरपूर आर्थिक सहायता मिलती रहती थी। पीर पगारो ने कई सालों तक अंग्रेजों की नींद हराम कर रखी थी। उनको अँग्रेजों ने किसी तरह कराची जेल में कैद करने के बाद लन्दन ले जाकर फाँसी पर लटका दिया था। मुरीदों के द्वारा विद्रोह किए जाने के भय के कारण इस खबर को बहुत समय तक गुप्त रखा गया था।

काका तिलोकचन्द गोपालदास

काका तिलोकचन्द गोपालदास का जन्म 11मार्च, 1886 के दिन नवाबशाह में और उनका स्वर्गवास 26 जून, 1955 के दिन अजमेर में हुआ। वे अपने गुप्त अड्डों पर, कई वान्टेड (भूमिगत)क्रान्तिकारियों को छिपाकर रखते थे। वे 'हिन्द समाचार' नामक साप्ताहिक पत्र का सम्पादक थे। विभाजन के बाद वे अजमेर आए, जहाँ सिन्धी पंचायत और पुरुषार्थी पंचायत की स्थापना की। हिन्दू अखबार का प्रकाशन भी शुरू किया। पुरुषार्थी पंचायत की टिकट पर म्युंसिपल मेम्बर बनने के बाद अजमेर विधानसभा सीट से राजस्थान विधानसभा के मेम्बर भी चुने गए। आजीवन समाज सेवक के रूप में दुखेक सहायता सभा के द्वारा दीन-दुखियों की सहायता करते रहे। अजमेर में उनकी स्मृति में एक नगर को तिलोक नगर नाम दिया गया। उनके परिवार वाले हर साल, समाज के लोगों के साथ मिलकर उनकी जयन्ती मनाते हैं।

पत्रकार श्री बलदेव गाजरा

आपका जन्म शिकारपुर सिन्ध में हुआ। आपने काँग्रेस कमेटी के कई पदों पर रहकर आजादी आंदोलन में भाग लेते हुए जेल यात्राएँ कीं। आपने विभाजन बाद बम्बई के कांदीवली में आकर, 'भारतवासी' दैनिक अखबार का सम्पादन व प्रकाशन किया। 'आजादीअ जी युद्ध में सिन्ध जो भागु' नामक पुस्तक लिखी।

मास्तर लधाराम

आपने विद्यार्थियों के बीच रहकर देश-भक्ति का प्रचार किया। सभी आंदोलनों में भाग लिया। प्रधानाचार्य के पद पर रहते हुए शिक्षा के क्षेत्र में सेवाएँ प्रदान कीं। विभाजन के बाद बड़ोदा में स्वर्गवास होने के बाद उनकी याद में स्कूल की स्थापना की गई।

सिन्ध के वीरों को शत्-शत् नमन

❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊ ❊

लोग कहते हैं हमें छोड़कर, आप चले गए हैं हमेशा-हमेशा के लिए।
हम कहते हैं हमारे दिल के देवता बनकर, आप बस गए हैं; हमेशा-हमेशा के लिए ॥

स्व.श्री
टेकचँद गोवाणी



स्व.श्रीमती
उत्तमदेवी गोवाणी

की पुण्य स्मृति में समस्त गोवाणी परिवार

मेसर्स कन्हैयालाल टेकचँद

अमरदीप टॉकीज रोड, रायपुर (छ.ग.)

मो. : 98271-71360 फोन : (S) 6543036, (H) 2229908

सीलकिंग बैग्स

SEALKING

पी.पी.एवं एच.एम.बैग्स में

होजियारी, रेडीमेड गारमेंट्स, सी.डी. कैसेट्स शादी व मांगलिक
आमंत्रण कार्डों के ऊपर एवं फैन्सी वस्तुओं की पेकिंग के लिए उपयोगी

अमर एजेंसी एंड
प्लास्टिक इंडस्ट्रीज

----- निर्माता -----

पालीप्रापीलीन बैग्स, एच.एम. बैग्स
सीलकिंग बैग्स, फ्लैक्स एवं रोटो प्रिंटिंग

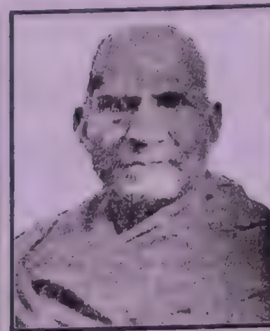
37/ 233, मांगड़ापारा, एम.जी. रोड, रायपुर - 492001

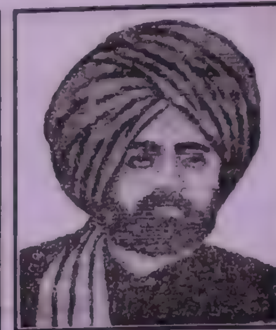
फोन - 2234006, 2538881, 3294433

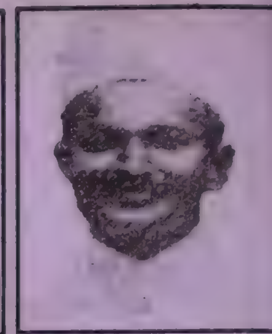
शहीद और स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी


शहीद नथूराम शर्मा


शहीद नारायणदेव आर्य


शहीद स्वामी श्रद्धानन्द


शहीद लेखराम आर्य


शहीद हासाराम पमनाणी


शहीद हरकिशन


शहीद अलहबख्श सूमरो


शहीद हरचन्दराय विशनदास

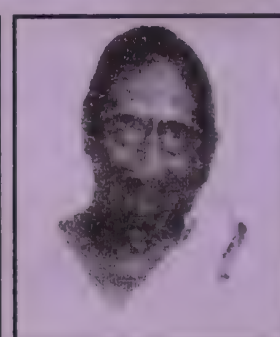

शहीद दत्तात्रेय

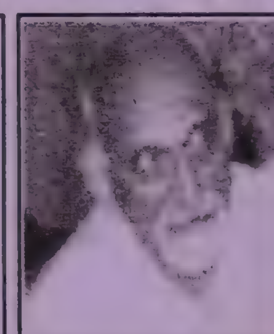

शहीद मेंघराज लुल्ला


खेमचन्द आर्य 'शुद्धिवाला'


क्रान्ति कृपालाणी


लछमी सिधवा


सदोरी अगनाणी


नारायण वाधवाणी


शहीद निर्मल जीवताणी और हैद्राबाद के छात्र


प्रोफेसर उधाराम (बीच में) और सत्याग्रही

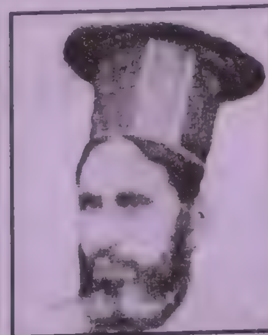

पुलिस की लाठीचार्ज से घायल सत्याग्रही


शिकारपुर में सत्याग्रहियों का स्वागत करते हुए लोग

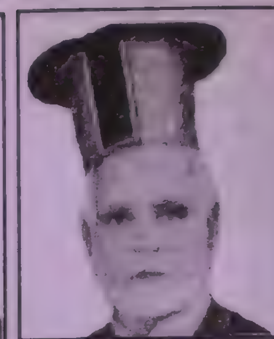
स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी


दयाराम गिदूमल शाहाणी


दयाराम जेठमल


मेठाराम गिदूमल शाहाणी


हरचन्दराइ विशनदास

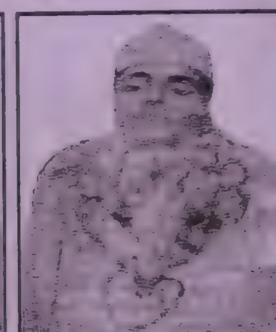

भोजसिंघ पहिलाजानी


तोलाराम बालाणी

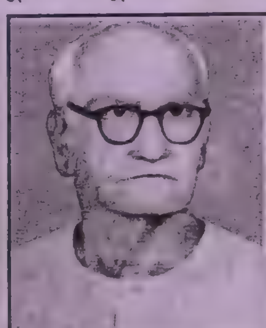

केसूमल तेजूमल बालाणी

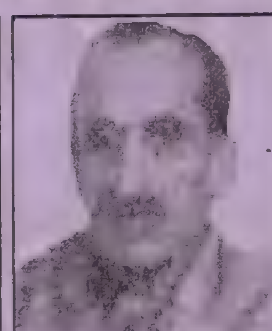

खेमचन्द बालाणी

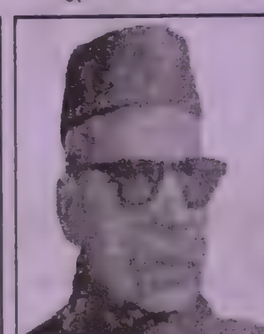

कोटूमल बालाणी


परसराम बालाणी


कौड़ोमल खिलनाणी


लालचन्द अमरडिनोमल

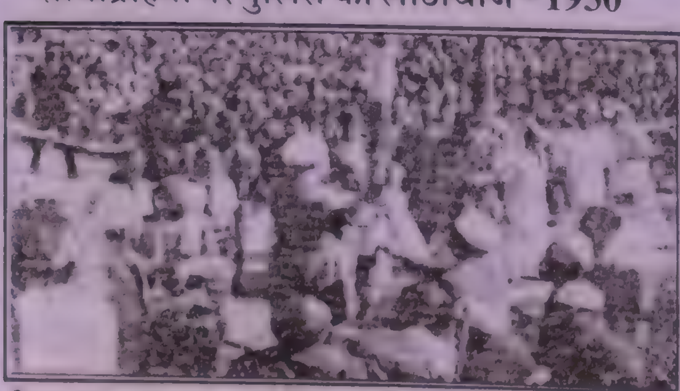

आचार्य कृपलाणी

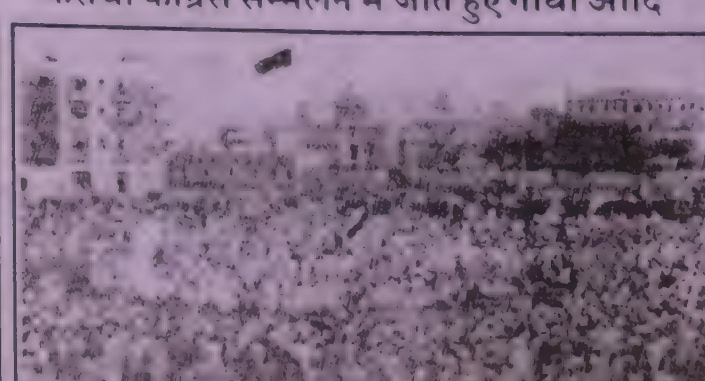

मनोहरदास खिलनाणी


लहरूमल बालाणी


सत्याग्रहियों पर पुलिस का लाठीचार्ज -1930


कराची काँग्रेस सम्मेलन में जाते हुए गाँधी आदि


जिला सखर जनसभा में झन्डारोहण करते पन्डित नेहरू


राम बाग कराची में झन्डा-रोहण --30 मई, 1930

स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी

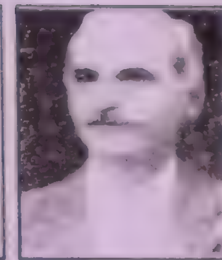

साधू वासवाणी


स्वामी गोविंदानंद


स्वामी कृष्णानंद


लालजी महरोत्रा


जेठमल परसराम


दुर्गादास आडवाणी


रावजी गणात्रा

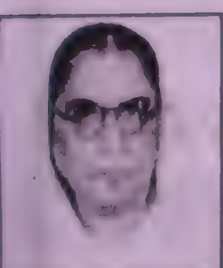

भगवानदास रणछोड़दास


नारयणदास बेचर


मूलजी नरसी


जमशेदजी मेहता


हरीदास लालजी


गंगा गिदवाणी,


पारपती गिदवाणी,


जेठी सिपहमलाणी,


किकी लालवाणी,


कस्तूर बेन,


गंगा शिकारपुरी


सुखदेवउधवदास

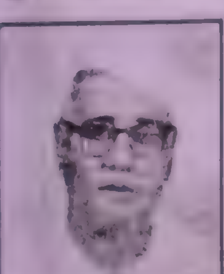

ईसरदास वरंदमल

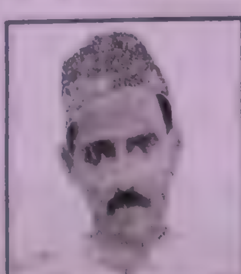

वीरूमल बेगराज


आसनदासखुशालदास


केसूमलझांग्याणी


गोर्धन वजीराणी


विष्णू शर्मा


लोकराम शर्मा

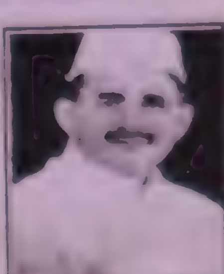

नेवंदराम विशनदास


हरीराम माड़ीवाला


सीरूमल विशनदास

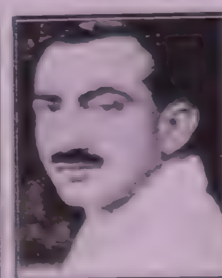

परसराम टहलरामाणी


एन.आर. मल्काणी


आर. के. सिधवा


चोइथराम वलेचा


आसूदोमल गिदवाणी


घन्शाम शिवदासाणी


डॉ. ताराचन्द

सिन्ध के वीरों
को
शत्-शत् नमन

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

जय श्रीकृष्ण

सेवा का जन्म कहाँ से ? सेवा राष्ट्र की हो या समाज की, उसका जन्म कहाँ से होता है ? सबसे पहिले सेवा का अर्थ है-बिना स्वार्थ-बिना लाभ के -- दूसरों का हित या भलाई करने की जो क्रिया है, उसे सेवा कहा जाता है। ध्यान दें इसका मतलब समाज सेवा से भी पहिला कर्तव्य हुआ माता-पिता की सेवा।

गम्भीरता से विचार करें तो यह रहस्योद्‌घाटन होता है कि केवल एक ही वह साधन है जहाँ से समस्त सेवा-भलाई रूपी कर्मयोग का प्रार्दुभाव होता है-"श्री हरि भक्ति सत्संग"। भक्ति रूपी कल्प-वृक्ष पर सेवा रूपी फल-फूल खिलते हैं। एक महान भक्त हुए, उनका नाम था - भरत। उन्हींके नाम से हिन्दुस्तान, भारत देश के नाम से जाना जाता है।

याद रखें हृदय में अगर ईश्वर की श्रृद्धा-भक्ति है तो मनुष्य माता-पिता, समाज और राष्ट्र की सेवा कर सकता है। अन्यथा भक्तिहीन व्यक्ति जो नजर तो आता है सेवा करते हुए, पता करना उनके भीतर जरूर कोई स्वार्थ, लोभ और पाखण्ड-दिखावा या अहंकार की तृप्ति ही लक्ष होगा। ऐसे व्यक्ति का साद्य तो स्वार्थ होता है, साधन होता है समाज एवं राष्ट्र-सेवा।

सार अर्थ यह है कि जन्म दात्री--ईश्वर की श्रृद्धा-भक्ति ही है। जो संसार के स्वामी का न हुआ क्या वह संसार का होगा ?

सत्संग की अमृत-वर्षा से -

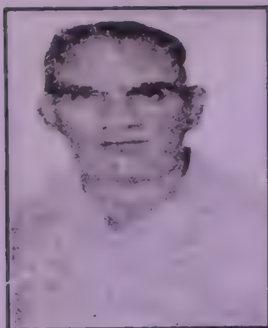
संत बाबा आनंदराम उदासी आश्रम, चकरभाटा(छत्तीसगढ़)

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

East or West Sindhies are best

❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀ ❀

स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी

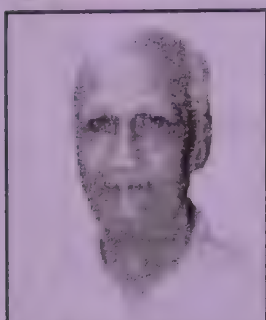

बूलचन्द रामचन्द नारवाणी


किशिन खानचन्द गुरनाणी


ढालूमल किशिनचन्द

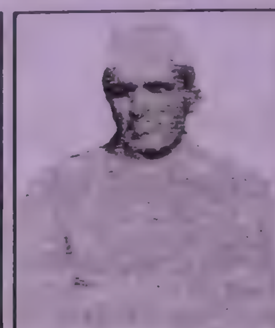

श्री दूलहनोमल


शिवानन्द शेवकराम


जीवतराम जयरामदास


सेठ तेजूमल भावनदास


डॉ.तुलजाराम खिलनाणी


चेलाराम धर्माणी

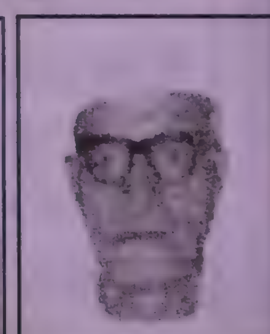

गुलाबराइ सावनाणी


आनन्द हिड़ोराणी


डॉ.उधाराम नारवाणी


श्री ब्रह्मानन्द


भोजराज नाऊंमल

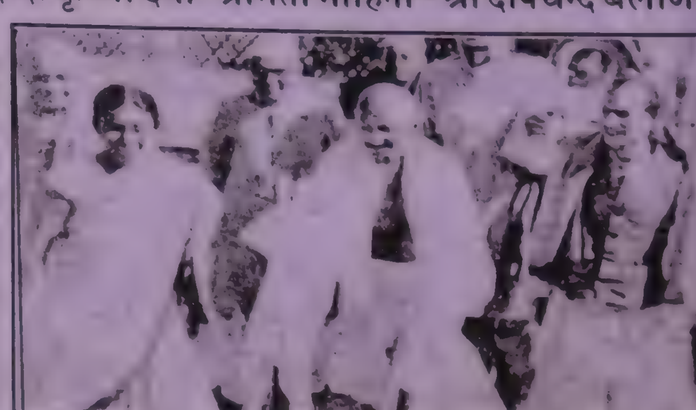

मेल्हाराम मंगतराम वासवाणी


राष्ट्रपती ज्ञानी जैलसिंघ दीपचन्द बेलाणी का सम्मान,


दादी कृष्णा देवी


श्रीमती मोहिनी -श्री दीपचन्द बेलाणी


जयरामदास दौलतराम, मणी बेन, महात्मा गाँधी, खान अब्दुल गफ्फार खान और सरदार पटेल


सुचेता कृपलाणी, सरदार पटेल, महात्मा गाँधी, राजेन्द्र प्रसाद और आचार्य कृपलाणी

स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी



नेताजी सुभाष और चोइथराम गिदवाणी आदि -1939



पं. नेहरू और गीत गाते हुए राष्ट्र-कवि दादा दुखायल



चोइथराम गिदवाणी, रामेश्वरी नेहरू, सुचेता कृपलाणी, भाई प्रताप ।



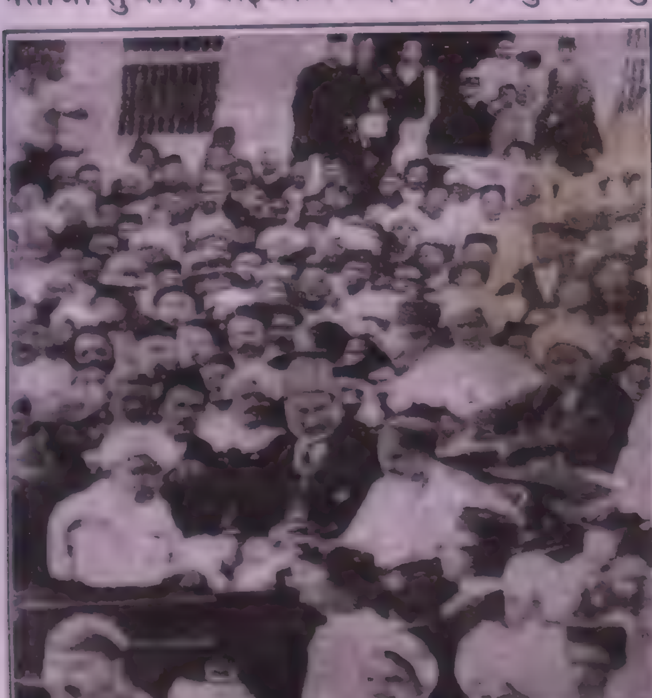
जगदीशजी मेहता, चोइथराम गिदवाणी



नेताजी सुभाष, चोइथराम गिदवाणी, ठाकुरदास गुलोमल-1939



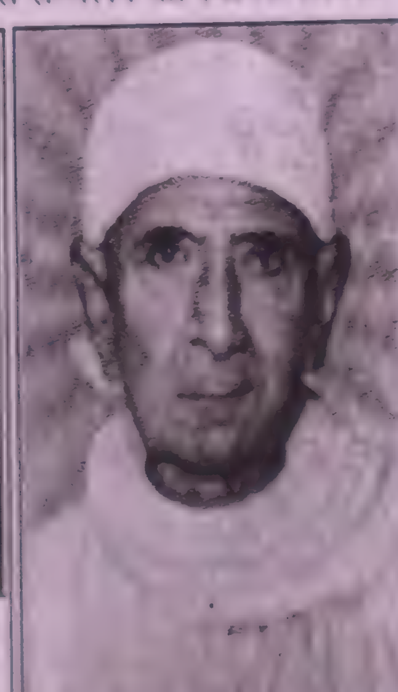
प्रथम काँग्रेस सम्मेलन की स्वागत समिति



कराची में महात्मा गाँधी का शाही स्वागत -1921



शहीद हेमूँ कालाणी की माता जेठी बाई



वेदान्त के प्रकान्ड विद्वान-सन्त लीलाशाह

स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी



जयरामदास दौलतराम, डॉ. चोइथराम गिदवाणी और प्रो. घनशाम शिवदासाणी



चेट्रू मल हरीराम, गोवर्धन शर्मा और वीरूमल बेगराज आर्य सिन्ध में पहिले राजनीतिक केस में जेल की कड़ी सजा प्राप्त



हीरानन्द करमचन्द



ठाकुरदास गुलोमल



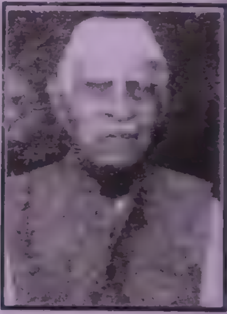
डॉ. गोबिंदराम पंजाबी



सेठ तेजूमल



सच्चानंद थावाणी



रोचीराम थावाणी



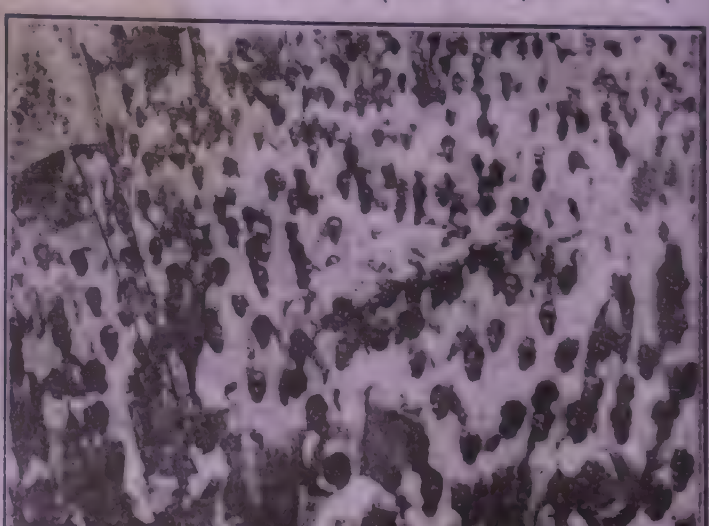
धारासना-कूच के लिए तैयार सत्याग्रहियों की टोली



साधू वासवाणी के साथ चोइथराम गिदवाणी अदि



नमक-सत्याग्रहियों पर लाठी चार्ज करती हुई पुलिस



कराची में महाराष्ट्र के शहीद दत्तात्रेय की शव-यात्रा

आर्य समाजी स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी



हकीम वीरूमल आर्य, चेतनदेव 'यमराज', प्रो. ताराचन्द गाजरा, भागचन्द आर्य, प्रभूप्रकाश आर्य, मननोहन आर्य

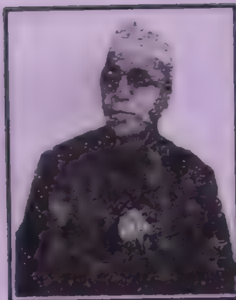


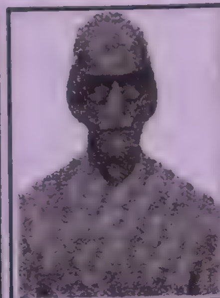
साहिती-नवाबशाह के सत्याग्रही -पहिली कतार में दाएँ -(1) राम मोटवाणी (2) नानकराम भगत (3) भूरोमल रामरख्याणी (4) भीमनदास मनवाणी (5) ताराचन्द थावाणी (6) लछमणदास (7) हरीराम नेंभनदास (8) मोटूमल थावाणी (9) झामनदास मनवाणी (10)टहलराम बलवाणी। दूसरी कतार में (1) नथिरमल थावाणी (2) ताराचन्द वीरवाणी (3) नेंवंदराम विशनदास (4) रेवाचन्द नाथाणी (5) नेंभनदास फतनाणी (6) जयचन्दराय वीरवाणी (7) मयाराम चेलाराम (8) मेठाराम हरूमल खिलनाणी। तीसरी कतार में ((1) ठाकुरदास उबराणी (2) साधूराम निहालाणी (3) खटूमल थावाणी (4) केवलराम थावाणी (5) हरिश्चन्द्र थावाणी।



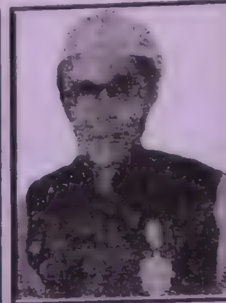
साहिती-नवाबशाह के सत्याग्रही -कुर्सियों पर-(1)भेरूमल ईसरदास (2)गंगा मेठाराम खिलनाणी (5) किकी लालवाणी (7) प्रोफेसर नाराइणदास मल्काणी (9) श्रीमती देवी हासोमल (10) श्रीमती मोहिनी लालचन्द (11) जमना साधूराम (12) श्रीमती मोहिनी दीपचन्द बेलाणी (13) श्री हासोमल

स्वतन्त्रता संग्राम-सेनानी

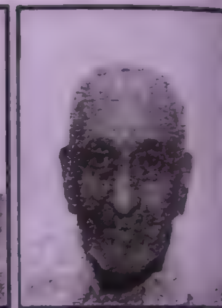

प्रभदास वीरवाणी


नेंभनदास ईसरदास

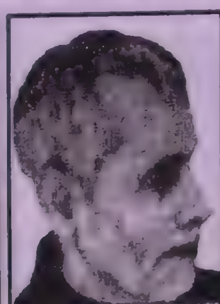

जीवतराम मटाई

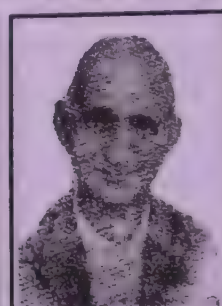

कौड़ोमल अबीचन्दाणी


ईसरदास राइसिंघाणी

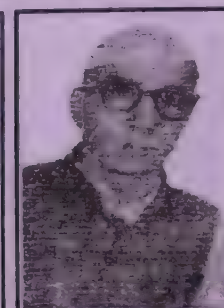

राधाकिशन

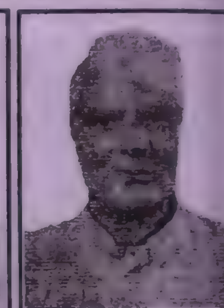

मूलो मोतियाणी


शेख मजीदसिन्धी

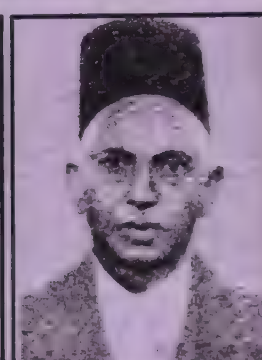

रेवाचन्द नाथाणी

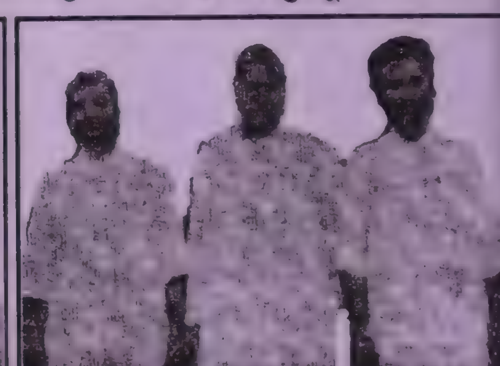

शाम फतनाणी


तिलोक तुल्सयाणी


हकीम पुरसूमल खैराजाणी


दाएँ से -वैद्य डे़ऊराम, मूलचन्द हरीसिंघ, वीरूमल बेगराज, खेमचन्द शुद्धिवाला, वसूराम। खड़े हुए - रोचीराम वासवाणी, वैद्य दीपचन्द, गुमनाम, खूबचन्द आर्य, हरबन्स लाल आर्य


साईं किशिनचन्द 'बेदस'


मयाराम, नेंवन्दराम और नानकराम टेकचन्दाणी

देश के लिए खुद को नीलाम करने आया एक गरीब

सिन्ध में स्वतन्त्रता-आंदोलन के चलते ऐसी देश-भक्ति के दर्शन हुए, जिसे देख-सुनकर जन-मानस रोमांचित और आंदोलित हो उठता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए सिन्ध के प्रत्येक जिले में एक निश्चित धन-राशि जमा की जा रही थी। सक्खर में निश्चित राशि न जमा होने के कारण आर्थिक रूप से कमजोर एक गरीब व्यक्ति सीतलदास ने जनसभा के मन्च पर चढ़कर आव्हान किया, "मैं आवश्यक धन राशि की पूर्ति के लिए खुद को नीलाम करता हूँ। जो मुझे खरीदेगा, मैं उसके यहाँ खरीदे हुए गुलाम की तरह काम करूँगा।"

जन-मानस को आंदोलित कर देने वाले इस आव्हान को सुनकर, कई व्यक्तियों ने धन-राशि देने की घोषणा की, नीलामी के लिए नहीं बल्कि दान के रूप में।

यह दृश्य 1921 का है जब गाँधीजी ने आव्हान किया था, "तिलक-स्वराज फन्ड के रूप में एक करोड़ रुपए का फन्ड जमा करने के साथ काँग्रेस के एक करोड़ सदस्य बनाए जाएँ। यदि देश ने मेरी इस योजना को सफल बनाया तो मात्र 12 महीनों में स्वतन्त्रता मिल जाएगी।"

राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचारक -- भाई प्रताप डीयलदास

राष्ट्रीय एकता के लिए सिन्ध में राष्ट्रभाषा हिन्दी का बहुत प्रचार किया गया। इसके लिए भाई प्रताप नेदिल खोलकर आर्थिक सहायता प्रदान की। नवाबशाह के नौंशहरो में 1919 से ही केन्द्र स्थापित था, इस हेतु राष्ट्रीय कन्या पाठशाला प्रसिद्ध थी, जहाँ पन्डित इन्द्रदेव, प्रभदास ब्रह्मचारी और दीपचन्द बेलाणी हिन्दी का प्रचार-प्रसार करते थे। नवाबशाह, कराची, हैदराबाद, सखर और शिकारपुर केन्द्रों में परीक्षाएँ होती थीं। भारत से बाबा नागार्जुन और बाद में काका कालेलकर भी हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु सिन्ध पधारे थे।

सरदार मोटूसिंह

आप लाड़काणा के निवासी थे। विभाजन के बाद भारत आने वाली स्पेशल ट्रेन पर, मुस्लिम हत्यारों द्वारा किए गए नर-संहार में आप घायल हुए थे। यू.पी. के भरतपुर में आकर निवास किया।

पं. दौलतराम शर्मा

आप मूल रूप से पन्जाब के थे, सिन्ध के थरपारकर जिले में आए। आपने हरिजन सुधार और राष्ट्रभाषा हिन्दी का भरपूर प्रचार-प्रसार किया। हैदराबाद में भी जन-जागरण किया। विभाजन बाद अजमेर आए।

श्री मिर्चूमल - बन्दर सेना वाला

आपने बच्चों में देश-प्रेम जगाने हेतु बन्दर-सेना बनाई। स्वदेशी सहित [illegible]र आंदोलन में भाग लिया।

डॉ. वतणमल गुलाबसिंह गिदवाणी

आप डॉ.चोइथराम गिदवाणी के चचेर भाई थे। मीरपुर खास के निवासी थे, कई बार जेल गए। थरपारकर जिले के हरिजन व किसानों की कई समस्याएँ हल करवाईं। आपके सुपुत्र भी आंदोलन में भाग लेते थे।

नवयुवक मूलो मोतियाणी

नवाबशाह जिले के मिठियाणी गाँव में जन्में मूलो मोतियाणी, सत्याग्रह आंदोलन में कालेज छोड़कर कराची में मन्चों से सरकार विरोधी भाषण देते थे। इस कारण उन्हें 1930 में तीन महीने जेल हुई। इस सुन्दर नवयुवक ने ठारूशाह में हरिश्चन्द्र थावाणी के साथ मिलकर, गर्वनर के बायकाट में बड़े उत्साह से भाग लिया। 1932 में 14 महीने जेल की सजा भोगते समय उन्हें हन्टरों से पीटा गया, जिस कारण सखत बीमार हुए और केवल 25 साल की छोटी सी उमर में स्वर्ग-सिधार गए।

सीमान्त गाँधी - खान अब्दुल गफ्फार खान

आप बलोचिस्तान के 'गाँधी' के उपनाम से प्रसिद्ध थे। आपके आंदोलनों से अँग्रेजों की नींद हराम थी। सिन्ध में भी आपका भव्य स्वागत किया गया था। इस्लामिक देश पाकिस्तान बनने के बाद आपको जेल में डाल दिया गया।

श्री नरसिंह जेठानन्द

आप प्रसिद्ध संग्राम सेनानी जेठानन्द राष्ट्रवादी के सहयोगी थे। क्रान्तिकारी बुलेटिन बाँटकर देश-भक्ति का प्रचार करते थे। कई बार जेल गए। विभाजन बाद सन्यासी जीवन अपनाते हुए हरिद्वार में स्वर्ग पधारे।

स्वर्गीय श्री हरीराम माड़ीवाला

आप प्रसिद्ध देश-भक्त जेठमल परसराम और दुर्गादास आडवाणी के साथी थे। 1919 में लागू रोलट-एक्ट के विरोध कारण आप तीनों को क्रमशः डेढ़ -डेढ़ साल और एक साल की जेल की सजा हुई।

'नवाबशाह गजट' के सम्पादक शिवानन्द शेवकराम

1924-25 में नवाबशाह से प्रभदास ब्रह्मचारी के साथ मिलकर शिवानन्द शेवकराम 'नवाबशाह गजट' के साथ 'शक्ति' का भी सम्पादन करते थे। इसमें जन-समस्याओं, पंगत-सुधार और राष्ट्रीयता का प्रचार किया जाता था। आप दोनों शिक्षा-केन्द्र चलाते थे। लगभग हर आंदोलन में आप दोनों जेल गए।

'हिन्दुस्तान' के सम्पादक मानसिंघ चूहड़मल

आप नवाबशाह की प्रसिद्ध अखबार 'हिन्दुस्तान' का सम्पादन करते थे। आपने जिला कलेक्टर मिस्टर सेजविक के अत्याचारों के विरुद्ध समाचार दिए, जिसपर बम्बई काउन्सिल के साथ इंग्लैन्ड की संसद में भी प्रश्न उठाए गए। इस कारण अँग्रेज कलेक्टर की नवाबशाह से बदली हुई।

'सुन्दर साहित्य' मासिक के सम्पादक मेल्हाराम वास्वाणी

1921-22 में हिन्दू प्रेस हैदराबाद और बाद में कराची से श्री मेल्हाराम वास्वाणी, 'सुन्दर साहित्य' नामक मासिक पत्र निकालते थे। सरकारी कर्मचारी होने के कारण सम्पादक के रूप में उनके बड़े भाई फतहचन्द का नाम नहीं लिखा जाता था। इसमें राष्ट्र-भक्ति की भावनाएँ जगाने के लिए प्रेमचन्द, सुदर्शन आदि लेखकों के लेखों के साथ महाराणा प्रताप और शिवाजी जैसे वीरों का जीवन चरित्र भी दिया जाता था।

काजी अब्दुल रहमान और मौलवी अब्दुल्ला

प्रदेश काँग्रेस कमेटी के प्रेसीडेन्ट नवाबशाह जिले के डभिरे गाँव के निवासी सफेद मस्जिद वाले काजी अब्दुल रहमान और मौलवी खान वाहण के अब्दुल्लाह भी 1921 के खिलाफत आंदोलन में जेल गए।

आजाद हिन्द फौज के सेनानी-बूलचन्द नारवाणी

नेताजी सुभाष की आजाद हिन्द फौज में कई सिन्धी भी शामिल हुए थे। नवाबशाह-साहिती जिले के भिरियन गाँव का 18 साल का एक नौजवान बूलचन्द रामचन्द नारवाणी, अँग्रेजी सेना में भरती हुआ था। जिस समय जर्मनी के हिटलर ने द्वितीय महायुद्ध में अँग्रेजी सेना की नाक में दम ला दिया था तब वह अँग्रेजों की तरफ से लड़ने वाली हिन्दुस्तानी सेना के मलाया के क्वाललम्पुर में मिलिट्री सामान-सप्लाई डिपो में स्टोर कीपर के रूप में कार्य करता था।

अँग्रेजी सेना पर जापानी हवाई जहाजों के हमले के समय रासबिहारी बोस के लिखे पत्र भी फेंके जाते थे, जिनमें हिन्दुस्तान को आजादी दिलाने की बात लिखी रहती थी। इस कारण हिन्दुस्तानी सेना के कई सैनिकों ने अँग्रेजों के विरुद्ध काम करना शुरू किया। बूलचन्द नारवाणी ने एक दिन अवसर पाकर सप्लाई डिपो के पीछे रखे पेट्रोल के ड्रमों को आग लगा दी और चुपचाप आकर अपने तम्बू में सो गया। अँग्रेज लेफ्टीनेन्ट को बुलचन्द पर शक था, इसलिए उसका कोर्ट मार्शल करने के लिए एक पन्जाबी मेजर छिब्बर के हवाले कर दिया। परन्तु मेजर छिब्बर ने उसे भाग निकलने में सहायता प्रदान की। इस बीच उनकी सेना की टुकड़ी को जापानी सेना से हारने के कारण सिंगापुर आना पड़ा। जहाँ भी जापानी सेना का भारी हमला हुआ, इसी समय अवसर देखकर बूलचन्द ने एक कार चुराई और रसोईये करतारसिंघ के साथ भाग निकला। सिंगापुर में भी जापानी सेना की जीत हुई और 41 कुल हिन्दुस्तानी विद्रोहियों के साथ मिलकर, वह आजाद हिन्द फौज में शामिल हुआ। इन विद्रोही सैनिकों में कराची का एक युवक परसो भागनाणी भी शामिल था।

नारियाँ जो बनीं देश-हित में आरियाँ

क्रान्तिकारियों की मददगार मां हरदेवी

आप कराची के कपड़ा-व्यापारी सेठ परसराम पारूमल की सुपुत्री थीं। सिन्ध के प्रसिद्ध क्रान्तिदूत परचो विद्यार्थी की सहायक थीं, उनके जेल में रहते समय गुप्त रूप से धनादि की सहयता प्रदान करती थीं। आपकी दी हुई नकली चाबियों से वे अपने दो साथियों सहित, कराची-जेल से भागने में सफल हुए थे।

दादी कृष्णा देवी हिङोराणी

आप नओंशहरो-नवाबशाह में रहती थीं। 1921 के आंदोलन में नारी-दल का नेतृत्व किया। आपने महिलाओं के लिए गुरमुखी लिपी में 'माता' नामक अखबार का सम्पादन भी किया। राष्ट्रीय नारी पाठशाला की प्रधानाचार्या थीं। परचो विद्यार्थी के नेतृत्व में क्रान्तिकारी गतिविधियों से जुड़े कई युवक दादी के घर में महिमानों के रूप में छिपकर सरकारी कार्यालय और रेल की पटरियाँ उखाड़ने की योजनाएँ बनाते थे। अजमेर आकर, नारी दरबार में सत्संग व आजीवन सेवाएँ प्रदान कीं।

श्रीमती जमना साधूराम

आपने अपने पती के साथ आजादी हलचल में भाग लिया। यू.पी. के बरेली में आकर, म्युन्सिपल मेम्बर बनीं और सिन्धी साहित्य-भाषा का खूब प्रचार किया।

श्रीमती देवी हासोमल

आपने नारियों और युवतियों में देश-भक्ति की लहर जगाई। हरिजन और गरीबों की सेवा की। विभाजन बाद भारत में अपने निर्वासित बन्धुओं के पुनर्वास में खूब सहायता दी।

प्रसिद्ध कवित्री श्रीमती सरस्वती देवी

आप प्रसिद्ध सिन्धी कवित्री थीं। आपके देश-भक्ति गीत युवाओं के द्वारा गली-गली गाए जाते थे।

श्रीमती मोहिनी एवं श्री लालचन्द

आपने अपने पति के साथ आजादी आंदोलन में भाग लिया। घर-घर खादी-प्रचार करते हुए जेल यात्रा की। आप दोनों ने विभाजन पश्चात अजमेर में निर्वासित बन्धुओं के पुनर्वास हेतु खूब सहायता प्रदान की।

श्रीमती सती देवी वासवाणी

आपने आजीवन देश-सेवा, नारी-जागृति और शिक्षा के कार्य किए। आपके पति प्रो. शामदास वासवाणी ने भी आजादी आंदोलनों में भाग लेने के साथ आजीवन समाज-सेवा की।

श्रीमती एवं श्री हीरानन्द मंघनमल चांदवाणी

आप ढोरो नारो के निवासी थे। पती-पत्नी दोनों आजादी आंदोलन में भाग लेते थे। आपका परिवार विभाजन के बाद हिमाचल प्रदेश के पानीपत में आया।

श्रीमती मोहिनी कोना

आप प्रसिद्ध महिला-नेत्री थीं। स्वदेशी सहित कई आंदोलनों में भाग लेते हुए, कई बार जेल गईं।

श्रीमती जमनादेवी गोविन्दराय भाटिया

बाल-संस्कार केन्द्रों में खूब मान और नाम कमाया। महाराष्ट्र में आकर आजीवन सेवाएँ प्रदान कीं।

श्रीमती लीलां देवी एवं श्री मोहनलाल रामचन्दाणी

आप कई बार जेल गईं। आपके साथ आपके पती मोहनलाल भी आंदोलन में भाग लेते थे।

श्रीमती मीरां देवी एवं श्री मथुरादास कटारिया

आपने अपने पती श्री मथुरादास के साथ जेल-यात्रा की। नारी-जागरण करने के साथ जेल में बन्द सत्याग्रहियों के परिवारों को सहायता प्रदान की। श्री मथुरादास ने हर आंदोलन में भाग लिया। विभाजन पश्चात म.प्र. के इन्दौर में आकर 'सिन्धवाणी' नामक समाचार पत्र प्रकाशित किया।

श्रीमती सीता देवी एवं श्री हीरानन्द

आपने अपने पती श्री हीरानन्द के साथ आजादी हलचल में भाग लिया।

श्रीमती परमेश्वरी मीरचन्दाणी

आपने जेकबाबाद में आंदोलन करते समय जेल-यात्रा की। नारियों व युवतियों में जागृति लाई।

श्रीमती लछमीं देवी एवं श्री हरपालदास चैनराय वासवाणी

आपने अपने पती श्री हरपालदास के साथ आजादी हलचल में भाग लेकर, जेल-यात्रा की।

श्रीमती एवं श्री खीयलदास मेहता

आप सक्खर-सिन्ध में उबावड़ो के निवासी थे। अपने पती के साथ जेल की सजा काटी।

भारत छोड़ो आंदोलन में सिन्धी नारियाँ गईं जेल

भारत छोड़ो आंदोलन के चलते नवाबशाह-साहिती के नेताओं ने तय किया कि साहिती की अधिक से अधिक नारियाँ कराची जाकर सत्याग्रह करें। मार्शल-ला लागू रहते आर्टलरी मैदान में नारियों ने कैम्प लगाया, जिसमें पूरे सिन्ध से आई नारियों ने भाग लिया। इनमें प्रमुख थीं-मोहिनी दीपचन्द बेलाणी, गंगा मेठाराम खिलनाणी, नानकराम भगत की माता श्री राधीदेवी, बहिन कृष्णा, जमना साधूराम खिलनाणी, दादन गुरबाणी, वणी मोहनदास आदि। इनमें से कई दो-दो बार जेल गईं।

तिलक स्वराज फँड के लिए धन की थैलियाँ भेंट

लोकमान्य तिलक के प्रभाव स्वरूप सिन्ध में गरम-दल अधिक प्रभावी था। उनकी यात्रा के समय राजा-महाराजाओं जैसा स्वागत-सत्कार करने के साथ वीरूमल बेगराज की अगवानी में उन्हें **एक लाख** रुपए की थैली भेंट की गई। जिसमें केवल सक्खर से 35 हजार रुपए जमा किए गए।

गाँधीजी ने आव्हान किया था, "**तिलक-स्वराज फन्ड** के रूप में **एक करोड़** रुपए का फन्ड जमा करने के साथ काँग्रेस के एक करोड़ सदस्य बनाए जाएँ। यदि देश ने मेरी इस योजना को सफल बनाया तो मात्र 12 महीनों में स्वतन्त्रता मिल जाएगी।" इस फन्ड के लिए कराची-80 हजार, हैदराबाद -80 हजार, सक्खर- 26 हजार, लाड़काणा-12 हजार, शिकारपुर -25 हजार, जेकबाबाद-18 हजार और नवाबशाह(साहिती) से-13 हजार रुपए जमा किए गए।

महात्मा गाँधी की फरवरी, 1929 और सुभाषचन्द्र बोस की सिन्ध-यात्रा के समय भी महिलाओं ने अपने सोने के गहिने और नगद धन प्रदान किया था।

तुकड़े-तुकड़े आजादी - तुकड़े-तुकड़े देश

1946 के चुनावों के ठीक पहिले 1944 में पाकिस्तान बनाने के बारे में कॉंग्रेस छोड़कर मुस्लिम लीग का नेता बनने के बाद मोहम्मद अली जिन्ना ने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कहा था,"जिस दिन और जिस पल हिन्दुस्तान में पहिले व्यक्ति ने इस्लाम को स्वीकार किया, उसी दिन और उसी साल पाकिस्तान का जन्म हुआ।" श्रीमती सरोजिनी नायडू ने जिस जिन्ना को "हिन्दू-मुस्लिम एकता का राजदूत" घोषित किया था, उस जिन्ना की उपरोक्त बात साफ करती है कि इस्लाम के नाम पर हर मुसलमान को देश-द्रोही और हिंसक नीति पर चलना सिखाया जाता है। हिन्दुस्तान में पिछले 13 सौ सालों से इनका यही चरित्र रहा है। और यह चरित्र केवल हिन्दुस्तान में ही नहीं, दुनियाँ भर में जहाँ भी मुसलमान रहे हैं वे एक ही नीति 'दारुल इस्लाम' और 'दारुल हरब' को अपनाते रहे हैं, अर्थात् इस्लामी देश में रहो और यदि नहीं है तो उसे दुश्मन का देश मानकर, इस्लामी देश बनाने के लिए हर तरह की नीति-अनीति अपनाते रहो।

इस देश-द्रोही और हिंसक नीति का मुसलमानों पर कितना असर पड़ता है, इसके कई प्रमाण दिए जा सकते हैं। इसकी शुरूवात 1857 के स्वतन्त्रता संग्राम के तुरन्त बाद ही हो गई थी। उस समय सैय्यद अहमद खान ने अँग्रेजों को सहायता दी थी, जिससे खुश होकर उन्हें 'सर' की उपाधि के साथ दो पाढ़ियों तक पेंशन भी दी गई। अलीगढ़ मुस्लिम शिक्षण संस्थान की स्थापना भी की गई थी। उसी समय सैय्यद अहमद खान ने ऐलान किया था,"हिन्दुस्तान की आजादी से मुसलमानों का कोई लेना-देना नहीं है।"

1885 के बाद जब कॉंग्रेस अधिवेशन में लोकतन्त्र अपनाने की बात चली थी तो सर सैय्यद अहमद खान ने इसका विरोध करते हुए कहा था, "यह कैसे हो सकता है ? लोकतन्त्र का अर्थ होगा बहुमत का राज। और हिन्दुस्तान में बहुमत हिन्दुओं का है तो राज भी उनका होगा। क्या विजेताओं की सन्तान-मुसलमान, हिन्दुओं की गुलामी मंजूर करेंगे ? भारत से अगर अंग्रेज जाते हैं तो सवाल उठेगा कि राज किसका हो ? क्या हिन्दू और मुसलमान दोनों एक साथ राज सिंहांसन पर बैठ सकते हैं ? यह असम्भव है, इसका फैसला तलवार करेगी। हमें तलवार दो और फिर देखो कि कौन राज करता है ?"

दिल्ली में जनवरी,1925 के अन्तिम सप्ताह में सर्वदलीय सम्मेलन हुआ। महात्मा गाँधी, श्रीमती एनीबेसेन्ट, श्रीमती सरोजिनी नायडू, पं. मोतीलाल नेहरू, महामना मालवीय, श्री चिन्तामणि तथा अनेक हिन्दू नेता वहाँ उपस्थित थे। दूसरी ओर मियां जिन्ना, अली बन्धु, हकीम अजमल खां, डॉ. अंसारी आदि मुस्लिम नेता थे। लार्ड कर्जन की पुत्री तथा दामाद सर ओस्वाल्ड मोस्ले दर्शक के रूप में उपस्थित थे। बातचीत शुरू होने पर निर्भीक और स्पष्टवक्ता श्री चिन्तामणि ने, कुछ धीमे स्वर में झिझकते हुए मौलाना मोहम्मद अली द्वारा उनके पत्र में, बगदाद से लेकर बंगाल और बर्मा तक एक 'मुस्लिम गलियारे' की माँग के साथ अफगानिस्तान से गठबन्धन किए जाने सम्बन्धी लेखों पर आपत्ति की। इस पर मौलाना ने तत्काल खड़े होकर श्री चिन्तामणि के आलोचनात्मक कथन पर आपत्ति की। किन्तु तभी मियां शौकत अली ने खड़े होकर कहा, मेरे पास कमाल पाशा के एक मन्त्री फखीबे का एक पत्र है, जिसमें हमारे उद्देश्यों के साथ सहानुभूति प्रकट की गई है। उनके इस कथन पर सभी चुप रह गए।

उसी समय डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे, जो उस समय दुबले-पतले शरीर वाले थे, खड़े होकर दाहिने हाथ की मुट्ठी बाँधकर ऊपर उठाते हुए निडरता से बोले, "तो क्या हमसे समझौता करने और सहायता देने के लिए शेष देश नहीं हैं ? महाराजा रणजीत सिंह के सिख सिपाही, महाराजा गुलाबसिंह के

... शेष अगले पृष्ठ पर ...

वीर डोगरा तथा नेपाली गुरखे, अफगानों से अनेक बार लोहा लेकर उन पर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध कर चुकेहैं। महाराजा रणजीतसिंह के सेनानियों ने तो काबुल की छाती पर झन्डा गाड़ा था और अपने नाम के सिक्के भी चलाए थे। औरंगजेब के समय में जब मुगल शक्ति उच्चतम शिखर पर थी, तब दक्षिण में मुट्ठी भर मराठे, उस अमर वीर के नेतृत्व में खड़े हुए, जो उस समय एक छोटे से सरदार का पुत्र था, किन्तु बाद में महाराजा शिवाजी बन गया। हम हिन्दुओं ने मुगल सेनाओं को पीछे की ओर खदेड़ते-खदेड़ते दिल्ली के फाटक तक पहुँचा दिया था। आज जब ये मुट्ठी भर मुसलमान, हिन्दुओं की अपेक्षा अँग्रेजों के पैरों के नीचे अधिक कमजोर और पिसे हुए हैं, उस समय इनसे हमें क्या भय हो सकता है।'' पूरी सभा में डॉ. मुंजे की वीर और ओजस्वी वाणी को सुनकर, सन्नाटा सा छा गया। अली बन्धुओं मौलाना मोहम्मद अली और शौकत अली की तो जैसे बोलती ही बन्द हो गई।

''सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दोस्तां हमारा'' गीत लिखने वाले मोहम्मद इकबाल जैसे प्रसिद्ध शायर ने, 1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन के अध्यक्ष के रूप पहिली बार अलग मुस्लिम राज्यों के गठन का प्रस्ताव रखा था। इसी प्रस्ताव ने आगे चलकर पाकिस्तान के निर्माण का रूप लिया। आजादी से पहिले सिन्ध में बिहार और उ.प्र. के मुसलमान, सिन्ध और पश्चिमी पन्जाब में बसने की गुप्त योजना के अन्तर्गत टोह लेने के लिए आए थे। इससे यह संकेत मिलता है कि मुस्लिम नेताओं ने पूर्व योजना के अनुसार भारत विभाजन के बाद बनाए जाने वाले पाकिस्तान के लिए क्षेत्रों पर कब्जा करना शुरू कर दिया था। किन्तु काँग्रेस ने हमेशा की तरह देश विभाजन की इन गतिविधियों की अनदेखी की।

गाँधी-इर्विन समझौते के अनुसार 17 नवम्बर, 1931 के दिन अंग्रेज सरकार ने लन्दन में गोल मेज बैठक आयोजित की थी। जिसमें काँग्रेसी प्रतिनिधि के रूप में गाँधीजी, मुस्लिम प्रतिनिधि के रूप में सर आगा खां, दलित वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. भीमराव आंबेडकर शामिल हुए थे। आगा खां ने अलसंख्यक आधार पर मुसलमानों के लिए अलग मताधिकार की माँग की। इसी तरह डॉ. आंबेडकर ने भी दलित वर्ग के लिए ऐसी ही माँग रखी। इस पर गाँधीजी ने साफ शब्दों में विरोध करते हुए कहा, ''अल्पसंख्यक आधार पर मुस्लिम माँग को तो मैं समझ सकता हूँ, किन्तु दलित वर्ग के लिए यह माँग मेरे लिए निर्मम चोट है। हिन्दुस्तान की आजादी के लिए मैं हरिजन हितों का सौदा नहीं कर सकता। यदि इसके विरुद्ध मैं अकेला भी पड़ गया तो भी मैं अपनी जान की बाजी लगा दूँगा।''

आजादी के बाद हिन्दुस्तान के तुकड़े के रूप में पाकिस्तान ने अपने जन्म के तीन महीने बाद ही आतंकवादी इस्लामिक देश होने का परिचय देते हुए, जम्मू के राजौरी और पुंछ में हमला किया। इस हमले में एक ही रात में स्थानीय मुसलमानों की सहायता से बच्चे-बूढ़े और स्त्रियों सहित 22 हजार हिन्दुओं को कत्ले आम किया गया। और पं. नेहरू ने महाराजा हरीसिंह पर दबाव डालकर, जम्मू-कश्मीर का राज, 27 आक्टोबर, 1947 के दिन इस्लामी धर्मान्ध नेता शेख अब्दुल्ला के हाथ में सौंप दिया। ये वही शेख अब्दुल्ला हैं, जिन्होंने 1931 में अपने भाषण में कश्मीरी पन्डितों और अन्य सभी हिन्दुओं के लिए कहा था, ''या तो मुसलमान बन जाओ या भाग जाओ और खत्म हो जाओ।''

उनके पुत्र फारूख अब्दुल्ला ने मुख्यमन्त्री रहते हुए 1989 में इस घोषणा पर अमल किया, जब कश्मीर घाटी के मूल निवासी तीन लाख कश्मीरी पन्डितो को कश्मीर से तलवार की नोक पर लूट-मार मचा कर खदेड़ दिया गया। तब केन्द्र में मुस्लिम टोपी पहिनने वाले प्रधानमन्त्री वी.पी. सिंह की सरकार थी।

महात्मा गाँधी के नेतृत्व में काँग्रेस ने हमेशा अँग्रेजों और मुसलमानों की हिंसक नीतियाँ देखते हुए भी कभी हिंसक नहीं कहा। ... शेष अगले पृष्ठ पर ...

इसके विपरीत उनकी हिंसा के विरुद्ध सुरक्षात्मक नीति अपनाने वाले हिन्दुओं को उग्रवादी और हिंसक मानते हुए हमेशा विरोध किया। एक क्रान्तिकारी वीर गोपीनाथ ने एक अँग्रेज मि. डे. को गोली मारकर यमलोक पहुँचा दिया था। काँग्रेस की बैठक में प्रस्ताव पास कर, गोपीनाथ के इस पराक्रम की प्रशंसा की गई। किन्तु गाँधीजी ने इसका विरोध किया, जिस पर पं. मोतीलाल नेहरू और सी. आर. दास ने नाराजी प्रकट की। जब लार्ड इर्विन की हत्या का प्रयास किया गया था, तब गाँधीजी ने काँग्रेस को इसकी निन्दा करने का प्रस्ताव रखा था। स्वामी गोविन्दानन्द (जंव्हरमल मनसुखाणी) ने इसका विरोध किया। प्रस्ताव पर मतदान हुआ, जिसके विपक्ष में 700 और पक्ष में केवल 36 मत पड़े और इस तरह गाँधीजी का प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया गया।

एक अँग्रेज सर ओ. ह्यूम द्वारा 1885 में काँग्रेस पार्टी की स्थापना भी इसी कूटनीति का महत्वपूर्ण अंग था, जिसके पहिले 6-7 अध्यक्ष अँग्रेज ही बने। ध्यान रहे कि ये वही ओ. ह्यूम थे, जिन्हें अँग्रेज सरकार ने हिन्दुस्तान को और अधिक समय तक गुलाम बनाए रखने के उपाय खोजने के लिए हिन्दुस्तान भेजा था। इस काँग्रेस का उद्देश्य भारतीय नेताओं को छड्यन्त्रकारी रूप से छोटे-मोटे समाज-सुधार और धार्मिक एकता के कपट-जाल में उलझाए रखना था। इसलिए लोकमान्य तिलक के आने से पहिले काँग्रेस ने हिन्दुस्तान की स्वतन्त्रता का कभी भी विचार नहीं किया। सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने 'स्वराज' लेने का और लोकमान्य तिलक ने, "स्वतन्त्रता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।" का महामन्त्र देश को दिया था।

काँग्रेस ने न केवल अंग्रेजों के प्रति बल्कि मुस्लिमों केप्रति भी हमेशा समझौता वादी और झुककर चलने वाली नीति अपनाई। 1938 में काँग्रेसाध्यक्ष चुने जाने के बाद नेताजी सुभाष ने स्वतन्त्रता प्राप्त करने की समय-सीमा तय करने का प्रस्ताव काँग्रेस में रखा था। जिससे गाँधीजी और उनके समझौतावादी समर्थक असहमत थे। इसलिए गाँधीजी ने काँग्रेस कार्यकारिणी सदस्यों को नेताजी सुभाष का विरोध करने का खुला आव्हान किया। इसलिए नेताजी को काँग्रेस-अध्यक्ष पद छोड़ना पड़ा।. **शेष अगले पृष्ठ पर .**

पूरा सिन्ध बँटवारे में देने के लिए रचा गया था षड्यन्त्र

विभाजन के पूर्व थरपारकर में हिन्दू-सिन्धीयों की जनसंख्या अधिक थी। हिन्दू-सिन्धीयों द्वारा थरपारकर जिले को सिन्ध-प्रदेश के रूप में हिन्दुस्तान में मिलाने की मांग के उठते ही 1946 की तत्कालीन कामचलाऊ सिन्ध सरकार ने सांघड़ और नवाबशाह जिले के कुछ क्षेत्रों को थरपारकर में मिला दिया, जिससे यह हिन्दु बहुल से मुस्लिम बहुल जिला बन गया।

जयरामदास दौतलराम ने शर्मनाक रूप से आँकड़े देकर सिन्ध के प्रत्येक जिले को मुस्लिम बहुसंख्यक प्रमाणित किया था। विभाजन बाद इनको केन्द्रीय खाद्य आपूर्ति मन्त्री बनाया गया था। इससे स्पष्ट होता है कि उनका यह कार्य सत्ता-लोलुपता के कारण किया गया था। इन्होंने विस्थापित और निर्वासित सिन्धीजनों के हित में कोई भी सहयोग नहीं दिया था। काँग्रेस के कुछ ऐसे ही नेताओं ने सिन्धीयों को झूठे दिलासे देकर, सिन्ध में निश्चिन्त बसे रहने की सलाह दी थी। किन्तु मार-काट और लूट-पाट मचते ही ये सबसे पहिले हवाई-जहाजों में उड़ते हुए भारत भाग आए थे।

दुर्भाग्यजनक और शर्मनाक बात यह हुई कि शान से सिर उठाकर तथाकथित आजादी दिलाने का दावा करने वाले नेताओं ने एक पूरे प्रदेश के लोगों के विरुद्ध किए गए इस छड्यन्त्र को अन्धे-बहरे और निर्ममों की तरह अनदेखा और अनसुना कर दिया।

जबकि गाँधीजी ने 1934 में ही काँग्रेस की सदस्यता त्यागने के साथ राजनीति से सन्यास लेने की घोषणा की थी। नेताजी ने काँग्रेस में रहते हुए 'फारवर्ड ब्लाक' का गठन किया, जिस कारण तीन साल के लिए किसी भी पद के लिए उनके चुनाव लड़ने पर रोक लगा दी गई। इसका विरोध करते हुए बंगाल काँग्रेस ने कड़े शब्दों में निन्दा की। जिस पर काँग्रेस कार्यसमिति ने नेताजी पर अनुशासनात्मक कार्यवाही करते हुए उन्हें काँग्रेस से निष्काशित कर दिया। काँग्रेसी इतिहास में किसी सदस्य के विरुद्ध यह पहिली कार्यवाही थी। गाँधी जी के नेतृत्व में काँग्रेस ने कभी भी लोकतन्त्र और बहुमत का सम्मान नहीं किया। उनकी इस एकाधिकार वाली नीति के कारण श्री पुरुषोत्तमदास टन्डन को काँग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र देना पड़ा। श्री चितरंजन दास और पं. मोतीलाल नेहरू को भी काँग्रेस छोड़कर, 'स्वराज पार्टी' नामक संगठन बनाना पड़ा।

1 सितम्बर 1946 के दिन अंतरिम सरकार का प्रधानमन्त्री चुनने के लिए 15 प्रादेशिक काँग्रेस कमेटियों में से 12 ने सरदार पटेल के पक्ष में मतदान किया। किन्तु बहुमत को ठुकराकर गाँधी जी ने मात्र 3 मत पाने वाले नेहरू को प्रधानमन्त्री बनाने का समर्थन किया। एक बयान में गाँधीजी ने कहा था, "नेहरू मेरी सबसे बड़ी कमजोरी है।" पता नहीं वह कौनसी कमजोरी थी, जिसके कारण उन्हें अलोकतान्त्रिक कार्य के लिए मजबूर होना पड़ा। जिसके कारण "मजबूरी का नाम महात्मा गाँधी" जैसी कहावत प्रसिद्ध हुई।

हमारा संविधान धर्म और जाति के आधार पर कोई कानून बनाने की छूट नहीं देता, परन्तु स्वतन्त्र भारत में ऐसा कोई भी कानून नहीं बना, जो देश के सभी नागरिकों पर एक समान लागू होता हो। इसलिए देश के तुकड़े-तुकड़े करने वाली नीति स्वतन्त्र भारत में भी लागू रही। सर्वाधिक लज्जाजनक और दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति यह है कि देश को तुकड़ों में बाँटने के लिए अँग्रेजों के गुलाम स्वतन्त्र भारत के नेता आज भी सत्ता पर अधिकार किए बैठे हैं। हिन्दू और मुस्लिम वर्ग के अलग-अलग प्रतिनिधि चुनने और भारतीय-ईसाई (धर्मान्तरित ईसाई) वर्ग को विशेषाधिकार देने वाला, ब्रिटिश सरकार द्वारा जारी **फेडरल लॉ** नामक काला-कानून आज भी लागू है। पाकिस्तान बनाने के बाद भी मुस्लिमों को देश से ऊपर मानकर तुकड़े करने का अवसर देने वाली नीति अपनाई गई। इस तथाकथित स्वतन्त्रता के बाद भी अंग्रेज-भक्ति और मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए, करोड़ों भारतीयों के रोम-रोम में बसने वाले मातृ-वन्दना रूपी उस वन्देमातरम गौरव-गान को, राष्ट्र-गान का सम्मान नहीं दिया गया। श्री बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय रचित जिस गीत को गाते हुए स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय हंजारों शहीदों ने आत्म बलिदान दिया। क्योंकि देश की सत्ता हाथों-हाथ लपक लेने वाले ये नेता स्वयं को देश-भक्त या जनता-जर्नादन का सेवक न मानकर, 'अधिनायक' और 'भारत भाग्य विधाता' समझते थे। इसलिए "जन गण मन अधिनायक" को राष्ट्रगान चुन लिया गया। यह राष्ट्रीय सम्मान से अधिक अधिनायकवाद या तानाशाही को महत्व देने का ही एक प्रमाण है।

पं. नेहरू और उनके पिछलग्गू इतिहासकारों ने स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास को विकृत करना शुरू कर दिया था। स्वतन्त्रता, कई क्रान्तिकारियों और श्यामजी कृष्ण वर्मा, दादा भाई नौरोजी तथा लोकमान्य तिलक के पूर्व घोषित नीतियों से प्रेरित गाँधीजी के भारत छोड़ो आंदोलन का मिला-जुला परिणाम थी। कन्हाईलाल दत्त, अशफाकउल्ला खां और प्रीति लता जैसे हजारों युवाओं के बलिदान से लाखों नवयुवकों के खून में उबाल आ जाता था। किन्तु पं. नेहरू के प्रधानमन्त्री काल में प्रकाशित लोकसभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित पुस्तक में 'असेम्बली बम कान्ड' के कर्ता-धर्ता वीर भगतसिंह व वीर बटुकेश्वर दत्त को दिग्भ्रमित, दिशाहीन तथा भटके हुए नवयुवक बतलाया गया है।

अंग्रेजों ने भाषाई भेद पैदा करने के लिए भारतीय भाषाओं से, दक्षिणी भाषाओं को अलग प्रचारित किया था। ठीक इसी तरह पं. नेहरू ने उत्तर-दक्षिण का भेद बनाए रखा। .. **शेष अगले पृष्ठ पर** ..

जब उनके प्रबल विरोध के बाद भी डॉ.राजेन्द्र प्रसाद, राष्ट्रपति चुन लिए गए, तो उन्होंने तुरन्त एक नारा लगाया कि यदि राष्ट्रपति उत्तर भारत का तो उपराष्ट्रपति दक्षिण भारत का होना चाहिए। उपराष्ट्रपति डा.राधाकृष्णन चाहे कितने भी श्रेष्ठ विद्वान थे, संस्कृत के प्रकान्ड विद्वान होने के बाद भी वे जीवन भर राष्ट्रभाषा हिन्दी या अपनी मातृभाषा में एक शब्द बोलना भी अपना अपमान समझते रहे। 1857 के बाद से लेकर भारत के टुकड़े कराने वाले 1947 के तथा -कथित स्वतन्त्रता-संग्राम तक, अँग्रेजों और धर्मान्ध मुस्लिम नेताओं की कूटनीति पर लोकमान्य तिलक और नेताजी सुभाष जैसे गरम दल जो वास्तव में राष्ट्रीय स्वाभिमान को सर्वोपरि मानते हुए, स्वतन्त्रता को भारतीयों केजन्म सिद्ध अधिकार के रूप में पाना चाहते थे। इनके सिवा काँग्रेस के गाँधीवादी हिन्दू नेताओं ने कभी भी विचार नहीं किया। हर बुरी से बुरी और अपमानित हालत में सत्ता पाने के लिए समझौतावादी काँग्रेसी नेता जान-बूझकर, अँग्रेजों और अलगाववादी मुस्लिम नेताओं की मिली-भगत को अनदेखा करते थे। तथाकथित कायरता मूलक अहिंसा के परिणाम स्वरूप, आजादी हमारा अधिकार न होकर भीख में मिलने वाले टुकड़े थी। यही कारण था कि महात्मा गाँधी के रहते, भारत 25-30 साल बाद स्वतन्त्र हुआ और वह भी कई टुकड़े-टुकड़े होकर।

विभाजन पूर्व हिन्दू-मुस्लिम जनता की अदला-बदली और गाँधीजी

देश के तुकड़े करके पाकिस्तान बनाने के प्रश्न पर मुस्लिम लीग के नेता मोहम्मद अली जिन्ना व गाँधीजी के बीच 1944 के सितम्बर में 9, 11, 15, 24 और 27 तारीख के दिन बम्बई में कुल पाँच वार्ताएँ हुई। इन वार्ताओं में जिन्ना ने विभाजन पूर्व हिन्दू-मुस्लिम जनता की अदला-बदली का प्रस्ताव रखा था। जिसे गाँधीजी ने खुलकर और साफ शब्दों ने नकार दिया था।

इस प्रस्ताव को जिन्ना ने वाईसराय लार्ड माऊन्टबेटन, पं. नेहरू और सरदार पटेल आदि के साथ हुई एक बैठक में भी रखा था। इसके उत्तर में वाईसराय ने कहा था, "आप इस माँग को क्यों रखते हो। जितने मुसलमान यहाँ हैं, उनको यहीं रहने दो, आगे चलकर आप अपनी जनसंख्या बढ़ा सकते हो।" जिन्ना, उनके गुप्त संकेत को समझकर चुप हो गए। इस पर सरदार पटेल ने कहा, "जब हमने हिन्दू-मुस्लिम आधार पर देश के तुकड़े करना तय किया है तो जनता की अदला-बदली भी हो जानी चाहिए।" तिस पर पं. नेहरू तुरन्त बोल पड़े थे, "नहीं हम तो सेक्यूलर(धर्मनिरपेक्ष) हैं।"

पं. नेहरू और गाँधी की इसी सेक्यूलर नीति के कारण ही धर्म-भेद के आधार पर देश के तुकड़े किए जाने के बाद भी साढ़े तीन करोड़ मुसलमान, शान-मान से हिन्दुस्तान में रहने लगे। इसका भयंकर दुष्परिणाम यह निकला कि विभाजन के बाद केवल पश्चिमी पाकिस्तान(सिन्ध-पंजाब-बलोचिस्तान) में लूट-पाट के बाद 10 लाख हिन्दुओं की निर्मम हत्या की गई और लगभग इतने ही हिन्दुओं को जबरन मुसलमान बना दिया गया। पूर्वी पाकिस्तान(बंगाल) में भी ऐसी ही क्रूर हत्याएँ की गई। सिन्ध के 13 लाख सहित लगभग 2 करोड़ को अपनी जन्मभूमि छोड़नी पड़ी।

मुस्लिम पर्सनल लॉ और कश्मीर में कानून की विशेष धारा 370 लागू की गई। जिसके अनुसार हिन्दुस्तान के साधारण नागरिक तो दूर सर्वोच्च शासक राष्ट्रपति की भी औकात नहीं कि वह कश्मीर में सार्वजनिक उपयोग हेतु पोष्ट ऑफिस खोलने के लिए भी एक इन्च जमीन भी खरीद सके। धारा 370 के अनुसार कश्मीरी जनता, केन्द्र सरकार को कोई भी कर नहीं चुकाती, बल्कि अन्य प्रदेशों की तुलना में प्रति नागरिक बीसियों गुना अधिक सहायता राशि प्रदान की जाती है।

मुस्लिम-प्रेम और गाँधी-वध

विभाजन के रूप में हुए समझौते के अनुसार पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपए देना तय हुआ था। किन्तु पाकिस्तान के द्वारा विभाजन के तुरन्त बाद जम्मू-कश्मीर के राजौरी-पुंछ में हमला करके एक ही रात में 22 हजार हिन्दुओं की हत्या किए जाने के कारण भारत के केन्द्रीय मन्त्रीमन्डल ने सरदार पटेल के नेतृत्व में पाकिस्तान को यह धन-राशि देने पर रोक लगा दी। इसके बाद भी 13 जनवरी, 1948 के दिन महात्मा गाँधी ने पाकिस्तान को 55 करोड़ रुपए देने के लिए, भारत सरकार पर दबाव डालने हेतु आमरण अनशन शुरू किया। उनके इस मुस्लिम-प्रेम के विरुद्ध भारत भर के समाचार पत्रों ने कड़ी निन्दा की। पं. नेहरू ने सफाई देते हुए कहा कि गाँधीजी के इस अनशन से पाकिस्तान को रुपए देने का कोई सम्बन्ध नहीं है। परन्तु सरदार पटेल ने उनकी इस सफाई का खन्डन करते हुए कहा था, "गाँधीजी के प्राणों की रक्षा के लिए हम उनके हठ के सामने झुके और 55 करोड़ रुपए पाकिस्तान को दे डाले। जबकि हमें इसकी तनिक भी आशा नहीं कि हमारी इस उदारता से पाकिस्तान के व्यवहार में कोई बदलाव आएगा।"

विभाजन के कारण सिन्ध से जबरन निकाले गए निर्वासित 13 लाख सिन्धीजन 1948 में दिसम्बर-जनवरी की कड़ाके की ठन्ड के मौसम में दर-दर भटक रहे थे। उनके सिर पर छत और रोजी-रोटी तथा पुनर्वास की व्यवस्था के लिए कुछ समाज-सेवकों के साथ भाई प्रताप और डॉ. चोइथराम गिदवाणी ने प्रधानमन्त्री पं. नेहरू से मुलाकात की थी। परन्तु महान धर्मनिरपेक्ष और पन्चशील के झन्डाबरदार पं. नेहरू ने उन्हें भारत में शरणार्थी के रूप में भी रहने देने से इन्कार कर दिया था। "वैष्णव जन तो तेने कहिए, जो पीर पराई जाने रें" के भजन गाने वाले 'राष्ट्रपिता' गाँधी ने भी, आजादी के नाम पर लड़ते हुए लाखों बलिदान करने के बाद भी अपने ही देश में शरणार्थी बन जाने वालों के लिए किसी प्रकार की 'पीर' का अनुभव नहीं किया। न ही कोई आंदोलन या सत्याग्रह ही किया।इसके विपरीत अपने ही देश बन्धुओं को मार-काट कर शरणार्थी बना देने वाले मुसलमानों को करोड़ों रुपए दिलवाने के लिए आमरण अनशन किया। इतना ही नहीं "जले पर नमक छिड़कने" जैसा काम करते हुए, अनशन तोड़ने के लिए याचना करने वालों के सामने यह शर्त रखी कि शरणार्थियों के नेता भी याचना-पत्र पर सही करें।

पुनर्वास मन्त्री मेहरचन्द खन्ना, जब इस हेतु डॉ.गिदवाणी से मिले तो उन्होंने भड़कते हुए चीखकर कहा, "पाकिस्तान को 55 करोड़ दिए जाने या गाँधी के अनशन से शरणार्थी पुनर्वास कमेटी का क्या सम्बन्ध ? मैं तब तक इस प्रार्थना-पत्र पर सही नहीं करूँगा, जब तक शरणार्थियों के लिए रहने की व्यवस्था नहीं की जाती।" दूसरे दिन स्वयं गृहमन्त्री सरदार पटेल, डॉ.गिदवाणी से मिले और कहा कि "आप सही कर दें, सिन्धीजनों को शरणार्थी के रूप में बसाने का कार्य मेरे गृह-मन्त्रालय के अधीन है। मैं कल ही ऐसा आदेश-पत्र आपके पास भिजवा दूँगा।"

30 जनवरी,1948 के दिन गाँधी-वध या पाप की सजा दिए जाने के पहिले पूना में 25 जून,1934 और 20 जनवरी,1948 के दिन मदनलाल पटवा आदि द्वारा भी प्रयास किए गए थे। इससे साफ स्पष्ट है कि उनके इस मुस्लिम-प्रेम के विरुद्ध देश भर में कई लोग क्रोधित थे।

आजादी की भीख माँगने वाले नेताओं ने दिलाई दर-दर की ठोकरें

कहते हैं इतिहास अपने को दुहराता है। सिन्ध के स्वतन्त्रता संग्राम में भी इतिहास ने खुद को दुहराया। जिस तरह महाभारत काल में कौरव-पाँडवों की युद्ध के समय श्री कृष्ण ने कौरवों से पाँडवों को बंटवारे में आधा राज्य दिलवाने का प्रयास किया था, किन्तु कौरवों ने पाँच गांव देने से भी इन्कार कर दिया था। तब श्रीकृष्ण ने पाँडवों को महाभारत का युद्ध लड़ने का आव्हान किया। युद्ध शुरू हुआ किन्तु अर्जुन ने कायरता के कारण युद्ध के मैदान में शस्त्र रखकर, लड़ने से इन्कार कर दिया था। उसी तरह सिन्ध के सिन्धी नेताओं ने परचो विद्यार्थी के आव्हान को नकार कर कायरता का परिचय दिया था। जिसके परिणाम स्वरूप सिन्धीजनों को पूरा सिन्ध प्रदेश तो क्या हिन्दू-बहुल एक जिला थरपारकर भी नहीं मिला, अपनी सिन्धीयत रूपी सनातन पहिचान बचाने के लिए। और अपने ही देश में अपनी जन्मभूमि से निर्वासित होकर दर-दर की ठोकरें खाने के लिए बाध्य होना पड़ा।

सिन्ध के शेर के नाम से प्रसिद्ध डॉ. चोइथराम गिदवाणी को विभाजन में पूरा सिन्ध पाकिस्तान को दिए जाने के फैसले के बाद भी काँग्रेसी लीडरों से उम्मीद थी कि वे सिन्धीयों के साथ अन्याय नहीं करेंगे। इसलिए उन्होंने परचो विद्यार्थी की सशस्त्र क्रान्ति की योजना को ठुकरा दिया था। उन्होंने अन्याय-पूर्ण विभाजन के फैसले पर विचार करने के लिए काँग्रेस हाईकमान की दिल्ली में बैठक करवाई। बैठक में 'भारत भाग्य विधाताओं' ने बतलाया कि किन परिस्थितियों में विभाजन स्वीकार किया गया था। बैठक में उपस्थित सिन्ध और पन्जाब के सभी सदस्यों ने विभाजन के विरुद्ध मत दिया।

बहुत वाद-विवाद के बाद सिन्धीजनों को आशवासन दिया गया कि विभाजित पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिन्दुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं होगी। डॉ. गिदवाणी ने शंका प्रकट करते हुए कहा, "विभाजन के बाद पश्चिमी पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिन्दू पीस दिए जाएँगे। सिन्ध व पंजाब के अल्पसंख्यक हिन्दुओं की राय पर अमल किया जाना चाहिए। सिर्फ हवाई बातें करते हुए, सच्चाई से आँखें नहीं मूँद लेनी चाहिए।" उन्होंने खुलकर काँग्रेस हाईकमान पर आरोप लगाया कि "हमारे सम्माननीय नेता, सच्चाई को देखकर भी नहीं देख रहे हैं। वे केवल मुंह-जबानी दिलासे देकर हमें खुश करना चाहते हैं। जबकि सच्चाई यह है कि हमारी सुरक्षा की कोई भी व्यवस्था नहीं की जा रही है। ये कहाँ का न्याय है कि जिन पर विभाजन की गाज गिरनी है, उनके मत को कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है। देश में स्वराज आ रहा है पर वह आ रहा है देश के तुकड़े करने के रूप में। इसके लिए भी हम सिन्धी-हिन्दुओं को हिन्दुस्तान से काटकर, पाकिस्तान में फेंका जा रहा है।"

सिन्ध में काँग्रेस के सिवा हिन्दू महासभा, आर्य समाज और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संगठन भी थे। उनकी तरफ से हैदराबाद के होमस्टेट हाल में एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें एक मात्र काँग्रेसी नेता प्रोफेसर घनशाम शिवदासाणी शामिल हुए थे। बैठक में एक उत्साही युवक श्री झमटमल्ल ने कहा, "हम कैसे भूल जाएँ अपनी जन्मभूमि सिन्ध को, सिन्ध के इतिहास को और हजारों वर्ष की पुरानी परम्परा को ? इसी धरती पर हमारे ऋषि-मुनियों ने वेद रचे, कैसे भूलें हम फकीरों और दरवेशों के कल्याण-कारी कलाम को ? कैसे भूलें अपने सूरमों और सरदारों को, जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर, सिन्ध को बनाया-बसाया ? सिन्ध प्रदेश, भारत की सीमाओं पर है। ... **शेष अगले पृष्ठ पर** ...

हजारों वर्षों से भारत के शत्रुओं ने हमले किए हैं और सिन्ध के वीरों ने हमेशा उनका सामना करके ताकतवर पहरेदार की भूमिका निभाई है। इस सिन्धू भूमि के लिए सिन्धीयों ने सदियों से बलिदान दिए हैं और आज उन्हीं सिन्धीयों को बँटवारे का शिकार बनाया जा रहा है ! ये कहाँ का न्याय है ?"

हिन्दू महासभा के अगवान श्री द्वारकादास शर्मा ने प्रो. घनशाम शिवदासाणी की तरफ देखते हुए कहा, "आप काँग्रेसी और कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम इतना तो करिए कि हम सिन्धी-हिन्दुओं के लिए थरपारकर जिले की माँग करें, ताकि उस जिले को हम अपना होमलैन्ड बनाकर, अपनी धरती पर ही आबाद रह सकें।" प्रो.शिवदासाणी ने गुस्से में चिढ़ते हुए कहा, "आपकी मति मर गई है। थरपारकर में क्या रखा है ? वहाँ सिवा आर्थिक अभाव और भंगार के है ही क्या ? उस जलहीन और रेतीले रेगिस्तान में रहकर क्या आप ढोर-जानवर चराएँगे ?" ये कहकर वे उठकर चले गए। उनके जाने के बाद द्वारकादास शर्मा ने कहा, "ये काँग्रेसी ये क्यों भूल जाते हैं कि थरपारकर जिला भी सिन्ध का एक भाग है। भले ही वहाँ कुछ न हो, किन्तु वहाँ रहकर सिन्धी कभी भी अपने आपको को पराया अनुभव नहीं करेंगे।"

1947 में आचार्य कृपलाणी काँग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर विराजमान थे। स्वतन्त्र भारत के अन्य प्रान्तों की यात्रा करते हुए वे सिन्ध में भी पधारे थे, जहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया। 'आजादी के पाप रूपी पाकिस्तान' में सिन्धीयों की घातक हालत सुनने के बाद उन्होंने काँग्रेसी राजनेताओं वाली भाषा में कहा था, "काँग्रेस पार्टी ने सारे देश की सेवा की है। हम अखन्ड भारत की आजादी के लिए लड़े थे, इसलिए हमें जितना दुख विभाजन और सिन्ध का नाम बदलकर पाकिस्तान होने के कारण हुआ है, उससे अधिक दुख किसी और को नहीं हुआ होगा।"

14 अगस्त,1947 के दिन आजादी के पाप के रूप में पाकिस्तान का जन्म हुआ। इधर 15 अगस्त,1947 के दिन तुकड़े-तुकड़े भारत में भी आजादी की खुशियाँ मनाने के साथ बधाईयों का आदान-प्रदान कर मिठाईयाँ बाँटीं गईं। किन्तु पाकिस्तान के हिन्दुओं के हृदय में हाहाकार मची हुई थी। यद्यपि अपने-पराए सभी काँग्रेसी नेताओं सहित पाकिस्तान के सत्ताधीशों ने सांत्वना दी थीं कि पाकिस्तान में सभी हिन्दुओं के जान-माल की सुरक्षा की जाएगी। स्वयं मोहम्मद अली जिन्ना ने कहा था, "आप पहिले की बातें भूल जाईये। इस समय हमारे बीच में कोई लड़ाई नहीं है। जो पाकिस्तान में रहते हैं, वे सभी सुरक्षित और हर स्थिति में सुखी रहेंगे। फर्क केवल इतना पड़ा है कि पहिले जो हिन्दुस्तानी थे, वे अब पाकिस्तानी कहलाएँगे।" किन्तु अँग्रेजी राज से पहिले का इतिहास और आजादी की लड़ाई के समय कट्टरपन्थी मुस्लिम चरित्र देखते हुए हिन्दू बुरी तरह से डरे हुए थे। वे काँग्रेसी और मुस्लिम नेताओं के शब्द-जाल से परिचित होने के कारण आशंकित थे। तुरन्त ही उनका शब्द-जाल, धोखे में फँसाने वाला सिद्ध हुआ।

काँग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष आचार्य कृपलाणी ने कहा था

1947 में आचार्य कृपलाणी काँग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर विराजमान थे। स्वतन्त्र भारत के अन्य प्रान्तों की यात्रा करते हुए वे सिन्ध में भी पधारे थे, जहाँ उनका भव्य स्वागत किया गया।

'आजादी के पाप रूपी पाकिस्तान' में सिन्धीयों की घातक हालत सुनने के बाद उन्होंने काँग्रेसी राजनेताओं वाली भाषा में कहा था, "काँग्रेस पार्टी ने सारे देश की सेवा की है। हम अखन्ड भारत की आजादी के लिए लड़े थे, इसलिए हमें जितना दुख विभाजन और सिन्ध का नाम बदलकर पाकिस्तान होने के कारण हुआ है, उससे अधिक दुख किसी और को नहीं हुआ होगा।"

पाकिस्तान बने मात्र छह दिन ही हुए थे कि 20 अगस्त, 1947 के दिन क्वेटा, चमन और अन्य क्षेत्रों में शुरू हुए दंगों में हिन्दुओं (सिन्धीयों और सिक्खों)को कत्ले-आम और लूट-पाट करने के बाद उनके घरों से भागने को मजबूर किया गया। कत्ले-आम में जिन सिन्धी-हिन्दू स्त्रियों के पति, पिता और भाई मार दिए गए थे, उनको एक शिविर में शरण दी गई थी। पाकिस्तान सरकार ने इन खबरों को समाचार पत्रों में छापने पर रोक लगाई थी। अपने सूत्रों से कत्ले-आम की खबर पाकर डॉ.चोइथराम गिदवाणी, अपने साथियों के साथ उस शरणार्थी-शिविर में पहुँचे। अपना घर-बार और परिवार गँवाकर शिविर में रह रही, 86 सिन्धी महिलाओं का करूण रूदन सुनकर **सिन्ध का शेर** कहे जाने वाले डॉ. गिदवाणी भी जार-जार रो पड़े थे। उन्होंने चीत्कार करते हुए कहा था, "क्या यही है आजादी! क्या इसी तरह अल्पसंख्यकों के जान-माल की रक्षा की जाती है ?" उन्होंने उन पीड़ित महिलाओं की जरूरी सहायता की। इससे पूर्व 14 अगस्त, 1947 के दिन भी पश्चिमी पंजाब में भयंकर खूनी दंगों में लूट-मार के साथ हजारों हिन्दुओं की हत्या की गई थी। इन क्रूर हत्याओं की प्रतिक्रिया के रूप में पंजाब और दिल्ली में साम्प्रदायिक दंगे शुरू हो गए।

मीरपुर खास से गुजरने वाली एक रेलगाड़ी में भारत की तरफ भागने वाले लोहाणा सिक्ख परिवारों पर मुस्लिम लुटेरों ने हमला किया और निर्मम हत्याएँ करने के बाद लूट-पाट की। इन भयानक घटनाओं की खबर ने सिन्धीयों को थरथरा दिया। जिसके बाद अगस्त और सितम्बर में सिन्धीयों और सिक्खों ने पाकिस्तान से निकलना शुरू किया।

जयरामदास दौलतराम, प्रो. घनशाम शिवादासाणी(विधायक), प्रो. नारायण मल्काणी (विधायक), आचार्य कृपलाणी जैसे काँग्रेसी नेता, जिन्हों ने सिन्धीयों को पाकिस्तान में अमन और इन्साफ के साथ रहने की सलाह दी थी, वे अपने जात-भाईयों की चिन्ता किए बिना, हवाई जहाजों में उड़कर पहिले ही भारत भाग निकले थे।

6 जनवरी,1948 के दिन कराची के भयंकर दंगों के बाद अधिकाँश सिन्धीयों को सिन्ध छोड़कर, भारत सहित दुनियाँ भर के देशों में दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर होना पड़ा।

....

पाकिस्तान बनने के बाद महात्मा गाँधी ने कहा था

20 अगस्त, 1947 के दिन क्वेटा, चमन और 14 अगस्त, 1947 के दिन पश्चिमी पंजाब में भयंकर खूनी दंगों में हजारों हिन्दुओं की हत्या के साथ लूट-पाट की गई थी। 6 जनवरी, 1948 के दिन कराची में भयंकर दंगों के बाद अधिकाँश सिन्धी, अपनी जन्मभूमि सिन्ध छोड़ने को मजबूर हुए। इन खबरों को सुनकर महात्मा गाँधी ने कहा था, "यदि एक भी सिन्धी, सिन्ध छोड़कर जाता है तो जिन्ना के गर्वनर जनरल होने पर शर्म की बात होगी।

सिन्ध के हिन्दू प्रथम श्रेणी के व्यापारी हैं। उन्हें बम्बई, मद्रास या दूसरी जगह जाने की क्या जरूरत है ? इससे उनका नहीं, सिन्ध का नुकसान होगा। दुनियाँ में शायद ही कोई जगह हो, जहाँ सिन्धी न पाए जाते हों। वे दक्षिण अफ्रीका में अच्छी कमाई कर रहे थे, कमाई का कुछ भाग वे उदारता पूर्वक गरीबों में बाँट देते थे।"

6 जनवरी याद दिलाएगी

वीर आर्य नारायणदेव और शहीद गागूमल की, याद दिलाएगी इस्लामी लुटेरों की

धर्म और अधर्म की पहिचान तो भारत की आजादी के समय ही हो गई थी, जब अपनी ही माँ भारती के तुकड़े करने से भी बाज नहीं आए थे मुसलमान। धर्म और जाति के नाम पर, अपना अलग धार्मिक-देश पाकिस्तान बनाने की आड़ में निर्मम, हिंसक और लुटेरी नीयत, इन्सायित को कलंकित करने वाले कारनामें, नं केवल बंटवारे के पहिले किए गए, बल्कि बंटवारे के बाद भी जारी रहे। पूरे पाकिस्तान में योजनाबद्ध तरीके से हिंदुओं को मारकर, उनकी धन-दौलत को लूटा जा रहा था। हिन्दुओं को बाहर जाने के लिए परमिट लेना पड़ता था। वे अपनी सम्पति बेच नहीं सकते थे। 20 अगस्त, 47 के दिन क्वेटा और 15 दिसम्बर, 47 के दिन हैद्राबाद में भयंकर खूनी मार-काट और लूट-पाट मचाई गई। इन घिनौने कार्यों का एक और क्रूरतम उदाहरण 6 जनवरी,1948 को कराची में मिला। इस दिन विशेषकर यू.पी. व बिहारी मुसलमानों ने सिन्धी-हिन्दुओं के घरों पर निशान बनाने के बाद, लूट-पाट करके उन पर कब्जा किया। जिसके बाद लुटे-पिटे सिंधी, अपनी जन्मभूमि सिंध छोड़ने को मजबूर हुए।

अपनी सिंधीयत रूपी पहिचान बचाने के लिए, अपनी मिट्टी से बिछड़कर जाने वाले लोगों की अथाह भीड़ कराची बन्दरगाह के पास जमा थी जो बम्बई जाने वाले पानी के जहाजों में जगह पाने की कोशिशों में दिन-रात एक कर रही थी। आर्य-समाज कराची ने इसके लिए आर्य धनपतमल कन्या पाठशाला में रहने की व्यवस्था की थी। जिसमें लगभग 500 आतंकित से स्त्री-पुरुष, बच्चे व बूढ़े भी थे।

लगभग 2000 दंगाई मुस्लिम लुटेरों की भीड़, हाथों में धारदार छुरे, तलवारें और लाठियां लेकर शाला के बन्द मुख्य द्वार के बाहर आ धमकी। नारों के तेज शोर से भीतर के लोग थर-थर कांपने लगे। भीतर द्वार पर लाठियां लेकर केवल मात्र दो वीर आ डटे, एक शाला संचालक आर्य नारायणदेव और दूसरे गागूमल। थोड़ी ही देर में द्वार तोड़ कर लुटेरों की भीड़ शाला में घुस आई और लगभग 30-35 मिनट मुकाबला करने के बाद दोनों वीर शहीद हो गए। उसके बाद थी निरीह और डरी सी कांपती भीड़ और थे इस्लाम को कलंकित करने वाले हिंसक-लुटेरे। जो सोने-चांदी के गहने व नगद आदि लूटने के बाद शान से 'अल्ला हो अकबर' के नारों के साथ, शैतानी ठहाके लगाते हुए बाहर निकल गए।

6 जनवरी का यह दिन, नारायणदेव आर्य और गागूमल जैसे वीर शहीदों की सुनहरी याद का इतिहास बनकर, सदा-सदा के लिए अमर बन गया। सुल्तान कोट जिला सक्खर में जन्में नारायणदेव, बचपन से ही आर्य समाज के प्रभाव में आ गए थे। लाठी-चालन कला के महारथी होने के कारण ही वे इस्लामीं लुटेरों की भीड़ का सामना कर सके। उन्होने कई युवाओं को योग, व्यायाम, लाठी-चालन, प्राकृतिक चिकित्सा तथा अग्निहोत्र यज्ञ का ज्ञान देने के साथ आर्य समाज में प्रवेश दिलाया।

'पाकिस्तान पर विचार' पुस्तक में डॉ.भीमराव आंबेडकर की पूर्व चेतावनी

"इस्लामी पाकिस्तान में किसी भी हिन्दू का रह सकना सम्भव नहीं है। उन्हें या तो मार दिया जाएगा, या जबरदस्ती मुसलमान बना दिया जाएगा अथवा पाकिस्तान छोड़ने के लिए मजबूर किया जाएगा। इसलिए जरूरी है कि समय रहते ही, हिन्दू-मुस्लिम जनता की अदला-बदली कर ली जाए ; यही विभाजन का सही फैसला होगा।"

प्रभदास तोलाणी जैसे सिन्धियों को देश से निकालकर पाकिस्तान ने अपने भाग्य को ठुकराया

महान देश-भक्त काका प्रभदास तोलाणी, राष्ट्रकवि दादा दुखायल, भाई प्रताप डीयलदास जैसे महान देश-भक्तों को पाकिस्तान बनने के तुरन्त बाद देश से निकाल बाहर करके ; पाकिस्तान ने अपने ही भाग्य को ठोकर मारी, जिसके फलस्वरूप पाकिस्तान दुनियाँ की भीख पर पलने वाला भिखारी देश बन गया।



पाकिस्तान के नेता देश की आजादी के लिए नहीं किन्तु देश के तुकड़े करने के लिए लड़े थे। विभाजन की नीयत पर बने पाकिस्तान ने अपने जन्म के तुरन्त बाद पाकिस्तान-सिन्ध के हिन्दुओं को हर तरह से लूटकर देश से भागने को बाध्य करने की कुनीति अपनाई। जबकि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के नेता धर्म आधारित भेद-भाव न करने के झूठे भाषण देते रहते थे। विभाजन के बाद पाकिस्तान-सिन्ध के लगभग सभी जिलों से सिन्धी हिन्दुओं को पलायन करना पड़ा, किन्तु लाड़काणा जिले से अधिकांश हिन्दू अपनी जन्म-भमि छोड़कर जाने को तैयार नहीं थे। इस बात का पता लगाने के लिए जिला कलेक्टर को आदेश दिया गया। जिसके बाद पता लगा कि हिन्दुओं को तब तक सुरक्षित रहने का विश्वास है जब तक लाड़काणा शहर के निवासी काका प्रभदास शखावतराय तोलाणी वहाँ रह रहे हैं। इसलिए कलेक्टर के आदेश पर 26 आक्टोबर,1948 की रात को पुलिस ने उन्हें, पाकिस्तान सुरक्षा अधिनियम के तहत बन्दी बना लिया। तलाशी में मिले एक रेडियो को ट्राँसमीटर बताकर, उनको देश-द्रोही हिन्दुस्तानी जासूस कहकर, सखर के जिला सेशन जज जो उनके बड़े पुत्र गोपाल तोलाणी थे, उनकी कोर्ट में पेश करने के बाद सौ दिन जेल में रखा गया। उनकी सारी जमीन और सम्पत्ति जब्त कर ली गई। उन्हें फाँसी दे दी जाती या जीवन भर जेल में रखा जाता, इसलिए कुछ सिन्धी मुस्लिम जमींदार मित्रों आदि की सलाह पर उन्हें खाली हाथ हिन्दुस्तान आना पड़ा।

काका प्रभदास, सिन्ध के बड़े से बड़े जमींदारों में से एक जमींदार और ठेकेदार थे, वे हर साल आधा लाख रुपए आयकर चुकाते थे। वे दानवीर के रूप में प्रसिद्ध थे, अपने खेतों और ठेकेदारी कार्य में लगे अधिकांश सिन्धी मुसलमान-मजदूरों को उचित पगार के साथ घर-मकान आदि के लिए हर सम्भव सहायता प्रदान करते थे। काका प्रभदास ने लाड़काणा म्युन्सिपल के 28 साल प्रेसीडेन्ट और चेयरमेन के पदों पर रहते हुए शहर में बहुत सारे विकास कार्य किए। जल, बिजली, सड़क-निर्माण और चिकित्सालय, साफ-सफाई जैसी जन-सुविधाएँ सुलभ कराने के साथ-साथ शिक्षा केन्द्र भी स्थापित किए। वे जिला काँग्रेस कमेटी के सेक्रेट्री के रूप में कार्य करते हुए विभिन्न आजादी-आंदोलनों में जेल भी गए।

1949 में हिन्दुस्तान आने के बाद बम्बई में प्रभदास तोलाणी ने ठेकेदारी के बल पर ढेरों धन कमाया। श्रीमद्-भगवत् गीता उनका आदर्श ग्रन्थ था, जिससे लोक-हित का गुण उन्होंने ग्रहण किया। बम्बई में तोलाणी चेरीटेबल ट्रस्ट स्थापित किया। वे, शिक्षा के क्षेत्र में नारी शिक्षा को बहुत महत्वपूर्ण मानते थे। 1969 में उन्होंने हिन्दुस्तान के सबसे पिछड़े-आदिवासी क्षेत्र कच्छ-गुजरात के आदिपुर-गाँधीधाम में लाखों रुपए घाटा सहकर भी 'गाँधीधाम कालेजियट बोर्ड' के माध्यम से कई कॉलेज, नेत्र चिकित्सालय और सेवा केन्द्र स्थापित किए। नारियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कला, होम साइन्स और वस्त्र-निर्माण कला-केन्द्र भी खोले। उनके सुपुत्र श्री नन्दलाल ने गोवा में तोलाणी शिपिंग कार्पोरेशन नाम से जल-परिवहन संस्थान स्थापित किया।

जो मारने से नहीं मरता वो सिन्धी है

सिन्ध ! सिन्धीयों के सीने में है, और यदि सीने के अन्दर गोली जाएगी तो इसके बहते खून से जमीन पर सिन्ध का नक्शा बनेगा !!

सिन्धी मेहनती, थोड़े लाभ और अधिक बरकत के हामी हैं-समर्थक हैं, इसलिए सिन्धूनगर की हर एक गली में कम से कम एक छोटा घरू-हुनर का कारखाना(गृह उद्योग) जरूर है। वे हमलावरों की सैनिक-छावनियों में आर्थिक सम्पन्नता का ज्ञान लेकर घुस पड़े। जिससे हमलावर अपने आर्थिक लाभ के लोभ में खुश हुए और सिन्धीयों ने हमलावरों को यह खुशी देकर अपने अस्तित्व की रक्षा की।

सिन्धीयों ने इतिहास में तलवार उठाई, क्योंकि भूखे देशों के लोगों ने फौजें बनाकर इस खुशहाल देश पर हमले किए। किन्तु सिकन्दर, मोहम्मद बिन कासिम, अरगूनों, तुरखानों आदि हजारों हमलावरों के लगातार हमलों को सहने के बाद, सिन्धीयों ने अनुभव किया कि तलवार साथ लेकर जीना कठिन है। इसलिए उन्होने अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए तलवार फेंक कर तराजू उठाई। पर सिन्धीयों ने ये तराजू केवल हाथ में उठाई है और सिन्धी-तलवार हर सीने में रखी हुई है। वो तलवार हर उस योजना को काटकर दो टुकड़े करेगी जो उनके अस्तित्व पर हमले के रूप में होगी। उनसे उनकी जमीन छीनी गई है। वे आर्थिक रूप से अपना किला मजबूत करके उठेंगे और फिर सिन्ध के मुस्लिम भाईयों के साथ मिलकर उनके अधिकारों और उस जमीन के लोगों के लिए लड़ेंगे, जिसका नाम सिन्ध है। सिन्धीयों के ऊपर तरह-तरह के जुल्म किए जा रहे हैं, पर हार का भाव इनके खून में नहीं है। सिन्धीयों के लिए उनकी जमीन के टुकड़े जिसका नाम मुअन(मोहन) जो दड़ो है और जिसमें मानव जाति की सभ्यता का आरम्भ हुआ। जिसके कई राज आज भी खुलने बाकी हैं। उसके लोगों को किस निर्ममता से काटा जा रहा है ! जिनकी जमीन सिन्ध से हिन्द को नाम मिला, उस हिन्द में सिन्धीयों की हस्ती को मिटाने की कोशिश की जा रही है। कल्याण के उल्हासनगर की सैनिक छावनी में जहाँ सिन्धीयों को लाकर पटक दिया गया। जहाँ न बिजली और न पानी की सही व्यवस्था थी, घर रूपी तम्बुओं की हालत ये थी कि छोटे-छोटे नवजात-शिशुओं को सूअर मुंह में दबाकर उठा ले जाते थे। वहाँ कुछ सालों बाद हजारों सिन्धीयों ने जुलूस निकालकर, इसे सिन्धू नगर नाम देना चाहा तो पुलिस ने उन पर लाठियाँ बरसाईं। राशन देर से मिलने पर बूढ़ी औरतों ने शोर मचाया तो पुलिस ने गोलियाँ बरसाईं। पर जो मारने से नहीं मरता, वो सिन्धी है।

भारत विभाजन के बाद सिन्धीयों को दी जा रही ये तरह-तरह की मुसीबतें, इन्हें और भी अधिक ताकतवर बनाएगी। कोई चिन्गारी लगी हुई है ! कौन मार सकेगा इस जाति को ? जिसके साहित्यकार और कलाकार जिन्दा हैं, जो न केवल वक्त की आवाज सुनना जानते हैं बल्कि इसकी राह भी बनाना जानते हैं। और जिस जाति के जवान सिन्ध के नाम पर लाठियाँ खा सकते हैं, औरतें बन्दूकों के सामने सीना तान सकती हैं, वो जाति आखिर खत्म हो भी कैसे सकती है ? सिन्धी जाति दुनियाँ के बाग का एक महकता हुआ फूल है, इसके बूटे की रक्षा होनी चाहिए। उस आदमीं के मुंह पर थप्पड़ मारनी चाहिए जो सिन्धीयों को, अन्य जातियों में अपनी जाति को मिला देने की बात कहता है। उसकी गर्दन तोड़ देनी चाहिए जो सिन्धी भाषा को खत्म करने की सलाह देता है। और जो कहता है सिन्ध को भुला दो, उसकी जूतों से पिटाई करनी चाहिए। .. तारीख मोकल ते (इतिहास अवका श पर) के अनुवादित-सम्पादित अन्श ..

पाक के नापाक इरादों पर पानी फेरा

राय बहादुर धर्मदास हीरानन्दाणी ने बचाई झूनागढ़ रियासत

हिन्दुस्तान तथाकथित स्वतन्त्रता के नाम पर मुस्लिम धर्मान्धता का शिकार हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप देश का विभाजन हुआ और पाकिस्तान बना। यह विभाजन कोई रातों-रात नहीं हुआ बल्कि इसकी नींव, प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के तुरन्त बाद मुस्लिम-एंग्लो इंडियन संगठन के रूप में पड़ चुकी थी। इस नींव को पक्का किया गया 1920 में कट्टर-पन्थी मुस्लिमों द्वारा छेड़े गए 'खिलाफत' आंदोलन के द्वारा। जिसमें गाँधीजी की सलाह पर कॉंग्रेस के अदूरदर्शी नरम-पंथियों ने सहयोग दिया। इस सहयोग का विरोध खुद मोहम्मद अली जिन्ना ने किया था। प्रसिद्ध देशभक्त और पत्रकार श्री वीरूमल बेगराज ने खिलाफत को 'आफत' कहा था। कट्टर-पन्थी विचारधारा का समर्थन करने वाला यह सहयोग औरों के लिए 'आफत' सिद्ध हुआ हो या नहीं किन्तु सिन्धीजनों के लिए यह वास्तव में 'आफत' ही सिद्ध हुआ। जिनको विभाजन में अपना पूरा सिन्ध खोने के कारण देश-दुनियाँ में बेघर-निर्वासित जीवन जीना पड़ा। किन्तु बेघर और निर्वासित जीवन की ढेरों 'आफतें' झेलते हुए भी सिन्धीजनों ने अपना 'देश-धर्म' नहीं छोड़ा। इसका एक बहुत बड़ा प्रमाण, रायबहादुर धर्मदास हीरानन्दाणी ने झूनागढ़ रियासत को पाकिस्तान में मिलने से बचाकर दिया। गुजरात की इस झूनागढ़ रियासत पर एक मुस्लिम नवाब का अधिकार था। जो इस रियासत को हिन्दुस्तान के एक तुकड़े पाकिस्तान में मिलाना चाहते थे। जबकि कई हिन्दू रियासतें स्वाभाविक रूप से हिन्दुस्तान में मिल गईं थीं।

नवाब और उनके वजीर (प्रधानमन्त्री) अब्दुल कादिर दोनों अपनी रियासत को, पाकिस्तान के इस्लामी राज्य होने के कारण, हिन्दुस्तान में ही मिलाने के लिए सहमत थे। किन्तु हृदय-रोग के कारण उन्हें इलाज हेतु अमरीका जाना पड़ा था। इसलिए 1 मई, 1947 के दिन उनकी जगह पर शाह नवाज भुट्टो को मुख्य वजीर बनाया गया। इन्हीं के पुत्र जुल्फिकार अली भुट्टो पाकिस्तान के पाँचवें प्रधानमन्त्री बने थे, जिन्हों ने भारत के साथ एक हजार साल तक युद्ध जारी रखने का दावा किया था। राय बहादुर हीरानन्दाणी, झूनागढ़ रियासत के रेवेन्यू कमिश्नर (राजस्व आयुक्त) थे। उन्हों ने, शाह नवाज भुट्टो के वजीर बनने पर अपने सहयोगी शंभू प्रसाद देसाई से कहा था, "यह व्यक्ति धूर्त-बुद्धी वाला है, इससे सावधान रहना।"

14 अगस्त, 1947 के दिन झूनागढ़ रियासत के नवाब मोहब्बत खान की दरबार, उनके खास दरबारियों से भरी हुई थी। इन दरबारियों में हिन्दू और मुस्लिम दोनों शामिल थे, जिनमें मुस्लिमों की संख्या अधिक थी। दरबार में फैसला लिया जाना था कि झूनागढ़ रियासत को हिन्दुस्तान में मिलाया जाए या पाकिस्तान में। फैसला क्या लेना था, फैसले का नाटक भर करना था। क्योंकि एक तो शाह नवाज भुट्टो ने नवाब की बेगम को इस्लामी पाकिस्तानी सब्ज-बाग के रंगीन सपने दिखाकर पहिले ही बहका दिया था। दूसरे दरबार में मुस्लिमों की बहुसंख्या तो थी ही, पाकिस्तान के पक्ष में फैसला करने के लिए। इसलिए शाह नवाज भुट्टो ने हिन्दुस्तान विरोधी भाषण देते हुए कहा कि जरूरत पड़ने पर पाकिस्तानी सेना, समुद्री रास्ते से वेरावल बन्दरगाह से हमारी मदद के लिए आ जाएगी। नवाब दुविधा में थे और दरबार में चुप्पी सा छा गई। इस पर रायबहादुर हीरानन्दाणी ने खड़े होकर पूछा, "क्या झूनागढ़ रियासत आत्महत्या करना चाहती है ?" सुनकर भुट्टो सहित सभी मुस्लिम दरबारियों के चेहरे उतर गए। हीरानन्दाणी ने नवाब की तरफ देखते हुए कहा, "फैसला आपको करना है किन्तु ये दरबारी, भुट्टो के भड़काने पर गलत फैसला करवाना चाहते हैं। .. शेष अगले पृष्ठ पर ..

पाकिस्तान आपको कोई भी मदद नहीं कर पाएगा। झूनागढ़, सदैव हिन्दुस्तान का अंग रहा है, चारों तरफ इसकी जमीन व संस्कृति से घिरा हुआ है। इसे पाकिस्तान में मिलाना, आत्महत्या करने के समान होगा।''

नवाब ने उनकी बात अनसुनी करते हुए , पाकिस्तान में मिलने की घोषणा की। मुस्लिम दरबारियों ने तालियाँ बजाकर, इस घोषणा का स्वागत किया। हीरानन्दाणी ने फिर खड़े होकर कहा, ''मैं इस आत्मघाती फैसले का विरोध करता हूँ और अपने पद का त्याग करता हूँ।'' ये कहकर वे दरबार से बाहर निकल गए।

राय बहादुर हीरानन्दाणी, दरबार से निकलकर सीधे अपने घर आए और बैठक में उनकी राह तक रहे अपने सहयोगी अधिकारी शंभू प्रसाद देसाई से कहा, ''झूनागढ़ रियासत ने आत्मघात करने का फैसला किया है, मैं पद त्याग करने के लिए कार्यालय जा रहा हूँ।'' इसके बाद उन्होंने तुरन्त कार्यालय पहुँचकर अपना त्यागपत्र लिखा और बाहर आकर सीधे राजकोट की तरफ रवाना हो गए। क्योंकि वे जानते थे कि धूर्त भुट्टो बदला लिए बिना शान्त बैठने वालों में से नहीं है। उनका अनुमान बिल्कुल सही निकला। उनके दरबार से निकलते ही रियासत की पुलिस ने उनके पीछे-पीछे आकर, उनके घर को चारों ओर से घेर लिया। उनके सहयोगी ने पूछताछ करने पर बतलाया कि वे कार्यालय गए हैं, और जल्द ही घर लौटेंगे। पुलिस ने कुछ देर उनकी राह तकने के बाद शहर भर में खोज की किन्तु वे न मिलने थे और न ही मिले।

राजकोट तब सौराष्ट्र की राजधानी था, जहाँ सौराष्ट्र की छोटी-बड़ी 300 रियासतों के राजदूतों सहित अँग्रेज सरकार के राजदूत का कार्यालय भी था। हीरानन्दाणी ने झूनागढ़ रियासत से सम्बन्धित अधिकारियों और नेताओं को यह अशुभ समाचार देकर, सावधान रहने के लिए सचेत किया। इधर झूनागढ़ के पाकिस्तान में मिल जाने की खबर फैलते ही, हिन्दू जनता का पलायन शुरू हो गया। शंभू प्रसाद देसाई को गिरफ्तार कर लिया गया किन्तु वे लघुशंका का बहानाकर भाग निकले और सीधे सौराष्ट्र पहुँच गए।

उन दिनों संचार माध्यम बहुत ही सीमित थे। हीरानन्दाणी ने आनन-फानन में किसी तरह दिल्ली में सरदार पटेल को भी यह सूचना पहुँचाई। उनकी सूचनाएँ पाकर सौराष्ट्र की सभी हिन्दू रियासतों के राजाओं ने नवाब के इस कदम की तीव्र निन्दा और विरोध किया। स्वतन्त्रता के उत्सव के बीच राजकोट में एक अलग हलचल सी मच गई। शामलदास गाँधी सहित अन्य नेताओं की अगवानी और हीरानन्दाणी के मार्ग-दर्शन में जनता की एक सेना तैयार हो गई। जिसने 10 दिनों के अन्दर 25 अगस्त,1947 के दिन झूनागढ़ रियासत के बावरियावाड़ क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया। जिसके बाद झूनागढ़ रियासत में अस्थाई सरकार स्थापित की गई। जिसके आदेश पर 30 अगस्त के दिन नवाब के राजकोट वाले महल को भी अधिकार में ले लिया गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ फोन और पत्र-व्यवहार के द्वारा हाय-तौबा(माफी माँगने) करने के बाद भी जब बात नहीं बनी तो हारकर नवाब, अपनी बेगम और शाह नवाज भुट्टो के साथ पाकिस्तान भाग निकले। इस तरह राय बहादुर धर्मदास हीरानन्दाणी की दूरदर्शी सूझ-बूझ और बहादुरी के कारण स्वतन्त्र भारत की एक रियासत, धर्मान्ध और नापाक पाकिस्तानियों के कब्जे में आने से बच गई। और झूनागढ़ रियासत, एक सजग देश-भक्त के कारण भारत में मिलाई जा सकी।

राय बहादुर धर्मदास हीरानन्दाणी एक अनुभवी, बहादुर और ईमानदार प्रशासक थे। अँग्रेजी शासन के समय वे, कलेक्टर और बाद में सेक्रेटरी के पद पर रह चुके थे। सोरठ में लोक आपूर्ति विभाग के निदेशक का पद भी सम्भाल चुके थे। उन्होंने कई राजस्व सुधार लागू किए थे, इसलिए उन्हें राजस्व आयुक्त का दायित्व सौंपा गया था। झूनागढ़ रियासत को भारत में मिलाने वाली उनकी कहानी को स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में अनदेखा किया गया है किन्तु उनकी देश-भक्ति को, देश सदैव याद रखेगा।

... साभार - श्री जयन्त रेलवाणी के सिन्धी लेख के अनुवादित व सम्पादित अंश ...

अनोखी देश-भक्ति का अनोखा उदाहरण

गोवा मुक्ति संग्राम में सिन्धी वीरों ने झेली थी गोलियों की बौछार



तिरंगा लिए रूप साधवाणी तथा जन-समुदाय



गोवा कूच के लिए तैयार सिन्धी युवक

प्रसिद्ध पत्रकार स्वर्गीय श्री बलदेव गाजरा ने **आजादीअ में सिन्धु जो भागु** नामक पुस्तक में सिन्धी वीरों द्वारा 1955 में हुए गोवा मुक्ती आंदोलन में भाग लिए जाने का सचित्र विवरण दिया है। जिसे पढ़कर गर्व अनुभव होने के साथ मन में विचार उत्पन्न होता है कि सिन्धी जाति ने जिस अनोखी देश-भक्ति का प्रमाण प्रस्तुत किया है, वह यदि स्वतन्त्रता-संग्राम के इतिहास में पढ़ाया जाता तो शेष भारतीय-बन्धुओं के मन में सिन्धी जाति के प्रति सम्मान का भाव उत्पन्न होता। सिन्धी जाति का यह संग्राम इस संदर्भ में अनोखा है कि 1947-48 में भारत-विभाजन में अपनी जन्म-भूमि और देश की मुक्ति के लिए सैकड़ों बलिदान देने के बाद भी अपनी धरती से निर्वासित होना पड़ा। न रोजी-रोटी; न रहने की उचित व्यवस्था किन्तु फिर भी सिन्धीयों ने देश के एक प्रान्त की मुक्ति के लिए गोलियाँ खाकर, अपनी देशभक्ति का परिचय दिया।

श्री बलदेव गाजरा के दिए विवरण के आधार पर लिखा लेख इस प्रकार है --दक्खन हैदराबाद, झूनागढ़ आदि छोटे-छोटे देशी रजवाड़े-रियासतों को अधिकार दिए कि वे चाहे तो स्वतन्त्र होकर रहें या भारत अथवा पाकिस्तान में मिल जाएँ। कश्मीर की कलंकित विशेष स्थिति इसी का परिणाम है।

'लौह-पुरुष' सरदार वल्लभ भाई पटेल ने हैद्राबाद के सम्बन्ध में एक बार कहा था कि हिन्दुस्तान के पेट के अन्दर यह अलग तुकड़ा बनकर कैसे रह सकता है ? कुछ केन्द्रीय नेताओं ने भय प्रगट किया कि हैद्राबाद के निजाम के पास हिन्दुस्तानी सेना से दुगनी सेना है, इसलिए हिन्दुस्तानी सेना, निजाम की सेना से कैसे टकरा सकती है ? किन्तु सरदार पटेल ने हिन्दुस्तानी पुलिस भेजकर ही निजाम की सेना को धूल चटा दी थी। साथ ही हैद्राबाद की जनता ने भी, भारत के साथ रहने का निर्णय किया।

गोवा का फोड़ा अभी शेष था। 1955 में यह समस्या भी हल हो गई। गोवा मुक्ति आन्दोलन की शुरुवात भी हिन्दुस्तान से हुई, जिसके बाद पुर्तगालियों को भी अँग्रेजों की तरह गोवा छोड़कर जाना पड़ा। जिसकी मुक्ती के लिए भी सिन्धीयों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। महाराष्ट्र के कल्याण जिले की उल्हासनगर सिन्धी कैम्प के एक नौजवान वकील श्री रूप साधवाणी को अभी कल्याण कैम्प में वकालत करते हुए केवल छह साल भी नहीं बीते थे कि गोवा मुक्ती आन्दोलन की तैयारियाँ सारे देश में होने लगीं। पर कल्याण कैम्प में चुप्पी छाई हुई थी। ... **शेष अगले पृष्ठ पर ...**

यह देखकर इस युवा वकील ने 1 अगस्त 1955 के दिन एक पर्चा निकालकर कल्याण कैम्प के लोगों इकट्ठा किया और एक सभा में गोवा मुक्त आंदोलन में भाग लेने के लिए ललकारा। सभा में कई सहमति के बाद 11 अगस्त के दिन 10 सिन्धी जवानों सहित लगभग 100 जवानों की एक टोली साछ लेकर पूना के रास्ते से गोवा की तरफ कूच किया। इस टोली ने पूना में दूसरे दिन शाम को आयोजित एक सभा में भाग लिया और वहाँ से भी कई जवान बेलगाम की तरफ निकल पड़े। जहाँ से 13 अगस्त की सुबह लगभग 2000 आन्दोलन-कारियों का 5 मील लम्बा जन-सैलाब आगे बढ़ चला। जिसके आगे-आगे चल रही एक कार की छत पर तिरंगा-झन्डा लहराने के साथ नारे लगाते हुए रूप साधवाणी सवार था।

प्रसिद्ध विद्रोही साहित्यकार मोहन कल्पना, 40 मील पैदल चलकर इस विशाल जत्थे में शामिल हुए थे। हिन्दुस्तान-गोवा सीमा पर सात सैनिक-चौकियाँ थीं। इसलिए यह जन-सैलाब, सात टोलियों में बँटकर आगे बढ़ा। 15 अगस्त की सुबह जब रूप साधवाणी की टोली एक चौकी के पास पहुँची तो 6 सैनिक हाथ में स्टेनगन तानते हुए उनके सामने आ गए। एक सैनिक-अधिकारी ने चिल्लाकर कहा "झन्डा मुझे दो और आगे मत बढ़ो, नहीं तो गोलियों से भून दिया जाएगा।" रूप साधवाणी ने शान्त और स्थिर स्वर में उत्तर दिया, "ये बढ़े हुए कदम रुकेंगे नहीं। मुझे विश्वास है कि आप हमें भून नहीं सकते। आप भी हिन्दुस्तानी और हम भी हिन्दुस्तानी, सभी भाई-भाई हैं और भाई, भाई को मार नहीं सकता।"

ये कहकर रूप की टोली आगे बढ़ने लगी, कुछ कदम चलते ही बाध्य होकर सेनाधिकारी ने चिल्लाकर फायर करने का आदेश दिया। सैनिकों की स्टेनगन से गोलियों की बौछार सी छूट पड़ी। आवाज सुनते ही सभी आन्दोलनकारी तुरन्त धरती पर लेट गए किन्तु चार आन्दोलनकारी घायल हुए, एक गोली रूप के कन्धे को छेदती हुई आर-पार निकल गई और वह धरती पर गिर पड़ा। आन्दोलन के नेताओं के आदेश पर चारों घायलों को हिन्दुस्तानी सीमा में लाकर सावन्तवाड़ी हस्पताल में भरती करवाया गया।

इस मुक्ती-संग्राम में रूप साधवाणी सहित कुल 11 सिन्धी जवान थे। जिनके नाम इस प्रकार थे- (1) प्रसिद्ध साहित्यकार-पत्रकार मोहन कल्पना (2) थाँवरदास (3) गागनदास (4) लालचन्द स्वराजी (5) गाँधी धाम कच्छ का एक जवान (6) सतराम करमचन्दाणी (7) जीवण शहदादपुरी (8) गिरधारीलाल (9) गाँधीनगर के नानकराम और (10) नेणूमल मीरचन्दाणी।

मंजिल गाह मस्जिद की आड़ में नादिरशाही लूट और हत्या

1938 में कुरान शरीफ के आदेश के विपरीत एक योजना के तहत, सिन्ध के सक्खर में प्रसिद्ध हिन्दू तीर्थ स्थान साध-बेला के ठीक सामने रातों-रात मंजिल गाह नामक मस्जिद खड़ी की गई। और फिर साध-बेला से आरती और घन्टे आदि की आवाज बन्द करवाने के लिए, जी. एम. सैय्यद और मुल्ला-मौलवियों के भड़काने पर आसपास के गाँवों और शहरों के मुस्लिम गुन्डे जमा हुए। जब पुलिस ने रोकने के लिए लठ बाजी और गोली-चालन की तो इन गुन्डों की भीड़ ने, सारे शहर पर हमला बोल दिया। जहाँ आर्य समाज की सजगता के कारण हिन्दुओं ने डटकर मुकाबला किया।

मुस्लिम इतिहास से पाठ न पढ़ने वाले कुछ काँग्रेसी नेताओं ने मुस्लिमों के साथ मिलकर, हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया। किन्तु आसपास के गाँवों में हिन्दुओं को इस तरह लूटा और निर्ममता से मारा गया जैसे नादिरशाही फौज ने दिल्ली को लूटा-मारा था। आतंकियों ने कई घरों में आग लगा दी। यह आतंकी लूट-पाट अन्य जिलों के गाँवों में भी फैली।

हिन्द में नई सिन्ध का सिरजनहार--भाई प्रताप



सिन्ध से बेघर होकर आए सिन्धीयों की हालत का दुख, उस समय के सत्ताधीशों में से सरदार वल्लभ भाई पटेल को अवश्य था। इसलिए वे सिन्धी जाति को एक स्थान विशेष में बसाना चाहते थे। जयपुर में हुए कांग्रेस के सम्मेलन में जब सिन्धीयों को शरणार्थी कहा गया, तो सरदार पटेल ने ही सर्वप्रथम इसका विरोध करते हुए कहा था कि "सिन्धी जाति को शरणार्थी समझना और कहना सिन्धीयों के साथ अन्याय है। सिन्धी, उच्च-कोटि के व्यापारी हैं, जो अपने व्यापार से भारत की आर्थिक-स्थिती को मजबूती प्रदान कर सकते हैं। इसलिए सिन्धी, शरणार्थी नहीं बल्कि पुरषार्थी हैं।"

प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्यू एन.साँग ने सिन्ध देश के चार भागों में कच्छ को भी सिन्ध का एक भाग बतलाया था। कच्छ के मालिया मियाणा गाँव के पास 'दाहर नगर' इसका एतिहासिक प्रमाण है। जयपुर सम्मेलन में एक प्रस्ताव पास करके तय किया गया कि सिन्ध और सिन्धीयों की, गुजरात के कच्छ से क्षेत्रीय सम्बन्ध होने के कारण भाषाई तथा सांस्कृतिक व एतिहासिक निकटता है। इसलिए इन्हें वहाँ बसाने की व्यवस्था की जाए। इसे साकार करने का कार्य, विदेशों में व्यापार करने वाले सिन्ध-वर्की सेठ प्रतापराय डीयलदास को सौंपा गया। जो एक उच्च स्तर के धनवान तथा कुशल प्रशासक थे, विदेशों में भी उनके घनिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध थे। वे, नेहरू-परिवार के भी अति निकट थे। पारित प्रस्ताव के अनुसार भाई प्रताप, तन-मन और धन से सपरिवार, कच्छ में नई सिन्ध बसाने में जुट गए। भाई प्रताप, एक दूरदर्शी समाज-चिन्तक थे। उन्हों ने इस हेतु सिन्धू रीसेटिलमेन्ट(एस. आर. सी.) नामक संस्था स्थिापित की और स्वयं इसमें मैनेजिंग डॉयरेक्टर के रूप में काम किया।

संस्था में सर्व-साधारण वर्ग की भागीदारी सुनिश्चित करने वाली एक कार्य-योजना बनाई। दस-दस रुपए मात्र के शेयर जारी कर, सर्व-साधारण व्यक्ति को इसका भागीदार बनाया गया। इस संस्था में काम चलाने वाले सिन्धी और काम करने वाले भी सिन्धी थे। कच्छ में इस नई सिन्ध के निर्माण के लिए उन्होने कांडला बन्दर से आठ किलोमीटर दूर गांधीधाम नामक एक बड़े व्यापारिक नगर के वसाहट के साथ, इससे पाँच किलोमीटर की दूरी पर अंजार के पास हीराबाद जैसी आदिपुर नामक कालोनी भी बनाने की योजना बनाई। भाई प्रताप ने इसके लिए डुग्गी-पिटवाकर, सारे हिन्दुस्तान से इन्जीनियर, कारीगर और मजदूर बुलवाए।

इससे पहिले यह श्रेत्र बंजर-भूमी और बबूल के घने-जंगलों के रूप में वीरान था। जहाँ बड़े-बड़े चूहे, बिच्छू और नाग जैसे विषैले जीवों की भरमार थी। भाई प्रताप ने इस जंगल में मंगल मनाने का अनोखा काम कर दिखाया। जिसे देखकर किसी सिन्धी कवी ने लिखा,"खाकि खे सोनु बणाइणं वारा सिन्धी, बरपट खे बाग बणाइणं वारा सिन्धी " अर्थात राख को सोना, बंजर-धरती को बाग बनाने वाले सिन्धी। उन्होने घोषणा की कि यदि कोई सिन्धी-भाई, शारीरिक रूप से श्रम नहीं कर सकता तो वो एक चूहा पकड़कर लाए और एक आना कमाकर ले जाए। बिच्छू पकड़कर लाने वाले को चार आना और नाग पकड़कर लाने वाले को एक रुपया दिया जाएगा। जैसा भी काम कर सकते हो आओ आकर कमाओ, खाओ और रहो। इस हेतु खूब प्रचार भी करवाया था। ... शेष अगले पृष्ठ पर ...

आदिपुर, गांधीधाम और कांडला-बन्दर

भाई प्रताप ने इस नई सिन्ध को, सिन्धू घाटी सभ्यता के 'मुअन जो डड़ो' में प्राप्त आदर्श नगर-निर्माण पद्धति के अनुरूप बसाने की कार्य-योजना पर कार्य आरम्भ किया। उन्होंने यह बात ध्यान में रखी कि आदिपुर में ऐसे सिन्धी-परिवार, जिनके सदस्य देश-विदेश में व्यापार अथवा नौकरियाँ करते हुए स्वयं भले ही बाहर रहें किन्तु उनके परिवार आदिपुर में ही रहें।

इस तरह आदिपुर नामक एक बड़ा नगर, जिसमें धनवानों से लेकर महनत-कश मजदूरों आदि समाज के हर वर्ग के लिए बसने योग्य पक्के-मजबूत और सुन्दर भवन तैय्यार किए गए। जो कि पहिले कब्जा लेकर रहो और बाद में आसान किश्तें देने वाली किराया-खरीद शर्तों पर सुलभ कराए गए। जहाँ निम्न प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध थीं :-1. प्रति-दिन की आवश्यक वस्तुओं को एक ही स्थान पर सुलभ कराने के लिए 56 दुकानों वाला, एक चौड़ी-सड़क से जुड़ा हुआ शॉपिंग-सेन्टर।
2 . आवागमन के लिए कान्डला से भुज तक जुड़ी रेल तथा बस-सेवा जो गांधीधाम और आदिपुर के बीच उपलब्ध थी, जिसकी सड़क, कच्छ-गुजरात स्टेट हाईवे से जुड़ी हुई थी।
3. शिक्षा के लिए स्कूल-कॉलेज, आवा-जाही के लिए चौड़ी सड़कें, सुन्दर-सरोवर, बाग-बगीचे तथा सांस्कृतिक-भवन, स्वास्थ्य -चिकित्सा के लिए हॉस्पीटल, बैंक तथा पोस्ट-ऑफिस सभी प्रकार की सुविधाएं नगर के मुख्य-मार्ग पर उपलब्ध थीं। 4. तोलाणी ग्रुप ऑफ कॉलेजिज् जिसमें पॉली-टेक कॉलेज के प्रिंसीपाल, प्रसिद्ध साहित्यकार-कवी श्री हरि 'दिलगीर' नियुक्त किए गए।

बाद में यहाँ मैत्री-विद्यालय आदि शिक्षण-केन्द्र भी स्थापित किए गए। 5. सिन्ध-हिन्द के प्रसिद्ध क्रान्तिकारी कवी श्री किशनचन्द 'बेवस' की स्मृति में 'बेवस वाणी मन्दिर', (जिसके प्रमुख दादा हूँदराज 'दुखायल' थे) तथा गांधी-समाधि जैसे दर्शनीय स्थलों वाले आदर्श नगर का निर्माण 1954-55 में पूरा हो चुका था। आदिपुर में समृद्धि और जनसंख्या में बढ़ौतरी के कारण क्षेत्रीय वसाहट भी बढ़ती गई और तब ब्रह्मं-नेष्ठि सन्त लीलाशाह की समाधि भी यहीं स्थापित की गई।

समय की गति के साथ तोलाणी ग्रुप के अन्य कॉलेज भी खुलते गए। आदिपुर में, साहित्यकारों के लिए एक 'मलीर' नामक विशेष गाँव भी बसाया गया। जहाँ बाद में सिन्धी भाषा, कला-संस्कृति और सभ्यता के प्रचार-प्रसार हेतु प्रसिद्ध सिन्धालॉजी की स्थापना भी की गई। मलीर में आकर बसे कुछ साहित्यकारों में प्रमुख थे सर्व श्री दादा हूँदराज 'दुखायल', श्री हरि 'दिलगीर' प्रसिद्ध गीतकार गोवर्धन भारती। कई नए साहित्य-धर्मी, गायक और नाटककार आदि भी आकर यहाँ बसने लगे।

गांधीधाम की वसाहट के लिए एक विशेष बात ध्यान में रखी गई कि यह एक बड़ा व्यवसायिक महानगर बने, जहाँ व्यापार और नौकरी करने वाले लोग गांधीधाम में ही निवास करें। इसलिए यहाँ बड़े राजसी ठाठ-बाट वाले भव्य-भवनों के साथ-साथ छोटे मकानों तथा हर प्रकार के व्यापार के लिए दुकान और बाजार बनाए गए। गांधीधाम के चारों तरफ जमीन खाली रखी गई थी ताकि भविष्य में जरूरत पड़ने पर अन्य कई कालोनियां आदि बनाई जा सकें। बाद में ये कालोनियाँ भी बनीं और इस तरह गांधीधाम अन्जार, कांडला-बन्दर और आदिपुर से सीधे-सीधे जुड़ गया। नई सिन्ध में विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध थीं। 1. **फ्री ट्रेड जोन** (कर मुक्त श्रेत्र)-यह बन्दर भारत के समुद्र-पार व्यापार का बहुत बड़ा केन्द्र था जो भारत के अति-आधुनिक साज-सामान से सजे 6 बड़े बन्दरगाहों में से एक था। भाई प्रताप ने अपनी पहुंच और बुद्धिमानी के बल पर इस नई सिन्ध के लिए जो सरकारी सुविधाएं प्राप्त कराईं उनमें कांडला बन्दर को

... शेष अगले पृष्ठ पर ...

कर मुक्त श्रेत्र घोषित करवाया। 2. **कांडला पोर्ट ट्रस्ट, आई. ओ. सी. इफको** आदि सिन्धीयों के लिए नौकरियां प्राप्त करने के प्रमुख केन्द्र थे। 3. **रेल्वे डीजल शेड** - व्यापार और सरकारी नौकरियों का एक और बहुत बड़ा केन्द्र। 4. **डीसा-कांडला-भुज रेल्वे जोन** - अरबों रुपए की लागत वाले इस जोन में भी उपरोक्त सुविधाएं सुलभ थीं।

सुनहरे स्वप्न के विरुद्ध षड्यन्त्र

सिन्धी जाति के सुनहरे भविष्य के लिए 4-5 साल में ही हुआ यह अद्‌भुत विकास और वैभव, कई राजनीतिज्ञों की आँख में काँटा बनकर चुभने लगा। इसलिए तुरन्त ही 1960 में एक छड्यन्त्र रचा गया। सिन्धीयों को भय और लोभ-लालच देकर, एस. आर. सी. के शेयर खरीद लिए गए। आवश्यक शेयर खरीदने के बाद गैर सिन्धी जाति के जलकुकड़ों और कुछ गद्दार भस्मासुर सिन्धीयों ने मिली-भगत करके एस. आर. सी. की मैनेजमेन्ट पर कब्जा जमाकर, डॉयरेक्टर पद भी हथिया लिया। भाई प्रताप को मैनेजिंग-डॉयरेक्टर पद से हटा दिया गया। इतना ही नहीं इन नराधमों ने नीचता की सीमां लांघकर, सिन्धी जाति के इस सुनहरे सपने को साकार करने के लिए भगीरथी-गंगा उतार लाने वाले भाई प्रताप पर एक झूठा अदालती केस भी चलाया। जिसके आधार पर, भाई प्रताप को जेल में ठूंस दिया गया। इस लज्जाजनक कार्य के विरुद्ध नं तो किसी सिन्धी राजनेता की आवाज बुलन्द हुई और नं ही कोई सामाजिक आन्दोलन हुआ। हिन्दुस्तान तो हिन्दुस्तान, कच्छ की इस नई सिन्ध में बसे तथाकथित राजनेता और साहित्यकार तक मुंह छिपाकर बैठ गए। अपने ही घर के जाति-भाईयों की इस विश्वास-घाती मार के शिकार हुए भाई प्रताप, माननसिक रूप से इतने पीड़ित हुए कि उन्होंने इस झूठे केस के विरुद्ध लड़ने से साफ इन्कार कर दिया। यह तो उनके निजी सम्बन्ध थे महाराष्ट्र की तत्कालीन राज्यपाल और नेहरू की बहिन श्रीमति विजयालक्ष्मी पन्डित से, जिनके माफी-नामे पर भाई प्रताप को जेल से छोड़ा गया। परन्तु इस घातक-आधात से भाई प्रताप के मन में और अधिक जीने की इच्छा शेष नं रही और दिल के दौरे के कारण उनकी निष्काम पवित्र-आत्मा स्वर्ग सिधार गई।

आजादी के तुरन्त बाद हुई यह दुर्घटना, हमारे धार्मिक और राजनीतिक निकम्मेपन का, दूसरा सबसे बड़ा दुर्भाग्यपूर्ण परिणाम सिद्ध हुई। जिसके कारण हमने अपने अस्तित्व को सुरक्षित रखने वाला, बना-बनाया एक गढ़-किला या आदर्श राज्य खो दिया। जैसे एक बार फिर से प्राप्त सिन्धू की गोद को खुद ही ठुकरा दिया। हमारी इस पुरुषार्थ-हीनता के कारण, हमारी आने वाली पीढ़ियों को इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ रहा है। इसके लिए हमारी आज की "पीढ़ियाँ पछताएँगी।"

एक अन्य लेख के अनुसार भाई प्रताप जानते थे कि कच्छ के जाड़ेजा महाराजा के पूर्वज कभी सिन्ध से ही कच्छ में आकर बसे थे। इसलिए वे, नई सिन्ध के निर्माण के लिए महाराजा के महल में जाकर उनसे मिले। इस राज-परिवार की स्त्रियाँ, किसी पराए पुरुष के सामने नहीं आती थीं। किन्तु महारानी ने भाई प्रताप को बुलाकर कहा कि, " तुम सिन्धी लोग, हमारे पुत्र जैसे हो। सिन्धीयों को कच्छ में बसाकर हमें बहुत खुशी होगी।" महाराजा ने इसके लिए खुशी-खुशी 18 हजार एकड़ जमीन प्रदान की थी। भाई प्रताप ने इसी जमीन पर आदिपुर, गोपालपुरी व गांधीधाम नाम के शहर बसाए थे। "यह जमीन सिन्ध से आए हिन्दुओं के लिए" नामांकित है। ऐसा उल्लेख, आज भी यहाँ के सरकारी दफ्तर में दर्ज है। जिसे बाद में पं. नेहरू ने घटाकर केवल २.५ हजार एकड़ कर दिया था। भाई प्रताप, स्वतन्त्रता-संग्राम सेनानियों में प्रथम-पंक्ति के सेनानी थे। वे गौरवशाली और स्वाभिमानी सिन्धी -जाति की सच्ची प्रतिमूर्ति थे।

... **शेष अगले पृष्ठ पर** ...

इस नई सिन्ध के लिए उन्हों ने जर्मनी और स्विजरलैन्ड से विशेषज्ञ बुलवाकर रात-दिन साथ बैठकर उनसे नक्शे आदि तैय्यार करवाए थे। हर रोज हवाई यात्रा करके दिल्ली व जर्मनी से सीमेन्ट की चादरें मंगवाईं थीं। उस बन्जर-धरती पर पेड़-पौधों की कतारें भी लगवाईं थीं। जिसे देखकर बाद में बादल भी झूम-झूम बरसे थे। भाई प्रताप ने इस नई सिन्ध में, दक्षिण-भारत से "निर्वासितेश्वर" नामक दो हजार साल पुरानी मूर्ती लाकर एक नए घर में स्थापित कर, उसे मन्दिर का रूप दिया था। मन्दिर में विदेशों में व्यापार करने वाले सिन्ध वर्की व्यापारियों के मुखाकृति वाली, आँखों में काजल और शुद्ध घी अथवा मक्खन से चमचमाते-चेहरे वाली मूर्तियाँ भी विराजमान कराई थीं।

अखन्ड भारत का स्वर्ग सिन्ध-पन्जाव सचमुच पाक-पवित्र स्थान था, तभी तो पापियों ने भी इसे पाक-स्थान नाम दिया। इसलिए उस पवित्र भूमी को छल-कपट से हाथों-हाथ देने-लेने वालों को इस महापाप का फल भोगना पड़ा है। अपनी ही माँ-मातृभूमी के तुकड़े करके, हत्या करने वाले हत्यारों का एक मात्र धर्म था कुर्सी और जात थी तो केवल कुरसिया याने बुराई के रसिया। कहने को भले ही वे मुसलमान और हिन्दू थे।

जैसा कि कहा गया है,"राम विरोधी, अस होईहे हाल तुहारा, बचहि नं एकहु रोवनहारा।" इस कुकर्म के फल-स्वरूप मातृहन्ता-कुरसियाओं के कुल का सर्वनाश इधर भी हुआ है, उधर भी। और जहाँ तक आजादी नाम की शहजादी की बात करें तो वो आज तक नं इधर है, नं उधर। अभी तो शह और मात का खेल जारी है, क्योंकि मातृ-हन्ता पापियों केपाप का फल-फलना जारी है। अभी तो कुरसिया-रावणों की जयजयकार के बदले थू-थूकार और जूतम-पैजार होनी बाकी है। उसके बाद अन्तिम फल-फलेगा कुरसियाओं के अग्नि-संस्कार का, रावण-दहन का। 'राज्याभिषेक' के नाम पर 'बनवास' भोगने वाले सिन्धी, भक्त प्रहलाद और सिया-राम के सच्चे वंशज सिद्ध हुए हैं। सती-सीता की इस सन्तान-रूपी 'सांच को आंच' न सतयुग में, नं ही त्रेता के राम-युग में आई थी। नं तो द्वापर और नं ही कलयुग में आई है। इस विभाजन रूपी बनवास की 'अग्नि-परीक्षा' में सुरसिया रूपी 'सिन्धी-सोना', कुन्दन बनकर और भी अधिक चमक-दमक उठा है। वास्तव में स्वतन्तत्रता-इन्डिपेन्डेन्स अर्थात् आत्म-निर्भरता तो हम सिन्धीयों ने ही प्राप्त की है। तभी तो भारत भर के सुधिजन कह उठते हैं,"भूखे भारत को रोजी-रोजगार सिखा कर, कमाना-खाना सिखाया। सिन्धी समाज ने जीना सिखाया।"

मौत को शह देकर मात देने की आदत है सिन्धी शहीदों को, यूँ ही नहीं कहलाते हम सिन्धी, मौतबर! हमारी मौत को शह देने की आदत वाली शहादत, व्यर्थ नहीं जाएगी। आजादी नाम की शहजादी! निकल पड़ी है सिन्धू-भवानी के राज्याभिषेक का संदेश लेकर। क्योंकि सिन्धू-भवानी के शेर! अभी-अभी तो जागने शुरू हुए हैं। अभी-अभी तो भारत के पहिले स्वतन्त्रता सेनानी सिन्धू-भवानी के सपूत दाहर, जौहर-प्रथा की प्रथम-प्रणेता महारानी लाड़ी, अद्भुत वीरांगनाएँ-सिरजा और परमीं आदि वीर-चरित्रों की जय-जयकार के नारे गूँजने शुरू हुए हैं। सिन्धू-भूमी अमर रहे! और मरसूँ-मरसूँ सिन्धु नं डेसूँ! जीए-सिन्ध! के बलिदानी नारे, इधर भी और उधर भी धरती-आसमान गुँजा रहे हैं। इसलिए "पीढ़ियाँ पछताएंगी" नहीं बल्कि गर्व से इठलाएंगी अपने पूर्वजों के इस सगर्व-स्वीकृत बनवास पर-निर्वासन पर। हर धीर-वीर जाति को अग्नि-परीक्षा से गुजरना पड़ता है, यही गौरवशाली इतिहास रहा है हमारी सिन्धी-जाति का। क्योंकि "ये इश्क नहीं आसां, बस इतना समझ लीजे, इक आग का दरिया है और डूबके जाना है।"

(आलेख - श्री राधाकृष्ण 'राही' की पुस्तक "पीढ़ियूँ पछिताईंदियूँ" के आधार पर लिखा गया है)

सिन्धी समाज ने जीना सिखाया -- चिन्तामणि मिश्र

सतना के बाजार की सच्चाई तो यही है कि सन् 1920 में सर्वे दफ्तर के आ जाने से अचानक रौनक बढ़ी। हजारों नगद-कलदार जेबों में डाले उपभोक्ता, बाजार को मिल गए। ये लोग नौकरी-पेशा थे, घर-परिवार से दूर थे। इनका पैसा बजाजी, बिसात-खानों (जुआघरों), हलवाईयों, तवायफों और इनका चौका-बरतन करने वालियों, शराब और कबाब पर सर्वाधिक खर्च होने लगा। सतना, सन् 1948 तक एक ऊँघता हुआ कस्बा था। **बाजार में सबसे बड़ा विस्फोट तब आया जब सिन्धी समुदाय ने सतना की धरती पर कदम रखे। ये लोग, देश-विभाजन के घाव लिए अपनी धरती से उखड़े लोग थे।**

सतना के साथ-साथ विन्ध्य क्षेत्र की व्यापारिक, औद्योगिक, सांस्कृतिक धुरी को नए आयाम देकर कायाकल्प करने का श्रेय, इस इलाके में आ बसे सिन्धी समुदाय को जाता है। इस कारण इसका नाम इतिहास में दर्ज हो चुका है। सन् 1948 की 30 मार्च के दिन, सतना रेल्वे स्टेशन पर सिन्धी पुरषार्थियों को लेकर, जब पहिली बार स्पेशल ट्रेन आई तो कोई नहीं जानता था कि इस इलाके का ऐसा कायाकल्प होने के अंकुर का विस्फोट होने जा रहा है, जो विकास का वट-वृक्ष बनेगा।

सिन्धीयों के सतना आगमन से सतना के व्यापार और बाजार की काया ही पलट गई। उनीदा और ठिठक-ठिठक कर चलने वाला सतना बाजार, सिन्धीयों के आने के बाद पंख लगाकर उड़ चला। इनके आने के पहिले तक बाजार बिना किसी गुमाश्ता कानून के सुबह दस बजे के बाद खुलता था। पहिले नौकर, सेठजी के घर से चाबी लेकर दुकान आता, दुकान खोलता, सफाई करता और फिर ग्यारह बजे तक सेठजी आते। और सेठजी आते ही गद्दी पर तकिये के सहारे अधलेटे सुस्ताने लगते। अगर दुकान खुलते ही कोई ग्राहक आ जाता तो उसे धरती पर बिछे बोरे पर बैठकर, सेठजी का इन्तजार करना पड़ता। जब सेठजी आकर आधा घन्टा आराम कर लेते, तब ग्राहक को माल बेचा जाता। दो बजे सेठ, भोजन करने चले जाते। दुकान में या तो नौकर होता या दुकान बन्द हो जाती। सेठ, भोजन और आराम करके पाँच बजे तक वापस आते और सात बजे दुकान बन्द हो जाती, क्योंकि तब तक सट्टा, जूआ या रन्डियों के यहाँ जाने का समय हो जाता था। बाजार में दुकानदारों और ग्राहकों के बीच कोई रिश्ता नहीं था। दुकानदार अपने ग्राहकों को कोई सम्मान नहीं देते थे। ग्राहक, खरीददार होने पर भी उपेक्षित था।

सिन्धी समुदाय, हिन्दी और बघेलखन्डी बोली से अन्जान था, ग्राहक को भी इनकी बोली समझने में कठिनाई होती थी। किन्तु जल्द ही इन्होंने ग्राहक की बोली बोलने में महारत हासिल कर ली। अपनी विनम्रता, मधुर व्यवहार और कम मुनाफे पर माल बेचने की कला से इनके पैर सतना-बाजार में 'अंगद के पैर' की तरह जम गए। ये वो दौर था जब सिन्ध से आए लोगों के पास न तो पक्की दुकानें थीं और न ही भरपूर पूंजी ही थी। सड़क की पटरी और लकड़ी के खोखों में बैठकर व्यापार करने वाली इस बहादुर जाति ने अपनी मेहनत, लगन तथा व्यवहार से अपने आप को, धन-लक्ष्मी की कृपा का पात्र बना लिया।

एक छोटा सा उदाहरण देना चाहूँगा। सतना के चौक बाजार में जब कोई ग्राहक, छतरी खरीदने जाता था तो इनसे पूर्व स्थापित दुकानदार पहिले छतरी नहीं दिखाते थे बल्कि छतरी की कीमत बताते थे। ग्राहक को बैठाने की परिपाटी नहीं थी। जब वही ग्राहक, सिन्धी समुदाय की दुकान पर जाता था तो दुकानदार उसे स्टूल या बैन्च पर पहिले बिठाता था और फिर छतरी दिखाता था। ग्राहक बार-बार छतरी का दाम पूछता, किन्तु दुकानदार, छतरियाँ दिखाता जाता और कहता, "साँई! पहिले पसन्द तो कर लो, दाम तय हो जाएगा।" **... शेष अगले पृष्ठ पर ...**

कई सिन्धी दुकानदार जिनकी दुकानें सड़क की पटरी पर होतीं, जिनके पास बैठने के लिए कोई फर्नीचर न होने के कारण वे ग्राहक को आदर से लकड़ी की पेटियों पर बिठाते थे। सतना शहर को हर प्रकार की उपभोक्ता सामग्री सुलभ कराने का श्रेय, सिन्धीयों को जाता है। पहिले सतना में फलों के नाम पर अमरूद, आम, जामुन थे, ये भी तभी मिलते थे जब इनका मौसम हो। अगर किसी बीमार के लिए डॉक्टर, मुसम्बी खाने या रस पिलाने की सलाह देता तो बीमार के घर वाले, स्टेशन जाकर ऐसे आदमी की तलाश करते जो इलाहाबाद या जबलपुर जा रहा होता। उससे मुसम्बी लाने की अर्ज करते थे। सन् 1950 तक सतना के लोगों ने आलू बन्डा, टोस्ट, नानखटाई, आलू-चाप और छोले-भटूरे के दर्शन नहीं किए थे। सिन्धी समाज ने इन चीजों के सिवा जरूरत की अन्य चीजों को बाहर से लाकर, जगह-जगह सुलभ करा कर, लोक-प्रिय बनाया। इन्होंने नाना प्रकार के धन्धों और दुकानों से सतना को पाट दिया।

सिन्धीयों में गजब की हिम्मत थी। शुरू में सतना के स्थानीय पुराने दुकानदारों में इनको लेकर बड़ा गुस्सा था। फिर धीरे-धीरे ताल-मेल बढ़ता गया। सिन्धीयों ने यहाँ के पुराने दुकानदारों की लालची प्रवृति का भरपूर लाभ उठाया। थोड़ा समय बीतने ही सिन्धीयों ने हजारों रुपए देकर, उनकी दुकानें या तो किराए पर ले लीं या खरीद लीं। पुराने दुकानदारों में आलस के साथ-साथ भारी मुनाफा कमाने की आदत थी। सिन्धीयों ने नाम-मात्र मुनाफे पर ही धन्धा शुरू किया था और देखते ही देखते, सतना के हर व्यापार पर ये काबिज हो गए। सतना की आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों में सिन्धी समुदाय ने जिस तरह अपना अमिट प्रभाव छोड़ा है उसी तरह धार्मिक हिस्सेदारी में भी इनका योगदान है। सेवादारी और दीन-दुखियों की खैर-खबर लेने के लिए, सिन्धी समाज को सदा याद रखा जाएगा। भगवान श्री झूलेलाल के पर्व चेट्री-चन्द्र से शुरूवात करके सन्त कंवरराम और पीर श्यामदास उदासी सहित कई सन्तों के पर्व आयोजन में जो समर्पण और सेवादारी की जाती रही, उसका असर सतना के दूसरे सम्प्रदायों में आ गया।

सतना की धरती अपने इन सपूतों को पाकर, धन-वैभव के साथ विकास की राह पर चल पड़ी। यह हकीकत है कि सिन्धी समाज ने सतना को जीने का सलीका दिया। ऊंघते हुए कस्बे को तेज-रफ्तार वाला शहर बना दिया।

साभार - मेरी बस्ती मेरे लोग : लेखक - श्री चिन्तामणि मिश्र, सतना (मध्य प्रदेश)।

महर्षि अरविन्द घोष ने कहा था

प्रथम स्वतन्त्रता दिवस पर राष्ट्र को आह्वान करते हुए महर्षि अरविन्द घोष ने कहा था, "भारत स्वतन्त्र हो गया है, पर इसने एकता प्राप्त नहीं की है। उसने प्राप्त की है केवल टूटी फूटी, छिन्न-भिन्न स्वतन्त्रता। ... यदि यह विभाजन सदा बना रहा तो भारत बुरी तरह दुर्बल ही नहीं वरन् अपंग भी हो जाएगा, गृह-कलह की सम्भावना निरंतर बनी रह सकती है।

... किसी तरह भी क्यों न हो, विभाजन दूर होना ही चाहिए और दूर होकर ही रहेगा। नहीं तो, भारत का भविष्य बुरी तरह कुण्ठित ही नहीं, व्यर्थ तक हो सकता है।"

सिन्धीयों का स्वतन्त्रता संग्राम आज भी जारी है

हमारी पहिचान का आधार सिन्धी भाषा और हम भूमिहीन हैं

सिन्धी जाति, वैदिक युग से व्यवहार-कुशल वाणियाँ (वणिक) के उपनाम से विश्व-विख्यात थी। पश्चिमी विद्वान श्री पोकाक ने लिखा था, "सिन्धू नदी के किनारे बसने वाले सिन्धू-जन समुद्री यात्रा करने वाले साहसी और कुशल व्यापारी थे। उन्होंने सदियों पूर्व समुद्र पार जाकर 'ग्रीस' को बसाया था।"

स्वतन्त्रता संग्राम के नाम पर हुए विभाजन के बाद भी सिन्धीयों ने इस व्यवसायिक-कला और दानशीलता के कारण, देश-विदेश में धन के साथ मान और यश कमाया था। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े हैदराबाद-सिन्ध के निवासी श्री राम कृपालाणी, विभाजन के बाद वेस्टइंडीज में जा बसे थे। वेस्ट इंडीज की राजधानी त्रिदिनाद के एक नीग्रो-गान में तत्कालीन प्रधानमन्त्री से कहा गया है, " ऐ जार्ज चेम्बर ! यदि तुम्हें राज चलाना नहीं आता तो बुलाओ 'जादूगर' राम कृपालाणी को। ये वो 'जादूगर' है, जो झोपड़ी पर हाथ रखता है तो वह महल में बदल जाती है।" किन्तु 'सिन्धीयत' रूपी यह जीवन शैली, कोई पूजा-पाखन्ड पर आधारित न थी। बल्कि यह एक सर्वजन हितैषी और सर्वकालीन आचार संहिता थी। समस्त जड़-चेतन की समृद्धि और सुरक्षा के लिए, संसार आधार पन्च-तत्वों को सुरक्षा प्रदान करने के हेतु यज्ञाचरण करने वाली कर्मप्रधान-वैज्ञानिक जीवन-शैली थी। "वर-वर खैर्, अढाई घरन् जो खैर्" (बार-बार कल्याण, अढ़ाई घरों का कल्याण। आधा घर अर्थात् ऐसा घर-परिवार जिसके किसी सदस्य का विवाह सम्बन्ध किसी अन्य जाति में हुआ हो।) का चिन्तन करने वाली थी। शुभ अवसरों पर समूह रूप में **पलउ पाइणु** (पल्लू-आँचल फैलाकर प्रार्थना) अर्थात् समस्त जड़ एवं चेतन जगत की सुख-समृद्धि की प्रार्थना करना। यह चिन्तन-विचार, हमारी लाखों वर्ष पुरानी भाषा में विद्यमान है। और भाषा अर्थात् किसी समुदाय के बीच बोले जाने वाला निश्चित अर्थ वाला शब्द भन्डार। किन्तु आज सिन्धी-समुदाय, देश भर में बिखरा हुआ है। इसलिए सिन्धी भाषा धीरे-धीरे लुप्त होने की स्थिति में पहुँच गई है।

विभाजन के तुरन्त बाद कुछ नेताओं ने सिन्धी भाषा और संस्कृति को भुलाकर क्षेत्रीय भाषा-संस्कृति में घुल-मिल जाने की बात कहकर, 'सिन्धी' के रूप में आत्महत्या कर लेने जैसी घोर नीच और निन्दनीय सलाह दी थी। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे कई साहित्यकारों और पत्रकारों ने इस नीच सलाह को ठुकराकर, सिन्धी भाषा के लिए 1951से 1967 तक लगातार 17 साल अथक संघर्ष किया, तब जाकर 10 अप्रेल, 1967 के दिन भारतीय संविधान के आठवें शेड्यूल में 15 वीं भाषा के रूप में मान्याता मिली। परन्तु इतना होने के बाद भी भाषा-संस्कृति आदि के सम्बन्ध में हम, आत्मघातक स्थिति में है।

युगपुरुष गुरू गोविन्दसिंह ने कहा था, "धर्म चले ना, राज बिना।" **धर्म** अर्थात् धारण करने योग्य आदर्श विचारों पर आधारित एक जीवन-शैली और **राज** अर्थात् अपनी धरती। और विचार रहते हैं भाषा में, जिसके लिए इसके बोलने वालों को एक क्षेत्र विशेष में रहना-बसना जरूरी होता है।

अपनी धरती या राज की बात करें तो हमारे स्वतन्त्रता सेनानी विशेषकर गाँधीवादी राजनेता, आज के राजनेताओं की तरह निकम्में सिद्ध हुए थे। जिनके कारण स्वतन्त्रता के समय हमने हजारों बलिदान देने के बाद भी अपनी धरती-अपनी जन्मभूमि खोई। यहाँ तक कि इस सम्बन्ध में उन्होंने कभी विचार तक नहीं किया था, अन्यथा एक जिला ही सही, हम निश्चित रूप से थरपारकर तो ले ही सकते थे। वर्तमान प्रादेशिक और राष्ट्रीय राजनेता, मन्त्री या उपप्रधानमन्त्री बनने के बाद भी ... **शेष अगले पृष्ठ पर ...**

हमारी मूल-भूत पहिचान को सुरक्षित रखने में नाकारे ही नहीं बल्कि संवेदनहीन-निर्मम सिद्ध हुए हैं।

मातृ-भाषा के सम्बन्ध में श्री भारतेंदु हरिश्चन्द्र जी की निम्न पंक्तियाँ हमेशा याद रखने योग्य हैं -

निज भाषा उन्नत्ति अहै, सब उन्नत्ति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को शूल ।।

जिसे न अपनी जाति, भाषा, धर्म और देश का अभिमान है, वह नर निरा पशु समान है।

प्रसिद्ध कवी श्री हरिवंशराय बच्चन ने एक साहित्यिक सम्मेलन में कहा था,"सिन्धी भाषा से अपनी जमीन छीन ली गई है, उसकी जड़ें कट गई हैं। यह दुर्भाग्य का विषय है कि जिस भाषा से हिन्द को अस्तित्व मिला, उसी प्राचीन भाषा को उजाड़ा गया। कोई प्रान्त; कोई जमीन आवश्यक है, जहाँ सिन्धी भाषी बड़ी संख्या में एक साथ रह सकें। भाषा को सदैव के लिए सुरक्षित रखना कठिन है। वर्तमान परिस्थितियों में सिन्धी लोग अपनी भाषा को बचा सकते हैं तो यह एक साहसिक कदम होगा। सिन्धीजनों के समक्ष यह एक बड़ी चुनौती है।"

पुरातत्वविद् डॉ.लोकेशचन्द्र का कथन भी याद रखने योग्य है,"सिन्धी भाषा और संस्कृति के बिना भारतीय संस्कृति अधूरी है।"

प्रसिद्ध साहित्यकार श्री जयशंकर प्रसाद का ललकार भरा कथन भी हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है,"जो जाति जब तक मरने के लिए तैयार रहेगी, उसे तब तक जीने का अधिकार रहेगा।"

इसलिए समाज-निष्ठ राजनेता मिलें तो ठीक अन्यथा समाज-सेवियों और दानवीरों को चाहिए कि 1954-55 में भाई प्रताप द्वारा अथक प्रयासों से निर्मित,"हिन्द में नई सिन्ध" जो कच्छ-गुजरात में गाँधीधाम के नाम से बसाई गई थी, जिसके दूसरी तरफ हमारी स्वर्ग से सुन्दर जन्म-भूमि सिन्ध है। जहाँ हमारे कई भाई आज भी बड़ी संख्या में रह रहे हैं, उसी नई सिन्ध में समाज के लोगों को अधिक से अधिक संख्या में बसाना होगा। जैसा कि दूरदर्शी भाई प्रताप ने किया था-पेट के लिए रोजी-रोटी और सर छिपाने के लिए मकान रूपी छत मिलने के बाद, आर्थिक रूप से कमजोर अधिकाँश परिवार वहाँ बसने के लिए तैयार हो जाएँगे। इस काम को एक आंदोलन के रूप में सतत चलाते रहना होगा। आदिपुर के सिंधालॉजी को **सिन्धीयत** का केन्द्र बनाकर, समाज को एक-सूत्र में बाँधने के साथ भाषा-संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए एक-दो टी.वी. चैनल और राष्ट्रीय पहुँच वाली आठ-दस अखबारों का जाल सा बिछाना होगा।

अपनी प्राणों से प्यारी जन्मभूमि सिन्ध की मुक्ति के लिए भी जतन करते रहना पड़ेगा। उसे देर-सबेर पाकर ही दम लेना होगा। हमारी भगोड़ी चाल देखकर, "भगोड़े-धन्धेड़ी" आदि कह कर लोग हम पर ताने कसते हैं-हमारी खिल्ली उड़ाते हैं। ऐसी शर्मनाक हालत को, हमें समय रहते बदलना होगा।

या अपनी महान सिन्धीयत गँवाकर, धरतीअ-धिकाणा(धरती से धकियाए हुए) बनकर अपना घर-परिवार लुटवाते-कटवाते रहो (ईसाई या मुसलमान बनकर)। और दुनियाँ भर में गुमनाम धकियाते हुए आज की तरह बेचते रहो **सामान** के नाम पर अपना रहा-सहा **सम्मान** ।

अपनी महान 'सिन्धीयत' गँवाकर हम जिन्दा तो रहेंगे किन्तु पहिचान रूपी अपना 'सिन्धी' नाम, सिन्धी भाषा और संस्कृति भुला बैठेंगे। वो सिन्धी भाषा जिसका एक-एक वाक्य, वेदऋचा-वेदमन्त्र बन गया। वो महान सिन्धीयत जो विश्व की श्रेष्ठतम और आदर्श जीवन जीने की कला का नाम है। जिस महान कला को सतयुग से कलयुग की हर मानव-जाति ने अपनाया था-और अपनाया है।

.... इति श्री ....

सिन्ध के वीरों
को
शत्-शत् नमन

जीए सिन्ध - वन्दे मातरम्

सिन्धू जागृति मंच

बिलासपुर (छ.ग.)